दवा–ए–दिल
(मजमूआ ख़ुतबात)
ख़तीब
हज़रत मौलाना फ़क़ीर ज़ुलफ़क़्क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

दवा–ए–दिल

(मजमूआ ख़ुतबात)

दिल को बेदार करने वाले उन ख़ुतबात का मजमूआ जो सरज़मीने गुजरात के एक हफ़्ते के सफ़र में मुख़्तलिफ़ जामिआत और मसाजिद में दिए गए।

...... ख़तीब ......

हज़रत मौलाना फ़क़ीर ज़ुलफ़क़्क़ार अहमद साहब

नक़्शबंदी, मद्द ज़िल्लुहू

मुहतमिम दारुल उलूम झंग (पाकिस्तान)

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो (प्रा0) लि0

कारपोरेट ऑफिसः 2158, एम0 पी0 स्ट्रीट, पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2

दवा-ए-दिल

बयान

हज़रत मौलाना पीर फ़क़ीर ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

संयोजक

(अल-हाज) मुहम्मद नासिर ख़ान

Dawa-e-Dil

Speach

Hazrat Maulana Peer Faqeer Zulfaqâr Ahmad Sahab Naqshbandi

Edition: **2015**

2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2
Ph.: 011-23289786, 23289159 Fax: 011-23279998
E-mail: faridexport@gmail.com | Website: faridexport.com

Printed at : Farid Enterprises, Delhi-2

फ़ेहरिस्त–ए–मज़ामीन

अपना दिल संवारिये

हज़रत का यह बयान दारुलकुरआन जम्बोसर में इशा की नमाज़ के बाद, हफ़्ते के दिन, 13 जनवरी 2001 को हुआ।

इक्तिबास

जब इन्सान दिल को संवारने की मेहनत शुरू करता है तब पता चलता है कि उस दिल में कितना काम बाक़ी है दिल का संवारना आसान नहीं मुद्दतें गुज़र जाती हैं तब जाकर इन्सान का दिल संवरता है–

विराने भी देखे हैं, आबादी भी देखी है
जो उजड़े तो फिर न बसे दिल वह निराली बस्ती है
दिल का उजड़ना सहल सही, बसना खेल नहीं भाई
बस्ती बसना खेल नहीं, बस्ती बसते–बसते बसती है

जिस तरह बस्तियों का आबाद होना कोई आसान काम नहीं होता उमरें गुज़रती हैं तब वह आबाद होती हैं बिल्कुल इसी तरह उमरें गुज़रती हैं तब जाकर दिल आबाद होता है बिगड़ता जल्दी है संवरता बड़ी मुशकिल से है।

हज़रत मौलाना पीर फक़ीर
ज़ुलफ़क़्क़ार अहमद साहब नक़्शबन्दी
मद्दा ज़िल्लुहू

الحمد لِلّٰهِ وَكَفٰى اصطفٰى وسلامٌ علٰى عباده الذين اصطفٰى اما بعد!

اعوذ باللّٰه من الشَّيطٰن الرَّجِيم ، بِسمِ اللّٰه الرَّحمٰن الرَّحِيمِ

﴿يَوْمَ لَايَنفَعُ مَالٌ وَّلَابَنُونَ إِلَّا مَنْ أَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ○﴾

(पा19, रुकू 9, आयत 89)

فقال رسول اللّٰهِ صلى اللّٰهُ عليهِ وسلَّمَ "إن فى جسد كل بنى آدم لمضغة إذا فسدت فَسَدَ الجَسَدُ كله وإذا صَلُحَتْ صلح الجسد كله"

سبحان ربك رب العزة عما يصفون

وسلامٌ علٰى المرسلين والحمد للّٰهِ رب العالمينَ

اللّٰهُمَّ صلِّ علٰى سيِّدِنا محمدٍ وَّعَلٰى آل سيدنا محمد وبارك وسلم

اللّٰهُمَّ صلِّ علٰى سيِّدِنا محمدٍ وَّعَلٰى آل سيدنا محمد وبارك وسلم

اللّٰهُمَّ صلِّ علٰى سيِّدِنا محمدٍ وَّعَلٰى آل سيدنا محمد وبارك وسلم

"बेशक आदमी के जिस्म में गोश्त का एक लोथड़ा है कि जब वह बिगड़ता है पूरे जिस्म के आमाल बिगड़ जाते हैं और जब वह संवर जाता है तो पूरे जिस्म के आमाल संवर जाते हैं।" (कुरआन)

क़यामत के दिन काम आने वाली चीज़

कुरआने मजीद की जो आयत पढ़ी गई जिसमें अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन न माल काम आएगा न बेटे काम आएंगे

(إلَّا من أتى اللّٰه بقلبٍ سليم) जो संवारा हुआ दिल लाये वह उस के काम आऐगा, दो चीज़ों की नफ़ी की गई, एक माल की और एक औलाद की, आम तौर पर दुनिया में इन्सान उन्हीं चीज़ो से धोखा खाता है, और दुनिया में आदमी यह समझते हैं कि माल होतो इन्सान शेरनी का दूध भी खरीद सकता है, माल से तमाम काम संवर जाते हैं, हालांकि यह बड़ी गलत फ़हमी है, माल से इन्सान के कुछ काम तो संवरते है हर काम नहीं संवरता, दुनिया में भी हर काम नहीं संवरता और आख़िरत में तो कोई भी काम नहीं संवरेगा, आप खुद गौर फरमाएं कि माल से इन्सान ऐनक तो खरीद सकता है, बीनाई

नहीं ख़रीद सकता, माल से इन्सान अच्छा लिबास तो ख़रीद सकता है, खूबसूरती नहीं ख़रीद सकता, माल से इन्सान नर्म बिस्तर तो ख़रीद सकता है मीठी नींद तो नहीं ख़रीद सकता, माल से इन्सान दवा तो ख़रीद सकता है, सेहत तो नहीं ख़रीद सकता, मीठी नींद तो नहीं ख़रीद सकता, माल से इन्सान ख़िज़ाब तो ख़रीद सकता है, शबाब तो नहीं ख़रीद सकता, और माल से इन्सान लोगों की खुशामद तो ख़रीद सकता है, किसी के दिल की मुहब्बत तो नहीं ख़रीद सकता, माल से इन्सान किताब तो ख़रीद सकता है, इल्म तो नहीं ख़रीद सकता, मालूम हुआ कि दुनिया में भी हर काम माल से नहीं होता लिहाज़ा आख़िरत में तो बिल्कुल ही कोई काम नहीं होगा, क्या चीज़ काम आयेगी?

(اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ) जो संवारा हुआ दिल लाया, ऐसा दिल जिस पर अल्लाह के अलावा की मुहब्बत के असरात न हों जो किसी और की मुहब्बत से मेहफ़ूज़ हो, जब भी दिल में ग़ैरुल्लाह की मुहब्बत आती है तो दिल पर दाग़ लग जाता है, दिल पर जुलमत आजाती है, दुनिया की मुहब्बत से दिल पर जुलमत आती है और अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत से दिल रोशन होजाता है, जब भी कोई गुनाह किया जाता है हर गुनाह के बदले दिल के ऊपर एक स्याह नुक़्ता लग जाता है, अगर सच्ची तौबा कर ली तो वह नुक़्ता धुल गया, और अगर दुबारा गुनाह कर लिया तो दूसरा नुक़्ता लगा, गुनाहों पर गुनाह करते करते वह नुक़्ते इतने बढ़ते जाते हैं कि इन्सान का दिल बिल्कुल स्याह हो जाता है–

दिल एक निराली बस्ती

जब इन्सान दिल को संवारने की मेहनत शुरू करे तब पता चलता है कि उस दिल में काम कितना बाक़ी है, दिल का संवरना आसान नहीं,मुद्दतें गुज़र जाती हैं तब जाकर इन्सान का दिल संवरता है–

वीराने भी देखे हैं आबादी भी देखी है
जो उजड़े तो फ़िर न बसे दिल वह निराली बस्ती है

दिल का उजड़ना सहल सही बसना खेल नहीं भाई
बसती बसना खेल नहीं बसती बसते–बसते बसती है

जिस तरह बस्तियों का आबाद होना कोई आसान काम नहीं होता, उमरें गुज़रती हैं जब वह आबाद होती हैं, बिल्कुल इसी तरह उमरें गुज़रती हैं, तब जा कर दिल आबाद होता है, बिगड़ता जल्दी है संवरता बड़ी मुशकिल से है संवारने के लिए मेहनत करनी पड़ती है:

मसहफ़ी हम तो समझते थे कि होगा कोई ज़ख्म
तेरे दिल में तो बहुत काम रफ़ू का निकला

जिस वक़्त पेवन्दकारी करोगे किसी अल्लाह वाले के ज़ेरे नज़र रह कर तो फिर पता चलेगा कि कहां कहां ज़ख़्म लगे हैं–

कि दिल सारा दाग़–दाग़ हो गया, कहां कहां मरहम रखूं

क़ल्ब गुज़रगाह तजल्लियाते रब्बानी

"क़ल्ब अ़बदुल्लाह" जो है वह "अ़र्श अल्लाह" है, अल्लाह तआ़ला का अ़र्श है, देखिये जब हम बैतुल्लाह को बैतुल्लाह कहते हैं किस लिए? मआज़ अल्लाह कोई अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त वहां रहते तो नहीं हैं बल्कि इस लिए कि अल्लाह तआ़ला की तजल्लियाते ज़ातिया का वहां पर वुरूद होता है इस लिए उस को बैतुल्लाह कहा गया है, इसी तरह जब मोमिन अपने दिल को संवार लेता है तो उस का दिल भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तजल्ली गाह बन जाता है। यह दिल अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की गुज़रगाह बनी, इस लिए दिल को अल्लाह तआ़ला का घर कहा।

दिल की सफ़ाई में देर क्यों?

हम अपने घर में सफ़ाई करते हैं, ज़रा भी कहीं कूड़ा करकट नज़र आए औरत को डांट पड़ती है, सफ़ाई क्यों नहीं की, अपने घरों में सफ़ाई चाहने वाले ज़रा गौर करें, दिल भी तो अल्लाह तआ़ला का घर है, उस में भी सफ़ाई आनी चाहिये, उस पर जो गुनाहों का मैल पड़ा है कूड़ा करकट भरा है, अफ़सोस है कि हमने उसे रद्दी की

टोकरी बना रखा है, यह अल्लाह रब्बुलइ़ज़्ज़त का घर है वह भी चाहते हैं कि यह दिल साफ़ हो, आप खुद ग़ौर कीजिये अगर आपके पास गन्दा मैला बरतन लाया जाए और कहें कि उसमें दूध डाल दें, आप गवारा फ़रमाएंगे? आप कहेंगे इतने गन्दे बर्तन में दूध कैसे डालें, तो जिस तरह हम गन्दे बर्तन में दूध डालना पसन्द नही करते इसी तरह अल्लाह रब्बुलइ़ज़्ज़त गन्दे दिलों में अपनी मुहब्बत डालना पसन्द नहीं फ़रमाते, वह भी चाहते हैं कि उसे साफ़ करो, रगड़ाई करो, उसे चमकाओ, उस के ऊपर से गुनाहों की ज़ुल्मत को हटाओ ताकि यह दिल आईना बन जाए, जब साफ़ हो जाएगा तो फिर अल्लाह रब्बुलइ़ज़्ज़त की रहमतें खुद ही खुद उसमें आऐंगी, सफ़ाई करने में हमारी तरफ़ से देर है,हज़रत अक़्दस थानवी रह० के एक ख़लीफ़ा ख़्वाजा मज्ज़ूब रह० ने एक शेर कहा है, है तो बहुत ही सादा लेकिन हज़रत थानवी रह० को इतना पसंद आया कि इस दौर में फ़रमाया कि अगर मैं इस लायक़ होता तो एक लाख रूपया देदेता, शेर क्या था:

हर तमन्ना दिल से रुख़सत होगई
अब तो आजा अब तो ख़िल्वत होगई

तो जब इन्सान हर तमन्ना को दिल से रुख़्सत कर देता है तब अल्लाह रब्बुलइ़ज़्ज़त की नेमतें इस दिल पर नाज़िल होती हैं।

एक अ़जीब मिसाल

एक मिसाल पर ज़रा ग़ौर कीजिये, यह मसला है कि जिस कमरे में तस्वीर लगी हो अल्लाह तआला की रहमत के फ़रिश्ते उस घर में नहीं आते, इसी तरह जिस दिल में किसी की तस्वीर बैठी होगी, अल्लाह तआ़ला उस दिल में आना कैसे पसन्द फ़रमाऐंगे, जब रहमत का फ़रिश्ता नहीं आता तो रहमतें भेजने वाले की मुहब्बत कैसे आऐगी? वह भी यह चाहते हैं कि उसके अन्दर किसी की तस्वीर न हो और आज कल के नौजवानो के दिलों में तस्वीर के ढेर लगे हैं, रास्ता चलते चलते जिस पर नज़र पड़ी वही बैठ गई, नित नये ठप्पे

दिल पर लगते चले गये, ऐसे दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत का मज़ा आयेगा? लुत्फ़ कैसे आयेगा, इसलिए इस दिल पर मेहनत करने की ज़रूरत है।

जिस्म के तमाम हिस्से दिल के ताबे

देखिये इन्सान के जितने भी आज़ा (जिस्म के हिस्से) हैं वह इस दिल के ताबे हैं, एक आदमी अगर आपसे ख़फ़ा है तो आपकी तरफ़ नहीं देखेगा, आप पूछेंगे कि भाई हमारी तरफ़ देखते क्यों नहीं? वह कहेगा मेरा दिल नहीं चाहता, अब देखना आँख का अमल है लेकिन कहेगा क्या? मेरा दिल नहीं चाहता, बच्चा खाना नहीं खा रहा, मां पूछेगी बेटा खाना क्यों नहीं खा रहे हो? वह कहता है मेरा दिल नहीं चाहता, तो खाना तो मुंह का अमल है, पेट की ज़रूरत है। लेकिन कहता है कि दिल नहीं चाह रहा है, भाई आप मेरी बात क्यों नहीं सुनते? कि जो मेरा दिल नहीं करता, सुनना कान का अमल है मगर फ़ैसला दिल का मालूम हुआ, आंख हो, कान हो, ग़र्ज़ जिस्म का कोई भी हिस्सा हो वह दिल का ताबे है जो दिल की कैफ़ियत होगी वही इन्सान के जिस्म का अमल होगा, तो दिल के संवरने से इन्सान संवरता है और दिल के बिगड़ने से इन्सान बिगड़ता है,

दिल के बिगाड़ ही से बिगड़ता है आदमी
और जिसने उसे संवार दिया वह संवर गया

यह है तो छोटा लेकिन है सोने का "टूटा" जब ये संवरता है तो इन्सान को संवार कर रख देता है–

ज़ाहिर में छोटा हक़ीक़त में बड़ा

हमारे दिल की अल्लाह तआला के यहां बड़ी क़ीमत है, देखिये! संदूक़ की क़ीमत इसके अन्दर की चीज़ों के क़ीमती होने पर निर्भर होती है, आप ग़ौर करें घरों के अन्दर बड़े–बड़े संदूक़ होते हैं जिन के अन्दर लिहाफ़, तकिये, रज़ाईयां, गर्मी के मौसम में औरतें रख देती हैं, मगर इनको ताले नहीं लगाते, वह खुले ही रहते हैं, लेकिन एक

छोटा सा ज्वैलरी बॉक्स होता है (ज़ेवरात रखने का डब्बा) इसमें सोने चांदी के ज़ेवरात होते हैं इसको छुपा छुपा कर रखती हैं, ताले लगा कर रखतीं हैं अगर घर बन्द करके कहीं जाना होगा तो आख़री नज़र इस पर ज़रूर डालकर जाएंगी और जब वापस आकर घर को खोलेंगी तो पहले नज़र इसपर डालेंगी, महफ़ूज़ है या नहीं, अगर कोई यह कहे कि घर में आग लग गई घर से निकलो तो जाते जाते भी ज्वैलरी बॉक्स को हाथ में लेकर निकलेंगी, लिहाज़ा है छोटा सा लेकिन है बहुत क़ीमती बिल्कुल इसी तरह इन्सान का दिल भी है, है तो छोटा मगर बहुत क़ीमती है, इसलिए कि इसके अन्दर अल्लाह तआला की मारिफ़त होती है, इस के अन्दर नूर होता है, इसलिए इसका अल्लाह तआला के यहां बड़ा मक़ाम है, क़्यामत के दिन अल्लाह तआला बन्दे से दिल मागेंगे (يَوْمَ لَا يَنفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ) क़्यामत के दिन न माल काम आयेगा न बेटे काम आयेंगे, वहां जो इन्सान संवरा हुआ दिल लाएगा वह काम आयेगा।

एक मिसाल

ग़ौर कीजिए! आप अगर सेब ख़रीदने जाऐं और एक रूपये के बदले एक सेब ख़रीदें अगर उस पर दाग़ लगा हो तो आप उसको नहीं ख़रीदते वापस कर देते हैं कि मियां रूपये के बदले सेब ख़रीदना है फिर दाग़दार क्यों लें बेदाग़ दो, अब सोचने की बात है हम एक रूपयें के बदले में दाग़ी सेब लेना पसन्द नहीं करते तो अल्लाह तआला अपनी रज़ा अपनी बक़ा अपनी जन्नतों के बदले में दाग़ी दिलों को क्यों कर पसन्द करेंगे, वोह भी चाहतें है कि उस दिल पर कोई दाग़ न हो, न गुनाह का हो न किसी ग़ैर की मुहब्बत का हो वह बिल्कुल साफ़ हो, उस को क़ल्ब सलीम कहते हैं, जो ग़ैर की मुहब्बत से मेहफ़ुज़ हो, क़ल्ब सलीम हो ऐसे दिल को अल्लाह तआला क़बूल फ़रमाते हैं, इरशाद फ़रमाते है–

مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ

(पारा 21, रुकू 17, आयत 4)

तर्जुमा – अल्लाह तआ़ला ने किसी इन्सान के सीने में दो दिल नहीं बनाऐ।

कि एक दिल वह इन्सान को दे दें और दूसरा दिल रहमान को देदे, फ़रमाया ना ना दिल एक है और एक ही के लिए है।

दिल वक़्फ़ की जागीर है

अल्लाह तआ़ला दिलों के व्यापारी हैं वह तुम से दिल मांगते हैं कि अपना दिल मुझे दो, यहां पर एक इ़लमी नुक्ता भी ज़हन में आया कि अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَى مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُم بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ

(पारा 11, रुकू 3, आयत 111)

तर्जुमा – कि अल्लाह तआ़ला ने मोमिनों से जन्नत के बदले में उनके नुफ़ूस को और मालों को ख़रीद लिया अब दिल में सवाल पैदा होता है कि अल्लाह तआ़ला का घर तो इन्सान का दिल था, और बन्दा घर पहले ख़रीदता है, तो यूं फ़रमाते हैं कि हमने जन्नत के बदले इन्सान का दिल ख़रीद लिया, मगर दिल का तज़किरा नहीं किया, तज़किरा किया तो नफ़्स का किया और माल का किया, उस में दिल का कहीं तज़किरा ही नहीं, तो मुफ़स्सिरीन ने उसका भी जवाब दिया, वह फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने यहां पर नफ़्स और माल का तज़किरा किया, "क़ल्ब" का तज़किरा नहीं किया, इस लिए कि क़ल्ब को अल्लाह ने अपने लिए वक़्फ़ फ़रमा लिया है, और वक़्फ़ की जायदाद उसकी ख़रीद व फ़रोख़्त नहीं हुआ करती, बाक़ी इन्सान के पास नफ़्स और माल था, अल्लाह ने उसको भी जन्नत के बदले ख़रीद लिया, तो दिल तो है ही वक़्फ़ की जायदाद, अल्लाह के लिए वक़्फ़ हो चुका जैसे कहते हैं कि ये ज़मीन मस्जिद में देदी तो वह वक़्फ़ हो चुकी इसी तरह इन्सान का दिल अल्लाह तआ़ला की याद के लिये बनाया गया है, उस में अगर अल्लाह तआ़ला की याद होतो यह बड़ा क़ीमती है।

सब मिलकर भी दिल की क़ीमत अदा नहीं कर सकते

एक बार शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० ने देहली की जामा मस्जिद में खुतबा दिया फ़रमाया मुग़ल बादशाहो! तुम्हारे खज़ानों की बड़ी तारीफ़ सुनी है, लेकिन वलीउल्लाह के सीने में एक दिल है तुम्हारे ख़ज़ाने सब मिल कर भी उसकी क़ीमत अदा नहीं कर सकते, सोचो! ये दिल कितना क़ीमती बन गया होगा, लिहाज़ा उस को क़ीमती बनाने के लिए उस पर मेहनत करनी पड़ती है उसको संवारना पड़ता है, उसको बनाना पड़ता है उससे दुनिया की मुहब्बत को निकालना पड़ता है, तब यह संवरता है, उल्टी सीधी ख़्वाहिशें दिल से निकालनी पड़ती हैं, तब इन्सान संवरता है, उसमें से दुनिया की मुहब्बत कैसे निकालें, उसके लिए अल्लाह वालों से सीखकर ज़िक्र करना पड़ता है, ज़िक्र करने से इन्सान का दिल संवर जाता है।

एक अ़जीब मिसाल

कुरआन मजीद की एक आयत है उसके तहत हज़रत अक़दस थानवी रह० ने एक अजीब मिसाल लिखी है, फ़रमाते हैं सूरे 'नम्ल' की आयत–

إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَجَعَلُوا أَعِزَّةَ أَهْلِهَا أَذِلَّةً

(पारा 19, रुकू 18, आयत 34)

बिल्क़ीस ने लोगों से पूछा (मशवरा किया) तो लोगों ने कहा कि हम आप के साथ हैं अगर आप मुक़ाबला करना चाहेंगी तो भी, और कोई और सूरतहो तो भी, उस पर उसने जवाब दिया, बहुत समझदार थीं कहने लगीं :

إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً

"कि जब बादशाह किसी बस्ती में दाखिल होते हैं फ़साद मचाते हैं"

وَجَعَلُوا أَعِزَّةَ أَهْلِهَا أَذِلَّةً

"जो वहां के मुअ़ज़्ज़ज़ लोग होते हैं उनको ज़लील करके निकाल देते हैं।" अब यह तो हुए उस आयत के ज़ाहिरी माना, हक़ीक़त के ऐतिबार से, लेकिन हज़रत अक़्दस थानवी रह० ने फ़रमाया यह एक बहतरीन मिसाल है, वह फ़रमाते हैं कि अगर 'इन्नल मुलूका' से मुराद मालिकुलमुल्क का नाम लिया जाए, यानी अल्लाह तआ़ला और उन का नाम और 'क़रया' से मुराद दिल की बस्ती ले ली जाए तो फ़रमाते हैं कि फिर उसके माना बने

إنَّ المُلُوْكَ إذَا دخلُوا قَرْيَةً

कि जब अल्लाह तआ़ला का नाम दिल की बस्ती में समा जाता है, इन्क़िलाब मचा देता है وَجَعَلُوْا اَعِزَّةَ اَهْلِهَا اَذِلَّةً और दुनिया जो दिल में मुअ़ज़्ज़ज़ बनी होती है उस को ज़लील कर के दिल से निकाल दिया करता है लिहाज़ा दोस्तों अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र में बड़ी बरकत होती है, यह दुनिया की मुहब्बत दिल से निकालता है, अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत से दिल को मुनव्वर करता है, और जब यह दिल बना हुआ और संवरा हुआ होतो फिर इन्सान की कैफ़ियत ही कुछ और होती है।

मेहबूब के तज़किरे ने दिल तड़पा दिया

सय्यिदना इबराहीम अ़लै० अपनी बकरियां लेकर जा रहे हैं, क़रीब से एक आदमी गुज़रा और गुज़रते हुए पढ़ रहा था—

سُبْحانَ ذِىْ المُلْكِ وَالمَلَكُوْتِ سُبْحانَ ذِىْ العِزَّةِ وَالعَظْمَةِ وَالهَيْبَةِ وَالقُدْرَةِ وَالكِبْرِيَاءِ وَالجَبَرُوْتِ.

जब उसने इतने अच्छे लफ़्ज़ों से अल्लाह तआ़ला की हम्द बयान की (तारीफ़ की) तो हज़रत इबराहीम अ़लै० का दिल तड़प उठा, मचल उठा और जी चाहा :

होती रहे सना तेरे हुस्न व जमाल की

कहने लगे ऐ भाई ज़रा से लफ़्ज़ एक बार फिर कह लीजिये, उसने कहा उसके बदले में क्या देंगे? फ़रमाया ये बकरियों का आधा रेवड़

आपको दे दूंगा, यह लफ्ज़ फिर कहिए। उसने यह लफ़्ज़ फिर कहे, ऐसा लगा जैसे कानों में रस घुल गया हो फिर फ़रमाया कि फिर एक मरतबा कह दो, उसने कहा अब क्या देंगे? फ़रमाया बाक़ी रेवड़ भी आपको दे दूंगा, फिर कहे अब उनकी तसल्ली न हुई, बल्कि और तबीअत मचली कि और एक मरतबा सुन लूं, फ़रमाया कि ऐ भाई एक मरतबा और कह दो, उसने कहा अब आपके पास क्या चीज़ है देने को? हज़रत ने फ़रमाया कि तुझे बकरियां चराने के लिए चरवाहे की भी तो ज़रूरत पड़ेगी, मैं तुम्हारा रेवड़ चराया करूगां तुम अल्फ़ाज़ एक मरतबा और कह दो, जब यह बात कही तो वह कहने लगा, इबराहीम ख़लीलुल्लाह मुबारक हो मैं तो अल्लाह तआ़ला का फ़रिश्ता हूं, परवरदिगार ने भेजा कि जाओ मेरे ख़लील के सामने जाकर मेरा नाम लो और देखो, मेरे नाम का क्या दाम लगाता है तो जब दिल संवरा होता है तो बन्दा अपनी जान भी अल्लाह के नाम पर कुरबान कर देता है।

जान दी, जो दी हुई उसी की थी
हक़ तो यह है कि हक़ अदा ना हुआ

जान भी देता है ऊपर से एहसान भी अल्लाह का मानता है, तो यह दिल संवारने से संवरता है और बिगाड़ने से बिगड़ जाता है, इस लिए हमारे लिए यह दिल इन्तिहाई अहम चीज़ है।

दिल बिगड़ने की एक मिसाल

इस दिल का बिगड़ना बड़ा आसान तो है, देखिये जैसे घर के अन्दर रोशनदान होते हैं अगर वे खुले रहते हैं तो फिर सारे कमरों में मिट्टी आती है, इसी तरह से अगर आंख का रोशनदान खुला रहे तो दिल के कमरे में मिट्टी आती है, और आज कल के नौजवान का तो यह रोशनदान बन्द ही नहीं होता, ग़ैर महरमों से आंख लड़ाते हैं, उसका नतीजा यह निकलता है, कि फिर दिल बिगड़ता है फिर पढ़ाई में दिल नहीं लगता, उस की पहचान यह है कि हाफ़्ज़ा कमज़ोर मेहसूस होता है, जो पढ़ते हैं वह भूल जाते हैं, सामने किताब होती है

मगर दिल किसी और जगह पर होता है।

किताब खोलके देखो तो आंख रोती है
वरक़ पे वरक़, वरक़ पे वरक़..............

उनको किताब का पेज नज़र नहीं आता, उनको किसी का चेहरा नज़र आ रहा है, इस लिए कि दिल बिगड़ चुका है अब दिल कैसे लगे?

सो जाने और मो (मर) जाने का फ़र्क़

एक शख़्स हसन बसरी रह० के पास हाज़िर हुआ कहने लगा, हज़रत पता नहीं हमारे दिल सो गये हैं, फ़रमाया वह कैसे? अर्ज़ किया कि हज़रत आप दर्स (सबक़) देते हैं, वअ़ज़ व नसीहत करते हैं लेकिन दिल पर असर नहीं होता, हज़रत ने फ़रमाया अगर यह मामला है तो यह न कहो कि दिल सो गये, तुम यूं कहो कि दिल मो गये (मर गये) वह बड़ा हैरान हुआ कहने लगा हज़रत ये दिल मर कैसे गये? हज़रत ने फ़रमाया कि देखो जो इन्सान सोया हुआ हो, उसे झनझोड़ा जाऐ तो वह जाग उठता है और जो झनझोड़ने से न जागे वह सोया हुआ नहीं, वह मोया हुआ होता है, जो इन्सान अल्लाह का कलाम सुने, नबी स० का फ़रमान सुने और फिर दिल असर क़ुबूल न करे यह दिल की मौत की अ़लामत होती है तो हम उस दिल को मरने से पहले पहले रूहानी एतिबार से ज़िन्दा करलें।

रूहानी बीमारियां

जैसे जिसमानी बीमारियां हैं वहीं वैसी ही रूहानी बीमारियां हैं, फ़लां को मलेरिया है फ़लां को शूगर है, फ़लां का बल्ड प्रेशर हाई है। इसी तरह रूहानी बीमारियां होती हैं, जैसे कीना है, हसद है, तकब्बुर है, शहवत है, ग़ज़ब है, यह सब की सब इन्सान के दिल की बीमारियां हैं और दिल की बीमारियां हमेशा पेचीदा होती हैं, और जान लेवा हुआ करती हैं, बल्कि दिल का बीमार क़ाबिले रहम हुआ करता

है, जिसमानी बीमार हो या रूहानी बीमार हो और आज सब दिल के बीमार हैं, इल्ला माशा अल्लाह।

दिल का मुआ़लिज कौन?

अब दिल के इलाज की क्या शक्ल हो? तो उस के इलाज के लिए मशाईख के पास बैठना पड़ता है? जो दिलों के तबीब हैं, दिल की दवा देते हैं, उनके पास बैठने से अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत दिल में आ जाती है उनकी सोहबत की बरकत से दिल साफ़ हो जाता है, दिल ज़िन्दा हो जाते हैं, ये दिलों को गुदगुदाते हैं, ग़ाफ़िल लोंग आते हैं उन की सोहबत में ज़रा देर बैठते हैं तो वह अपने दिलों को बदला हुआ महसूस करते हैं, उनके दिल अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत में मचलने लगते हैं।

बसारत़ और बसीरत का फ़र्क़

देखिये एक होती है बसारत और एक होती है। बसीरत, बसारत कहते हैं उन आंखों की बीनाई को, और बसीरत दिल की बीनाई को कहते हैं, आज हमारे पास बसारत तो मौजूद है लेकिन बसीरत से हम लोग महरूम हैं, तो जैसे आंखें अन्धी हो जाती हैं एसे ही दिल भी अन्धा हो जाता है, देखिये कुरआने अ़ज़ीम में फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने नूह की पूरी क़ोम को

إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ

(पारा 8, रुकू 15, आयत 64)

फ़रमाया वह क़ौम अन्धी थी। क्या वह आंखों से अन्धी थी? नहीं दिल की आंखों से अन्धी थी, कि एक हज़ार साल तक उनको अल्लाह तआ़ला की तरफ़ बुलाया गया और फिर भी वह हकीक़त को न पहचान सकी, लिहाज़ा फ़रमाया वह अन्धी क़ौम थी, मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला की नज़र में भी अन्धापन दर हकीक़त दिल का अन्धापन है, फ़रमाया

وَمَنْ كَانَ فِى هٰذِهٖٓ أَعْمٰى فَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ أَعْمٰى وَأَضَلُّ سَبِيْلًا

(पारा 15, रुकू 8, आयत 72)

ऐ अल्लाह दुनिया में तो बीनाई वाला था तो मालूम हुआ कि जो इन्सान अल्लाह के अहकाम पर अन्धा बना रहे अल्लाह तआ़ला की नज़र में वह अन्धा होकर आता है, तो दिल का अन्धापन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की नज़र में ज़्यादा बुरा है, कुरआन मजीद की एक आयत में अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं :

لَهُمْ قُلُوبٌ يَعْقِلُوْنَ بِهَا

तर्जुमा – ऐ काश उनके दिल होते जिनके ज़रिये वह समझते।

أَوْ آذَانٌ يَسْمَعُوْنَ بِهَا

तर्जुमा – या उनके कान होते जो हिदायत की बात सुनते।

فَإِنَّهَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ

और आंखें अन्धी नहीं होती।

وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِىْ فِى الصُّدُوْرِ

(पारा 17, रुकू 13, आयत 46)

यह तो सीनों के दिल अन्धे होते है। उस दिल को ज़िन्दा करने की ज़रूरत है।

दिल कब सख़्त बनता है

जब यह दिल संवर जाये फिर उसमें अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत भर जाती है फिर उसकी कैफ़ियत ही कुछ और होती है:

अल्लाह वह दिल दे जो तेरे इश्क़ का घर हो
दाइमी रहमत की तेरी उस पे नज़र हो
दिल दे कि तेरे इश्क़ में यह हाल हो उसका
महशर का अगर शोर हो तो भी न ख़बर हो

यह अल्लाह वालों की कैफ़ियत होती है, उन का दिल अल्लाह की मुहब्बत से भरा हुआ होता है, फ़िर अल्लाह के सिवा किसी और

जानिब ध्यान ही नहीं जाता, फिर बन्दे का दिल क़ीमती बन जाता है, ज़मीन के बारे में लिखा है कि अगर उसको छोड़ दिया जाऐ काश्त न की जाए तो फिर यह सख़्त होकर नाक़ाबिले काश्त बन जाती है, इसी तरह अगर दिल पे महनत न की जाए तो कुछ अ़रसे बाद दिल की ज़मीन भी सख़्त हो जाती है और उसकी दलील क़ुरान मजीद में है:

اَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِيْنَ آمَنُوْا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ

आगे क्या फ़रमाया –

وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ

तर्जुमा – ये इमान वाले अपने से पहले अहले किताब की तरह न बनें।

فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ

(पारा 27, रुकू 18, आयत 16)

तर्जुमा – उन पर ग़फ़लत की लम्बी मुद्दत गुज़र गई इसके नतीजे में उनके दिलों को सख़्त कर दिया गया है।

तो जब इन्सान एक लम्बे अ़र्से अल्लाह तआ़ला से ग़ाफ़िल होकर गुनाहों में गुज़ारता है तो अल्लाह तआ़ला दिल की ज़मीन को सख़्त कर देते हैं, दिल फिर ऐसा सख़्त हो जाता है फ़रमाया:

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ

तर्जुमा – कि हमने इसके बाद उनके दिलों को सख़्त कर दिया था।

فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ

तर्जुमा – वह पत्थर की तरह हो गये।

اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً

तर्जुमा – बल्कि पत्थर से भी ज़्यादा सख़्त हो गये।

فَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهَارُ

तर्जुमा – पत्थरों से तो चश्मे जारी होते हैं।

وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَاءُ

तर्जुमा – पत्थर फटते हैं और उनमें से पानी निकलता है

وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ

(पारा 1, रुकू 9, आयत 74)

और कुछ ऐसे पत्थर होते हैं कि अल्लाह के डर व ख़ौफ़ से कांप उठते हैं। ऐ इन्सान जब तेरा दिल सख़्त होता है तो अल्लाह तआला की जलालते शान से नहीं कांपता, यह पत्थरों से भी परे पार हो जाता है।

दिल कैसे ज़ाकिर बने?

इसलिये मशाइख़ कहते हैं कि अल्लाह का ज़िक्र करते रहो, यह दिल में अपना रास्ता खुद बना लेता है आपने देखा होगा कि कहीं पत्थर के टुकड़े पर अगर पानी का क़तरा क़तरा गिरता रहे तो उसमें भी सूराख़ हो जाता है, जब पानी के क़तरे ने लगातार गिर कर इस पत्थर में अन्दर रास्ता बना लिया, इसी तरह अगर हम अल्लाह तआला के नाम की ज़र्ब हर वक़्त दिल पर लगायेंगे तो हमारे पत्थर दिल में भी यह नाम रास्ता बना लेगा, इस दिल को संवारने के लिये मशाइख़ बाक़ायदा अज़्कार बताते हैं, हम उनको बाक़ायदगी से करें ताकि दिल अल्लाह तआला की मुहब्बत से लबरेज़ हो, फिर हमें रातों को उठने में मज़ा आयेगा, फिर हमें रातों को उठने के लिये घड़ियों की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, बल्कि बिस्तर ही उछाल देगा, कुछ अल्लाह वाले ऐसे होते हैं कि उनको रात के आख़री पहर में बिस्तर उछाल देता है।

تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنٰـهُمْ يُنْفِقُوْنَ

(पारा 21, रुकू 15, आयत 16)

फिर अल्लाह तआला ऐसे बन्दों की दुआओं को क़ुबूल फ़रमाते हैं दुनिया में भी उनकी कामयाबी और आख़िरत में भी उनको कामयाबी मिलती है, अल्लाह तआला के यहां ऐसे बन्दे का ख़ास

मक़ाम होता है।

एक मुजाहिदे आज़म की शब–बेदारी

सलाहुद्दीन अय्यूबी रह० सलेबी जंगों में मस्रूफ़ हैं, दुशमन की तअ़दाद बहुत ज़्यादा है, मुसलमानों की तअ़दाद बहुत थोड़ी है, इत्तिलाअ़ मिली कि दुशमन का बहरी बेड़ा आ रहा है इसपर सलाहुद्दीन अय्यूबी रह० को बड़ी फ़िक्र दामन–गीर हुई कि मुसलमानों की तअ़दाद पहले ही से थोड़ी और ऊपर से दुशमन का बहरी बेड़ा आ रहा है तो यह तो मुसलमानों पर एक मुश्किल वक़्त आ गया, चुनांचे वह बैतुल मुक़द्दस पहुंचे, और सारी रात रुकू और सज्दों मैं गुज़ार दी, अल्लाह के हुज़ूर रोने धोने और दुआएं मांगने में गुज़ार दी, सुबह की नमाज़ पढ़कर जब बाहर निकले देखते हैं कि एक अल्लाह वाले खड़े हैं जिनका पुर–नूर चेहरा बतला रहा था कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें कोई रूहानी ताक़त अ़ता की है, सलाहुद्दीन अय्यूबी रह० क़रीब हुए कि मैं उनसे दुआ़ करवाता हूं, चुनांचे सलाम किया, अ़र्ज़ किया कि हज़रत दुआ़ फ़रमाइये, दुशमन का बहरी बेड़ा आ रहा है, उन्होंने सलाहुद्दीन अय्यूबी रह० के चेहरे को देखा वह भी माद्दे से पार देखना जानते थे, उनको भी अल्लाह ने कोई बसीरत दी हुई थी, पहचान गये फ़रमाने लगे सलाहुद्दीन तेरे रात के आंसुओं ने दुशमन के बहरी बेड़े को डुबो दिया है, और वाक़िई तीन दिन के बाद यह इत्तिलाअ़ मिली कि दुशमन का बहरी बेड़ा रास्ते में डूब चुका है, तो जो इन्सान रातों को उठकर मांगता है अल्लाह तआ़ला उसके लिये दुनिया का जुग़राफ़िया बदल कर रख देते हैं उसके हाथ क्या उठ जाते हैं अल्लाह तआ़ला तक़दीरों के फ़ैसले कर देते हैं, यह मअ़मूली बात नहीं होती यह बहुत बड़ी नेमत होती है, इसलिये हमें इस दिल को बनाने की ज़रूरत है, एक वक़्त था जब कि नौजवान एक दूसरे से आगे बढ़ जाने के लिये मुक़ाबला किया करते थे

وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ

(पारा 30, रुकू 8, आयत 26)

आज तो वह कैफ़ियत ही बदल गई है, कहां गये वह नौजवान जो रात को आख़री पहर में उठते थे और सिस्कियां लेकर अपने रब को मनाया करते थे, आज वह चेहरे नज़र नहीं आते।

तेरी मेहफ़िल भी गई चाहने वाले भी गये
शब की आहें गई सुबह के नाले भी गये

वह चेहरे नज़र नहीं आतेः

तेरी निगाह से दिल सीनों में कांपते थे
खोया गया है तेरा जज़्बे क़लन्दराना

वह नेमत आज हमसे छिन चुकी है, उसको दोबारा हासिल करने की ज़रूरत है, इसलिये हज़रत अनवर शाह कश्मीरी रह० ने फ़रमायाः

मुंह देख लिया आइने में पर दाग़ न देखा सीने में
जी ऐसा लगाया जीने में मरने को मुसलमान भूल गये
तकबीर तो अब भी होती है मस्जिद की फ़िज़ा में ऐ अनवर
जिस ज़र्ब से दिल हिल जाते थे वह ज़र्ब लगाना भूल गये

आज इस बात की ज़रूरत है कि हम वह ज़र्ब लगायें और दिलों को जगायें ताकि दिलों में अल्लाह तआला की मुहब्बत भर जाये, जब यह नूर से भरेगा फिर हमें इबादत में मज़ा आयेगा, इसलिये हम इस दिल को सन्वारें ताकि जब अल्लाह तआला के हुज़ूर पहुंचें तो परवर्दिगार इस दिल पर मुहब्बत की नज़र डालें और अगर यह दिल निजासत से भरा हुआ होगा, जैसे किसी मकरे में निजासत भरी हुई हो जिसे कोई आदमी देखना भी पसन्द नहीं करता, तो बजाये मुहब्बत के अल्लाह तआला उस इस दिल को देखना भी पसन्द नहीं फ़रमायेंगे, इसलिये दुआ है कि अल्लाह तआला हमें इस दिल को बनाने की उसे सन्वारने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये, ताकि हमें आमाल की सही लज़्ज़त नसीब हो जाये, फिर रातों का जागना आसान हो जायेगा, फिर किसी को कहना नहीं पड़ेगा, आज तो हमने देखा कि कुछ उ़लमा भी अपने दिल को तसल्ली दे लेते हैं कि हम तो सारा दिन पढ़ने पढ़ाने में मस्रूफ़ रहते हैं, तहज्जुद वालों का सवाब तो मिल ही जायेगा, मैं समझता हूं कि सहाबा किराम तो

शायद सब्ज़ी बेचने में लगे रहते थे, वह दीन के काम में सारे दिन मशग़ूल नहीं रहते थे, वह रात कैसे गुज़ारते थे? तो वह अगर सारा दिन दीन के काम में रहने के बावुजूद रात को मुसल्ले की पीठ पर खड़े हो सकते हैं तो हमें भी चाहिये कि हम उनकी पैरवी करें, जिस रास्ते पर वह चले अगर हम भी उसी रास्ते पर चले तो हमें परवर्दिगार का वस्ल नसीब होगा, अगर रास्ता बदल जायेगा तो मंज़िल भी बदल जायेगी।

तहज्जुद कैसे नसीब हो?

हसन बसरी रह० की ख़िदमत में एक शख़्स आया और कहने लगा हज़रत तहज्जुद नसीब नहीं होती कोई तरीक़ा बतला दीजिए, हज़रत ने फ़रमायाः ऐ दोस्त! तू अपने दिन के आमाल को सन्वार ले अल्लाह तआला रात के आमाल की तौफ़ीक़ अता फ़रमायेंगे, इसलिये हम दिन के आमाल को देखें और ग़ौर करें उनको सन्वारें, अल्लाह का ज़िक्र करें, ताकि फिर दिल पर अल्लाह का नूर आजाये फिर यह दिल हमेशा रात के आखरी पहर में सोने नहीं देगा, यह जगायेगा, बल्कि अल्लाह वालों को तो रात में वह मज़ा आता है जो उनको दिन की घड़ियों में नहीं आता, हज़रत मौलाना शिअरानी रह० ने लिखा कि पहले लोग रात के आने के ऐसे मुन्तज़िर हुआ करते थे, जैसे दूल्हा रात के आने का मुन्तज़िर रहता है, हमारे मशाइख़ ने फ़रमायाः "जो दम ग़ाफ़िल वह दम काफ़िर" जो सांस भी ग़फ़लत में गुज़र गया, यूं समझो कि वह सांस कुफ़्र में गुज़र गया है, हज़रत मज्ज़ूब रह० एक मर्तबा कहीं जा रहे थे, कोई वाक़िफ़ मिला, पूछा कि हज़रत क्या हाल है, फ़रमायाः

पिन्शन हो गई है क्या बात है अपनी
अब दिन भी है अपना और रात है अपनी
अब और ही कुछ है मेरे दिन रात का आलम
हर वक़्त ही रहता है मुलाक़ात का आलम

दुआ करें कि अल्लाह तआला ऐसी कैफ़ियत हमें भी अता फ़रमा दें।

मुख़्लिस और बा–अ़मल आ़लिम बनिए

इफ़्तिबास

आज अ़जीब बेअ़मली का वक़्त है दिल ख़ौफ़ के आंसू रोता है कि वह असलाफ़ जिनके कसरते मुतालआ़ की वजह से तेल का ख़र्चा जो रातों को चिराग़ जलाते थे उनके माहाना खाने के ख़र्चे से ज़्यादा हुआ करता था इतना मुताला करते थे आज उनकी औलादें पेट भरने की आ़दी हो गई हैं, जिनके असलाफ़ चटाईयों पर बैठकर इशा के वुज़ू से फ़जर की नमाज़ें पढ़ लिया करते थे आज उनकी औलादें नर्म बिस्तरों पर रात गुज़ारने की आ़दी हो गई हैं, वह हज़रात जो सुबह के वक़्त नूर के तड़के क़ुरआने मजीद की तिलावत के साथ अपने दिन की शुरूआ़त करते थे आज उनकी औलादें सुबह के अख़बार के साथ दिन की शुरूआ़त करती हैं, सोचिये तो सही आज हम कहां पहुंच गये हैं।

*(हज़रत मौलाना पीर फ़क़ीर
ज़ुलफ़क़्क़ार अहमद साहब नक़्शबन्दी)*

الحمدللّٰہ و کفٰی وسلامٌ علٰی عبادہ الذین اصطفٰی اما بعد!

اعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرّجیم ، بسم اللّٰہ الرّحمٰن الرّحیم

﴿یَرْفَعِ اللّٰہُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مِنْکُمْ وَالَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ○﴾

(پ۲۸،ع۲،آیت۱۱)

وَقَالَ اللّٰہُ تَعَالٰی فِیْ مَقَامٍ اٰخَرٍ

﴿اِنَّمَا یَخْشَی اللّٰہَ مِنْ عِبَادِہِ الْعُلَمٰٓؤا○﴾ (پ۲۲،ع۱۶،آیت۲۸)

وقال اللّٰہ تعالٰی فِیْ مقامٍ اٰخرٍ

﴿وَفَوْقَ کُلِّ ذِیْ عِلْمٍ عَلِیْمٌ○﴾ (پ۱۳،ع۳،آیت۷۶)

سبحان ربك رب العزۃ عما یصفون وسلام علی المرسلین والحمد للّٰہ رب العالمین

اللّٰھم صلِّ علٰی سیدنا محمّد وعلٰی آل سیدنا محمد وبارك وسلم

اللّٰھم صلِّ علٰی سیدنا محمّد وعلٰی آل سیدنا محمد وبارك وسلم

اللّٰھم صلِّ علٰی سیدنا محمّد وعلٰی آل سیدنا محمد وبارك وسلم

पायदार इ़ज़्ज़त कैसे मिले?

दुनिया में हर इन्सान कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारने का ख़्वाहिशमन्द है, ज़िन्दगी की कामयाबी दो तरह से मिलती है, एक माल से दूसरे नेक आमाल से, मगर दोनों में एक बुनियादी फ़र्क़ है।

माल जिस तरह आ़र्ज़ी और फ़ानी चीज़ है इसी तरह इससे मिलने वाली इ़ज़्ज़त भी फ़ानी होती है।

इस शाख़े नाज़ुक पे आशियाना बनेगा नापायदार

जिन लोगों ने माल की वजह से इ़ज़्ज़तें उठाईं, एक दिन उनको ज़िल्लत उठानी पड़ी, दूसरी इ़ज़्ज़त जो आमाल से मिलती है वह दायमी होती है इसलिये आमाले सालिहा बाकियातुस्सालिहात में से होते हैं, लेकिन नेक आमाल करने के लिये इ़ल्म की ज़रूरत है तो यूं मालूम हुआ कि अगर इन्सान इ़ज़्ज़तों भरी ज़िन्दगी गुज़ारना चाहे तो उसे इ़ल्म हासिल करने की ज़रूरत पड़ती है।

हज़रत अ़ली रज़ि० का माल पर इल्म को तर्जीह देना

एक शख़्स हज़रत अ़ली रज़ि० के पास हाज़िर हुआ और कहने लगा हज़रत मैं इल्म हासिल करूं या माल कमाऊँ? आपने फ़रमाया कि इल्म हासिल करो, इसलिये कि इल्म को माल पर कई वजह से फ़ज़ीलत हासिल है, उसने कहा हज़रत थोड़ी तफ़्सील बतला दीजिए तो फ़रमायाः

● इल्म अंबिया किराम की मीरास है, जबकि माल फ़िरऔन और क़ारून की मीरास है।

● इल्म जितना ज़्यादा बढ़ता है मुहब्बत करने वाले ज़्यादा हो जाते हैं और माल जितना ज़्यादा बढ़ता है हसद करने वाले ज़्यादा हो जाते हैं।

● वक़्त के साथ साथ माल की क़ीमत घटती जाती है जबकि वक़्त के साथ साथ इल्म की क़ीमत बढ़ती चली जाती है।

● तुझे माल की हिफ़ाज़त करनी पड़ेगी, जबकि इल्म ख़ुद तेरी हिफ़ाज़त करेगा।

● तेरे माल को हर वक़्त चोरी का डर रहेगा और तेरे इल्म को कोई डर नहीं यह दौलत तेरे सीने में महफ़ूज़ रहेगी।

फ़रमाया कि क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला माल के बारे में दो सवाल पूछेंगे कहां से कमाया? और कहां ख़र्च किया? तो कमाने का सवाल अलग और लगाने का सवाल अलग, इल्म के बारे में एक सवाल पूछेंगे कि तूने अपने इल्म पर कितना अ़मल किया? इसका माख़ज़ नहीं पूछेंगे कि इसका माख़ज़ क्या था? बल्कि अ़मल कितना किया यह पूछेंगे।

● फिर एक अ़जीब बात फ़रमाई कि अगर तू चाहे तो अपने इल्म के ज़रिये से माल हासिल कर सकता है मगर माल के ज़रिये से इल्म हासिल नहीं कर सकता।

और फिर फ़रमाया कि माल के ज़्यादा होने से आदमी में तकब्बुर बढ़ता है जैसे फ़िरऔन ने कहा था انا ربکم الاعلی और इल्म

के बढ़ने से इन्सान में तवाज़ो आती है, इसलिये नबी अ़लै० ने फ़रमाया था ماعبدناك حق عبادتك وماعرفناك حق معرفتك तो इल्म को माल पर बहुत ज़्यादा फ़ज़ीलत हासिल है, खुशनसीब हैं वह तालिबे इल्म जिनको अल्लाह तआ़ला ने इल्म के हासिल करने के लिये क़ुबूल फ़रमाया है चुन लिया है।

दुनिया दारुल असबाब है

यह दुनिया दारुल असबाब है जहां पर हमेशा इज़्ज़त मिलने का कोई न कोई सबब होता है अंबिया किराम को अल्लाह ने कुछ इम्तियाज़ी शान अ़ता फ़रमाई और उनका सबब इन का इल्म बना, क़ुरआने अज़ीमुश्शान, इसमें से चन्द मिसालें जिसके बग़ैर तो दिल को सुकून ही नहीं आता।

मसजूदे मलायका हज़रत आदम अ़लै०

हज़रत आदम अ़लै० मसजूदे मलायका बने यह उनकी एक इम्तियाज़ी शान थी इसका सबब क्या बना? "علّم ادم الاسماءَ كلها" अल्लाह तआ़ला ने उन्हें इल्मुल-अस्मा, इल्मुल-अशिया अ़ता फ़रमा दिया था, जब फ़रिश्तों से पूछा कि तुम हमें इन चीज़ों के नाम बताओ कहने लगे "سُبْحٰنَكَ لَاعِلْمَ لَنَا اِلَّا مَاعَلَّمْتَنَا" और जब सय्यिदना आदम अ़लै० से पूछा तो उन्होंने वह नाम बता दिये फ़रमाया "اُسْجُدُوْا لِاٰدَمَ" फ़रिश्तों अब तुम आदम को सजदा करो तो सय्यिदना आदम अ़लै० मसजूदे मलायका बने, और इसका सबब ज़ाहिरी तौर पर इल्म बना जो अल्लाह तआ़ला ने उनकी तरफ़ वदीअ़त कर दिया था तो इल्म सबब बन रहा है इज़्ज़तें मिलने का, यहां से किसी आरिफ़ ने नुक्ता निकाला कि हज़रत आदम अ़लै० को चीज़ों के नामों का इल्म अ़ता किया गया था जिस पर उनको इतनी इज़्ज़तें मिलीं, ऐ मोमिन अगर तुझे अल्लाह तआ़ला के नामों की मअ़रिफ़त नसीब हो जाये तो तुझे कितनी इज़्ज़तें नसीब हो जायेंगी।

हज़रत दाऊद अ़लै०

सय्यिदना दाऊद अ़लै० अल्लाह तआ़ला के पैग़म्बर हैं अल्लाह

तआला ने उनको जवानी में नुबुव्वत से भी सरफ़राज़ फ़रमाया और उनको दुनिया की भी शाही अता फ़रमाई, तख़्त व ताज भी दिया, यह तख़्त व ताज उनको क्यों मिला? अल्लाह तआला ने उनको एक ख़ास चीज़ बनाने का इल्म अता कर दिया था, वह लोहे की कड़ियों से ज़िरह बनाते थे अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैः

وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ

(पारा 17, रुकू 6, आयत 80)

'अ़ल्लमनाहु' हमने उनको इल्म दिया था, सुब्हानल्लाह निस्बत इल्म की तरफ़ की तो यह इल्म था जो उनको अ़ता किया था यह कि लोहे की कड़ियां जोड़ते चले जाते थे और उसकी ज़िरह बनाते थे और यह सबब बन गया उनके लिये ज़ाहिरी तौर पर दुनिया पर हुकूमत करने का, तो यह इम्तियाज़ी शान क्यों मिल रही है? इसलिये कि उनको एक ख़ास तरह का इल्म अ़ता किया गया था, "والمناله الحديد" लोहे को उनके हाथ में नर्म कर दिया था।

हज़रत सुलैमान अ़लै०

उनके बेटे हज़रत सुलैमान अ़लै० को मल्का बिल्क़ीस पर अल्लाह तआला ने फ़तह अ़ता फ़रमाई थी इ़ज़्ज़त मिली और फ़ातेह बने और मल्का बिल्क़ीस ने इस्लाम क़ुबूल किया, उसका ज़ाहिरी सबब क्या बना? उनका इल्म बनाया "اَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ" (पारा 19, रुकू 17, आयत 16) ऐ लोगो! हमें परिन्दों से गुफ़्तुगू का इल्म अ़ता किया गया, हुद हुद के साथ गुफ़्तुगू की फ़रमाया कि भाई किधर ग़ायब थे "اَمْ كُنْتَ مِنَ الْغَائِبِيْنَ" कहने लगा जी मैं आपके लिये ख़बर लाया हूं तब उसने मल्का बिल्क़ीस की बात सुनाई, यहां से यह वाक़िआ शुरू हुआ, और बिल-आख़िर मल्का बिल्क़ीस को अल्लाह तआला ने इस्लाम अ़ता किया तो अब बताइये सय्यिदना सुलैमान अ़लै० को यह जो इ़ज़्ज़त मिली इसका सबब क्या बना उनका इल्म बना। (सुब्हानल्लाह)

हज़रत यूसुफ़ अ़लै०

सय्यिदना यूसुफ़ अ़लै० को अल्लाह ने इज़्ज़तें अ़ता कीं एक वह भी वक़्त था कि मिस्र के बाज़ार में उनके दाम लगाये जा रहे हैं, बिक रहे हैं, ख़रीदार आ रहे हैं, और एक वह भी वक़्त है कि महल में गुलाम बनकर जा रहे हैं फिर तब्दीली क्या आई? अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ فَاٰتَيْنَاهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ

(पारा 12, रुकू 13, आयत 22)

अल्लाह तआ़ला ने कामयाब फ़रमाया कई साल जेल में रहना पड़ा, बिल–आख़िर एक ऐसा वाकिआ़ पेश आया कि जिसकी वजह से जेल से निकाले गये, वह जेल से निकाले गये और तख़्त पर बैठाये गये इसका सबब उनका क्या हुआ? इसका सबब इल्म बना, उनको अल्लाह तआ़ला ने ख़्वाब की ताबीर का इल्म अ़ता किया था

وَكَذٰلِكَ عَلَّمْتَنِىْ مِنْ تَاوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ

तो जेल के साथियों ने बादशाह को जाकर बताया कि एक आदमी है जो ख़्वाब की ताबीर बताता है और ठीक ठीक बताता है बादशाह ने उनको बुलवाया,

اِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا وَكِيْلٌ اَمِيْنٌ

आज के दिन आपने इज़्ज़त पाई, फ़रमायाः

اِجْعَلْنِىْ عَلٰى خَزَائِنِ الْاَرْضِ

यह दुनिया के ख़ज़ानों की कुंजियां मेरे हवाले कर दो तख़्ते से लेकर उनको तख़्त पर पहुंचा रहे हैं, शाही मिल रही है, सबब क्या बन रहा है? उनका इल्म बन रहा है, इससे मालूम हुआ कि उन अंबिया किराम को अल्लाह तआ़ला ने जो इम्तियाज़ी शान अ़ता फ़रमाई इसका ज़ाहिरी सबब उनका इल्म बना, बल्कि एक वह हस्ती जो ग़ैर नबी है हज़रत ख़िज़र अ़लै० जिनकी विलायत पर उ़लमा मुत्तफ़िक़ हैं, लेकिन उनकी नुबुव्वत में जमहूर उ़लमा ने कहा कि वह

नबी नहीं हैं, चन्द हज़रात ने कहा कि नबी हैं, एक वली आदमी को एक नबी आदमी के उस्ताज़ बनने का शर्फ़ हासिल हो रहा है, यह कितनी अजीब बात है, यह किस लिये कि अल्लाह ने उनको एक अज़ीमुश्शान इल्म अता किया था, कुरआने अज़ीमुश्शान में फ़रमाया

فَوَجَدَا عَبْدًا مِنْ عِبَادِنَا آتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا

(पारा 15, रुकू 21, आयत 65)

अल्लाह तआला ने उनको इल्मे लदुन्नी अता किया था यह तक्वीनी इल्म था, हज़रत मूसा अलै० के पास तशरीई इल्म था, शरीअत का इल्म था, और उनके लिये तक्वीनी उमूर का इल्म न होना कोई नुक़्स नहीं था वह एक अलग चीज़ है वह इन्तिज़ामी काम है ताहम अल्लाह तआला ने उनको फ़रमाया कि जाओ उनसे मिलो, अब मूसा अलै० पूछ रहे हैं और वह जवाब दे रहे हैं तो एक ग़ैर नबी को नबी के उस्ताज़ होने का शर्फ़ हासिल हुआ किस वजह से इल्म की वजह से।

सय्यिदना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

आपको इल्म अता फ़रमाया सय्यिदुल अव्वलीन और आख़रीन बनाया इल्म कितना अता किया? फ़रमाया कि मेरे महबूब!

وَعَلَّمَكَ مَالَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا

(पारा 5, रुकू 14, आयत 113)

तो कुरआने मजीद से कितनी मिसालें मिलती हैं कि यह शान यह मक़ाम यह इज़्ज़तें उनको इल्म के सबब से मिलीं, इल्म इन्सान को इज़्ज़तें देता है ज़हन में सवाल पैदा होता है कि इल्म है क्या?

इल्म क्या है?

हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ीअ़ साहब एक मर्तबा तशरीफ़ फ़रमा थे इस आजिज़ को भी उनकी सोहबत में बैठने का मौक़ा नसीब हुआ, हज़रत तालिबे इल्मों से सवाल पूछ रहे थे कि भई इल्म का मफ़हूम क्या है, किसी ने कहा जानना, किसी ने कहा पहचानना, किसी ने

कुछ कहा किसी ने कुछ कहा, हज़रत ख़ामोश रहे थोड़ी देर बाद एक तालिबे इल्म ने कहा हज़रत आप ही बता दीजिए, बड़ों की बातें बड़ी होती हैं, एक अजीब बात फ़रमाई कि इल्म वह नूर है जिसके हासिल करने के बाद अमल किये बगैर चैन नहीं आता, अगर यह है तो इल्म है वरना फिर बोझ है।

अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में बनी इसराईल के बेअमल पीरों को कुत्ते की मिसाल दी "बलअम बाऊरा" बड़ा सूफ़ी साफ़ी था

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَٰهُ بِهَا وَلَٰكِنَّهُۥٓ أَخْلَدَ إِلَى ٱلْأَرْضِ وَٱتَّبَعَ هَوَىٰهُ

(पारा 9, रुकू 12, आयत 176)

ख़्वाहिशात की पैरवी की "فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ الْكَلْبِ" इसकी मिसाल कुत्ते की सी थी और बनी इसराईल के जो बेअमल उलमा थे उनकी मिसाल गधे की सी है, "كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا" यह गधे हैं जिन पर बोझ लदा हुआ है, लिहाज़ा इल्म में और मालूमात में फ़र्क़ होता है।

इल्म और मालूमात का फ़र्क़

अज़ीज़ तालिब इल्मों इस बात को ज़हन में बिठा लेना कि इल्म में और मालूमात में फ़र्क़ होता है, मालूमात तो कुफ़्फ़ार के पास भी होती हैं उसको इल्म नहीं कहेंगे, इस आजिज़ ने अपनी ज़िन्दगी में ऐसी जगहों पर बैठने की सआदत पाई, कि जहां मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब के लोग बैठे अपनी अपनी दीन की बातें कर रहे थे, यह यहूदी है उनका रबाई बैठा है, यह ईसाईयों का पादरी, यह फ़लां का फ़लां, यह फलां का फ़लां, इस आजिज़ को भी इस्लाम की नुमाइन्दगी करने का मौक़ा नसीब हुआ, ऐसे ऐसे लोगों को देखा, जो गैर मुस्लिम हैं लेकिन अरबी ज़बान वह इतनी रवानी से बोलते हैं जैसे कि उनकी मादरी ज़बान हो, अरबी में गुफ़्तुगू करते हैं, आयत पढ़ते हैं आप हदीस पढ़ें वह इसका तर्जुमा बिल्कुल सही बतलायेंगे (लफ़्ज़ी तर्जुमा) लेकिन उनके पास यह इल्म नहीं बल्कि मालूमात हैं।

ईमान लाने से पहले कुरआने पाक का तर्जुमा

"पकथल" जिसने कुरआने पाक का तर्जुमा पहली बार अरबी से

अंग्रेज़ी में किया जो सबसे बेहतरीन तर्जुमा अंग्रेज़ी में समझा जाता है, तर्जुमा मुकम्मल करने तक वह आदमी काफ़िर था, ज़बान-दानी के ज़ोर पर उसने तर्जुमा मुकम्मल किया, लेकिन यह क़ुरआने करीम की इन्जिज़ाबी क़ुव्वत थी, जिसने बिल-आख़िर उसको कलिमा पढ़ने पर मजबूर किया और वह मुसलमान बन गया, लेकिन पूरा तर्जुमा करने तक वह आदमी ग़ैर मुस्लिम था, तो यह मुमकिन है कि एक आदमी ग़ैर मुस्लिम हो और उसके पास अ़रबी ज़बान की महारत भी हो और वह क़ुरआन व हदीस का सही तर्जुमा भी करना जानता हो तो यह नहीं कहेंगे कि उसके पास इल्म है जो नूर की शक्ल में है और बन्दे को अ़मल पर उभारे बन्दे के अन्दर आ़जिज़ी और तवाज़ो पैदा करे, उसके अन्दर अख़्लाक़ पैदा करे और जो सिर्फ़ मालूमात की हद तक हो बातों की हद तक हो वह मालूमात हैं, इसलिये हदीसे पाक में इल्मे नाफ़ेअ़ मांगा गया (नफ़ा देने वाला इल्म) कई मर्तबा ऐसा होता है कि बन्दा ज़ाहिर में आ़लिम भी होता है लेकिन उसका दिमाग़ तो आ़लिम होता है मगर दिल उसका जाहिल होता है, क़ुरआन अ़ज़ीमुश्शान में (सुब्हानल्लाह) अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाते हैं "أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَٰهَهُ هَوَاهُ" क्या देखा आपने उसे जिसने अपनी ख़्वाहिशात को अपना मअ़बूद बना लिया (अल्लाहु अकबर) ख़्वाहिश परस्ती, शहवत परस्ती, ज़न परस्ती, ज़र परस्ती, यह सबकी सब बुत परस्ती की क़िस्में हैं, ख़ुदा परस्ती कोई और चीज़ होती है, फ़रमाया "देखा आपने उसे जिसने अपनी ख़्वाहिशों को अपना मअ़बूद बना लिया" "وَأَضَلَّهُ اللَّهُ عَلَىٰ عِلْمٍ" इल्म के बावुजूद अल्लाह ने उसको गुमराह कर दिया, बस उससे डरने की ज़रूरत है, अल्लाह फ़रमाते हैं इल्म के बावुजूद हमने उसको गुमराह कर दिया।

इल्म के बाद गुमराही

जो लोग सिग्रेट पीते हैं वह लोग जानते हैं इससे कैंसर होता है और कई मर्तबा वह बच्चों को बैठाकर नसीहत भी करते हैं कि बच्चो तुम सिग्रेट मत पीना हमने तो ज़िन्दगी बरबाद कर ली तुम न पीना,

औरों को नसीहत भी करते हैं तो जानते भी हैं और दूसरों को नसीहत भी कर रहे हैं और जो सिग्रेट बनाने वाली कम्पनी है वह भी लिख देती है सिग्रेट नोशी सेहत के लिए नुक़्सानदह है अब पीने वाले को पता है कि नुक़्साने सेहत है औरों को मना भी करता है लेकिन उसके दिल में कुछ वक़्त के बाद एक ऐसी तलब पैदा होती है कि वह घुटने टेक देता है और फिर सिग्रेट पीनी शुरू कर देता है, इसको कहते हैं इल्म के बावुजूद गुमराह होना।

तो कई मर्तबा इन्सान को पता होता है कि यह कबीरा गुनाह है मगर इसपर शैतान सवार होता है, नफ़्स ग़ालिब होता है, अक़्ल पर पर्दे पड़ जाते हैं, जानने के बावुजूद कि यह कबीरा गुनाह है फिर भी वह इसका मुर्तकिब होता है इसे कहते हैं इल्म के बावुजूद गुमराह होना।

"اَفَرَاَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ" (अल्लाहु अकबर) कानों पर और दिल पर मोहर ठप्पा लग गया, "وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً" आंखों पर पट्टी बांध दी "فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْ بَعْدِ اللّٰهِ" "اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ" तो इल्म का हासिल करना यह पहला क़दम है, लेकिन इल्म उसे कहते हैं जिसपर इन्सान अमल करे वरना वह मालूमात कहलाता है, इसलिये फ़रमाया "العلمُ بِلاعملٍ وبالٌ" इल्म बग़ैर अमल के वबाल और "والعملُ بلا عملٍ ضلالٌ" और अमल बग़ैर इल्म के गुमराही है, तो सबसे पहले इल्म हासिल करना और दूसरा क़दम यह है कि इसपर अमल करना।

हुसूले इल्म के लिये असलाफ़ की मेहनतें

हमारे असलाफ़ ने इल्म हासिल करने के लिये बड़ी क़ुर्बानियां दीं, बडी मेहनतें कीं, बड़ी लगन के साथ अपने काम में मगन रहे बस लगे रहते थे मदरसा को अपना वतन समझते थे और किताबों के कागज को अपना कफ़न समझते थे, ज़िन्दगियां लगा देते थे, पढ़ने पढ़ाने में, इसीलिये सुफ़ियान सौरी रह० फ़रमाया करते थे अगर नेक नीयत हो तो तालिब इल्म से अफ़ज़ल और कोई नहीं होता, इतनी बरकत वाली यह शख़्सियत होती है कि अल्लाह तआला के फ़रिश्ते

भी बरकत के हुसूल के लिये उनके पांव के नीचे अपने पर बिछाते हैं, इसीलिये फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला जब किसी आ़म मोमिन से ख़ुश होते हैं तो उसके लिये जन्नत में एक महल बनवाते हैं लेकिन जब किसी तालिब या आ़लिम से ख़ुश होते हैं तो उसके लिये जन्नत में शहर आबाद करा देते हैं, जैसे दुनिया में नवाब होते हैं उनका अपना एक इलाक़ा होता है, तो अल्लाह आ़लिम से ख़ुश होंगे तो जन्नत के अन्दर इसके लिये शहर आबाद फ़रमायेंगे, इसकी अपनी स्टेट होगी, इसलिये फ़रमाया "من كانَ فِي طلبِ الْعلمِ كانَ الْجَنَّة فِي طلبه" जो इन्सान इल्म की तलब में रहेगा जन्नत उसके तलब में रहेगी, यह अल्लाह तआ़ला का बड़ा एहसान है कि वह अपने बन्दों को दीन के इल्म के हुसूल के लिये क़ुबूल फ़रमालें, आप हज़रात बड़े ख़ुश नसीब हैं, अल्लाह तआ़ला के पसन्दीदा बन्दे हैं क़ुरआन इसपर दलील, अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं "ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا" फिर हमने इस किताब का वारिस अपने उन बन्दों को बना दिया जिनको हमने चुन लिया था जो हमारे चुने हुए बन्दे थे, हमारे लाडले थे, हमारे प्यारे थे, हमारे महबूब बन्दे थे तो जो किताब का वारिस होता है वह अल्लाह का प्यारा होता है, कितनी रहमत है अल्लाह तआ़ला की कि उसने इस किताब के इल्म के लिये हमारी ज़िन्दगियों को क़ुबूल कर लिया, हम अल्लाह तआ़ला का एहसान मानते हुए मेहनत के साथ इल्म हासिल करें निहायत लगन के साथ।

इमाम शाफ़ई रह० की इमाम मालिक रह० से मुलाक़ात

इमाम शाफ़ई रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा मिना के बाज़ार में था हज के ज़माने में फ़रमाते हैं कि जमरात से फ़राग़त हो गई, मुझे एक बूढ़ा आदमी मिला, थोड़ी देर उसने मुझे देखा और कहने लगा, तुझे अल्लाह का वास्ता तू मेरी दावत को क़ुबूल कर ले, फ़रमाते हैं मैं ने उसकी दावत को क़ुबूल कर लिया, और वह भी ऐसा बेतकल्लुफ़ कि जो उसके पास था पेश कर दिया, उसने रोटी का एक टुकड़ा निकाला और वही दस्तरख़्वान पर रख दिया और कहने

लगा खाओ मैंने खाना शुरू कर दिया, वह मुझे देखता रहा और कहने लगा कि मुझे लगता है कि कुरैशी है मैंने कहा हां, लेकिन तुझे कैसे पता चला, उसने कहा कि यह कुरैशी दावत देने में भी बेतकल्लुफ़ होते हैं और कुबूल करने में भी फिर बातें करते रहे मुझे पता चला कि यह मदीने से आया है, फ़रमाते हैं मैंने इससे इमाम मालिक रह० के बारे में पूछा उसने मुझे उनके कुछ हालात सुनाये जब उसने देखा कि मैं बड़े शौक़ से उनके हालात पूछ रहा हूं तो वह कहने लगा कि अगर आप मदीने जाना चाहते हैं तो यह ख़ाकी रंग का ऊँट हमारे पास ख़ाली है यह हम आपको दे देंगे आप मदीना पहुंच जायेंगे, कहने लगे कि मैं तो पहले ही से तैयार था, लिहाज़ा मैंने हामी भर ली, फ़रमाते हैं मैं काफ़िले के साथ सवार हुआ, हमें रास्ते में मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा पहुंचने में सोलह दिन लगे इस दौरान मैंने सोलह कुरआने मजीद पढ़ लिये, आज यह हाल है कि हज करके आते हैं। दस–दस दिन मदीने में गुज़ार कर आते हैं, एक कुरआने मजीद भी मुकम्मल करने की तौफ़ीक़ नहीं होती, हमारे असलाफ़ जब हज के लिये आते जाते थे तो सैंकड़ों लोग उनके हाथों पर कलिमा पढ़कर मुसलमान हुआ करते थे, और आज हज करके आते हैं खुद मुसलमान बनकर सही तरह से नहीं आते, वापस आकर फिर गुनाहों की तरफ़ चल पड़ते हैं, तो इमाम शाफ़ई रह० ने हालते सफ़र में सोलह दिन में सोलह मर्तबा कुरआने मजीद पूरे किये, फ़रमाते हैं: जब हम मस्जिदे नबवी सल्ल० में पहुंचे तो नमाज़ के बाद मैंने देखा एक आदमी ऊँचे क़द का है और उसने एक तहबन्द बान्धा है और एक चादर लपेटी हुई है, वह एक ऊँची जगह बैठ गया और कहने लगा "قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم" और लोग उसके इर्द गिर्द बैठ गये तो मैं समझ गया कि यही इमाम मालिक रह० होंगे, यह वह अय्याम थे जब इमाम मालिक रह० हदीसों का इमला करा रहे थे "मुवत्ता इमाम मालिक" की जो हदीस हैं उनको लिखवा रहे थे मैंने भी एक तिनका उठा लिया और दिल में यह सोचा कि यह मेरी क़लम है और हाथ सामने कर लिया और सोचा कि यह मेरी कापी है, और

मैंने अपनी ज़बान से इस तिनके को लगाया कि जैसे मैं उसको स्याही लगा रहा हूं और हथेली पर लिखना शुरू कर दिया, अब तलबा काग़ज़ों पर लिख रहे हैं, चुनांचे मैंने भी उनसे इमला की निस्बत हासिल करने के लिये हथेली पर लिखना शुरू कर दिया, कहने लगे इस दौरान इमाम मालिक रह० ने मेरी तरफ़ देखा उन्होंने इस महफ़िल में एक सौ सत्ताईस (127) हदीसें लिखवाईं, जब अगली नमाज़ का वक़्त हो गया तो महफ़िल बरख़ास्त हो गई, तलबा चले गये, फ़रमाने लगे (इमाम शाफ़ई रह०) कि इमाम मालिक रह० ने मुझे देखा तो मुझे अपनी तरफ़ बुलाया और मुझे कहा तू अजनबी मालूम होता है मैंने कहा जी हां मैं मक्का मुकर्रमा से आया हूं, कहने लगे कि तू हथेली पर क्या कर रहा था? मैंने कहा कि मैं हदीसें लिख रहा था कहने लगे कि दिखाओ, मैंने जो दिखाया तो हथेली पर तो कुछ लिखा हुआ ही नहीं था, उन्होंने कहा यहां तो कुछ नहीं लिखा मैंने कहा कि हज़रत न मेरे पास क़लम था न काग़ज़ मैं तो आप जो इमला लिखवा रहे थे उसकी निस्बत हासिल करने के लिये एक तिनके से बैठा हुआ हथेली पर लिख रहा था, इसपर इमाम मालिक रह० नाराज़ हुए कि यह तो हदीसे पाक के अदब के ख़िलाफ़ है कि तुम ने इस तरह से लिखा, मैंने कहा कि हज़रत मैं तो ज़ाहिरी मुनासिबत के लिये हाथ पर तिनका चला रहा था, हक़ीक़त में तो हदीसे पाक दिल में लिख रहा था, कहने लगे कि इमाम मालिक रह० ने फ़रमाया कि अच्छा अगर तू दिल में लिख रहा था तो तू मुझे चन्द एक रिवायत उसमें से सुना दे तो मैं तुझे जानूं, फ़रमाने लगे, मैंने उनको एक से लेकर एक सौ सत्ताइस (127) हदीसें मतन और सनद के साथ सुना दीं, यह इल्म, 127 हदीसें जिस तरतीब से लिखवाई थीं, तमाम उसी तरतीब पर उनको सुना दीं, फ़रमाते हैं: इमाम मालिक रह० बड़े ख़ुश हुए, कहने लगे कि अच्छा ऐ नौजवान तू मेरा मेहमान बन जा, अन्धे को क्या चाहिये? दो आंखें! मैं तो पहले ही से तैयार था कहने लगा कि हज़रत मैं तैयार हूं, इमाम मालिक रह० घर तशरीफ़ ले गये, इमाम मालिक रह० के घर में उनकी बेटियां थीं और

यह आलिमा थीं हदीस की हाफ़िज़ा थीं, कुरआने मजीद की हाफ़िज़ा थीं, बहुत तक़िय्या पाक साफ़ ज़िन्दगी गुज़ारने वाली औरतें, यहां तक कि किताबों में लिखा है कि इतना इल्म रखती थीं कि इमाम मालिक रह० कई मर्तबा हदीस का दर्स मस्जिदे नबवी सल्ल० में देते वह पर्दे के पीछे बैठकर हदीस के सबक़ में शरीक होतीं और उनका इल्मी मेअ़यार इतना ऊँचा था कि कई मर्तबा उनका शागिर्द जब किसी हदीसे पाक की तिलावत करता और इबारत में कहीं ग़लती करता तो उनकी बेटियां लकड़ी के ऊपर लकड़ी मार कर आवाज़ करतीं, जिससे इमाम मालिक रह० समझ जाते कि पढ़ने वाले ने ग़लती की है, आपने जाकर घर में बताया कि आज एक आलिम आ रहे हैं, और वह बड़े दाना हैं और बड़ा इल्म का शौक़ है, वह तो बहरहाल इमाम शाफ़ई थे; उन्होंने घर में खाने का बड़ा एहतमाम किया, बिस्तर लगाया, मुसल्ला बिछाया लोटा पानी का भर कर रखा "اِکرَامِ لضیوف الرحمٰن" इमाम शाफ़ई रह० ने खाना खा लिया लेट गये सुबह को इमाम मालिक रह० के साथ मस्जिद में आ गए जब इशराक़ की नमाज़ पढ़ कर वापस घर गए तो इमाम मालिक रह० ने फ़रमाया इमाम शाफ़ई से कि मेरी बेटियों को आप पर एक ऐतिराज़ वाक़िअ़ हुआ है, और मैं आपको पूछता हूं, यह सच्चे लोग थे, खरे लोग थे, साफ़ बात करते थे, फ़रमाया कि बच्चियां कह रही हैं कि अब्बू आपने तो कहा था कि यह बड़े नेक और अच्छे इन्सान हैं लेकिन हमें उनपर इश्काल हुआ है।

बेटियों का ऐतिराज़

पहला यह कि हमने जितना खाना पका कर भेजा था वह तो कई आदमियों के लिये काफ़ी था, माशा–अल्लाह यह अकेले मेहमान सुब्हानल्लाह बिल्कुल साफ़ होकर बर्तन वापस आये कि हमें धोने की भी ज़रूरत पेश न आई।

दुनिया वालों का शिक्वा

आज दुनिया कहती है कि बच्चों को आलिम बनाओगे तो यह

रोटी कहां से खायेंगे, आप बताइये आज तक आपने कभी सुना कि कोई आ़लिम बा–अ़मल हो या हाफ़िज बा–अ़मल हो और वह भूख प्यास से एड़ियां रगड़ते हुए मर गया हो कोई एक मिसाल नहीं दे सकते मैंने दुनिया के कई मुल्कों में यह सवाल पूछा कोई एक मिसाल तो बता दो, लेकिन हमें मालूम हैं कि एम बी बी एस डाक्टर, पी एच डी डाक्टर कई ऐसे थे कि बुढ़ापे में उनका वह वक़्त भी आया कि भूख प्यास से एड़ियां रगड़ रगड़ कर मर गये, तो रिज़्क़ किस लाइन पर ज़्यादा मिला? दीनी लाइन से ज़्यादा मिला, हमारे पास यह मिसालें तो हैं कि खाना ज़्यादा खा लिया और मौत आ गई, इमाम मुस्लिम रह० की वफ़ात हदीस तलाश कर रहे थे और खजूरें पास में रखी हुई थीं और हदीसे पाक को तलाशने के अन्दर इतने मस्रूफ़ थे कि खाते रहे यहां तक कि ज़्यादा खाने की वजह से मौत वाक़िअ़ हो गई, तो ज़्यादा खाकर मर जाने की मिसालें तो हैं लेकिन भूख प्यास से मरने की मिसालें इस लाइन पर नहीं हैं, अलहम्दु लिल्लाह रिज़्क़ की अल्लाह तआ़ला इतनी फ़रावानी कर देते हैं और दुनिया इस रिज़्क़ से डरती है, कहते हैं कि यह आ़लिम बनेंगे तो खायेंगे कहां से, ओ अल्लाह के बन्दे वहां से खायेंगे जहां से अल्लाह तआ़ला अपने अंबिया को खिलाया करते थे, तो ख़ैर इमाम शाफ़ई रह० से एक बात तो उन्होंने यह पूछी "कि सारा खाना अकेले खा गये"

दूसरा यह कि हमने मुसल्ला बिछा कर रखा और पानी का बर्तन भर कर रखा, लेकिन जैसा मुसल्ला बिछा था सुबह को वैसा ही रखा मिला और पानी भी ज्यूं का त्यूं था तो लगता है कि तहज्जुद की नमाज़ भी नहीं पढ़ी, और फिर मस्जिद में तो वुज़ू का इन्तिज़ाम भी नहीं लोग घरों से वुज़ू करके जाते हैं और यह इसी तरह आपके साथ उठकर मस्जिद में चले गये, पता नहीं नमाज़ भी उन्होंने कैसे पढ़ी? तो हमारी समझ से तो बालातर है।

इमाम शाफ़ई रह० का जवाब

इमाम शाफ़ई रह० ने जवाब दिया कि हजरत बात यह है कि

जब मैंने आपके यहां खाना खाया तो खाने में इतना नूर था इतना नूर था कि हर हर लुक़्मा खाने पर मुझे सीना नूर से भरता नज़र आता था, मैंने सोचा कि मुमकिन है इतना हलाल माल ज़िन्दगी में फिर मुयस्सर न हो क्यों न मैं इसे बदन का हिस्सा बनाऊँ, इसलिये मैंने इस सारे खाने को अपने बदन का हिस्सा बना लिया (अल्लाहु अकबर) फ़रमाते हैं कि फिर मैं लेट गया लेकिन इस खाने का नूर इतना था कि नींद ग़ायब तो मैं हदीसों में ग़ौर करता रहा फ़रमाने लगे कि एक हदीस मेरे पेशे नज़र रही कि नबी अ़लै० ने एक छोटे बच्चे को जिसका परिन्दा मर गया था, प्यार मुहब्बत से कहा था "اباعمیر مافعل النغیر" तो यह जो चन्द अल्फ़ाज़ थे मैं उनके अन्दर ग़ौर करता रहा और आज की रात मैंने इन चन्द अलफ़ाज़ से मैंने फ़िक़ह के चालिस मसाइल अख़ज़ कर लिये, इतनी सी इबारत "یا اباعمیر" कि कुन्नियत कैसी होनी चाहिये? बच्चों से गुफ़्तुगू का अन्दाज़ कैसा होना चाहिये? किसी की दिलदारी के लिए कैसे बात करनी चाहिए? "یا اباعمیر ما فعل النغیر" सिर्फ़ इसमें ग़ौर करके मैंने चालिस फ़िक़ह के मसाइ़ल ले लिये, और फिर फ़रमाया चूंकि मेरा वुज़ू बाक़ी था इसलिये मैं उठा और फ़जर की नमाज़ उसी वुज़ू से अदा की, हमारे असलाफ़ का यह हाल था, तो सबसे पहला क़दम इल्म हासिल करना और दूसरा क़दम इस इल्म के ऊपर अ़मल करना लेकिन अ़मल करने के साथ काम खत्म नहीं होता एक क़दम और उठाना ज़रूरी है इसको कहते हैं इख़लास पैदा करना।

इख़्लास की अहमियत

याद रखना इल्म की कमी अ़मल से पूरी हो जाती है, अ़मल में कोई कमी रह जाये तो इख़लास से पूरी हो जाती है, इख़लास की कमी कभी पूरी नहीं हुआ करती, सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिये करे तब काम बनता है, जो आदमी इख़लास के साथ इल्म पर अ़मल करे अल्लाह तआ़ला के यहां इसकी क़ुबूलियत होती है, हमारे अकाबिरीन उलमा-ए-देवबन्द को अल्लाह तआ़ला ने जो क़ुबूलियत

आम्मा ताम्मा अ़ता फ़रमाई थी उसकी बुनियाद उनका इख़लास था।

आ़बिद के अ़मल से रोशन है सादात का सच्चा साफ़ अ़मल
आंखों ने कहां देखा होगा इख़लास का ऐसा ताज महल

"इख़्लास का ताजमहल" ऐसे नेक लोग थे, बल्कि हज़रत अक़दस मौलाना मुहम्मद क़ासिम नानौतवी रह० जब दारुल उ़लूम देवबन्द की संगे बुनियाद रखने लगे बहुत सारे अकाबिरीन जमा थे हजरत ने ऐलान फ़रमाया आज इस दारुल उलूम का संगे बुनियाद एक ऐसी हस्ती से रखवाऊँगा जिसने सारी जिन्दगी कबीरा गुनाह के करने का दिल में कभी इरादा भी नहीं किया, पुख़्ता इरादा ही कभी नहीं किया, चुनांचे एक बुज़ुर्ग थे "मुन्ने शाह" के नाम से मशहूर थे ज़ाहिर में क़द इतना बड़ा नहीं था अल्लाह के यहां बहुत बड़ा था, घास काटते थे और उसको बेचकर जिन्दगी गुजारते थे, लेकिन थोड़ा थोड़ा रोज़ बचाते रहते पैसा पैसा सारे साल में जाकर इतने पैसे बचते कि वह दारुल उ़लूम के तमाम उस्ताजों की साल में एक मर्तबा दावत करते, दारुल उलूम के असातज़ा ने किताबों में लिखा कि हम सारे साल उनकी दावत के मुन्तजिर रहते थे, इसलिये कि जिस दिन उनके घर का खाना हम खाते चालिस दिन तक हमारी नमाज़ों की हुज़ूरी बढ जाया करती थी, तो पहला कदम इल्म, दूसरा क़दम इल्म पर अमल, और तीसरा क़दम अमल के अन्दर इख़लास, जब यह तीन चीजें इकट्ठी हो जाती है तो वह अमल अल्लाह तआ़ला के यहां मक़बूल हो जाता है फिर एक कुव्वत बन जाती है अल्लाह तआ़ला हमें तीनों नेमतें अ़ता फ़रमाये हमारे सीनों को इल्म के नूर से भी मुनव्वर फ़रमाये और हमें अ़मल की तौफ़ीक़ भी अ़ता फ़रमाये।

कैसे थे वह और कैसे हैं हम?

अजीज तालिब इल्मो आज अजीब बे अमली का वक्त आ गया है दिल खून के आंसू रोता है कि वह असलाफ जिनके कसरते मुतालआ की वजह से तेल का खर्चा जो रातो को चिराग़ जलाते थे उनके माहाना खाने के खर्च से ज्यादा हुआ करता था, इतना

मुतालआ करते थे आज उनकी औलादें पेट भरने की आदी हो गई हैं जिनके असलाफ़ चटाइयों पर बैठकर इशा के वुज़ू से फ़जर की नमाज़ें पढ़ लिया करते थे आज उनकी औलादें नर्म बिस्तरों पर रात गुज़ारने की आदी हो गई हैं, वह हज़रात जो सुबह के वक़्त नूर के तड़के क़ुरआने मजीद की तिलावत के साथ अपने दिन की शुरूआत करते थे आज उनकी औलादें सुबह के अख़बार के साथ दिन की शुरूआत करती हैं, जो जुमा के ख़ुत्बे देने के लिये सिहाहे सित्ता में से किसी किताब का मुतालआ करते थे आज जुमा पढ़ाने के लिये अख़बारों में ख़ुत्बा तलाश करते हैं, सोचिए तो सही हम कहां पहुंचे हैं, तो आज इस बात की ज़रूरत है कि हम अपने अन्दर तलब पैदा करके जो इल्म है उसपर इख़लास के साथ अ़मल करने की आदत बनायें।

नुक्ते की बात

एक नुक्ते की बात सुन लीजिए कि कई मर्तबा शैतान दिल में यह बात डालता है कि तुम एक दफ़ा पढ़ लो फिर इकट्ठा अ़मल कर लेना, जब भी ज़हन में यह बात आये तो समझ लेना यह शैतान की तरफ़ से है, और ऐसे आदमी को फिर अ़मल की तौफ़ीक़ नहीं मिलती, जिसने यह सोचा कि मैं पढ़ लूं फिर इकट्ठा अ़मल करूंगा वह महरूम है, जिसने अभी पढ़ा और उसी वक़्त अ़मल किया उसको अल्लाह तआला ने इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमाई, तो पढ़िये ही इस नीयत से कि इधर पढ़ेंगे उधर अ़मल करेंगे, इधर तअ़लीम मुकम्मल होगी उधर इस इल्म पर अ़मल मुकम्मल होगा।

पते की बात

इसलिये हज़रत शैख़ुल हदीस रह० ने बड़ी पते की बात लिखी फ़रमाया कि जिसे बड़ा इन्सान बनना होता है उसका पता उसके तालिब इल्मी के ज़माने से चल जाया करता है, तालिब इल्मी के ज़माने ही में उसमें इतना तक़्वा और सुन्नत की पैरवी का जज़्बा होता है इतनी इस्तिक़ामत होती है कि तालिब इल्मी ही से पता चल

जाता है।

होनहार बरवा के चिकने चिकने पाट

तो इसलिये जो पढ़िये अ़मल की नीयत और जज़्बे के साथ पढ़ये जब इल्म पर अ़मल करते चलोगे तो अल्लाह तआ़ला सीने को इल्म के नूर से भर देंगे और फिर यही इल्म क़यामत के दिन नबी पाक सल्ल० के क़ुर्ब का सबब बनेगा, हदीसे पाक में आता है कि क़यामत के दिन उम्मत के प्यासे इन्सान हौज़े कौसर पर पहुंचेंगे, तो फ़रिश्ते मुतअ़य्यन होंगे वह प्याले भर–भर के उम्मत के प्यासों को पिलायेंगे लेकिन जब उम्मत के उ़लमा हौज़े कौसर पर पहुंचेंगे नबी अ़लै० अपने हाथों से हौज़े कौसर का जाम पिलायेंगे। (सुब्हानल्लाह)

अल्लाह तआ़ला हमें क़यामत में भी उ़लमा सुलहा के क़दमों में खड़ा फ़रमा दे और सारी ज़िन्दगी इस इल्म की ख़िदमत के लिये क़ुबूल फ़रमा लें।

وآخر دعونا ان الحمد للہ رب العالمین۔

रब्बे करीम:-

तेरी एक निगाह की बात है मेरी ज़िन्दगी का सवाल है
मुझे अपनी पस्ती की शर्म है तेरी रफ़अतों का ख़्याल है
मगर अपने दिल का क्या करूं उसे फिर भी शौक़े विसाल है

अल्लाह का पैग़ाम इन्सानियत के नाम

इक़्तिबास

छोटासा सहन है, क़रीब बच्चा लेटा हुआ है और घोड़ा बन्धा हुआ है और तबीअ़त चाहती है कि बुलन्द आवाज़ से पढ़े लेकिन घोड़ा बिदकता है डर हुआ कि कहीं बच्चे को नुक़सान न दे, लिहाज़ा आहिस्ता पढ़ते हैं, तबीअ़त मचलती है तो फिर बुलन्द आवाज़ से पढ़ते हैं फिर घोड़ा मचलता है, सारी रात इसी तरह गुज़र गई, सुबह दुआ़ मांगने के लिये हाथ उठाये तो क्या देखते हैं कि कुछ रोशनियां सर से दूर आसमान की तरफ़ जा रही हैं, बड़े हैरान हुए दिन में नबी अ़लै० के पास आकर अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० मैंने रात यह मुआ़मला देखा, कुछ रोशनियां मेरे सर से दूर जा रही थीं फ़रमाया यह अल्लाह तआ़ला के फ़रिश्ते थे जो तुम्हारा क़ुरआन सुनने के लिये अ़र्श से फ़र्श पर उतर आये थे, अगर तुम ऊँचा क़ुरआन ऊँची आवाज़ से पढ़ते तो आज मदीने के लोग अल्लाह के फ़रिश्तों को अपनी आंखों से देखते।

(हज़रत मौलाना पीर फ़क़ीर
ज़ुलफ़क़्क़ार अहमद साहब नक़्शबन्दी)

الحمد لِلّٰهِ وَكفٰى وسلامٌ علٰى عباده الذين اصطفٰى اما بعد!

اعوذ باللّٰه من الشّيطٰن الرّجيم ، بِسمِ اللّٰه الرّحمٰن الرَّحيم

﴿الٓر كتٰبٌ اَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ الَى النُّورِ بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلٰى صِرَاطِ العَزِيزِ الحَمِيْدِ۝﴾

قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صلّٰى اللّٰهُ عليهِ وسلَّمَ

"خَيرُكُمْ مَنْ تعلَّمَ القُرآنَ وعلَّمَهُ"

سُبْحَانَ رَبِّكَ ربِّ العِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ وَسَلامٌ علَى المُرْسَلِينَ وَالحَمْدُ للّٰهِ ربِّ العَالَمِينَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وسَلِّمْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وسَلِّمْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وسَلِّمْ

क़ुरआन मजीद रहमत का मक़्नातीस

क़ुरआन मजीद फ़ुर्क़ाने हमीद अल्लाह तआला का क़लाम है, अल्लाह तआला का पैग़ाम इन्सानियत के नाम, यह किताब हिदायत है, उसे किताबे इ़बादत नहीं कहा गया, यह सिर्फ़ मुसल्ले की इ़बादत ही नहीं सिखाती, बल्कि पैदा होने से लेकर जन्नत में दाख़िल होने तक क़दम क़दम पर इन्सान की रहनुमाई फ़रमाती है तो यह किताबे हिदायत है इस किताब का देखना भी इ़बादत है, इसका पढ़ना भी इ़बादत, इसका पढ़ाना भी इ़बादत, इसका सुनना भी इ़बादत, इसका सुनाना भी इ़बादत, इसका समझना भी इ़बादत, इसका समझाना भी इ़बादत, और इस पर अ़मल करना सबसे बड़ी इ़बादत कि अल्लाह तआला का कलाम है "كَلامُ المُلوكِ مُلُوكُ الكَلامِ" बादशाहों का कलाम भी कलामों में बादशाह होता है, यह शहन्शाहे हक़ीक़ी का कलाम है, इसके अन्दर अजीब अल्लाह तआला ने तासीर रख दी है, यह सीधा दिलों पर असर करता है, यह इन्सानियत के लिये दस्तूरे हयात है, इन्सानियत के लिये मन्शूरे हयात है, यह इन्सानियत के लिये ज़िन्दगी

का उसूल है, बल्कि पूरी इन्सानियत के लिये यह आबे हयात है जिस तरह दुनिया में लोहे को अपनी तरफ़ खींचने के लिये मक़्नातीस होता है वह मक़्नातीस जहां भी होगा लोहे को अपनी तरफ़ खींचेगा, इसी तरह क़ुरआन करीम भी अगर पढ़ा जाये तो यूं महसूस होगा कि यह अल्लाह तआला की रहमतों को अपनी तरफ़ खींच रहा है, इसीलिये हुक्म है :

وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنْصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ

(पारा 9, रुकू 14, आयत 204)

तर्जुमा – जब क़ुरआने मजीद पढ़ा जाये तो ख़ामोश रहो, सनो ताकि तुम पर अल्लाह की रहमतें बरसाई जायें।

तो जहां क़ुरआने मजीद पढ़ा जाता है अल्लाह की रहमतें बरसती हैं यह उन रहमतों के खींचने का मक़्नातीस है, यह दिलों को अपनी तरफ़ मायल करता है नबी के हाथ में यही किताबे मुबारक थी।

उतर कर हिरा से सूए क़ौम आया
और एक नुस्ख़ा कीमिया साथ लाया
वह बिजली का कड़का था या सौते हादी
अ़रब की ज़मीन जिसने सारी हिला दी

कुफ़्फ़ार छुप छुप कर सुनते थे

इस क़ुरआन ने अरब की ज़मीन को हिला कर रख दिया, इससे ज़िन्दगियां बदल गईं थीं वजह क्या थी? यह तासीर थी क़ुरआने करीम की, नबी अलै० के पास बड़े बड़े कुफ़्फ़ार आते

قَرَأَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنَ

नबी अलै० उनके सामने क़ुरआन पढ़ते और इस क़ुरआने मजीद में इतनी तासीर होती यहां तक कि उन्हें कहना पड़ता

إِنْ هٰذَا إِلَّا سِحْرٌ يُؤْثَرُ

यह तो कोई जादू है जो ऊपर को चला आ रहा है, वह मानते थे कि इसके अन्दर तासीर है इसलिये कहते थे.

لَاتَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ

तर्जुमा – इस कुरआने करीम को तुम मत सुनना।

وَالْغَوْا فِيْهِ

तर्जुमा – तुम गुल मचाना।

तुम शोर करना शायद कि तुम ग़ालिब आ जाओ, सुनने से घबराते थे कहीं असर न कर जाये।

रातों को जब नबी सल्लं० कुरआन पढ़ते तो बड़े बड़े कुरैशे मक्का जो जान के दुशमन थे वह भी छुप–छुप कर नबी अ़लै० का कुरआने मजीद सुना करते थे इस कुरआने मजीद में ऐसी तासीर है, और अगर इसको मानने वाले पढ़ें और सुनें तो इसका असर कई चन्द होता है कई गुना ज़्यादा हो जाता है, इसलिये कुरआने मजीद को मुहब्बत के साथ पढ़ना सीखने की ज़रूरत है, आज गुनाहों की वजह से इन्सान इसकी बरकतों से महरूम है।

तिलावत में लुत्फ़ न आने की वजह

इसकी मिसाल यूं समझये कि एक आदमी नज़ले जुकाम का मरीज़ है उसके सामने आप मुश्क व अ़न्बर की ख़ुश्बू लाएं और पूछें कि भाई बताओ यह ख़ुश्बू कैसी है? उसे पता नहीं चलेगा हालांकि उस मुश्क व अ़न्बर की ख़ुश्बू के क़ीमती होने में शक नहीं है, लेकिन नज़ले की वजह से वह इस ख़ुश्बू का मज़ा लेने से महरूम हो गया, इसी तरह कुरआने मजीद की मक़्नातीसियत से इसकी तासीर से इन्कार नहीं, लेकिन जब गुनाहों का नज़ला ज़ुकाम हो जाता है फिर वह उसकी तासीर से महरूम हो जाता है फिर कुरआने मजीद पढ़ता भी है तो उसको मज़ा नहीं आता, आपने देखा होगा कि एक आदमी कुरआने पाक पढ़ रहा है, आयत के दरमियान और कोई आदमी गुज़र रहा है तो कुरआने पाक छोड़कर उसको देखना शुरू कर देगा, कोई फ़र्क़ नहीं होता कि वह अल्लाह का कलाम पढ़ रहा है या अंग्रेज़ी का नाविल पढ़ रहा है, यह कैफ़ियत क्यों होती है? अभी दिल उसकी

बरकतों को कुबूल नहीं कर रहा होता है, जब यह दिल बरकतों को कुबूल करने लगता है तो फिर (सुब्हानल्लाह) इन्सान डूब कर कुरआन पढ़ता है फिर उसकी कैफ़ियत कुछ और होती है, सहाबा एक एक आयत को सारी सारी रात पढ़कर कन्द मुकर्रर के मज़े लिया करते थे।

रात छोटी होने का शिक्वा

चुनांचे सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा ने एक रात में इशा के बाद दो रक्अत नफ़्ल की नीयत बान्धी सर्दियों की लम्बी रात थी, कुरआने मजीद पढ़ती रहीं पढ़ती रहीं यहां तक कि जब सलाम फेरा तो क्या देखती हैं कि सुबह सादिक़ का वक़्त क़रीब है अब हाथ उठाये और यह दुआ मांगी "अल्लाह मैंने दो ही रक्अत की तो नीयत बान्धी थी, तेरी रात कितनी छोटी है कि रात ही ख़त्म हो गई" उनको रातों के छोटा होने का शिक्वा होता था अन्दाज़ा कीजिए उनको कितना मज़ा आता था।

तीरों पर तीर खाते रहने की तमन्ना

मशहूर रिवायत है कि दो आदमियों की डियूटी लगी कि पहाड़ की चोटी पर तुम जाओ और पहरा दो, दोनों ने सोचा कि दोनों जागेंगे तो आख़री रात में सो जायेंगे, लिहाज़ा यह तैय पाया कि एक जागे और दूसरा सोये, अब जागने वाले ने यह सोचा कि मैं जाग तो रहा हूं तो क्यों न कुरआन ही पढ़ लूं, उन्होंने दो रक्अत की नीयत बान्ध ली इतने में दुशमन ने तीर मारा, फिर दूसरा तीर मारा, फिर तीसरा तीर मारा अब उनके जिस्म से ख़ून निकल रहा है, और इतना निकला कि उनको डर महसूस हुआ कि कहीं बेहोश होकर गिर गया तो फ़र्ज़े मन्सबी में कोताही होगी, लिहाज़ा जल्दी से सलाम फेर कर साथी को जगाते हैं और कहते हैं कि अगर आज फ़र्ज़े मन्सबी में कोताही का डर न होता तो मैं तीरों पर तीर खाता रहता, लेकिन मुकम्मल सूरे कहफ़ पढ़े बग़ैर नमाज़ मुकम्मल न करता, उनको तीर

लगते थे और हमारे क़रीब से मच्छर गुज़र जाये या मक्खी आकर बैठ जाये तो नमाज़ की कैफ़ियत चली जाती है, इसलिये कि क़ुरआने मजीद से हम लुत्फ़ अन्दोज़ नहीं हो रहे होते हैं, जब लुत्फ़ अन्दोज़ होना शुरू कर देंगे तब उस वक़्त हमें क़ुरआन पढ़ने का मज़ा आयेगा। (अल्लाहु अकबर कबीरा)

शैख़ैन का तहज्जुद में क़ुरआने मजीद पढ़ना

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम मज़े लेकर तहज्जुद की नमाज़ में तिलावत किया करते थे एक मर्तबा आप सल्ल० मस्जिद में तश्रीफ़ लाये, क्या देखते हैं कि सिद्दीक़े अकबर रज़ि० क़ुरआने मजीद की तिलावत कर रहे हैं मगर बहुत आहिस्ता से और उन्हीं के क़रीब सय्यिदना उमर फ़ारूक़ रज़ि० भी क़ुरआने मजीद पढ़ रहे हैं मगर थोड़ा आवाज़ के साथ, जब दोनों ने नमाज़ मुकम्मल कर ली तो नबी सल्ल० ने फ़रमाया अबू बक्र तुम इतना आहिस्ता क्यों पढ़ रहे थे? आपने जवाब दिया: ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० मैं उस ज़ात को सुना रहा था जो सीनों के भेद जानती है, लिहाज़ा मुझे ज़ोर से पढ़ने की क्या ज़रूरत थी, फिर आप सल्ल० ने हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० से पूछा: उमर! तुम इतनी ज़ोर से क्यों पढ़ रहे थे? फ़रमाया ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० मैं सोये हुए लोगों को जगा रहा था, और शैतान को भगा रहा था, यह वह लोग थे जिनको लुत्फ़ आता था क़ुरआने मजीद पढ़ने में।

फ़रिश्ते भी आसमान से उतर आये

छोटासा सेहन है, क़रीब बच्चा लेटा हुआ है और घोड़ा बन्धा हुआ है और तबीअ़त चाहती है कि बुलन्द आवाज़ से पढ़े, लेकिन घोड़ा बिदकता है डर हुआ कि कहीं बच्चे को नुक़्सान न दे, लिहाज़ा आहिस्ता पढ़ते हैं, तबीअ़त मचलती है तो फिर बुलन्द आवाज़ से पढ़ते हैं, फिर घोड़ा मचलता है, सारी रात इसी तरह गुज़र गई सुबह दुआ मांगने के लिये हाथ उठाये तो क्या देखते हैं कि कुछ रोशनियां

सर से दूर आसमान की तरफ़ जा रही हैं, बड़े हैरान हुए, दिन में नबी अलै० के पास आकर अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब मैंने रात यह मुआमला देखा, कुछ रोशनियां मेरे सर से दूर जा रही थीं, फ़रमाया: यह अल्लाह तआला के फ़रिश्ते थे जो तुम्हारा कुरआन सुनने के लिये अर्श से फ़र्श पर उतर आये थे, अगर तुम ऊँचा कुरआन ऊँची आवाज़ से पढ़ते तो आज मदीने के लोग अल्लाह के फ़रिश्तों को अपनी आंखों से देखते।

तुम्हारे रोने पर फ़रिश्ते रो पड़े

एक सहाबी कुरआन पढ़ते हुए रोते हैं, गिरया जारी हो गया, जब नबी अलै० की ख़िदमत में हाज़िर हुए, नबी अलै० ने फ़रमाया कि रात तुम्हारे रोने ने अल्लाह के फ़रिश्ते को भी रुला डाला, वह कैसे थे कुरआने पाक पढ़ते हुए रोते थे उनको रोता देखकर अल्लाह के फ़रिश्तों को भी रोना आ जाता था। (अल्लाहु अकबर)

हदीसे पाक में आता है कि जब अच्छी आवाज़ से पढ़ने वाला तवज्जुह और मुहब्बत के साथ पढ़ रहा होता है अल्लाह का फ़रिश्ता क़रीब आते आते इतना क़रीब आ जाता है यहां तक कि उस क़ारी के होंटों पर अपना होंट रख देता है अपना मुंह उसके मुंह पर रख देता है उस फ़रिश्ते की मुहब्बत का हाल यह हो जाता है, और अल्लाह तआला उस पढ़ने वाले का कुरआन इतनी तवज्जुह से सुनते हैं कि दुनिया वाले लोग किसी गाने वाली का गाना भी इतनी तवज्जहु से नहीं सुनते जितनी तवज्जुह से अल्लाह पाक उसके कुरआने पाक को सुनते हैं।

उनके मुंह से ख़ुशबू आती थी

इमाम आसिम रह० बहुत मशहूर क़ारी हैं उनके बारे में आता है कि उनके मुंह से ख़ुश्बू आया करती थी, मस्जिदे नबवी सल्ल० में सत्तर साल तक उन्होंने इमामत की और तिलावत करते थे और उनके बहुत से शागिर्द थे, उनके मुंह से ख़ुश्बू बहुत आती थी, एक

दिन उनके एक शागिर्द ने पूछा कि हज़रत क्या आप मुंह में कोई खुश्बू रखते हैं? या कोई ख़ास चीज़ रखी है? फ़रमाया कि नहीं मैंने तो कोई ख़ास चीज़ नहीं रखी उसने कहा हज़रत आपके मुंह से खुश्बू बहुत आती है, फ़रमाने लगे एक रात मुझे हुज़ूर पाक सल्ल० की ज़ियारत नसीब हुई आपने इरशाद फ़रमाया कि आसिम तू अल्लाह का कुरआन इतनी मुहब्बत से पढ़ता है कि मेरा जी चाहता है कि मैं तेरे मुंह का बोसा लूं, लिहाज़ा जब से नबी अलै० ने बोसा लिया है, तब से मेरे मुंह में खुश्बू आने लगी है, और जब तक वह ज़िन्दा रहे उनके मुंह से खुश्बू ही आती रही अल्लाह तआला का कलाम अजीब उसके असरात हैं, सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम उसको पढ़ते थे, सुनते थे, उनकी हालत बदल जाती थी, रौंगटे खड़े हो जाते थे (अल्लाहु अकबर)

إِذَا سَمِعُوْا مَا أُنْزِلَ إِلَى الرَّسُوْلِ تَرَىٰ أَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا

उनकी आंखों से आंसुओं की रिम–झिम शुरू हो जाती थी कहते थे।

يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا جَآءَنَا بِالْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَنْ يُّدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ

(पारा 7, रुकू 1, आयत 83)

जब इतनी लजाजत से दुआ मांग रहे हैं फ़ौरन कुबूलियत भी हो रही है, लिहाज़ा फ़रमाया

فَأَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا

(पारा 7, रुकू 1, आयत 84)

कुरआने मजीद यह अजीब नेमत है हमारे पास हमें इस नेमत की सही कुव्वत का अन्दाज़ा ही नहीं है कि अल्लाह तआला ने इसके अन्दर क्या नेमतें रखी हैं, इसको तो पढ़िये मुहब्बत के साथ, शौक़ के साथ फिर देखिये इससे इन्सान को क्या लुत्फ़ नसीब होता है, यह तो ऐसा मज़ा है कि इससे दिल नहीं भरता।

चन्द चीज़ें जिन से दिल नहीं भरता

उलमा ने लिखा है कि चन्द चीज़ें हैं जिनसे इन्सान का कभी दिल नहीं भरता, मिसाल के तौर पर आसमान की तरफ़ देखना, सारी ज़िन्दगी इन्सान आसमान की तरफ़ देखता है, लेकिन कभी नहीं कहता कि जी मेरा दिल भर गया, रोज़ चमकते सितारों को देखिये झिल–मिल करते हुए रोज़ नया मज़ा वही नीला आसमान रात को सितारे चमकते हैं मगर नया लुत्फ़ और नया मज़ा तो आसमान को देखने से कभी दिल नहीं भरता, पानी पीने से कभी दिल नहीं भरता सौ साल की उम्र हो जायेगी कोई बन्दा आपको ऐसा नहीं मिलेगा जो कहे कि जी अब तो पानी पीने को दिल नहीं करता, यूं खानों से दिल उक्ता जायेगा, जूस पीने से दिल उक्ता जायेगा, लेकिन पानी से कभी दिल नहीं उक्ताता, अल्लाह तआला ने ऐसी मेहरबानी अता फ़रमाई, इसी तरह बैतुल्लाह शरीफ़ को देखना यह ऐसी नेमत है इसको वही समझ सकता है जिसको बैतुल्लाह की ज़ियारत नसीब हो चुकी है कि उस घर को देखने से इन्सान के दिल को क्या ठन्डक मिलती है जितना उस घर की तरफ़ देखा जाये उतनी उस घर की लज़्ज़त उसका हुस्न व जमाल और बढ़ता है हर नई नज़र पर एक नया जमाल होता है, आख़िर अल्लाह का घर है, इसी तरह क़ुरआने मजीद का पढ़ना जितना ज़्यादा पढ़ेगा उतना ज़्यादा शौक़ उसके दिल में पैदा होगा, और पढ़ने वालों ने उसकी कसरत से तिलावत की है, जब क़ारियों और हाफ़िज़ों के हालात पढ़ते हैं तो हैरान हो जाते हैं तो यह किताब इसलिये दुनिया में भेजी गई कि हम इसको पढ़ें इसपर अ़मल करें और दुनिया में हम कामयाबी की ज़िन्दगी गुज़ारें इसलिये सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम फ़रमाते थे।

إِنَّ اللّٰهَ يَرْفَعُ بِهٰذَا الْكِتَابِ أَقْوَامًا

अल्लाह तआला इस किताब के ज़रिये क़ौमों को बुलन्दी अ़ता फ़रमाते हैं, यह हमें दुनिया में उठाने के लिये आया है, जगाने के लिये आया है, इज़्ज़त के लिये आया है।

चरवाहे से अमीरुल-मोमिनीन तक

सय्यिदना उ़मर बिन ख़त्ताब रज़ि० अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में एक मर्तबा फ़ौज को लेकर मक्का मुकर्रमा की पहाड़ी पर चढ़ रहे थे, दोपहर का वक़्त है चिलचिलाती धूप है, एक जगह खड़े हो गये और नीचे वादी में देखना शुरू कर दिया, फ़ौज सारी खड़ी है, पसीने में शराबोर है, कोई साया नहीं, बचाव की सूरत नहीं, सब परेशान हो गये, किसीने कहा अमीरुल-मोमिनीन ख़ैरियत तो है? आप यहां खड़े हैं, फ़रमायाः मैं नीचे वादी में देख रहा हूं, जहां इस्लाम लाने से पहले मैं अपने ऊँटों को चराने आता था, और लड़क्पन में मझे ऊँट चराने का तरीक़ा नहीं आता था, मेरे ऊँट ख़ाली पेट घर जाते तो मेरा वालिद ख़त्ताब मुझे डांटता था, कोसता था, कहता था उ़मर तू क्या कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारेगा तुझे तो ऊँट चराने नहीं आते हैं, उस वक़्त को याद कर रहा हूं कि जब उ़मर को जानवर चराने नहीं आते थे, और आज इस वक़्त को देख रहा हूं कि जब इस्लाम और कुरआन के सदक़े अल्लाह ने उ़मर को अमीरुल-मोमिनीन बना दिया है, यह किताब यूं उठाती है हम भी अगर इसको पढ़ेंगे इसपर अ़मल करेंगे, अल्लाह तआ़ला हमें भी इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमायेंगे।

इसलिये फ़रमाया "اِقْرَأْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ" (पारा 30, रुकू 21, आयत 3) तू पढ़ कुरआन तेरा रब करेगा तेरा इकराम, तेरा रब तुझे इ़ज़्ज़त व वक़ार देगा, और तेरे ज़ाहिर व बातिन को निखार देगा, यह अल्लाह का कुरआन है मेरे शैख़ (हज़रत मौलाना गुलाम हबीब नक़्शबन्दी रह०) फ़रमाते थे तेरे हाथ में हो कुरआन तो दुनिया में रहे परेशान, तेरे हाथ में रहे कुरआन और तू दुनिया में नाकाम, तेरे हाथ में हो कुरआन और तू दुनिया में रहे गुलाम (गुलामी नफ़्स की हो शैतान की हो या किसी इन्सान की) नाना हमें कहता है यह कुरआन, ओ मेरे मानने वाले मुसलमान! "اِقْرَأْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ" पढ़ कुरआन तेरा रब करे तेरा इकराम, अल्लाह तआ़ला हमें इ़ज़्ज़तें देंगे, हम इस किताब को पढ़ें और इसपर अ़मल करें, सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम

इसी को सीने से लगा कर निकले थे, इतने सादे थे कि उनके सामने पतली रोटी दस्तरख़्वान पर रखी जाती थी वह उसको हाथ पोंछने वाला कपड़ा समझते थे इतने सादे थे:

बात क्या थी कि न क़ैसर व किस्रा से दबे
चन्द वह लोग कि ऊँटों को चराने वाले
वह जिनको काफ़ूर पे होता था नमक का धोका
बन गये दुनिया की तक़दीर बदलने वाले

अल्लाह ने उनको कामयाबियां दी थीं:

लगाता था तू जब नअ़रा तो ख़ैबर तोड़ देता था
हुक्म देता था तू दरया को रस्ता छोड़ देता था

हमें इ़ज़्ज़तें मिली थीं इस कुरआन मजीद के ज़रिये से, आइये अ़हद कीजिए कि हम आइन्दा ज़िन्दगी इस कुरआने मजीद को समझेंगे, इसको अपनी ज़िन्दगी में लागू करेंगे और अल्लाह तआ़ला का कुर्ब हासिल करने के लिये तन मन धन की बाज़ी लगायेंगे।

तज़्किये की एहमियत

इक़्तिबास

तस्फ़िया हमेशा दिल का होता है और तज़्किया हमेशा नफ़्स का होता है इस बात को अच्छी तरह ज़हन में बिठा लीजिए कि तस्फ़िया दिल की सफ़ाई का नाम है और तज़्किया नफ़्स की सफ़ाई का नाम है, बुनियादी फ़र्क़ समझये कि जैसे एक आइना हो उसपर मिट्टी की तह आ जाये उस मिट्टी की तह को साफ़ करने का नाम तस्फ़िया है, हमने उसकी सफ़ाई करदी, इसलिये कि मिट्टी दिल के अन्दर दाख़िल नहीं होती बल्कि दिल के ऊपर तह बना लेती है, इस तह को हटा लेने का नाम सफ़ाई है (तस्फ़िया) इसी तरह गुनाहों की ज़ुल्मत दिल के अन्दर सरायत नहीं करती, दिल पर तह बनाती है और इस पर क़ुरआने करीम की दलील "कल्ला बल रान(अ़ला क़ुलूबिहिम मा कानू यक्सिबूना(" (नहीं बल्कि उनकी बद–आमालियों की वजह से उनके दिलों पर ज़ंग लगा दिया गया है) तो ज़ंग अन्दर तो नहीं जाता? ज़ंग की तह ऊपर चढ़ती है, इसी तरह दिल के ऊपर गुनाहों की ज़ुल्मत की तह चढ़ जाती है, इसको ज़ैनुल–क़ुलूब कहते हैं, दिलों का ज़ंग और कहा कि "लिकुल्लि शैइन सिक़ालतुन व सिक़ालतुल क़ल्बि ज़िकरुल्लाहि" हर चीज़ के लिये सैक़ल होता है पोलिश होती है, और दिलों का सैक़ल अल्लाह की याद है तो इसको दिल का तस्फ़िया कहते हैं।

लेकिन अगर कपड़ा मैला हो जाये तो अब यह किसी कपड़े से साफ़ होने से रहा इसके लिये तो पानी, साबुन होना ज़रूरी है तब काम बनेगा अब यह जो तरीक़ा है कपड़े में साबुन लगाना धोना, निचोड़ना इसका नाम तज़्किया है, इस कपड़े का तज़्किया हो रहा है क्योंकि मैल उसके अन्दर दाख़िल हो चुका था, उसके अन्दर से मैल निकाला जा रहा है।

(हज़रत मौलाना पीर फ़क़ीर ज़ुलफ़क़्क़ार अहमद साहब नक़्शबन्दी)

الحمد لِلّٰہِ وَ کفٰی وسلامٌ علٰی عبادہ الذین اصطفٰی اما بعد!
اعوذ باللّٰہ من الشَّیطٰن الرَّجیم ، بِسمِ اللّٰہ الرَّحمٰن الرَّحیمِ
﴿قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تزَکّٰی وَذَکَرَ اسمَ رَبِّہٖ فصَلّٰی۝﴾
(پ۳۰، ع ۱۲، آیت ۱۴/۱۵)
وقال اللّٰہُ تعالٰی فِی مقامٍ آخرٍ
﴿ونفسٍ وَّما سوّٰھا فَاَلْھَمَھا فُجورَھا وتقوٰھا قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَکّٰھا وَقَدْ خَابَ مَنْ دسّٰھا۝﴾ (پ۳۰، ع ۱٦، آیت ۷/۸/۹/۱۰)
وقال اللّٰہُ تعالٰی فِی مقامٍ آخر ﴿وَمَنْ تزکّٰی فإنما یتزکّٰی لنفسہ والی اللّٰہِ المَصِیرُ۝﴾ (پ۲۲، ع ۱۵، آیت ۱۸)
وقال اللّٰہُ تعالٰی فِی مقامٍ آخرٍ
﴿فَلاتُزَکُّوْا اَنْفُسَکُمْ ھُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰی۝﴾ (پ ۲۷، ع ٦، آیت ۳۲)
وقال اللّٰہ تعالٰی فی مَقامٍ آخرٍ
﴿وَلَوْلَا فَضلُ اللّٰہِ علَیکُمْ ورحمتُہٗ ما زکی منکُمْ مِن اَحَدٍ ابدًا ولکن اللّٰہَ یُزَکِّی مَن یَّشاءُ﴾ (۱۸، ع ۹، آیت ۲۱)

سُبحانَ ربِّکَ ربِّ العِزَّۃِ عمَّا یصِفُونَ وسلامٌ علَی المُرسَلِینَ وَالحَمدُ لِلّٰہِ ربِّ العَالِمینَ ، اَللّٰھُمَّ صلِّ علٰی سیدِنَا محمَّدٍ وَّعلٰی آلِ سیِّدِنَا محمّد وبَارِکْ وسَلِّمَ .

सोहबत की तासीर

हर इन्सान के अन्दर ख़ैर और शर का माद्दा रख दिया गया है, मगर हुक्म यह दिया गया कि हम अपने ऊपर ख़ैर को ग़ालिब करें, दुनिया का नेक तरीन इन्सान हो उसको भी बुरा माहौल मिले, बुरे साथी मिल जायें तो उसके भटकने का भी ख़तरा मौजूद है, और दुनिया का बुरा तरीन इन्सान हो उसको अगर अच्छा माहौल मिल,

जाए; नेक साथी मिल जायें तो उसके सन्वरने का मौक़अ मौजूद है, इन्सान सोहबत से असर लेता है, आप ग़ौर कीजिए कि कई लोग छोटे बच्चे को उठाते हैं तो उनसे प्यार में बातें उन्हीं की ज़बान में करते हैं, हालांकि कि यह बड़ी उम्र का आदमी सही बोल सकता है मगर उस बच्चे के साथ होने की वजह से उसका असर लिये हुए है, यह भी अल्फ़ाज़ को बच्चे के लहजे में बोल रहा है तो अगर छोटा बच्चा साथ हो तो उसके सोहबत की तासीर होती है लिहाज़ा अगर किसी बड़े और अल्लाह वाले का साथ मिल जाये तो क्या उसकी सोहबत में तासीर नहीं होगी?

नज़र से इलाज

हदीसे पाक में आता है "اَلْعَيْنُ حَقٌّ" नज़र लग जाना ठीक बात है, बुरी नज़र लग जाती है, नज़रे बद जिसे कहते हैं, एक सहाबी को लग गई थी तो नबी अलै० ने उस नज़र को उतारने का तरीक़ा भी बताया, अब सोचने की बात है कि जिस नज़र के अन्दर हसद है, बुग्ज़ है, दुशमनी है, इस नज़र का अगर असर हो जाता है तो जिस नज़र के अन्दर शफ़क़त हो मुहब्बत हो, इख़्लास हो, रहमत हो, तो फिर वह नज़र असर नहीं करती, तो लिहाज़ा अल्लाह वालों की नज़र भी लग जाती है, बुरी नज़र के लगने से इन्सान पर बुरे असरात और अच्छी नज़र के लगने से इन्सान पर अच्छे असरात मुरत्तब होते हैं, अल्लाह करे कि हमें भी किसी अल्लाह वाले की नज़र लग जाये।

तेरा इलाज नज़र के सिवा कुछ और नहीं

आज–कल शुआओं से इलाज होता है, टी बी का इलाज, कैन्सर का इलाज शुआओं के ज़रिये से किया जा रहा है, जिस तरह मशीन से निकलने वाली शुआएं हैं, इसी तरह अल्लाह वालों की निगाहों से भी नूर की शोआयें निकलती हैं, मैं और आप एक्सरे को तो नहीं देखते, लेकिन हक़ीक़त को मानना पड़ता है, इसी तरह

अल्लाह वालों की निगाहों से भी नूर की कुछ शुआएं निकलती हैं, जो इन्सान के दिल की ज़ुल्मतों को हटा के रख देती हैं और इसका पता इस बात से चलता है कि बन्दे के अन्दर नेकी आनी शुरू हो जाती है, जैसे ख़ुश्क दरख़्त को पानी दे दें तो कलियां फूटनी शुरू हो जाती हैं, ऐसे ही जब ग़ाफ़िल क़िस्म के लोग अल्लाह वालों की महफ़िल में बैठना शुरू करते हैं तो उनमें नेक आमाल की कलियां फूटना शुरू हो जाती हैं।

तस्फ़िया और तज़्किया का फ़र्क़

दो अलफ़ाज़ हैं दोनों तसव्वुफ़ में इस्तेमाल होते हैं मगर अक्सर अवाम तो क्या उलमा भी इनका मफ़्हूम समझने में ग़लती कर जाते हैं।

1. तज़्किया 2. तस्फ़िया

तस्फ़िया हमेशा दिल का होता है और तज़्किया हमेशा नफ़्स का होता है इस बात को अच्छी तरह ज़हन में बिठा लीजिए कि तस्फ़िया दिल की सफ़ाई का नाम है और तज़्किया नफ़्स की सफ़ाई का नाम है, बुनियादी फ़र्क़ समझये कि जैसे एक आईना हो उसपर मिट्टी की तह आ जाये इस मिट्टी की तह को साफ़ करने का नाम तस्फ़िया है, हमने उसकी सफ़ाई कर दी, इसलिये कि मिट्टी दिल के अन्दर दाख़िल नहीं होती बल्कि दिल के ऊपर तह बना लेती है, इस तह को हटा लेने का नाम सफ़ाई है (तस्फ़िया) इसी तरह गुनाहों की ज़ुल्मत दिल के अन्दर सरायत नहीं करती, दिल पर तह बनाती है, और इसपर दलील क़ुरआन अज़ीमुश्शान "كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ" नहीं उनकी बद–आमालियों की वजह से उनके दिलों पर ज़ंग लगा दिया गया है, तो ज़ंग अन्दर तो नहीं जाता? ज़ंग की तह ऊपर चढ़ती है, इसी तरह दिल के ऊपर गुनाहों की ज़ुल्मत की तह चढ़ जाती है, इसको ज़ैनुल–क़ुलूब कहते हैं, दिलों का ज़ंग और कहा कि "لِكُلِّ شَيْءٍ ثِقَالَةٌ وَثِقَالَةُ الْقَلْبِ ذِكْرُ اللهِ" हर चीज़ के लिये सैक़ल होता है पालिश होती है और दिलों का सैक़ल अल्लाह की याद है तो इसको तस्फ़िया क़लब कहते हैं।

लेकिन अगर कपड़ा मैला हो जाये तो अब यह किसी कपड़े से साफ़ होने से रहा इसके लिये तो पानी, साबुन होना ज़रूरी है तब काम बनेगा अब यह जो तरीक़ा है कपड़े में साबुन लगाना धोना निचोड़ना इसका नाम तज़्किया है, इस कपड़े का तज़्किया हो रहा है क्योंकि मैल उसके अन्दर दाख़िल हो चुका था, उसके अन्दर से मैल निकाला जा रहा है।

इसी तरह नफ़्स के अन्दर ख़बासत मौजूद होती है "فَأَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰهَا" (पारा 30, रुकू 16, आयत 8) अच्छाई भी उसके अन्दर है और बुराई भी उसके अन्दर है, अब अन्दर से बुराई निकाल देना ताकि ख़ैर रह जाये इसका नाम तज़्किया है, इसलिये नबी दुनिया में मुअ़ल्लिमे अअ़ज़म भी बनकर आये और मुबल्लिग़े आज़म बनकर भी आये, और दुनिया में मुर्शिदे अअ़ज़म भी बनकर तशरीफ़ लाये, आप ने तज़्किया फ़रमाया यहां तक कि सहाबा के नुफ़ूस को धोकर रख दिया, उनके दिल साफ़ हो गये, तो तस्फ़िया हमेशा क़लब का होता है और तज़्किया हमेशा नफ़्स का।

तज़्किये की एहमियत

यह इतनी अहम चीज़ है कि सय्यिदना इबराहीम अ़लै० ने दुआ मांगी, "رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا" अल्लाह का घर बनाया और घर बनाने के बाद दुआ मांगी, अल्लाह मकान तो बना दिया, मकीन भेज दीजिए, मदरसा बना दिया चलाने वाले मोहतमिम भेज दीजिए, इबादत ख़ाना तो बना दिया इबादत सिखाने वाले भेज दीजिए, तो रब्बे करीम ने उनकी दुआ को कुबूल किया, दुआ मांगने वाले इबराहीम "ख़लीलुल्लाह" उनकी मदद करने वाले इस्माईल "ज़बीहुल्लाह" जिस घर को बनाया उसका नाम "बैतुल्लाह" और जिससे दुआ मांगी उस हस्ती का नाम "अल्लाह" और जिसके लिये दुआ मांगी उसका नाम "मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल०" चुनांचे नबी ने फ़रमाया कि मैं अपने दादा इबराहीम अ़लै० की दुआ की कुबूलियत बनकर दुनिया में आया, लिहाज़ा नबी तशरीफ़ लाये, लेकिन दुआ मांगने वाले ने जो

दुआ मांगी थी और उसमें जो मक़सद बताया था वह था "يَتْلُوا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ" (پ:۲،ع:۸،آيت:۱۲۴) उन्होंने तज़्किये को चौथे नम्बर पर रखा था, लिहाज़ा जब परवर्दिगार ने नबी अलै० को भेजा तो वही चार मक़सद बयान फ़रमाये, लेकिन तरतीब बदल दी, मेरे इबराहीम यह तज़्किया इतना अहम है इसको चौथे नम्बर पर बयान करने के बजाये इसको दूसरे नम्बर पर रखने की ज़रूरत है, फ़रमायाः (پ:۲۸،آيت:۲) "هُوَ الَّذِىْ بَعَثَ فِى الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا" वह ज़ात जिसने अन–पढ़ों में एक रसूल को भेजा, उसका क्या मक़सद था? "يَتْلُوا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ" इनपर आयात की तिलावत करे और उनका तज़्किया करे तो दुआ मांगने वाले ने चौथे नम्बर पर दुआ मांगी और कुबूल करने वाले ने फिर दूसरे नम्बर पर ज़िक्र फ़रमाया इसलिये तज़्किये की एहमियत मालूम हो गई, तज़्किये के बग़ैर "وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ" काम नहीं आते इसलिये पहले इसका तज़किरा किया कि दर्स व तद्रीस करने वालो! निफ़ाज़े शरीअत की मेहनत करने वालो! इस तज़्किये की भट्टी में तुम्हें भी तपना पड़ेगा तब जाकर काम बनेगा, वरना इख़लास न होने की वजह से तुम दीन के नाम पर दुनियादारी करोगे, अपने आपको भी धोके में रखोगे और मख़लूके ख़ुदा को भी धोके में डालोगे, इसलिये तज़्किये का तज़किरा पहले फ़रमाया, इसके अहम होने की वजह से, अल्लाह तआला के यहां इसकी बड़ी अहमियत है।

तज़्किये के दो तरीक़े

पहला तरीक़ा :– एक तरीक़ा तो यह कि इन्सान दुनिया में अपनी आसानी के साथ अपनी मन मर्ज़ी के साथ किसी अल्लाह वाले से तअल्लुक़ रखे, और उनके बताये हुए दरूद व वज़ीफ़े पर अमल करे, और उनके मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे, ताकि बातिनी निजासतें धुल जायें, मन साफ़ हो जाये, अन्दर के रोग दूर हो जायें, अब उसका तज़्किया हो गया, तो यह इन्सान हलाक हाने वाला इन्सान नहीं "قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى" (پ:۳۰،آيت:۱۴) तेहक़ीक़ फ़लाह पा गया वह जिसने

तज़्किया हासिल किया तो यह फ़लाह पाने वाला इन्सान हुआ, यह पहला और आसान तरीक़ा है तज़्किये का।

दूसरा तरीक़ा :– और अगर कोई आदमी यह काम न करे ईमान लाने के बाद गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ारता फिरे, और इसी हाल में दुनिया से रुख़्सत हो जाये तो अल्लाह तआला चूंकि रहीम व करीम हैं, इसलिये अल्लाह तआला ने उसके लिये इन्तिज़ाम कर दिया, जो बन्दा दुनिया में अपना तज़्किया नहीं करता, फिर अल्लाह तआला ने तज़्किये के लिये हस्पताल बना दिया, जैसे बीमार आदमी के लिये दुनिया में हस्पताल होता है कि जो घर में अपनी सेहत का ख़्याल नहीं रखता, फिर डिस्पेन्सी में हो या होस्पिटल में जाना पड़ता है, इसी तरह जिसने अपनी मर्ज़ी से अल्लाह वालों के साथ रह कर अपना तज़्किया नहीं किया, अब उसे डिस्पेन्सी, हस्पताल में जाना पड़ेगा, डिस्पैन्सी का नाम क़ब्र है, हस्पताल का नाम जहन्नम है, वहां भी तज़्किया होगा, पक्की सच्ची बात ज़िम्मेदारी से अर्ज़ कर रहा हूं, और कुरआने करीम में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि क़्यामत के दिन कुछ लोग ऐसे होंगे कि जिनकी बीमारियां इतनी बड़ी होंगी कि उस हस्पताल में भी उनका कोई इलाज नहीं होगा, जैसे कैन्सर की बीमारी, ऐड्ज़ की बीमारी, दुनिया के हस्पतालों में इनका कोई इलाज ही नहीं, तो अल्लाह तआला ने जो बीमारों के लिये हस्पताल बनाया है, उस हस्पताल में कुफ़्र का, शिर्क का, निफ़ाक़ का इलाज नहीं है, यह ऐड्ज़ और कैन्सर की तरह की बीमारियां हैं रूहानी ऐतिबार से, इसके अलावा जो भी बीमार होंगे उनकी बीमारियों को जहन्नम के हस्पताल में शिफ़ा मिल जायेगी, इसलिये कुरआने करीम में अल्लाह फ़रमाते हैं: यह वह लोग होंगे "لَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ" (पारा 2, आयत 174) अल्लाह तआला क़्यामत के दिन उनसे कलाम भी नहीं करेंगे और उनका तज़्किया भी नहीं होगा।

दुनिया का क़ानून

दुनिया का दस्तूर है कि जब उनके मुल्क में कोई आना चाहे

तो वह शर्त लगाते हैं कि आप अपना हेल्थ सर्टीफ़िकेट (Health Certificate) पेश करें।

अब अफ़्रीका के मुल्क वाले किसी मुल्क में भी जायें तो वह कहते हैं कि जी येलो फ़ीवर का (Yellow Fever) का सर्टीफ़िकेट पेश करें यह उनका हक़ है, उनका इख़्तियार है, वह चाहते हैं कि यह बीमारी वाला हमारे मुल्क में न आये, आप हज को जाना चाहें तो वह कालरा और मीगनाइट्ज़ का सर्टीफ़िकेट मांगेंगे (गुर्दन तोड़ बुख़ार) लिहाज़ा जो बन्दे भी हज को जाते हैं, उनको वह सर्टीफ़िकेट लेना पड़ता है, अगर यह बीमारी है तो वह कहते हैं कि हमारे मुल्क में नहीं आ सकते, हमारे मुल्क में आना है, तो इन बीमारियों से शिफ़ा पाकर आओ, इन बीमारियों की वैक्सिन (Vaccine) लेकर आओ।

जन्नत में जाने का उसूल

इसी तरह अल्लाह तआ़ला ने भी उसूल बना दिया, जन्नत मख़्सूस लोगों की जगह है इसमें दाख़िल होने के लिये तुम भी बअ़ज़ बीमारियों से पाक होकर आओ, कुरआने मजीद में फ़रमाया कि यह जन्नत वह जगह है "وَذٰلِكَ جَزَآءُ مَنْ تَزَكّٰى" और यह बदला है उस बन्दे के लिये जो सुथरा हुआ हो, जो तज़्किया हासिल करेगा उसको जन्नत में दाख़िला मिलेगा, जिसका तज़्किया नहीं होगा वह जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकेगा।

जन्नत में जाने के दो रास्ते

अब जन्नत में जाने के दो रूट (Root) हैं, एक रूट तो यह कि दुनिया में रहते हुए गुनाहों से इन्सान तौबा कर ले, और नेको कारी की ज़िन्दगी गुज़ार कर (तज़्किये वाली ज़िन्दगी गुज़ार कर) सीधा जन्नत में चला जाये, यह शोर्ट रूट (Short Root) है (मुख़्तसर रास्ता) और अगर ग़फ़लत में पड़ा रहा, और दुनिया के अन्दर गुनाह करता रहा तो अल्लाह तआ़ला ने रास्ते में एक हास्पिटल बना दिया, अच्छा तुमने तो कलिमा पढ़ लिया है बन्दे तो मेरे ही हो, हम तुम्हारे

लिये एक और मौका फ़राहम करते हैं, क़ब्र से गुज़ार कर जहन्नम में भेजते हैं, कुछ अर्सा तक जहन्नम में सज़ा मिलने के बाद जब अल्लाह तआला चाहेंगे बीमारी के मुनासिब सज़ा मिलने के बाद उसको निकाल कर अल्लाह तआला जन्नत अता फ़रमायेंगे, अब इसकी थोड़ी तफ़सील कुरआन और हदीस की रोशनी में जब बन्दा बीमार होता है और उसको हास्पिटल लेकर जाते हैं तो उसका एक एमरजेन्सी रूम होता है उसको सबसे पहले एमरजेन्सी रूम में दाख़िल करते हैं, वहां एक अमला होता है वह उससे मुख़्तसर सी मालूमात हासिल करता है और कुछ न कुछ उसको फ़स्ट ऐड दे देता है।

लो भई बड़े डाक्टर आने से पहले पहले तुम्हें कुछ इलाज हम देते हैं बिल्कुल इसी तरह क़ब्र भी इन्सान के लिये हास्पिटल के एमर–जेन्सी रूम की तरह है, इन्सान वहां जायेगा, अल्लाह तआला दो फ़रिश्तों को भेजेंगे वह आके उससे हिस्ट्री पूछेंगे :

"مَنْ رَبُّكَ؟ مَنْ نَبِيُّكَ؟ مَادِيْنُكَ؟"

जैसे हस्पताल में डॉक्टर पूछते हैं आपको क़ब्ज़ तो नहीं है? आपको फ़लां चीज़ तो नहीं है? फ़लां चीज़ तो नहीं? दो तीन सवालों में उनको अन्दाज़ा हो जाता है कि उसको है क्या? इसी तरह क़ब्र में भी सिर्फ़ तीन सवाल पूछेंगे जिनसे पता चल जायेगा कि उसकी बीमारी किस क़िस्म की है, अगर गुनाहगार होगा तो फिर उसके लिये ट्रीटमेन्ट शुरू कर देंगे, और पहली ट्रीटमेन्ट क्या होगी? कि क़ब्र उसको दबायेगी, जैसे बीमार आदमी को दर्द में दबाते हैं, तो जिसको गुनाहों का दर्द होगा क़ब्र भी उसका ट्रीटमेन्ट कर लेगी, उसे दबायेगी मगर क़ब्र का दबाना कैसे होगा? फ़रमाया कि इधर की पसलियां उधर और उधर की पसलियां इधर हो जायेंगी, यूं क़ब्र दबायेगी, यूं भींचेगी और फिर उसकी क़ब्र को जहन्नम का गढ़ा बना दिया जायेगा, कुछ मरीज़ होते हैं जिनको ख़ास टैम्प्रेचर पर रखा जाता है, और कई मरीज़ों को एयर कन्डीशन कमरे में, लिहाज़ा अगर नज़ले, ज़ुकाम का मरीज़ होता है तो कहते हैं कि थोड़ा ठन्डे से

बचाओ और उसको गर्म जगह पर रखते हैं, इसी तरह जिसको गुनाहों का नज़ला, ज़ुकाम होगा उसकी क़ब्र को भी थोड़ा टैम्प्रेचर में रखेंगे, और अगर सेहतमन्द आदमी है तो उसकी क़ब्र को जन्नत का बाग़ बना देंगे कि यह तो सेहतमन्द है उनको वेटिन्ग रूम में ठहराया जाता है, कि चलो भई तुम लाऊंज में जाकर बैठो, जिस तरह जिसे फ़लाइट लेनी होती है हवाई जहाज़ का सफ़र करना होता है, उसको ख़ूबसूरत जगह लाऊंज में बैठाते हैं, तुम थोड़ा लाऊंज में बैठो तुम्हारी फलाइट आने वाली है, इसी तरह नेक आदमी की क़ब्र को भी लाऊंज बना दिया जायेगा, जन्नत का बाग़ बना दिया जायेगा यह कुछ अ़र्सा यहां रहेगा, फिर इसके बाद असली मंज़िल पर रवाना होगा और अगर यह आदमी बेनमाज़ी था तो उसकी क़ब्र पर एक अज़दहे को मुसल्लत कर दिया जायेगा, हदीसे पाक में आता है कि वह अज़दहा उसको वक़्तन फ़वक़्तन काटेगा और उसका ज़हर उसके पूरे जिस्म के अन्दर असर करेगा, जिससे उसकी हड्डियां टूटेंगी, ज़हर जब सरायत कर लेगा तो पूरे जिस्म के अन्दर इर्तिआश होगा, और इसका शदीद दर्द होगा, जिसको वह महसूस करेगा, हास्पिटल में जैसे ड्रिप लगा देते हैं, डी हाइड्रेशन होती है तो बोतल लगा देते हैं, अब उसमें क़तरा क़तरा उसको मिल रहा होता है इसी तरह क़ब्र में भी उसको ट्रीटमेन्ट मिल रही है अज़दहा उसपर मुसल्लत है वह उसको थोड़ी थोड़ी देर के बाद काट रहा होता है और उसको दवाई पहुचा रहा है और दवाई भी ऐसी कि जिस्म में उसको शदीद तक्लीफ़ महसूस हो रही है।

"كَذَالِكَ الْعَذَابُ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ اَكْبَرُ" (पारा 29, रुकू 3, आयत 33) एक मर्तबा ट्रीटमेन्ट होती है और आख़िरत की ट्रीटमेन्ट तो इससे भी बड़ी होगी।

अब तबीबे आज़म अल्लाह तआ़ला के सामने खड़े होना पड़ेगा, अब अल्लाह तआ़ला उससे तफ़्सील पूछेंगे जैसे बड़ा डॉक्टर हस्पताल में सुबह के वक़्त वह मरीज़ से ज़्यादा सवाल पूछ कर बीमारी को डाइगनोज़ करता है, फ़ैसला करता है कि उसको किस दर्जे में जाना

है, किस वार्ड में दाख़िल होना है यह नार्मल वार्ड का बन्दा है, (I.C.U.) में वह रिपोर्ट मांगता है, इसी तरह अल्लाह तआला भी कहेंगे नामा आमाल दिखाओ, यह उसकी रिपोर्ट है, पिछली रिपोर्टों की फ़ाइल बनी होती हैं, लिहाज़ा वह फ़ाइल अल्लाह के हुज़ूर पेश कर दी जायेंगी,

"وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ، وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَا لِهٰذَا الْكِتَابِ لَايُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّا اَحْصٰهَا"

(पारा 15, आयत 49)

फिर फ़ाइल के अन्दर कुछ फ़ोटो भी लगे हुए हैं, एक्स–रे लगे होते हैं, अल्लाह तआला भी ज़मीन को कहेंगे

"يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰلَهَا"

(पारा 30, आयत 5)

जैसे कैमरा फ़ोटो लेता है अल्लाह की ज़मीन भी कैमरे की तरह फ़ोटो ले रही है, किस–किस जगह गुनाह किया? कौन कौन सा गुनाह किया? ज़मीन भी क़यामत के दिन अल्लाह के हुज़ूर इसकी रिपोर्ट पेश कर देगी, जैसे कम्प्यूटर के अन्दर हार्ड डिस्क होती है, जो कम्प्यूटर पर काम हुआ, आप हार्ड–डिस्क के अन्दर फ़ाइल सेव (महफ़ूज़) कर लें, सब पता चल जायेगा, अल्लाह तआला भी फ़रमायेंगे।

اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰى اَفْوَاهِهِمْ

(पारा 23, रुकू 3, आयत 65)

आज के दिन तुम्हारे मुंह पर तो हमने मोहर लगा दी बोलने की तो ज़रूरत ही नहीं, और दिल की हार्ड डिस्क "وَحُصِّلَ مَافِى الصُّدُوْرِ" (पारा 30, रुकू 11, आयत 10) जो सीनों में होगा हम उसे खोलकर बाहर कर देंगे "يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ" (पारा 30, रुकू 11, आयत 10) यह वह दिन होगा कि भेदों को खोल दिया जायेगा, अल्लाह तआला दिल की हार्ड डिस्क खोलकर दिखा देंगे, "اِقْرَاْ كِتَابَكَ" यह तेरा नामा आमाल है, मियां अपनी फ़ाइल देख लो, "كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا"

(पारा 15, रुकू 2, आयत 14) आज तू अपना मुहासिब खुद काफ़ी है, और फिर यह बन्दा कह रहा होगा कि हां अल्लाह मैंने यह सब काम किये, मैं रूहानी ऐतिबार से बड़ा बीमार हूं फिर उसके बाद आख़िरत के हस्पताल में उसका दाख़िला हो जायेगा, फ़रिश्तों को कहा जायेगा लेजाओ उसको जहन्नम में चुनांचे उसको घसीटकर डाल दिया जायेगा।

जहन्नमियों का लिबास

अब जब हास्पिटल में किसी मरीज़ को लेजाते हैं तो चाहे कितना ही बड़ा क्यों न हो उसको हास्पिटल की वर्दी पहननी पड़ती है, उसके कपड़े उतरवा देते हैं, और हास्पिटल का यूनिफ़ार्म पहना देते हैं, यह दस्तूर होता है अच्छे हास्पिटल का, अल्लाह तआला ने भी जहन्नम का यूंनिफ़ार्म बनाया है।

"سَرَابِيْلهم من قطران" (पारा 13, रुकू 19, आयत 50) कुरआने करीम में इरशाद फ़रमाया, गन्धक के बने लिबास पहनाये जायेंगे, बड़े बदबूदार होंगे, फ़ुक़हा ने लिखा है अगर सारी दुनिया के इन्सान, हैवान, चरिन्द और परिन्द एक जगह इकट्ठे हो जायें, सबको मौत आजाये और सबकी लाशें गल सड़ जायें तो इतनी बदबू वहां भी न होगी, जितनी बदबू जहन्नमी के कपड़ों में होगी, तो यह यूनीफ़ार्म पहनायेंगे, दुनिया में पोइज़न की खुश्बू यह अतर की खुश्बू, खुश्बूएं ढूंडते फिरते हैं, रूम फ्रेशर्ज़ छिड़कते हैं, वहां ऐसी यूनीफ़ार्म पहननी पड़ेगी कि सांस घुटता महसूस होगा इतनी बदबू होगी कि अगर एक कुत्ता मरा पड़ा होता है तो उस रास्ते से गुज़रा नहीं जाता, तो जहां इतने मरे और गले सड़े हों तो वहां बदबू का क्या आलम होगा? और जहन्नमी के कपड़ों की बदबू तो इससे भी ज़्यादा होगी यह यूनीफ़ार्म पहनादेंगे इसके बाद मुख़्तलिफ़ दर्जों में भेज देंगे, कुछ ऊपर के दर्जों में होंगे, कुछ सबसे नीचे के दर्जे में होंगे, "إِنَّ الْمُنَافِقِيْنَ فِي الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ" (पारा 5, रुकू 18, आयत 145) मुनाफ़िक़ लोग जो होंगे दोगले बन्दे दोरन्गी ज़िन्दगी गुज़ारने वाले ऊपर से कुछ और अन्दर

से कुछ ऊपर से ला इलाह् अन्दर से काली बला।

एक चेहरे पर कई चेहरे सजा लेते हैं लोग

इस तरह की जिसकी ज़िन्दगी होगी उन लोगों को जहन्नम के सबसे नीचे के दर्जे में रखा जायेगा कि भाई तु तो स्पेशल यूनिट में जाना तेरी तो मरम्मत वहां करेंगे, लिहाज़ा गुनाहगारों को अलग अलग रूट दिया जायेगा।

जहन्नमियों का खाना

अब बीमारों को डाक्टर आम खाने तज्वीज़ नहीं करता, अगर दिल का बीमार है तो मलाई वग़ैरा नहीं खा सकता, चिकनी चीज़ें नहीं खा सकता, शूगर का मरीज़ है तो वह शकर वाली चीज़ नहीं खा सकता, अलसर का मरीज़ है तो वह मिर्च वाली चीज़ें नहीं खा सकता, जब बीमारी ऐसी हैं इसलिये तुम्हें यह चीज़ें नहीं दी जा सकतीं, जहन्नम के अन्दर जो जायेंगे उनको वहां पर लज़ीज़ खाने नहीं दिये जायेंगे, और आपको पता है जो बीमार होते हैं उनको उबले हुए खाने खाने पड़ते हैं, मजबूरी है वहां भी खाने के लिये कुछ स्पेशल चीज़ें होंगी, जड़ी बूटी से इलाज होगा हर्बल मैडीसिन जैसे दुनिया में जड़ी बूटी का इलाज देते हैं, अल्लाह तआला ने भी वहां जड़ी बूटी रखी है, जिसका नाम ज़क़्क़ूम है फ़रमायाः "اِنَّ شَجَرَةَ الزَّقُّوْمِ طَعَامُ الْاَثِيْمِ" (पारा 25, रुकू 16, आयत 42–44) यह ज़क़्क़ूम का पौदा गुनहगारों के लिये खाना है, "كَالْمُهْلِ يَغْلِىْ فِى الْبُطُوْنِ" (पारा 25, रुकू 16, आयत 45) जब ज़क़्क़ूम को खायेगा तो एक तो उसमें कांटे होते हैं, दूसरा ज़हर होता है, इतना कड़वा कि मुंह से लगाया नहीं जाता, जहन्नमी जब खायेगा न निगलते बनेगी न उगलते बनेगी, और वह कांटे जिस्म के अन्दर फैलेंगे, शिद्दत होगी प्यास की, "العطش العطش" कहेगा, कुछ पीने को दो।

जहन्नमियों का पानी

अब पीने के लिये मशरूबात मिलेंगे अच्छे तो दुनिया में दे चुके,

अब तुम बीमार हो, बीमार आदमी जब नज़ला, जुकाम का मरीज़ होता है तो सीरप पिलाते हैं, और कई सीरप कड़वे भी होते हैं, बच्चों को पिलाओ तो मुंह बनाते हैं, औ़रतें बीमार फिरती रहती हैं, लेकिन दवाई नहीं लेतीं, कहती हैं यह दवा कड़वी है, जब ख़ून ख़राब होता है तो उसको साफ़ करने के लिये कड़वा शरबत पिलाते हैं, अब इस जहन्नमी को भी कड़वा शरबत पिलाया जायेगा, वह उबली हुई क्या चीज़ होगी? उसका नाम गि़सलीन है, हदीसे पाक में आता है जहन्नमियों के जिस्म से जो ख़ून और पीप निकलेगी, फ़रिश्ते उनको प्याले में जमा करके प्यासे जहन्नमियों को देंगे।

وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُوْنَ

(पारा 29, रुकू 5, आयत 36-37)

पियो कड़वा शरबत तुम्हारी बीमारी का इलाज इसीसे होता है, इसी को पीना पड़ेगा, ज़िस तरह लोग दुनिया में कड़वे शरबत पीते हैं, वहां भी पीना पड़ेगा, अब बताइये कि पीप में बू इतनी होती है कि देखा नहीं जाता, सूंघा नहीं जाता, वहां पीना पड़ेगा, फ़रिश्ते पिलायेंगे कि पियो इसे।

ज़कात न देने वाले का अन्जाम

फिर कुछ लोग होंगे जिन्होंने ज़कात नहीं दी हुई होगी, नहीं देते होंगे तो जैसे जिस्म के अन्दर दर्द होता है तो गर्म पानी की वाटर-बैग ऊपर रखते हैं, टिकोर होती है, तो ऐसे ही बन्दा जो ज़कात नहीं देता होगा उसकी भी जहन्नम में टिकोर करेंगे, उसके सारे माल को जहन्नम के अन्दर पिघलायेंगे।

يَوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ

(पारा 10, रुकू 11, आयत 35)

फिर उनकी पेशानियों को दागा जायेगा, "وَجُنُوْبُهُمْ" पहलुओं को, "وَظُهُوْرُهُمْ" उनकी पीठ को "هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ" यह है जिसे तुम जमा करके रखते थे, ज़रा मज़ा चखो इसका, अब उसकी बीमारी का इलाज इस तरह से किया जायेगा, कुछ और भी लोग होंगे।

खुले सर फिरने वाली ओ़रत की सज़ा

हदीसे पाक में आता है कि जहन्नम के अन्दर नबी ने एक ओ़रत को देखा क़द उसका इतना बड़ा कि उसका एक एक बाल उखाड़ा जा रहा है, जैसे दरख़्त उखाड़ देते हैं तो कितनी जड़ें होती हैं, ऐसे एक बाल उखाड़ा जाता है इतनी जड़ें उसमें हैं उसको तक्लीफ़ होती है, एक एक बाल कर करके उसके जिस्म के सारे बाल उखाड़े जाते हैं, यह कौन है? जो खुले सर फिरने वाली थी जो बाज़ारों में खुले सर फिरती थी, ग़ैर महरमों के सामने खुले सर आती थी, उसको भी सज़ा दी जायेगी, उसका भी ट्रीटमेन्ट होगा।

ज़बान पर क़ाबू रखिये

कुछ लोग होंगे जो दूसरों के दिलों को जलाते होंगे कई लोग होते हैं जो कहते हैं मैंने उसको सड़ाया है मैंने उसका दिल जलाया है, मैंने उसको जलाने के लिये यह काम किया, उसके लिये भी वहां एक शोबा है, "وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ" (पारा 30, रुकू 29, आयत 1) वैल है हर उस बन्दे के लिये जो ऐ़ब गो हो और ऐ़ब जो हो, यह दो बीमारियों हैं (1) एक ऐ़ब तलाश करना (2) दूसरा किसी की ग़लती का पता चल जाये तो लोगों में फैलाते फिरना, ऐसे लोगों के लिये अल्लाह तआ़ला ने स्पेशल ट्रीटमेन्ट रखा है, वहां जाकर उनको सुतूनों से बान्ध देंगे, फिर अल्लाह तआ़ला की आग होगी, "نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ الَّتِیْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْئِدَةِ" (पारा 30, रुकू 29, आयत 6–7) वह आग होगी मगर उसकी चिंगारियां ऐसी होंगी जैसे काईडेड रॉकेट इसकी चिन्गारियां सीधी दिल पर जाकर लगेंगी, यह अलफ़ाज़ बोल बोल कर लोगों के दिल को तक्लीफ़ पहुंचाता था, आज आग के ज़रिये उसके दिल को तक्लीफ़ पहुंचाई जा रही है, उसके दिल को जलाया जा रहा है, चीख़ेगा, चिल्लायेगा, हदीसे पाक में आता है कि जहन्नमी इतना रोयेंगे कि रो–रो कर उनकी आवाज़ें ऐसी होंगी जैसे दूरे से कुत्तों के भोंकने की आवाज़ें आती हैं, अब तज़्किया हो रहा है, गर्म

पानी में गुस्ल देते हैं ना, यहां तो आग में गुस्ल मिलेगा, हदीसे पाक में आता है कि जहन्नमी जहन्नम के अन्दर इस तरह होंगे कि जिस तरह पानी के अन्दर सब्ज़ी उबल रही होती है।

बद–फ़अ़ली करने वालों की सज़ा

फिर एक और शोअ़बा होगा, इस बन्दे को एक ग़ार के अन्दर लेकर जायेंगे और ग़ार का दरवाज़ा खोलकर इस बन्दे को उस ग़ार के अन्दर धक्का दे देंगे, फिर ग़ार का दरवाज़ा बन्द करेंगे, किताबों में लिखा है कि उस ग़ार में बिच्छू होंगे, इस बन्दे का क़द बड़ा कर दिया जायेगा, और बिच्छू ऐसे कि उनके पीछे जो डन्क है उसकी एक गांठ दुनिया के साज़ो सामान से लदे हुए ऊँट के बराबर होगी, और वह बिच्छू इस बन्दे के ऊपर इस तरह चढ़कर बैठेंगे, जिस तरह शहद के छत्ते पर शहद की मक्खियां, इतने बिच्छू एक वक़्त में इसपर चढ़ेंगे, और वह सब इसको काटेंगे, उसकी एक–एक नस के अन्दर इन्जेक्शन लग रहा होगा, जिस तरह दुनिया में भी जब बीमारी होती है फिर इन्ट्रा विन्स इन्जक्शन लगाया जाता है, जो सीधा रगों में जाता है, इसलिये अल्लाह ने भी वहां के इन्ट्रा विन्स इन्जक्शन बना दिये, तो दुनिया में फ़हश काम करता था, तू ज़िना करता था, और तेरे जिस्म का हर एक हस्सा इससे लुत्फ़ लेता था, अब हिस्से हिस्से को दवा मिलती है, तो या तो तौबा करके अपने गुनाह को दुनिया ही में बख़्शवाये अगर दुनिया में माफ़ी न मांगी तो फिर वहां एक एक नस के अन्दर इन्जक्शन लगेगा इसलिये कि जिस्म के हर हर हिस्से ने लज़्ज़त ली थी, इसलिये हर हिस्से के अन्दर एक इन्जक्शन लगेगा, आप बताइये, दुनिया में एक बिच्छू काटे तो दर्द बरदाश्त नहीं होता, तो जब हज़ारों बिच्छू एक वक़्त में काटेंगे तो इन्सान का क्या हाल होगा।

ग़ौर का मक़ाम

लिहाज़ा अब फैसला कीजिए कि दोनों रास्तों में आसान रास्ता

कौनसा है? दिल जवाब देगा कि दुनिया में आसानी और सहूलत के साथ अल्लाह वालों की सोहबत में रह कर अपने गुनाहों की माफ़ी मांगना, और अल्लाह तआ़ला से गुनाहों को बख़्शवा लेना नेकी पर मौता आना यह आसान रास्ता है ताकि आख़िरत में सीधा जन्नत में भेजा जाये।

और दूसरा रास्ता आख़िरत का तज़्किया जो बड़ा मुश्किल काम है, इसलिये तज़्किया यह अहम चीज़ है, इसके बग़ैर बन्दा जन्नत में नहीं जा सकता, "وَذَٰلِكَ جَزَاءُ مَنْ تَزَكَّىٰ" यह बदला है उसके लिये जो सुथरा हुआ हो, इसलिये फ़रमायाः "وَمَنْ تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ" तुम में से जो सुथरा हुआ है वह अपने लिये सुथरा हुआ है, कोई रब पर उसका एहसान नहीं अपनी जान छुटी, खुद जहन्नम के अ़ज़ाबों से बचा, तो इसलिये हमें चाहिये कि हम अपने तज़्किये की फ़िक्र करें, ऐसा न हो कि इससे पहले मौत आ जाये और हम फिर आख़िरत के हस्पताल में ऐडमिट होते फिरें, दुनिया में सेहत की कोशिश कर लीजिए अपने आपको सन्वार लीजिए, रूहानी बीमारियों से शिफ़ा पा लीजिए, यह इन्सान की रूहानी बीमारियां जिस्मानी बीमारियों की तरह हैं।

उम्महातुल मोमिनीन को पर्दे का हुक्म

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं ऐ नबी अ़लै० की बीवियों पर्दे में रहो ऐसा न हो, "فَيَطْمَعَ الَّذِي فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ" तुम्हें देखकर तमअ़ करे वह बन्दा जिसके दिल में मर्ज़ है, तो यहां से मालूम हुआ कि जो आदमी ग़ैर औ़रत को देखकर तमअ़ करता है यह उसके दिल के अन्दर मर्ज़ की दलील होती है।

अब हम सोचें जब हम मस्जिद से निकल कर बाहर जाते हैं तो हमारी निगाहें ग़ैर औ़रतों पर कैसे पड़ती हैं? अभी पता चल जायेगा कि हमारे अन्दर रोग है या नहीं? दिल जवाब देगा कि हमारी निगाहें तो शिकारी कुत्ते की तरह पीछे पड़ रही होती हैं, शिकारी कुत्ते की आ़दत है कि जब वह चलता है तो हर झाड़ी में सूंघता है, हर जगह

मुंह मारता है, हम भी इसी तरह रास्ते में जा रहे होते हैं, हर तरफ़ नज़र उठाकर रास्ते में देख रहे होते हैं, इधर भी तमअ़ उधर भी तमअ़, क्या मतलब इसका? यह रोग है अभी एहसास नहीं हुआ इसको ट्रीटमेन्ट की ज़रूरत है तो इन्सान को चाहिये कि वह ज़िक्र सीखे, सुन्नत की पैरवी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारे ताकि दुनिया के अन्दर उसके बातिन की बीमारियां उससे दूर हो जायें उसको शिफ़ा मिल जाये, नमाज़ से शिफ़ा मिलती है, ज़िक्र से शिफ़ा मिलती है, फ़रमाया: "ذِكْرُ اللّٰهِ شِفَاءُ الْقُلُوْب" "कुरआन से शिफ़ा मिलती है" "وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ" (پ:١٠، ع:٨، آیت:١٥/١٤) "فَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ" (پ:١٩، ع:٩، آیت:٨٠) "شِفَاءٌ لِّمَا فِی صُدُوْرِ، هُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ" (پ:١١، ع:١١، آیت:٥٧) "وَيُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَاهُوَ شِفَآءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا" (پ:١٥، ع:٩، آیت:٨٢) "قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ آمَنُوْا هُدًى وَّ شِفَآءٌ" सुब्हानल्लाह कुरआने पाक नुस्ख़–ए–शिफ़ा है जो हमारे पास मौजूद है मगर हम उसको पढ़कर उससे फ़ायदा नहीं उठाते।

तौबा में देर क्यों?

तो हमें चाहिये कि अपनी मौत से पहले पहले तौबा करें, और यह अ़जीब अल्लाह तआ़ला की रहमत है कि तौबा ऐसा टानिक है, ऐसी दवाई है कि जो बन्दा इस दवाई को इस्तेमाल कर ले, सारी बीमारियां इस दवाई के ज़रिये एक वक़्त में ख़त्म हो जाती हैं, इसलिये बड़े से बड़ा आदमी काफ़िर व मुशरिक भी अगर अपनी मौत से पहले तौबा करके ताइब हो जाये और कलिमा पढ़कर अल्लाह के फ़रमांबरदार बन्दों में शामिल हो जाये तो फ़रमाया: "اَلْاِسْلَامُ يَهْدِمُ مَا كَانَ قَبْلَهٗ" पीछे की सब बीमारियां ख़त्म, नई ज़िन्दगी मिल जायेगी, सोचने की बात है, हम कैसे मरीज़ हैं, कि जिनको अन्जाम का भी पता है कि हम मरीज़ हैं और उनके पास तिर्याक़ भी मौजूद है, आबे हयात भी मौजूद है, जिसका दूसरा नाम तौबा है और हम इस तौबा के ज़रिये अपने गुनाहों को नहीं बख़्शवाते, हमें चाहिये कि हम वक़्त की क़द्र करें, कब वक़्त आयेगा कि हम बदलेंगे, अल्लाह तआ़ला कितने

अजीब अन्दाज़ में फ़रमाते हैं।

اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ

(पारा 27, रुकू 18, आयत 16)

क्या ईमान वालों के लिये अभी वक़्त नहीं आया कि उनके दिल डर जायें, कब वक़्त आयेगा? हम कब अपने पर नज़र डालेंगे? हम कम एहसास करेंगे? कब तक अन्धे बनकर ज़िन्दगी गुज़ारेंगे? तो फिर आख़िरत में भी अन्धा खड़ा कर देंगे? आज वक़्त है एहसास करने का, आज वक़्त है तौबा करने का, हज़रत मुफ़्ती शफ़ीअ़ साहब रह० ने एक अ़जीब बात लिखी है फ़रमाते हैं अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है "مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءً يُّجْزَبِهٖ" जिसने भी गुनाह किया (बुरा काम किया) उसको इसका बदला मिलेगा तो वह फ़रमाते हैं कि जिस बन्दे ने भी गुनाह किया हर गुनाह के बदले उसको सज़ा मिलेगी कोई इस्तिसना नहीं है, तो इसपर फ़रमाते हैं कि सज़ा लाज़िमी मिलनी है मगर सज़ा के दो तरीक़े हैं (1) एक तरीक़ा तो यह कि दुनिया में आग में जले (2) दूसरा तरीक़ा यह कि आख़िरत की आग में जले, अब आख़िरत की आग में जलने का मन्ज़र तो बता दिया, दुनिया की आग क्या है? फ़रमाते हैं शर्मसारी की आग निदामत की आग यह भी दिल की एक आग है, जब इन्सान शर्मिन्दा होता है, नादिम होता है, पशीमान होता है, यह अन्दर की आग होती है, वह फ़रमाते हैं कि जो बन्दा अपने गुनाहों पर दिल में शर्मिन्दा होगा, दिल में नादिम होगा, दिल में अल्लाह तआ़ला के सामने पशीमान होगा, "الندم توبة" लिहाज़ा यह निदामत उसकी तौबा बन जायगी, अल्लाह तआला इस निदामत की वजह से पिछले सब गुनाहों को माफ़ फ़रमा देंगे, तो अल्लाह तआ़ला ने रास्ता खुला रखा है, हम तिर्याक़ इस्तेमाल कर लें, और अपने गुनाहों की माफ़ी मांगें, ताकि अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर हम बख़्शे हुए बन्दों में शामिल हो जायें, अल्लाह तआ़ला बड़े करीम हैं जब कोई बन्दा तौबा करता है तो अल्लाह तआला उसके गुनाह को माफ़ फ़रमा देते हैं।

मग़्फ़िरत का अजीब वाक़िआ

अब एक वाक़िआ सुनिये और दिल के कानों से सुनिये, कुछ लोग सुन रहे होते हैं, मगर सुन नहीं रहे होते।

وَتَرَاهُمْ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ

(पारा 9, रुकू 14, आयत 198)

ऐ महबूब आप देखते हैं कि यह काफ़िर आपकी तरफ़ देख रहे हैं उनमें तो बसीरत ही नहीं, देखते ही नहीं हैं, लिहाज़ा कुछ लोग सुन रहे होते हैं, लेकिन इधर से सुनकर उधर से निकाल देते हैं, दिल में असर नहीं होता, इसलिये तवज्जुह से सुनिये, हसन बसरी रह० का दौर है, आपकी एक शागिर्दा जो बाक़ायदा आपका दर्स सुनने के लिये आया करती थी, उसका एक बेटा था, शौहर का अच्छा कारोबार था, यह नेक औरत थी, इबादत गुज़ार ख़ातून थी, बाक़ायदा दर्स सुनती, और नेकी पर ज़िन्दगी गुज़ारती थी, इस बेचारी का जवानी में शौहर चल बसा, उसने दिल में सोचा कि एक बेटा है, अगर मैं दूसरा निकाह कर लूंगी मुझे शौहर मिल जायेगा, मगर बच्चे की ज़िन्दगी बरबाद हो जायेगी, पता नहीं वह इसके साथ कैसा सुलूक करेगा, अब वह जवान होने के क़रीब है यही मेरा सहारा सही, लिहाज़ा यह सोचकर मां ने जज़्बात की कुर्बानी दी, ऐसी औरत के लिये हदीसे पाक में आया कि जो इस तरह अगली शादी न करे, और बच्चों की तरबियत व हिफ़ाज़त के लिये इसी तरह ज़िन्दगी गुज़ारे तो बाक़ी पूरी ज़िन्दगी उसको ग़ाज़ी बनकर ज़िन्दगी गुज़ारने का सवाब दिया जायेगा, क्योंकि जिहाद कर रही है, अपने नफ़्स के ख़िलाफ़, लिहाज़ा वह मां घर में बच्चे का पूरा पूरा ख़्याल रखती थी, लेकिन यह बच्चा जब घर से बाहर निकल जाता तो मां से निगरानी न हो पाती, अब उसके पास माल की भी कमी नहीं थी, उठती जवानी भी थी, और यह उठती जवानी क्लोरोफ़ार्म के नशे की तरह होती है, जैसे इसका नशा मरीज़ को सुंघाओ तो कुछ पता नहीं चलता, दिन कब चढ़ा कब डूबा? यह जवानी भी इसी तरह होती है, दीवानी, मस्तानी, शहवानी,

कुछ पता नहीं होता इस जवानी में नौजवानों को कि क्या हो रहा है? अपने जज़्बात में लगे होते हैं, चुनांचे वह बच्चा बुरी सोहबत में गिरफ़्तार हो गया, शबाब और शराब के कामों में मसरूफ़ हो गया, मां बराबर समझाती, लेकिन बच्चे पर कुछ असर न होता, चिकना घडा बन गया, वह उनको हज़रत हसन बसरी रह० के पास लेकर आती, हज़रत भी उसको कई कई घन्टे समझाते, लेकिन उसका नेकी की तरफ़ ध्यान ही नहीं था, कभी कभी मां को मिलने आता मां फिर समझाती और फिर उसको हज़रत के पास ले जाती, हज़रत भी समझाते दुआएं भी करते मगर उसके कान पर जूं न रेंगती यहां तक कि हज़रत के दिल में यह बात आई कि शायद इसके दिल पर मोहर लग गई है, "كَذَالِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ"

कभी कभी अल्लाह तआला मोहरे जब्बारियत लगा देता है, दिलो को पत्थरों से भी ज़्यादा सख़्त कर देता है, लिहाज़ा हज़रत के दिल में भी यह बात आई कि शायद अब उसका दिल पत्थर बन गया है, मोहर लग गई है, मां तो बहर हाल मां होती है, दुनिया में मां ही तो है जो अच्छों से भी प्यार करती है बुरों से भी प्यार करती है, उसकी नज़र में तो उसके बच्चे बच्चे ही होते हैं सारी दुनिया अच्छों से प्यार करती है, मां वह शख़्सियत है औलाद बुरी भी हो जाये, वह कहेगी क़िस्मत उनकी मगर मेरे तो बच्चे हैं, मां तो उनको नहीं छोड़ सकती, बाप भी कह देता है कि घर से निकल जाओ, इसको धक्का दो, मगर मां कभी नहीं कहती, उसके दिल में अल्लाह ने मुहब्बत रखी है, चुनांचे मां उसके लिये फिर खाना बना कर देती है, उसके लिये दरवाज़ा खोलती, और फिर प्यार से समझाती, मेरे बेटे, नेक बन जा, ज़िन्दगी अच्छी कर ले, अब देखिये अल्लाह की शान कि कई साल बुरे कामों में लग कर उसने सेहत भी तबाह कर ली और दौलत भी तबाह कर दी, उसके जिस्म में बीमारियां पैदा हो गईं, डाक्टरों ने बीमारी भी ला–इलाज बताई, शबाब के कामों में टी बी तो होती ही है, तो ला–इलाज बीमारी लग गई, लिहाज़ा अब उठने की भी सकत नहीं रही, और बिस्तर पर पड़ गया, इतना कमज़ोर हो गया कि अब

उसको आख़िरत का सफ़र सामने नज़र आने लगा, मां फिर पास बैठी हुई मुहब्बत से समझा रही है।

मेरे बेटे! अब तू ने जो ज़िन्दगी का हश्र कर लिया वह तो कर लिया, अब भी वक़्त है तू माफ़ी मांग ले तौबा कर ले, अल्लाह तआला गुनाहों को माफ़ करने वाले हैं, जब मां ने फिर प्यार व मुहब्बत से समझाया, फिर उसके दिल पर कुछ असर हुआ, कहने लगा कि मां मैं कैसे तौबा करूं, मैंने तो बहुत बड़े बड़े गुनाह किये हैं, मां ने कहा: बेटा हज़रत से पूछ लेते हैं, कहा अम्मी मैं चलकर जा नहीं सकता, आप उठाकर ले जा नहीं सकतीं, तो मैं कैसे उन तक पहुंचूं? अम्मी आप ऐसा करें कि आप खुद ही हसन बसरी रह० के पास जायें और हज़रत को बुला कर ले आयें, मां ने कहा ठीक है, बेटा! मैं हज़रत के पास जाती हूं, बच्चे ने कहा कि अम्मी अगर आपके आने तक मैं दुनिया से रुख़्सत हो जाऊँ तो अम्मी हसन बसरी रह० से कहना कि मेरे जनाज़े की नमाज़ भी वही पढ़ायें, चुनांचे मां हसन बसरी रह० के पास गईं, हज़रत खाने से फ़ारिग़ हुए थे और थके हुए थे, और दर्स भी देना था, इसलिये क़ैलूले के लिये लेटना चाहते थे मां ने दरवाज़ा खटखटाया पूछा कौन? अर्ज़ किया हज़रत मैं आपकी शागिर्दा हूं मेरा बच्चा अब आख़री हालत में है वह तौबा करना चाहता है, लिहाज़ा आप घर तशरीफ़ ले चलें, और मेरे बच्चे को तौबा करा दें, हज़रत ने सोचा कि अब फिर वह उसको धोका दे रहा है, फिर वह उसका वक़्त ख़राब करेगा, और अपना भी करेगा, सालों गुज़र गये अब तक तो कोई बात असर न कर सकी अब क्या करेगी, कहने लगे मैं अपना वक़्त क्यों ख़राब बरबाद करूं? मैं नहीं आता, मां ने कहा हज़रत उसने तो यह भी कहा है कि अगर मेरा इन्तिक़ाल हो जाये तो मेरे जनाज़े की नमाज़ हसन बसरी रह० पढ़ायें, हज़रत ने कहा मैं उसके जनाज़े की नमाज़ भी नहीं पढ़ाउँगा, उसने तो कभी नमाज़ ही नहीं पढ़ी, और कुछ हज़रात थे, इस उम्मत में कि जो बेनमाज़ी के जनाज़े की नमाज़ नहीं पढ़ाते थे वह कहते थे कि "مَنْ تَرَكَ الصَّلٰوةَ مُتَعَمِّدًا فَقَدْ كَفَرَ" यह तो इमाम अअज़म रह० पर अल्लाह रहमतें बरसाये

कि उन्होंने गुन्जाइश रखी कि आप फ़रमाते हैं उसने काफ़िरों वाला काम तो किया मगर कुफ़्र का इतलाक़ उसपर नहीं होता, तो हसन बसरी रह० ने फ़रमाया कि उसने तो कभी नहीं पढ़ी, लिहाज़ा मैं जनाज़ा भी नहीं पढ़ूंगा, अब वह शागिर्दा थी, चुप करके उठी मग़मूम दिल है, एक तरफ़ बेटा बीमार, दूसरी तरफ़ से हज़रत का इन्कार इसका ग़म तो दो गुना हो गया था, वह बेचारी आंखों में आंसू लिये हुए अपने घर वापस आई, बच्चे ने मां को ज़ारो क़तार रोता हुआ देखा, अब उसका दिल और मोम हो गया, कहने लगा अम्मी आप क्यों इतना ज़ारो क़तार रो रही हैं? मां ने कहा बेटा एक तेरी यह हालत है और दूसरी तरफ़ हज़रत ने तेरे पास आने से इन्कार कर दिया, तू इतना बुरा क्यों है? कि वह तेरे जनाज़े की नमाज़ भी पढ़ाना नहीं चाहते, अब यह बात बच्चे ने सुनी तो उसके दिल पर चोट लगी, उसके दिल पर सदमा हुआ, कहने लगा अम्मी मुझे मुश्किल से सांस आ रही है, ऐसा न हो मेरी सांस उखड़ने वाली हो, लिहाज़ा मेरी एक वसीयत सुन लीजिए, मां ने पूछा बेटा वह क्या?

अजीब वसीयत

कहा अम्मी मेरी वसीयत यह है कि जब मेरी जान निकल जाये तो सबसे पहले अपना दूपट्टा मेरे गले में डालना, मेरी लाश को कुत्ते की तरह सहन में घसीटना जिस तरह मरे हुए कुत्ते की लाश घसीटी जाती है, मां ने पूछा बेटा वह क्यों? कहा अम्मी इसलिये कि दुनिया वालों को पता चल जाये कि जो अपने रब का नाफ़र्मान और मां बाप का नाफ़र्मान होता है उसका अन्जाम यह हुआ करता है, और अम्मी मुझे क़ब्रिस्तान में दफ़न न करना, मां ने कहा बेटा तुझे क़ब्रिस्तान में दफ़न क्यों न करूं? कहा अम्मी मुझे इसी सहन में दफ़न कर देना, ऐसा न हो कि मेरे गुनाहों की वजह से क़ब्रिस्तान के मुर्दों को तक्लीफ़ पहुंचे, जिस वक़्त नौजवान ने टूटे दिल से आजिज़ी की यह बात कही तो परवर्दिगार को उसकी यह बात अच्छी लगी, रूह क़ब्ज़ हो गई, अभी रूह निकली ही थी और मां उसकी आंखें बन्द कर रही

थी कि बाहर से दरवाज़ा खटखटाया जाता है, औरत ने अन्दर से पूछा "من دق الباب" कौन है जिसने दरवाज़ा खटखटाया? जवाब आया मैं हसन बसरी रह० हूं कहा हज़रत आप कैसे? फ़रमाया जब मैंने तुम्हें जवाब दे दिया मैं सो गया, ख़्वाब में अल्लाह तआला का दीदार नसीब हुआ, परवर्दिगार ने फ़रमाया, हसन बसरी तू मेरा कैसा वली है? मेरे एक वली का जनाज़ा पढ़ने से इन्कार करता है, मैं समझ गया अल्लाह ने तेरे बेटे की तौबा को कुबूल कर लिया है, तेरे बच्चे की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाने के लिये हसन बसरी आया खड़ा है, प्यारे अल्लाह जब आप इतने करीम हैं, कि मरने से चन्द लमहे पहले अगर कोई बन्दा शर्मिन्दा होता है आप उसकी ज़िन्दगी के गुनाहों को भी माफ़ कर देते हैं तो मेरे मालिक आज हम आपके घर में बैठे हुए हैं, आज हम अपने जुर्म की माफ़ी मांगते हैं, अपनी ग़लतियों की माफ़ी मांगते हैं, मेरे मालिक हम मुजरिम हैं, हम अपने गुनाहों का ऐतिराफ़ करते हैं, अल्लाह हम झूठ नहीं बोल सकते, हमारी हकीकत आपके सामने खुली हैं, मगर रहमत फ़रमा दीजिए मेरे मौला हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा दीजिए, हमें तो धूप की गर्मी बरदाश्त नहीं होती, अल्लाह तेरी जहन्नम की गर्मी कहां बरदाश्त होगी, ऐ परवर्दिगारे आलम हमारी तौबा को कुबूल फ़रमा लीजिए और बाकी ज़िन्दगी ईमानी, इस्लामी, कुरआनी बसर करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दीजिए।

وَآخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

दुनिया तमाशा–गाह नहीं

इक़्तिबास

जो इन्सान क़ज़ा (अल्लाह के फ़ैसले) पर राज़ी हो अल्लाह तआला ऐसे बन्दे से बड़े ख़ुश होते हैं, हदीसे पाक में आता है कि जब किताब (लौहे महफ़ूज़) बनी तो अल्लाह तआला ने क़लम को हुक्म दिया कि लिख, तो क़लम ने अल्लाह तआला की तरफ़ से लिखना शुरू किया "ला इलाहा इल्ला अना मुहम्मदु रसूली" सबसे पहले यह लिखा फिर लिखा "मंल्लम यस्तस्लिम बिक़ज़ाई, व लम यस्बिर अ़ला बलाई, व लम यश्कुर अ़ला नअ़माई फ़ल्यत्तख़िज़ु रब्बन सिवाई" 'जो मेरी क़ज़ा को तस्लीम नहीं करता, मेरी भेजी हुई बलाओं पर सब्र नहीं करता, और मेरी नेमतों पर शुक्र नहीं करता, उसको चाहिये कि मेरे सिवा किसी और को अपना रब बना ले'

मोमिन की एक बुनियादी ख़ुसूसियत यह है कि वह अल्लाह के फ़ैसले पर राज़ी रहता है।

(हज़रत मौलाना पीर फ़क़ीर
ज़ुलफ़क़्क़ार अहमद साहब नक़्शबन्दी)

الحمد لِلّٰہِ و کفٰی وسلامٌ علٰی عبادہ الذین اصطفٰی اما بعدا

اعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرّجیم ، بِسمِ اللّٰہ الرّحمٰن الرّحیم

﴿اَحَسِبَ النَّاسُ أن یُّترَکُوا اَنْ یَّقُولُوا آمَنَّا ، وَھُمْ لایُفتَنُونَ ○﴾

(پ۲۰،ع۱۳،آیت۲)

﴿وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِینَ مِنْ قَبْلِھِمْ فَلَیَعْلَمَنَّ اللّٰہُ الَّذِینَ صَدَقُوْا وَلَیَعْلَمَنَّ الْکٰذِبِینَ ○﴾ (پ۲۰،ع۱۳،آیت۳)

سُبحَانَ رَبِّکَ رَبِّ العِزَّۃِ عَمَّا یَصِفُونَ وَسَلامٌ علٰی الْمُرسَلِینَ وَالحَمْدُ لِلّٰہِ ربِّ العَالَمِینَ .

اَللّٰھُمَّ صلِّ علٰی سیدِنَا محمَّدٍ وَّعلٰی آلِ سیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وبَارِکْ وسَلِّمْ

اَللّٰھُمَّ صلِّ علٰی سیدِنَا محمَّدٍ وَّعلٰی آلِ سیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وسَلِّمْ

اَللّٰھُمَّ صلِّ علٰی سیدِنَا محمَّدٍ وَّعلٰی آلِ سیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وبَارِکْ وسَلِّمْ

दुनिया सैर–गाह नहीं इम्तिहान–गाह है

अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को अपनी कु़दरते कामिला स पैदा फ़रमाया और कुछ मोहलत देकर इस दुनिया में भेजा है, यह दुनिया इम्तिहान–गाह है, यह सैर–गाह नहीं, तमाशा–गाह नहीं, आराम–गाह नहीं क़याम–गाह नहीं, यह इम्तिहान–गाह है, अफ़्सोस कि हम ने उसे चराह–गाह बना लिया है।

हमें आज़माइश के लिये पैदा किया गया है, "اَلدُّنیَا دَارُ الْمِحَنِ" दुनिया इम्तिहान–गाह है, हर बन्दा आज़माया जा रहा है, हालात मुख़्तलिफ़ हैं, किसी को अल्लाह देकर आज़माते हैं किसी से लेकर आज़माते हैं, कोई आदमी अपने बेटे का कफ़न ख़रीदने जा रहा है और दूसरा आदमी बेटे की शादी पर उसका दोशाला ख़रीदने जा रहा है, एक नौजवान अपनी बीवी को दुल्हन बनाके ला रहा है, और दूसरा जवान बीवी का जनाज़ा कन्धे पर उठाकर जा रहा है, किसी को कारोबार में बहुत नफ़ा हुआ, किसी को बहुत बड़ा नुक़्सान हुआ, कोई सेहत के आ़लम में है, कोई बीमारी के आ़लम में है, हर इन्सान

आज़माया जा रहा है, यह दुनिया आज़माइश–गाह है, हालात अदलते बदलते रहते हैं, "تِلْكَ الْأَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ" यह दिन हम इन्सानों के अन्दर अदलते बदलते रहते हैं, जब देते हैं तो देखते यह हैं कि शुक्र अदा करता है या नहीं, जब लेते हैं तो देखते हैं सब्र करता है या नहीं, सब्र करने वाला भी जन्नत में जायेगा, शुक्र करने वाला भी जन्नत में जायेगा, इसलिये मोमिन के तो हर हाल में मज़े हैं, यह एक बुनियादी सबक़ है जो हमें अच्छी तरह याद करने की ज़रूरत है।

बेचैनी और परेशानी का फ़र्क़

आज मशरिक़ व मग़रिब का सफ़र करके देखिये आपको हर इन्सान अपने हालात के शिक्वे करता नज़र आयेगा, परेशानियां बताता नज़र आयेगा, नौईयत मुख़्तलिफ़ है, मग़रिब में ईमान न होने की वजह से उनके दिल परेशान हैं, हमारे उन इलाक़ों में वसाइल की कमी की वजह से लोग परेशान हैं, परेशान सब हैं, दो लफ़्ज़ ज़हन में बिठा लीजिए, एक लफ़्ज़ "परेशानी" होता है, और एक लफ़्ज़ "बेचैनी" होता है, दोनों में फ़र्क़ है, मोमिन परेशान तो होता है, लिहाज़ा जब उसपर ग़म, दुख और तक्लीफ़ के हालात आते हैं तो वह मग़मूम हो जाता है, ग़मगीन हो जाता है, मगर बेचैन नहीं होता, जिसका अल्लाह तआला से तअ़ल्लुक़ उसका बेचैनी से क्या तअ़ल्लुक़? इसलिये मोमिन बेचैन नहीं होता, उसके दिल में यह बात बैठी होती है कि यह हालात अल्लाह तआला की तरफ़ से हैं वह मुसर्रिफ़ुल अहवाल हैं, हालात अदलते–बदलते रहते हैं।

हालात आने की वजह

इन्सान पर हालात आने की कई वजहें होती हैं, कभी कभी तो अल्लाह तआला आज़माइश के तौर पर हालात बदलते हैं, नेकों के भी बुरों के भी नेकों पर ग़म के हालात भेज दिये, बुरों पर ख़ुशी के हालात भेज दिये, यह उनके लिये आज़माइश वह उनके लिये आज़माइश, और कई मर्तबा इन्सान के गुनाहों के सबब से उसके

ऊपर बतौर सज़ा बुरे हालात भेजे जाते हैं, नौईयत मुख़्तलिफ़ है:

जब कहा मैंने कि या अल्लाह तू मेरा हाल देख
हुक्म आया मेरे बन्दे नाम–ए–आमाल देख

तो कभी इस क़िस्म के हालात गुनाहों के सबब आते हैं, लेकिन दोनों में फिर फ़र्क़ है, पता चल जाता है कि यह हालात आज़माइश के तौर पर हैं या सज़ा के तौर पर।

हालात बतौर आज़माइश होने की अलामतें

असल में दो बातें हैं कि अगर वह हालात आज़माइश बनकर आते हैं, तो उनसे इन्सान के रुजूअ़ इलल्लाह और इनाबत इलल्लाह में इज़ाफ़ा हो जाता है, अगर पहले नमाज़ों में कमी कर देता था तो अब तकबीरे ऊला से नमाज़ पढ़ता है, अब तहज्जुद भी शुरू कर दी, अब तिलावत भी शुरू कर दी, अब वज़ीफ़े भी शुरू कर दिये, अब मुसल्ले पर बैठने का वक़्त भी बढ़ गया, अब रुजूअ़ इलल्लाह की कैफियत और ज़्यादा हो गई, अब ख़ूब माफ़ी भी मांग रहा है, लिहाज़ा जब दिल की यह कैफ़ियत हो कि मुसीबत और परेशानी आने पर अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ ज़्यादा हो जाये तो यह इस बात की पहली दलील है कि यह हालात आज़माइश के तौर पर हैं, और दूसरी दलील यह है कि इन्सान हालात से परेशान तो होता है, लेकिन उसको अल्लाह तआला से उम्मीद भी बन्धी रहती है (Light of the end of tunnel) सुरंग के आख़िर पर उसको रोशनी नज़र आ रही होती है, वह समझता है कि मैं परेशान तो हूं, मगर अल्लाह तआ़ला मुझे इन हालात में से निकाल देंगे, तो जब दिल में उम्मीद बन्धी हुई हो और रुजूअ़ इलल्लाह में इज़ाफ़ा हो जाये तो समझ लीजिए कि यह मुसीबत मेरे लिये इम्तिहान बन कर आई है।

कुछ लोग अपनी मेहनत और मुजाहिदा से अल्लाह तआ़ला के कुर्ब के अअ़ला तरीन दर्जे नहीं हासिल कर पाते तो अल्लाह पाक छोटी मोटी परेशानियां भेज देता है, जब वह उनपर सब्र करते हैं तो अल्लाह तआ़ला उनको सबब बनाकर उनको अअ़ला दर्जे अ़ता

फ़रमाते हैं, तो मोमिन जब यह देखे कि हालात तो इस वक़्त ऐसे हैं कि मुझे हर तरफ़ दबाया जा रहा है "حَتّٰى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ" जैसा हाल हो ज़मीन अपनी फ़राख़ी के बावुजूद बन्दे पर तंग हो जाये, लेकिन उसका दिल मुत्मइन हो, उम्मीद लगी हुई हो, तो वह समझ ले कि यह परवर्दिगार की तरफ़ से मेरे लिये हदिया है और तोहफ़ा है, इस वजह से फिर अल्लाह वाले बुरे हालात से परेशान नहीं होते बल्कि उनका दिल यह कहता है:

तेरा ग़म भी मुझ को अज़ीज़ है
कि वह तेरी दी हुई चीज़ है

एक बुज़ुर्ग का इलहाम

मालिक बिन दीनार रह० या दाऊद ताई रह० फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा अल्लाह तआ़ला ने इलहाम फ़रमाया कि ऐ दाऊद अगर तुझे खाने में किसी वक़्त सड़ी हुई सब्ज़ी मिल जाये तो तू उसको न देखना बल्कि इस बात को देखना कि जब मैंने रिज़्क़ को तक़्सीम किया तो तू मुझे याद था।

अल्लाह तआ़ला यह चाहते हैं कि मैंने अपने बन्दों को जो रिज़्क़ दिया वह सब उसपर राज़ी रहें, एक बाप घर में कोई चीज़ लाता है और बच्चों में तक़्सीम करता है और कुछ ऊँच नीच रह जाती है, अब जो बच्चा कम चीज़ लेकर भी वालिद से ख़ुश होता है तो बाप उन सबसे बढ़कर उस बच्चे से ख़ुश हो जाता है कि अगरचे अच्छी चीज़ फ़लां ने ले ली, और इसको अदना मिली, मगर बच्चा फिर भी मुझसे राज़ी है, अल्लाह तआ़ला भी इसी तरह उस बन्दे से राज़ी होते हैं जो हालात के ख़राब होने के बावुजूद अपने परवर्दिगार से राज़ी हो जाता है, और जिस तरह एक बाप की बेटी शक्ल की अच्छी न हो, दिमाग़ की अच्छी न हो, अ़क्ल की अच्छी न हो, और फिर भी कोई बहुत हसीन व जमील, मालदार हसब व नसब रखने वाला शरीफ़ नौजवान उसकी बेटी को निकाह में क़ुबूल करले तो यह बाप अपने दिल में इस बच्चे का एहसानमन्द होता है, इज़हार करे या न करे उसका

दिल कह रहा होता है कि उस बच्चे ने अज़मत दिखाई कि मेरी बेटी को अपने निकाह में क़बूल कर लिया, इसी तरह बुरे और मुख़ालिफ़ हालात के बावुजूद जो बन्दा अपने रब से राज़ी होता है तो अल्लाह तआला भी उस बन्दे से बहुत राज़ी होते हैं कि यह मेरा कितना अच्छा बन्दा है कि इस हाल में भी मुझसे राजी है, इसलिये हदीसे पाक में आता है कि जो इन्सान दुनिया में अल्लाह तआला के थोड़े रिज़्क़ पर राज़ी हो जायेगा, अल्लाह तआला क्यामत के दिन उसके थोड़े आमाल पर राज़ी हो जायेंगे, तो मोमिन हर हाल में अल्लाह तआला से राज़ी होता है, हालात में थोड़ी ऊँच नीच तो होती रहती है हालात तो आते जाते रहते हैं।

हालात बतौर सज़ा होने की अलामतें

हां अगर इन्सान ऐसे हालात देखे कि कारोबार में परेशानी आई, सेहत में परेशानी आई, घर में परेशानी आई, और इस परेशानी की वजह से आमाल की तौफ़ीक़ छिन गई, पहले नमाज़ मस्जिद में पढ़ते थे अब घर में पढ़ते हैं, पहले नफ़्लें भी पढ़ते थे, अब सिर्फ़ फ़र्ज़ और सुन्नते मुअक्कदा पढ़ते हैं, वज़ीफ़े भी छूटने शुरू हो गये, और तहज्जुद की नमाज़ें भी ख़त्म हो गई, दिल मग़मूम और परेशान रहता है, और आमाल में कमी हो गई, तो यह इस बात की पहली निशानी है कि यह बुरे हालात सज़ा के तौर पर मेरी तरफ़ भेजे गये हैं, और दूसरी निशानी यह है कि ऐसे बन्दे के दिल में मायूसी आनी शुरू हो जाती है, आजकल के दौर में जिसे डिप्रेशन कहते हैं, उसे डर लगा रहता है, पता नहीं यह हो जायेगा, पता नहीं वह हो जायेगा, तो यह दो अलामतें हैं, जब आमाल में कमी हो जाये और जब इन्सान को अपने दिल में मायूसी के साए उमडते नज़र आयें तो यह पहचान है कि मेरे किसी गुनाह और किसी बुरे काम के सबब सज़ा के तौर पर यह हालात मेरे ऊपर भेजे गये हैं।

हमारे मशाइख़ ने फरमाया हालात चाहे दर्जे बढ़ाने के लिये आयें या सज़ा के तौर पर आयें, दोनों सूरतों में इस्तग़फ़ार की कसरत

उस बन्दे को फ़ायदे पहुंचायेगी, अल्लाह तआला से मांगे रोये धोये, कुछ लोगों का रोना भी तो पसन्द आ जाता है, तो फिर अल्लाह तआला चाहते हैं कि यह मेरे ऊपर आजिज़ी करे, मुझे उसकी आजिज़ी पसन्द है इसलिये ऐसे हालात भेज देते हैं तो हालात अदलते बदलते रहते हैं, कभी फिर मोमिन बेचैन नहीं होता।

मोमिन को ईमान का सबसे बड़ा फ़ायदा यह है कि यह हालात उसको बेचैन नहीं करते, जैसे एक आदमी के गिर्द शीशे का कमरा बना हो, और बाहर आंधी चल रही हो और वह देख रहा हो कि दरख़्त हिल रहे हैं, पत्ते हिल रहे हैं, दरख़्त गिर रहे हैं, इतनी तेज़ आंधी चल रही है, मगर उसको असर महसूस नहीं हो रहा है, अल्लाह वालों की कैफ़ियत यही होती है उनके गिर्द बुरे हालात और मुख़ालिफ़ हालात की आंधीं चल रही होती है, मगर उनके दिल सौ फ़ीसद मुत्मइन होते हैं, लोग समझते हैं बड़े परेशान हैं, मगर उनके दिल परेशान नहीं होते उनके दिल मुत्मइन होते हैं:

तूफ़ान कर रहा था मेरे अ़ज़्म का तवाफ़
दुनिया समझ रही थी कि कश्ती भंवर में है

तो दुनिया वाले समझते हैं कि कश्ती भंवर में आ गई, लेकिन वह कहते हैं कि वह तो तूफ़ान मेरे अ़ज़्म का तवाफ़ कर रहा था, तो ज़ाहिरी हालात बुरे महसूस होते हैं, लेकिन अल्लाह तआला की तरफ़ से रहमत उनके बदले में मिलती है, इसलिये मोमिन वक़्ती तौर पर परेशान हो जाता है, मगर बेचैन नहीं होता, दिल में इत्मिनान होता है कि जो हो रहा है यह मेरे परवर्दिगार की तरफ़ से हो रहा है, और उसके दिल में यह ख़ुशी होती है कि बस अल्लाह तआला ने उसे भेजा है।

दिल हिला देने वाली हदीसे क़ुदसी

इसलिये "रज़ा बिल–क़ज़ा" जो इन्सान क़ज़ा पर राज़ी हो, अल्लाह तआला उस बन्दे से बड़े ख़ुश होते हैं, हदीसे पाक में आता है जब किताब (लौहे महफ़ूज़) बनी तो अल्लाह तआला ने क़लम को

हुक्म दिया कि लिख तो क़लम ने अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से लिखना शुरू किया "لَا اِلٰهَ اِلَّا انا مُحَمَّد رسولي" सबसे पहले यह लिखा गया, फिर आगे लिखा "مَنْ لَمْ يَسْتَسْلِمْ بِقَضَائِي، وَلَمْ يَصْبِرْ عَلٰى بَلَائِي، وَلَمْ يَشْكُرْ عَلٰى نِعَمَائِي فَلْيَتَّخِذْ رَبًّا سِوَائِي" जो मेरी क़ज़ा को तस्लीम नहीं करता, मेरी भेजी हुई मुसीबतों पर सब्र नहीं करता, मेरी नेमतों पर शुक्र अदा नहीं करता, उसको चाहिये कि मेरे सिवा किसी और को अपना रब बना ले, लिहाज़ा मोमिन की एक बुनियादी खुसूसियत यह है कि वह अल्लाह की रज़ा पर राज़ी होता है जो हालात भी आते हैं वह अपने मालिक से ख़ुश होता है, वह उसका बन्दा और उसका गुलाम बनकर हर वक़्त उसके दरबार पर हाज़िर रहता है, उसके मालूमात में कमी नहीं आती, बल्कि वह और ज़्यादा कर देता है, और अल्लाह की क़ज़ा पर राज़ी रहता है।

अल्लाह तआ़ला की ख़ुशी मालूम करने का तरीक़ा

इसलिये बनी इसराईल के एक शख़्स ने हज़रत मूसा अ़लै० से पूछा, कि हमें कैसे पता चले कि अल्लाह तआ़ला ख़ुश हैं या नहीं? तो हज़रत मूसा अ़लै० कोहे तूर पर तश्रीफ़ ले गये, उन्होंने जाकर पूछा,परवर्दिगारे आ़लम यह लोग पूछते हैं कि हमें कैसे मालूम हो कि अल्लाह तआ़ला हमसे राज़ी हैं या नहीं? तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि मूसा उन लोगों से कह दो अगर यह लोग अपने दिल में मुझसे ख़ुश हैं तो मैं (परवर्दिगार) उनसे ख़ुश हूं और अगर यह अपने दिल में मुझसे शिकायतें रखते हैं तो मैं भी उनसे नाख़ुश हूं, कितनी आसान तरतीब बता दी, अब हम अपने दिल में देखें अगर दिल अल्लाह से राज़ी हो तो समझ लें अल्लाह तआ़ला हमसे राज़ी हैं और अगर दिल में शिक्वे हैं, फ़लां बच्चा छोटी उ़म्र में मर गया, कारोबारी हालत ख़राब है कि जिधर हाथ डालता हूं सोना मिट्टी हो जाता है, अगर इस क़िस्म के शिक्वे और शिकायतें हैं तो फिर समझ लें कि उधर से भी बाज़ पुर्स होगी, कि बतला तू ने भी नेमतों का हक़ अदा किया था कि नहीं?

हक़ तआला का हिल्म

एक बुज़ुर्ग तो बड़ी अजीब बात फ़रमाते थे अल्लाह तआला ने उन्हें इलहाम फ़रमाया कि ऐ मेरे बन्दे उन लोगों से कह दीजिए कि उनपर ज़रा से मुख़ालिफ़ हालात आ जाते हैं, मुश्किल हालात आ जाते हैं तो यह फ़ौरन अपने दोस्तों की महफ़िल में बैठकर मेरे शिक्वे करने लग जाते हैं, जब कि उनके नाम–ए–आमाल गुनाहों से भरे हुए आते हैं, मैं फ़रिश्तों की महफ़िल में उनके शिक्वे तो नहीं करता, वाक़ई बात सौ फ़ीसद सच्ची है, अल्लाह तआला की नेमतें खाते खाते हमारे दांत घिस जाते हैं, लेकिन उसका शुक्र अदा करते हमारी ज़बान तो नहीं घिस जाती, इसलिये मोमिन को चाहिये कि वह हर हाल में अल्लाह से राज़ी रहे, बस दिल में फ़ैसला कर ले मैं अल्लाह तआला से राज़ी रहूंगा, फिर उसके लिये मुश्किल से मुश्किल हालात भी आसान हो जायेंगे, इसलिये फ़रमाया "وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ وَبَشِّرِ الصَّابِرِيْنَ" (पारा 2, रुकू 3, आयत 55) जब इन्सान इन मुश्किल हालात पर सब्र करेगा तो अल्लाह के सवाब का मुस्तहिक़ होगा, हालात तो अदलते बदलते रहते हैं।

हालात में मोमिन का रवैया

इस दुनिया में कोई बे–ग़म नहीं अगर कोई है तो फिर वह बनी आदम नहीं, तो ग़म हर एक पर आता है उसकी क़िस्में मुख़्तलिफ़ होती हैं, लेकिन अल्लाह वाले उनको दिलों में रख लेते हैं, अपने महबूब के शिक्वे नहीं करते, जैसे हम लोगों को बताते फिरते हैं कि यह हो गया वह हो गया, यही तो परवर्दिगार का शिक्वा है तो मोमिन लोगों के सामने नहीं कहता, दो रक्अत नफ़्ल पढ़ के दुआ मांग के अपने अल्लाह से कहता है, यह दो रक्अत सलाते हाजत हैं यह हक़ीक़त में अल्लाह तआला से गुफ़्तुगू करने का एक ज़रिया और तरीक़ा है तो मोमिन सलाते हाजत पढ़ता है, और यही सहाबा किराम

का अमल था और मशाइख़ का भी कि जब भी मुश्किल हालात आते तो फ़ौरन मुसल्ले पर आ जाते थे और अल्लाह तआ़ला से दुआएं मांगते थे तो यह अल्लाह से लेने का एक तरीक़ा है जो हमें सिखा दिया गया अब इसको सोचिये कि ईमान के सबब हमारी ज़िन्दगी कितनी आसान हो गई, आज मग़रिब में दुनिया जहान की माद्दी सहूलियात मुयस्सर हैं, मगर फिर भी वह लोग अपने आपको दुखी कहते हैं, (लाइफ़ इज़ वेरी डिफ़िकल्ट) मुश्किल हालात भी होते हैं फिर भी अल्लाह का शुक्र अदा कर रहा होता है, अपने मालिक से खुश और राज़ी होता है।

जिधर मौला उधर शाह दौला

एक बुजुर्ग गुज़रे हैं शाह दौला, उनकी बस्ती के क़रीब एक बन्द बान्धा हुआ है, सैलाब आता तो बस्ती डूबने का ख़तरा होता, इसलिये लोगों ने बन्द बांध दिया, एक दफ़ा पानी बहुत ज़्यादा आ गया, और एक जगह डर हुआ कि कहीं बन्द टूट न जाये, लिहाज़ा लोग उनके पास गये कि जी दुआ करें कि कहीं बन्द टूट न जाये, वह अपना कुदाल लेकर आये और उस जगह को देखा जहां से टूटने का ख़तरा था, और उसको खोदना शुरू कर दिया लोग हैरान कि हज़रत हम तो आपको इसलिये लाये हैं कि बन्द टूटेना आप उल्टा खोद रहे हैं, कहने लगे:

जिधर मौला उधर शाह दौला

अगर मेरे रब को तोड़ना मन्ज़ूर है तो मैं खुद ही क्यों न तोड़ूं? तो उनकी यह आजिज़ी अल्लाह को पसन्द आ गई और पानी घटना शुरू हो गया, सैलाब जहां से आया था वहीं वापस हो गया, अल्लाह वाले सरापा तस्लीम व रज़ा होते हैं, यह सबक़ हमें दिया गया वह हर वक़्त यही कहते हैं "وَاُفَوِّضُ اَمْرِیْٓ اِلَی اللّٰهِ" (पारा 24, रुकू 10, आयत 44, सूरे मोमिन) मैं अपने तमाम काम अल्लाह के सुपुर्द करता हूं, हमें भी चाहिये कि हम अल्लाह से राज़ी हो जायें, कुरआने मजीद में अजीब अन्दाज़ से हक़ तआ़ला फ़रमाते हैं "اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ"

(पारा 24, रुकू 1, आयत 36) क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिये काफ़ी नहीं है? कि यह मेरे दर को छोडड़ कर इधर उधर भागता फिरता हैं, तो इसलिये हमें ऐसे मौक़अ़ पर यही कहना चाहिये, "حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ" इससे बड़े बड़े ग़म हल्के हो जाते हैं।

ग़म हल्का करने का मुजर्रब अ़मल

इसीलिये नबी अ़लै० एक मर्तबा कुफ़्फ़ार के तक्लीफ़ पहुंचाने की वजह से बड़े मग़मूम थे, अल्लाह तआ़ला ने कितने प्यारे अन्दाज़ में फ़रमाया:

وَاصْبِرْ وَمَاصَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَاتَكُ فِىْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ، اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ

(पारा 14, रुकू 22, आयत 128)

कभी आप बहुत परेशान हों तो इस आयत को ज़रा चन्द बार पढ़कर देखा कीजिए आज़मूदा चीज़ है, बड़े बड़े ग़म और मुसीबतें अल्लाह तआ़ला इस आयत के पढ़ने से बन्दे के सर से दूर फ़रमायेंगे, दिल में ठन्डक आ जायेगी, अल्लाह के इस कलाम में अजीब तासीर है, तो परेशान बन्दे को ख़ुश करने के लिये यह आयत अकसीर है इसपर आप ख़ुद भी अ़मल कर लीजियेगा कभी भी कोई परेशानी आये आप इस आयत को पढ़ये, देखिये फिर अल्लाह तआ़ला दिल की हालत को कैसे बदलते हैं।

हालात आने की वजह

यह हालात जो आते हैं इसकी वजह यह है कि अल्लाह तआ़ला के मुख़्तलिफ़ नाम हैं, कभी एक नाम की तजल्ली पड़ती है, और कभी दूसरे नाम की तजल्ली पडती है, जैसे अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं "وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْسُطُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ" (पारा 2, रुकू 16, आयत 245) अल्लाह ही कब्ज करने वाले हैं, (हालात को बान्धने वाला तंग करने वाला) "وَيَبْسُطُ" और वही खोलने वाला भी है तो कभी अल्लाह के नाम "काबुज" की तजल्ली पडी तो हर तरफ से बुरी ख़बरें आने लगीं, हर

तरफ़ से उम्मीदें टूटने लगीं, मुश्किल हालात सामने आने लगे, और कभी "बासित" की तजल्ली पड़ जाती है तो फिर हर तरफ़ से ख़ुशी की ख़बरें आने लगती हैं, उल्टा क़दम भी रख दो तो अल्लाह सीधा कर देते हैं तो यह अल्लाह तआ़ला के नामों की तजल्लियात बन्दे पर पड़ती हैं, तो जब मोमिन ने इस बात को समझ लिया तो अब ग़म कैसा? सारी परेशानियां ख़त्म हो गईं, कभी "जमाल" की तजल्ली पड़ गई, तो सेहत अच्छी है कारोबार अच्छा, बीवी अच्छी, दोस्त अहबाब तारीफ़ें कर रहे हैं, इसलिये कि जमाल की तजल्ली पड़ गई, और अगर "जलाल" की तजल्लियात पड़ गईं, तो फिर दिल में परेशानियां आने लग गईं, तो यह अल्लाह तआ़ला के मुख़्तलिफ़ नामों की तजल्लियात बन्दे के दिल पर वारिद होती हैं, और वैसे ही उसके हालात होते हैं, तो जब हमने यह बात समझ ली कि यह हालात अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हैं तो महबूब जो भी भेजे वह चीज़ महबूब हुआ करती है, इसलिये हम इन मुख़्तलिफ़ हालात में परेशान होने के बजाये अपने अल्लाह से राज़ी रहें।

नबी करीम सल्ल० की दूर रस निगाहें

इसलिये निगाहे नुबुव्वत ने कितनी दूर देखा हम जैसों के आज कल के हालात पर नज़र पड़ी और उस वक़्त सबक़ दे दिया कि सुबह व शाम पढ़ा करो "وَرَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا" मैं अल्लाह से राज़ी हूं, वह मेरा परवर्दिगार है, एक बुज़ुर्ग बड़ी अ़जीब बात फ़रमाते थे कि "ऐ अल्लाह मेरे लिये यही इ़ज़्ज़त काफ़ी है कि तू मेरा परवर्दिगार है" और मेरे लिये यही फ़ख़्र काफ़ी है कि मैं तेरा बन्दा हूं, अल्लाह वाले यूं अपने रब से राज़ी होते हैं, हर हाल में राज़ी रहते हैं, इसलिये तो ग़म उनके पास नहीं आते बल्कि दूर रहते हैं, उनकी ज़िन्दगी इत्मिनान और सुकून से गुज़रती है, अल्लाह तआ़ला हमें हर हाल में इस्तिक़ामत के साथ शरीअ़त पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, ग़ालिब ने एक शेर लिखा है:

किसी अल्लाह वाले की सोहबत मिल जाती तो बन्दा काम का था

मगर शेअ़र बहुत अच्छा कह गया अ़जीब शेअ़र कहा, क्या कहा? कुछ लोगों को महबूब का वस्ल नसीब होता है और कुछ लोग हिज्र और जुदाई की हालत में होते हैं, तो इसपर उसने एक अ़जीब शेअ़र लिखाः

न तो हिज्र है अच्छा, न विसाल अच्छा है
यार जिस हाल में रखे वही हाल अच्छा है

अल्लाह तआ़ला हमें सरापा तस्लीम व रज़ा बनने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, मगर हम दुआ यह करते हैं कि अल्लाह हम कमज़ोर हैं, हम आज़माइश के क़ाबिल नहीं, दुआएं यही करें, मुश्किल हालात मांगें नहीं, मआ़फ़ियां मांगें, अल्लाह मैं कमज़ोर हूं, नाप तोल के क़ाबिल नहीं, मेरे मालिक मेरे साथ आ़फ़ियत का मुआ़मला फ़रमाइये, रहमत का मुआ़मला फ़रमाइये, लेकिन अगर इसके बावुजूद हालात बुरे आ जायें तो सरापा तस्लीम व रज़ा बन जाइये, अल्लाह तआ़ला हमें अपने क़ुर्ब के अअ़ला तरीन दर्जे अ़ता फ़रमायें।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العٰلمين.

ज़िक्र की तासीर

इक़्तिबास

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا.

(पारा 24, सूरे कहफ़, आयत 28)

तर्जुमा :– तू उसकी इताअ़त न कर जिसके दिल को हमने अपने ज़िक्र से ग़ाफ़िल कर दिया।

अब देखिये इस आयत में "ज़िक्र" का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया, मालूम हुआ कि दिल ज़ाकिर भी होता है और दिल ग़ाफ़िल भी होता है, क़ुरआने पाक की इस आयत से पता चलता है कि अगर दिल से ज़िक्र न होता तो फिर दिल के ग़ाफ़िल होने की बात क्यों करते, एक आ़म सी बात है कि अगर किसी मां का बेटा प्रदेश में हो और मां उसको ख़त लिखवाना चाहती हो तो मां क्या यह लिखवाती है कि बेटा मेरी ज़बान आपको बहुत याद कर रही है, बेटा मेरी आंख तुझे बहुत याद कर रही है, मेरा दिमाग़ तुझे बहुत याद कर रहा है नहीं, बल्कि हमेशा वह लिखवाती है कि बेटा "मेरा दिल आपको बहुत याद कर रहा है" तो मालूम हुआ कि याद दिल का अ़मल है, इसलिये ज़िक्र के दो ही तरीक़े हैं या तो बिल्कुल दिल ही में ज़िक्र करो और अगर ज़बान से इज़हार भी करना है तो फिर ज़िक्रे लिसानी करो, और दोनों तरीक़े साबित हैं, तो असल में याद है ही दिल का अ़मल, लिहाज़ा अगर दिल में याद नहीं तो फिर कहीं भी याद नहीं।

(हज़रत मौलाना पीर फ़क़ीर ज़ुलफ़क़्क़ार अहमद साहब नक़्शबन्दी)

الحمد لِلّٰہِ وَكَفٰى وسلامٌ علٰى عباده الذين اصطفٰى اما بعد!

اعوذ باللّٰہ من الشّيطٰن الرّجيم، بِسمِ اللّٰہ الرّحمٰن الرّحيم

﴿يا اَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيرًا وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَّاَصِيلًا﴾

(पारा 22, सूरे अहज़ाब, आयत 41–42)

तर्जुमा :– ऐ ईमान वालो तुम अल्लाह को ख़ूब याद करो, और सुबह व शाम उसकी तस्बीह करते रहो।

अल्लाह तआला दूसरी जगह फ़रमाते हैं –

﴿وَالذّٰكِرِينَ اللّٰهَ كَثِيرًا وَّالذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيمًا﴾

(पारा 22, सूरे अहज़ाब, आयत 35)

तर्जुमा :– और कसरत से खुदा की याद करने वाले मर्द और याद करने वाली औरतें, इन सबके लिये अल्लाह तआला ने मग्फ़िरत और अजरे अज़ीम तैयार कर रखा है।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلامٌ علَى المُرسلينَ والحمدُ للّٰہِ ربِّ العالمِينَ.

اللّٰهُمَّ صَلِّ عِلٰى سَيِّدِنَا محمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا محمدٍ وبارِكْ وَسَلِّمْ

اللّٰهُمَّ صَلِّ علٰى سَيِّدِنَا محمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا محمدٍ وبارِكْ وَسَلِّمْ

اللّٰهُمَّ صَلِّ علٰى سَيِّدِنَا محمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا محمدٍ وبارِكْ وَسَلِّمْ

लफ़्ज़े ज़िक्र

ज़िक्र का लफ़्ज़ अरबी ज़बान में भी इस्तेमाल होता है और उर्दू ज़बान में भी इस्तेमाल होता है, कुरआने करीम में इसके मुख़्तलिफ़ मआनी हैं, एक तो यह कि यह खुद कुरआने मजीद के लिये इस्तेमाल हुआ फ़रमाया:

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحَافِظُوْنَ

(पारा 14, सूरे हज्र, आयत 8)

इसका मअ़ना बनेगा "नसीहत नामा" बेशक हमने ही इस नसीहत नामों को नाज़िल किया और हम ही उसकी हिफ़ाज़त के ज़िम्मेदार हैं, दूसरा इसका मअ़ना क़्यामत के दिन के हैं, उसके लिये कुरआने

मजीद में इस्तेमाल हुआ है, तीसरा इसका मअ़ना अल्लाह तआ़ला की याद के हैं, जो आयतें पढ़ी गईं, उनमें ज़िक्र से मुराद अल्लाह तआ़ला की याद है, इरशादे बारी तआ़ला है, ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह को कसरत के साथ याद करो और दूसरी जगह फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला को कसरत से याद करने वाले मर्द और औ़रतें अल्लाह ने उनके लिये बहुत बड़ा इनआ़म तैयार कर रखा है।

अल्लाह तआ़ला की याद एक अ़जीब नेमत

जैसे किसी पौधे के लिये पानी होता है इसी तरह इन्सान की रूहानी ज़िन्दगी के लिये ज़िक्र की हैसियत है, जब तक पानी मिलता रहेगा, पौधा सर–सब्ज़ व शादाब रहेगा, इसी तरह इन्सान जब तक ज़िक्र करता रहेगा, रूहानी ऐतिबार से सर–सब्ज़ शादाब रहेगा, जैसे पानी न मिलने से पौधा मुरझा जाता है, इसी तरह ज़िक्र न करने से इन्सान रूहानी तौर पर मुरझा जाता है, आपने देखा होगा, कई दफ़ा चलता फिरता इन्सान अन्दर से मरा हुआ होता है, उसका दिल सोया हुआ होता है, तो अल्लाह तआ़ला की याद एक ऐसा अ़मल है कि जो इन्सान के लिये बहुत अहमियत रखता है, कुरआने मजीद में इसके बहुत सारे फ़ायदे बतलाये गये हैं।

ज़िक्र का फ़ायदा

1. फ़रमाया "اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ" "जान लो अल्लाह तआ़ला की याद के साथ ही दिलों का इत्मीनान वाबस्ता है" जो आदमी ज़िक्र करता है उसके दिल को सुकून मिलता है।

न दुनिया से न दौलत से न घर आबाद करने से
तसल्ली दिल को होती है ख़ुदा की याद करने से

अल्लाह तआ़ला की याद में दिलों का इत्मीनान है, दिल की बेचैनी ख़त्म हो जाती है, और जो लोग ज़िक्र नहीं करते उनका हाल यह होता है बेचारों को रातों को नींद नहीं आती, गोलियां खा खाकर सोने की कोशिशें करते हैं, फिर भी नींद नहीं आती, और जो अल्लाह

की याद करने वाले हैं (सुब्हानल्लाह) परेशानियां अपनी जगह पर सुख सुकून की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं:

कितनी तस्कीन है वाबस्ता तेरे नाम के साथ
नींद कांटों पे भी आ जाती है आराम के साथ

अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र में एक अ़जीब सुकून है, इत्मीनाने क़ल्ब नसीब होती है, काम, कारोबार, घर–बार चौ तरफ़ की परेशानियां होती हैं मगर ज़िक्रे इलाही से सुकून मिल जाता है, दिल में ठन्डक आ जाती है।

2. दूसरा फ़ायदा यह कि जो इन्सान ज़िक्र करता है वह अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त में आ जाता है कुरआने करीम में फ़रमाया गया:

اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا

(पारा 9, सूरे आराफ़, आयत 201)

कि जब शैतान की एक जमाअ़त उनपर हमला–आवर होती हैं तो वह अल्लाह का ज़िक्र करते हैं "فإذا هم مبصرون" (सुब्हानल्लाह) अल्लाह पाक उनको महफ़ूज़ फ़रमा लेते हैं, तो शैतान वस्वसे डालता है बन्दे पर अटेक करता है, और जो इन्सान ज़िक्र क़र रहा होता है वह अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त में आ जाता है, तो वसाविसे शैतान्निया से बचने का सबसे बड़ा आला अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र है, इसके बग़ैर कोई इन्सान शैतान के वसाविस से नहीं बच सकता, इसलिये जो नौजवान कहते हैं कि शैतानी शहवानी वसाविस ने दिमाग़ पर क़ब्ज़ा किया हुआ है, वह असल में ज़िक्र की तरफ़ ध्यान ही नहीं देते यह बात अपने दिलों में लिख लीजिए कि फ़िक्र की गन्दगी ज़िक्र से दूर होती है, जितने इस क़िस्म के बुरे ख़्यालात हैं ज़िक्र उनके लिये झाड़ू है, इससे वह सब साफ़ हो जाते हैं, पाकीज़ा सोच हो जाती है, और यह भी उसूल है कि जब कोई दुशमन हरीफ़ पर क़ाबू पाता है, तो सबसे पहले उस हथियार को छीनता है, जो सबसे ज़्यादा मोहलिक और ख़तरनाक होता है, उसको यह फ़िक्र होती है कि यह मुझपर हमला न कर बैठे इसी तरह शैतान जब इन्सान पर हमला करता है तो सबसे पहले वह यह काम करता है कि अल्लाह की याद

से उसे ग़ाफ़िल कर देता है।

اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰهُمْ ذِكْرَاللّٰهِ

(पारा 28, सूरे मुजादला, आयत 19)

तर्जुमा – "उन पर शैतान ने पूरा तसल्लुत कर लिया है सो उसने उनको ख़ुदा की याद भुलादी।"

इसलिये शैतान का सबसे पहला काम होता है कि उसको ग़ाफ़िल करो क्योंकि ग़फ़लत यह तमाम गुनाहों की इब्तिदा है, लिहाज़ा इससे बचना, और ग़ाफ़िलीन की सोहबत से दूर रहना बेहद ज़रूरी है, और इसका तरीक़ा ज़िक्र है।

ज़िक्र की अहमियत

ज़िक्र इतना अज़ीमुश्शान अमल है कि इसके लिये अल्लाह तआला ने अपने अंबिया किराम को भेजा, ज़रा ग़ौर कीजिए कि जब बड़े नसीहत करें तो वह नसीहत बहुत बड़ी होती है, अब नसीहत करने वाले अल्लाह तआला और जिनको नसीहत की जा रही है वह अंबिया किराम में वह भी अज़ीमुल–मर्तबत हस्तियां हैं तो मालूम हुआ कि यह नसीहत बड़ी अहम है, अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में तज़किरा फ़रमाया, दो हज़रात को नुबुव्वत से सरफ़राज़ किया और उनको अपने काम के लिये भेजा तो भेजते वक़्त उनको हिदायतें और नसीहतें कीं और नसीहत करते हुए फ़रमाया:

(सय्यिदना मूसा अलै० और सय्यिदना हारून अलै० को) "اِذْهَبْ اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰيٰتِيْ وَلَا تَنِيَا فِيْ ذِكْرِيْ" (पारा 16, सूरे ताहा, आयत 42) "जाइये आप और आपका भाई मेरी निशानियों को लेकर मोजिज़ों को लेकर मगर तुम दोनों मेरी याद से ग़ाफ़िल न होना" अल्लाह तआला जब अंबिया अलै० से फ़रमाते हैं कि तुम दोनों मेरी याद से ग़ाफ़िल न होना इससे उसकी अहमियत का पता चलता है, यह है कि दावत इलल्लाह की इब्तिदा की, जाइये फ़िरऔन के पास वह बाग़ी बना हुआ है।

और दावत इलल्लाह की इन्तिहा यह होती है कि इन्सान को

फिर अपनी जान भी पेश करनी पड़ जाती है, ऐन इस लम्हे में जब कि मोमिन अपनी जान अल्लाह के रास्ते में कुर्बान कर रहा है अब बतलाइये कि जब पुशतों के पुशते लग रहे हों जिस्म से ख़ून के फ़व्वारे फूट रहे हों उस वक़्त तो और किसी चीज़ की तरफ़ ध्यान ही नहीं होता, उस वक़्त भी हुक्म दिया कि तुम मेरी याद से ग़ाफ़िल नहीं हो सकते, फ़रमाया:

"يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا" "ऐ ईमान वालो" ऐ मानने वालो "إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوا" "जब तुम्हारा आमना सामना किसी कुफ़्फ़ार की जमाअ़त के साथ हो जाये तो तुम डट जाओ" "وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا" "अल्लाह का ज़िक्र कसरत से करना" "لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ" (पारा 10, सूरे अन्फ़ाल, आयत 45) "कामयाबी तुम्हारे क़दम चूमेगी" अब यह "اذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا" का लफ़्ज़ अगर दरमियान से निकाल देते और यूं कहते "يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ" तो बात फिर भी पूरी हो जाती, लेकिन नहीं इस नुक्ते को दरमियान में रखा कि ऐन उस वक़्त जब तुम्हें अपनी जान की फ़िक्र दामन–गीर हो ऐन उस वक़्त भी तुम मेरी याद से ग़ाफ़िल न होना, जब याद से ग़ाफ़िल नहीं होंगे, तब मेरी मदद तुम्हारे शामिले हाल होगी और कामयाबी तुम्हारे क़दम चूमेगी, अब सोचने की बात है कि दावत इलल्लाह की इब्तिदा में भी ज़िक्र का हुक्म और इन्तहा में भी ज़िक्र का हुक्म, मालूम हुआ कि यह इन्सान ज़िक्र से ही आगे बढ़ा है, उसका सफ़र ज़िक्र के बग़ैर तैय नहीं होता, तो ज़िक्र यह एक बहुत अहम रुक्न है।

सलाहियत धीरे–धीरे बनती है

जब बच्चा पैदा होता है अगर उसको पहले ही दिन भैंस का दूध पिला दें तो उसका हाज़मा ख़राब हा जाता है, पेट ख़राब हो जाता है, क्यों? इसलिये कि उसके मेअ़दे में इतनी इस्तिअ़दाद ही नहीं कि वह उस दूध को बरदाश्त कर सके, उसको या तो मां का दूध दीजिए या बकरी का दूध दीजिए जो लतीफ़ होता है, हल्का होता है, वह भी पानी मिलाकर बच्चा जब उसको पीता है फिर

आहिस्ता आहिस्ता उसके अन्दर इस्तिदाद बनती है, फिर बग़ैर पानी के देना शुरू कीजिए फिर इस्तिदाद बढ़ेगी, यहां तक कि फिर एक वक़्त आता है कि वह बच्चा गाये का दूध भी हज़म कर लेता है, तदरीजन उसका निज़ामे इन्हिज़ाम बेहतर होता जाता है यहां तक कि भैंस के दूध को भी हज़म कर जाता है, अब यह मिसाल सामने रखकर सोचिये।

हर अ़मल का एक नूर होता है ज़िक्र का भी एक नूर है, कुरआने मजीद का भी एक नूर है, अब इन अनवारात को हमारा दिल कैसे जज़्ब करे? इसके लिये दिल में इस्तिदाद होनी चाहिये, अग़र दिल में इस्तिदाद बनी हुई नहीं है तो दिल उन अनवारात को जज़्ब नहीं कर सकेगा, मिसाल के तौर पर और मिसाल भी कुरआने करीम से (सुब्हानल्लाह) अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाते हैं "وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ" "और जब कुरआन पढ़ा जाये" "فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنصِتُوا" "तुम इसे ग़ौर से सुनो और ख़ामोश हो जाओ" "لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ" (पारा 9, सूरे आराफ़, आयत 204) "ताकि तुम पर रहमतें बरसाई जायें" अब यह कुरआने करीम से साबित हुआ कि जहां कुरआने करीम की तिलावत होती है, वहां अल्लाह तआ़ला की रहमतें बरसती हैं, और इसमें कोई शक की गुन्जाइश ही नहीं यह ठोस और पक्की बात है, जहां कुरआने मजीद पढ़ा जायेगा, अल्लाह तआ़ला की रहमतों की बारिश होगी, अब सोचिये कि जो हाफ़िज़ साहब और क़ारी साहब सुबह से लेकर शाम तक बच्चों से हिफ़्ज़ करवाते हैं उनके दायें बायें आगे पीछे दर्जनों बच्चे अपनी मअ़सूम ज़बानों से कुरआने करीम पढ़ रहे होते हैं, वहां पर रहमत की कितनी बारिश होती होगी, अब रहमत की इस बारिश में ज़िन्दगी के कई कई साल गुज़ारने वाले बन्दे का दिल तो धुल जाना चाहिये था? लेकिन हमने सुना और कई मर्तबा दोस्त अहबाब भी कहते हैं कि दिल की वह हालत नहीं है जो होनी चाहिये, ऐन उस वक़्त भी कई मर्तबा मैली निगाह होती है, ग़लत निगाह पड़ रही होती है, इसकी क्या वजह है? नुज़ूले रहमत में तो कोई शक नहीं और वक़्त की कमी भी नहीं और हर वक़्त कुरआने करीम भी पढ़ा जा

रहा है, अब ऐसे वक़्त में इस बन्दे का दिल बिल्कुल धुल जाना चाहिये था, और अगर नहीं धुला फिर कबायर का मुर्तकिब होता है, फिर भी निगाह मैली है, हाफ़िज़ होने के बावुजूद भी कभी बाहर निकलता है तो नामेहरम को इस तरह देखता है जिस तरह शिकारी कुत्ता अपने शिकार को देखता हे, तो फिर क्या मअ़ना? इसका मतलब यही है कि अभी धुला नहीं है, अभी दिल साफ़ नहीं हुआ, अभी ज़ुल्मत छटी नहीं है, क्यों नहीं छटी? उ़लमा ने इसका जवाब लिखा है कि नुज़ूले रहमत में शक नहीं है, लेकिन उसके दिल में इस नूर को जज़्ब करने की इस्तिअ़दाद नहीं है, यह चिकना घड़ा बनो हुआ है, बारिश हो रही है फिर भी उसको कुबूल नहीं करता।

अब इस्तिअ़दाद बनने का तरीक़ा यह है कि यह अल्लाह का ज़िक्र शुरू करे, ज़िक्र के अनवारात बड़े लतीफ़ होते हैं, बकरी के दूध की तरह जिसे छोटा बच्चा भी पी लेता है, इसी तरह आ़म बन्दे भी ज़िक्र के अनवारात को कुबूल कर लेते हैं, ग़ाफ़िल से ग़ाफ़िल दिल भी अल्लाह के ज़िक्र के अनवारात को जज़्ब कर लेते हैं, ज़िक्र के अनवारात चूंकि लतीफ़ होते हैं लिहाज़ा जब ज़िक्र करते करते रूहानी ऐतिबार से वह क़वी हो जाता है उसके बाद अल्लाह तआ़ला के कुरआन के नूर को जो नूरे सक़ील है जैसा कि फ़रमाया:

إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا

(पारा 29, सूरे मुज़म्मिल, आयत 5)

इसके अनवारात ऐसे नहीं कि हर बन्दा जज़्ब करता फिर इसके लिये इस्तिदाद बनानी पड़ती है, फिर जब वह कैफ़ियत हासिल होती है, दिल कुरआन के अनवारात को जज़्ब करने लगता है, फिर तो यह हालत होती है कि तीरों पर तीर लग रहे हैं और जिस्म से ख़ून निकल रहा है बिल—आख़िर सलाम फेर कर कहते हैं अगर मुझे फ़र्ज़े मन्सबी में कोताही का डर न होता तो मैं आज सूरे कहफ़ पढ़े बग़ैर नमाज़ मुकम्मल न करता, यह कैफ़ियत हो जाती है, फिर पूरी रात गुज़र जाती है, अल्लाह के कलाम की तिलावत में, फिर एक एक आयत को पढ़कर वह कुन्द मुकर्र के मज़े लेते हैं, फिर उनका दिल

नूर को जज़्ब कर रहा होता है, तो यह इस्तिअ़दाद बनती है ज़िक्र से, इसलिये हमारे मशाइख़ हर बन्दे को कहते हैं कि भाई तुम ज़िक्र करो, ज़िक्र से इस्तिअ़दाद पैदा हो जायेगी, दिल साफ़ होगा, फिर नमाज़ के अनवारात, कुरआने करीम के अनवारात को भी दिल जज़्ब करना शुरू कर देता है, अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:

فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ

(पारा 2, सूरे बक़्रह, आयत 153)

तुम मुझे याद करो मैं तुम्हें याद करूंगा, क्या मतलब? मक़सद यह कि तुम मुझे दुआ़ से याद करो मैं तुम्हें अ़ता से याद करूंगा, तुम दुआ़एं करोगे में अ़ताएं करूंगा, जैसे किसी बच्चे के काम के बारे में किसी अफ़्सर से सिफ़ारिश करते हैं कि जनाब इस बच्चे को याद रखना, क्या मतलब बच्चे के नाम की तस्बीह पढ़ना नहीं, बल्कि जब आप फ़ैसला करो तो मेरे बच्चे के हक़ में अच्छा फ़ैसला करना, तो अल्लाह तआ़ला की याद का यह मतलब है कि जब तुम मुझे याद करोगे मेरे बताये हुए एहकाम पर अ़मल करोगे, तो जब मैं फ़ैसले करूंगा तो तुम्हारे हक़ में रहमत और बरकत के फ़ैसले फ़रमाऊँगा, इसलिये फ़रमाया कि जब इन्सान दिल में अल्लाह को याद करता है, अल्लाह फ़रमाते हैं: मैं भी उसे अपने दिल में याद करता हूं।

فَإِنْ ذَكَرَنِي فِي نَفْسِهِ ذَكَرْتُهُ فِي نَفْسِي

"अगर वह मुझे अपने दिल में याद करता है तो मैं उसे अपने दिल में याद करता हूं।"

وَإِنْ ذَكَرَنِي مَلَأً فِي ذَكَرْتُهُ فِي مَلَإٍ خَيْرٍ مِنْهُ

"और अगर वह मुझे महफ़िल में बैठकर याद करता है तो मैं उससे बेहतर फ़रिश्तों की महफ़िल में उसे याद करता हूं" तो हमें चाहिये कि हम अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र कसरत से किया करें इससे हमारा फ़ायदा होगा।

ज़िक्र न करने पर वईद

और यह न समझो कि यह ज़िक्र सिर्फ़ मुस्तहब अ़मल है कर

लेंगे तो ठीक वरना कोई बात नहीं, अगर ज़िक्र नहीं करेंगे तो सज़ा भी मिलेगी, जी हां कुरआने करीम में फ़रमायाः

وَمَنْ يُعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا

(पारा 29, सूरे जिन्न, आयत 17)

जितने मुफ़स्सिरीन हैं सबने यहां "ज़िक्रे रब्बी" से मुराद कुरआन नहीं लिया, यहां उन्होंने इसका मतलब अल्लाह की याद लिखा है, "जो अपने रब की याद से आंख चुरायेगा, उसको अज़ाब मिलेगा, चढ़ता हुआ" तो यह नहीं कि यह तो एक नफ़्ली चीज़ है कर लो तो ठीक, नहीं तो कोई बात नहीं, इसकी अहमियत है, अगर ग़ाफ़िल बनेंगे तो फिर अज़ाब की भी लिमिट (Limit) बतलाई गई है, इसलिये यह ज़रूरी है अहम है कि इसको ज़िन्दगी का मअ़मूल बना लें, इसकी बड़ी बरकतें हैं, दिलों को सुकून मिलता है, इन्सान गुनाहों से बच जाता है, शैतान से अमन में आ जाता है, इसलिये अल्लाह तआ़ला के यहां असल मतलूब अल्लाह तआ़ला की याद है।

हाज़री के साथ हुज़ूरी

जितने भी आमाल हैं उनमें सबसे अफ़ज़ल अ़मल नमाज़ है और नमाज़ का भी जो मक़सूद है वह अल्लाह तआ़ला की याद है।

أَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِىْ

(पारा 16, सूरे ताहा, आयत 14)

"तुम नमाज़ क़ायम करो मेरी याद की ख़ातिर" इसलिये जिस नमाज़ में अल्लाह तआ़ला की याद नहीं होती वह नमाज़, नमाज़ के रुतबे पर नहीं होती, फ़रमायाः "لَاصَلٰوةَ اِلَّا بِحُضُوْرِ الْقَلْبِ" "हुज़ूरे क़ल्ब के बग़ैर नमाज़ ही नहीं होती वह हाज़िरी होती है" कि मस्जिद में हाज़िर तो हैं हुज़ूरी नहीं तो वह चाहते हैं कि हुज़ूरी हो, इसलिये क़ुर्बे क़यामत की निशानी बतलाई गई कि तू देखेगा कि मस्जिद नमाज़ियों से भरी होगी, मगर उनके दिल अल्लाह की याद से ख़ाली होंगे, यह नेमत आज हमारी ज़िन्दगियों से निकलती जा रही है, इसलिये हमें चाहिये कि हम कसरत से अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करें, "اُذْكُرُوا الله

"ذِكْرًا كَثِيرًا" "तुम कसरत से अल्लाह की याद करो" हुक्म दिया गया यह अम्र का सीगा है।

दो चीज़ें ऐसी हैं कि क़ुरआने मजीद में उनकी हद मुतअय्यन नहीं की, बाक़ी जितने भी आमाल बतलाये उनमें से हर एक की हद का तअय्युन कर दिया है, ताकि हिम्मत करने वाले ज़रा हिम्मत करके देखें दौड़ने वाले ज़रा दौड़ लगायें, उनमें से एक ज़िक्र है।

ज़िक्रे कसीर किसे कहते हैं?

ज़िक्रे कसीर, इसकी तफ़सीर यह है कि

اَلَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ

(पारा 4, सूरे आले इमरान, आयत 191)

"वह लोग जो अल्लाह का ज़िक्र खड़े, लेटे और बैठे हुए करते हैं" इन्सान की यही तीन हालतें हैं या तो वह खड़ा होगा या बैठा होगा या वह लेटा होगा तो क़ुरआने मजीद में बताया गया कि तीनों हालतों में अल्लाह का ज़िक्र करना, यअ़नी अल्लाह चाहते यह हैं कि तुम हर हाल में मेरा ज़िक्र करो, इसलिये फ़रमाया कि मेरे जो पसन्दीदा और महबूब बन्दे हैं, जवां मर्द बन्दे हैं, वह मेरी याद में हमेशा लगे रहते हैं, फ़रमायाः "رِجَالٌ" रजुल का लफ़्ज़ अ़रबी ज़बान में जवां मर्द के लिये इस्तेमाल होता है, फ़रमायाः

رِجَالٌ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ

(पारा 18, सूरे अन्नूर, आयत 37)

तिजारत और ख़रीद व फ़रोख़्त जिन्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल नहीं करतीः

गो मैं रहा रहीने सितमहाए रोज़गार
लेकिन तेरे ख़्याल से ग़ाफ़िल नहीं रहा

हर वक़्त अल्लाह तआ़ला की तरफ़ मुतवज्जह हो दिल में अल्लाह तआ़ला की याद हो, इसलिये हमारे अकाबिरीन ने ज़िक्र की ख़ूब कसरत रखी है।

ज़िक्र की बरकतें

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह० अपने ज़माने का एक वाक़िआ लिखते हैं फ़रमाते हैं: मैं शैख़ुल–हिन्द रह० के पास जलालैन पढ़ा करता था, एक रात तकरार करने बैठा (तकरार तालिब इल्मों के लिये ज़रूरी है)।

لِكُلِّ شَيْءٍ باب وباب العلم التكرار

फ़रमाते हैं एक इश्काल ऐसा वारिद हुआ वह हल ही नहीं होता था, बड़ी कोशिश की यहां तक कि हाशिया भी देखा फिर भी समझ में न आया, औरों से भी पूछा फिर भी समझ में न आया, अब चूंकि मैं तकरार कराया करता था इसलिये तालिब इल्मों ने कहा कि मियां कल का सबक़ शुरू होने से पहले इसे तुम हज़रत (शैख़ुल–हिन्द रह०) से पूछ लेना, ताकि पिछला सबक़ क्लियर हो जाये (बात साफ़ हो जाये) फिर अगले सबक़ में दुशवारी न हो, मैंने ज़िम्मेदारी क़ुबूल कर ली, कहने लगे सुबह फ़जर का वक़्त हुआ मैं अपनी किताब लेकर मस्जिद में आ गया फ़जर की नमाज़ पढ़ी और सलाम फेर कर मैं जल्दी उठा मगर हज़रत शैख़ुल–हिन्द रह० जल्दी उठकर अपने कमरे में चले गये, जहां वह फ़जर के बाद से लेकर इशराक़ तक अकेले में वक़्त गुज़ारते थे, जब मैं दरवाज़े पर पहुंचा तो कुन्डी बन्द पाई, मुझे बड़ी कोफ़्त हुई मैंने अपने नफ़्स को बहुत ही बुरा भला कहा कि तू ने सुस्ती की कि हज़रत अन्दर चले गये अब वह इशराक़ पढ़कर बाहर निकलेंगे, और बाद में सबक़ पूछने का वक़्त ही नहीं रहेगा, मैंने सोचा कि अब नफ़्स को सज़ा देना चाहिये वह सख़्त ठन्डी का मौसम था मैंने कहा यहीं बाहर खड़े होकर इन्तिज़ार करूं ताकि जब हज़रत बाहर निकलें तो फिर फ़ौरन पूछ लिया जाये, और सबक़ से पहले पूछने का काम पूरा हो जाये, फ़रमाते हैं: मैं बाहर खड़ा हो गया और हालत मेरी यह थी कि मैं ठन्डी से ठुठुर रहा था, मैंने सुना कि अन्दर से "لَا اِلٰهَ اِلَّا الله" की ज़र्ब लगाने की आवाज़ आ रही थी, हज़रत ज़िक्र कर रहे थे, और फ़रमाते हैं कि अजीब बात यह

थी कि ज़िक्र हज़रत कर रहे थे और मज़ा मुझे आ रहा था ऐसा ज़िक्र था, यहां तक कि ज़िक्र की लज़्ज़त में मुझे फिर सर्दी का एहसास भी न रहा, लेकिन जब हज़रत ने दरवाज़ा खोला तो मेरी हैरत की इन्तहा न रही कि सर्दी के इस मौसम में हज़रत ने इस शद्दो-मद के साथ ज़िक्र किया था कि जब दरवाज़ा खोला तो पेशानी पर पसीने के क़तरे नज़र आ रहे थे, कहने लगे कि हज़रत ने मुझे देखा तो फ़रमाया कि अशरफ़ अ़ली तुम यहां कैसे? अ़र्ज़ किया कि हज़रत एक इशकाल वारिद हुआ है, उसका जवाब आपसे पूछना है, हज़रत ने फ़रमाया कि कौनसी जगह तो मैंने किताब खोली हज़रत ने वहीं खड़े खड़े तक़रीर फ़रमानी शुरू कर दी, जब हज़रत ने तक़रीर शुरू की तो मैं हैरान रह गया कि न अलफ़ाज़ मानूस थे और न मआना समझ में आ रहे थे, ऐसा कलाम फ़रमा रहे थे कि कुछ समझ में न आया, बात ख़त्म करने पर फिर फ़रमाया: अशरफ़ अ़ली कुछ समझ में आया, (अब मैंने अपने दिल में कहा कि हज़रत थोड़ा नुज़ूल फ़रमाइये ताकि हमें भी बात समझ में आये) मैंने कहा हज़रत बात समझ में नहीं आई, जब हज़रत ने यह सुना तो वहीं खड़े खड़े दोबारा तक़रीर शुरू कर दी, कहने लगे कि अब की बार जो तक़रीर की उसके अल्फ़ाज़ तो कुछ मानूस से लगे, लेकिन मअ़ना अब भी पल्ले नहीं पड़ रहे थे, दूसरी मर्तबा हज़रत ने फिर पूछा कि समझे मैंने फिर अ़र्ज़ किया कि हज़रत मैं तो नहीं समझ सका, तो फ़रमाने लगे अच्छा अशरफ़ अ़ली! मेरे इस वक़्त की बातें तुम्हारी समझ से बाला-तर हैं किसी और वक़्त में मुझसे पूछ लेना, यह कह कर हज़रत चले गये, फ़रमाते हैं कि हमारे मशाइख़ इतना ज़िक्र का एहतिमाम करते थे और इसकी वजह से उस वक़्त मआ़रिफ़ का इतना नुज़ूल होता था कि एक मज़मून को कई रंग से बांधते थे जो तालिब इ़ल्म की इस्तिअ़दाद से भी बाला-तर हुआ करता था, तो यह ज़िक्र की बरकतें थीं और आज इस ज़िक्र को तो बिल्कुल नफ़्ली सा समझा जाता है, तवज्जुह ही नहीं दी जाती, समझते हैं यह तो नफ़्ली काम है हालांकि ऐसा नहीं इसके पीछे एक हिकमत है।

अब बात छिड़ ही गई तो इसे पूरा कर दूं, लिहाज़ा सुनिये यह बात समझने की है।

इल्म और इस्तिहज़ार का फ़र्क़

एक होता है "इल्म" और एक होता है "इस्तिहज़ार" यह दोनों मुख़्तलिफ़ चीज़ें हैं, इल्म होना एक चीज़ है और चीज़ का हर वक़्त मुस्तहज़र रहना और चीज़ है, मसलन हर मोमिन को यह पता है कि जहां तीन होते हैं, अल्लाह तआला वहां चौथे होते हैं, जहां चार होते हैं, अल्लाह तआला वहां पांचवें होते हैं, "هُوَ مَعَكُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ" "वह तुम्हारे साथ होता है जहां कहीं भी हो तुम" तो इल्मी तौर पर हर मोमिन को यह पता है कि अल्लाह तआला साथ हैं, लेकिन इसका इस्तिहज़ार हर एक को हासिल नहीं, अगर इस्तिहज़ार हासिल होता तो गुनाह क्यों करते, गुनाह तो इसलिये कर रहे होते हैं कि इस बात को भूल चुके हैं कि देखने वाला देख रहा है, तो इल्मी तौर पर तो हर छोटे बड़े को पता है, लेकिन इस्तिहज़ार हर एक को हासिल नहीं अब यह इस्तिहज़ार ज़िक्र से नसीब हो जाता है, इसकी वजह यह है कि जब हम आपस में मिल जुल कर ज़िन्दगी गुज़ारते हैं हमारी तवज्जुह असबाब में लग जाती है, जब तवज्जुह असबाब में लग जाती है तो सोच "मा तहतुल असबाब" हो जाती है, "असबाब" के तहत सोचना शुरू कर देती है, और जब इन्सान तख़्लिया में कुछ वक़्त गुज़ारता है अल्लाह की याद में गुज़ारता है तो अब इन्सान की नज़र "असबाब" से हट कर "मुसब्बबुल असबाब" की तरफ़ हो जाती है, इसलिये तख़्लिया हर एक के लिये ज़रूरी है, बल्कि उलमा के लिये निस्बतन ज़्यादा ज़रूरी है।

इन्सान पर माहौल का असर

अब इसकी दलील कुरआने मजीद से देखिये एक मिसाल से बात वाज़ेह हो जायेगी, अगर आप किसी डिस्पैन्सरी में या हॉस्पिटल में बैठे हों और कहें कि मेरे सर में दर्द है तो डॉक्टर की ज़बान से

पहला लफ़्ज़ सुनेंगे कि मियां आप पीनाडोल की गोली खालो, लिहाज़ा वहां बैठकर वह गोली इस्तेमाल करेगा क्योंकि वहां माहौल इसी का है और अगर कोई आदमी उ़लम की महफ़िल में या मस्जिद में बैठा हो और कहे कि भाई सर में बड़ा सख़्त दर्द है, तो कोई मुसल्ली यह कहेगा कि यार हज़रत (इमाम साहब) से दम करा लो, इस माहौल में दम की तरफ़ ध्यान गया, क्यों? इसलिये कि माहौल ने असर डाला, तो इन्सान जैसे माहौल में वक़्त गुज़ारता है वैसे असरात उस पर मुरत्तब होते हैं हम अगर असबाब के तहत सारा दिन गुज़ारेंगे तो वही हमारे ऊपर ग़ालिब आ जायेंगे, सोच वैसी ही होगी, और कुछ वक़्त अगर हम तख़्लिये का और सबसे हट कट के अल्लाह तआ़ला की याद में गुज़ारेंगे इस सूरत में अल्लाह की याद उसका ध्यान वह हमारी तबीअ़तों पर ग़ालिब आ जायेगा।

अंबिया किराम की मुख़्तलिफ़ हालतें

बीबी मरयम अल्लाह तआ़ला की नेक पसन्दीदा बन्दी हैं और तख़्लिये में ज़िन्दगी गुज़ार रही हैं, तवज्जुह इलल्लाह, रुजूअ़ इलल्लाह, इनाबत इलल्लाह की वह कैफ़ियत है कि बेमौसम के फल खा रही हैं, हज़रत ज़क्रिया अ़लै० अल्लाह के महबूब हैं और नबी हैं, दावत इलल्लाह के काम पर निकले हुए हैं, लोगों से बात चीत, गुफ़्तुगू कर रहे हैं, असबाब में वक्त गुज़र रहा है, और जब असबाब में वक़्त गुज़र रहा होता है तो सोच भी वैसी ही होती है, यह तबई चीज़ है, अब जब वह वापस तश्रीफ़ लाये।

كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا

(पारा 3, सूरे आले इमरान, आयत 37)

"जब वह दाख़िल हुए मेहराब में तो क्या देखते हैं कि बीबी मरयम के पास फल मौजूद हैं" अब असबाब के तहत यह बात समझ में नहीं आती थी कि यह फल कहां से आये तो इसलिये उन्होंने पूछा कि

يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا

(पारा 3, सूरे आले इमरान, आयत 37)

"यह तुम्हें फ़ल कहां से मिले?" मरयम चूंकि तख़्लिये में ज़िन्दगी गुज़ार रही थीं, तवज्जुह इलल्लाह की कैफ़ियत थी कहने लगीं "هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ" "अल्लाह की तरफ़ से हैं"।

اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ

(पारा 3, सूरे आले इमरान, आयत 37)

"अल्लाह जिनको चाहता है बग़ैर हिसाब देते हैं" अब जब उन्होंने यह बात कही तो हज़रत ज़क्रिया अ़लै० की तवज्जुह उधर गई और दिल में ख़्याल आया कि हां वह तो मुसब्बबुल–असबाब हैं ऐसा कर सकते हैं, और कहने लगे ऐ अल्लाह अगर आप मरयम के बेमौसम फल दे सकते हैं तो मुझे आप बुढ़ापे में औलाद भी तो दे सकते हैं।

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ

(पारा 3, सूरे आले इमरान, आयत 38)

"यह वह वक़्त था जब ज़क्रिया अ़लै० ने अपने रब से दुआ की" अल्लाह तआ़ला ने दुआ क़ुबूल भी फ़रमाई "क्योंकि मौक़अ के मुनासिब जो बात होती है वह सोने की डली की तरह होती है" मौक़ा पर दुआ मांगी थी इसलिये फ़ौरन कुबूल हो गई, फिर इसके बाद एक फ़रिश्ते ने उनको ख़बर दी कि आपको एक बेटा दिया जायेगा।

और वह मरयम जो अल्लाह तआ़ला की बर्गुज़ीदा हस्ती हैं वलिया हैं, तक़िया नक़िया और पाक साफ़ ज़िन्दगी गुज़ारने वाली हैं इतना अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ है, ध्यान है कि बेमौसम फल खाती हैं, इस बीबी मरयम को वहां की बजाये फिर जब घर की ज़िन्दगी गुज़ारने का मौक़ा मिला अब तख़्लिया की वह ज़िन्दगी न रही जो पहले थी अब असबाब उनपर भी ग़ालिब आ गये, चुनांचे अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं "وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ" "ज़िक्र करो इस किताब में मरयम का" "اِذِانْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا" "अपने मकान की मशरिक़ी जानिब में वह ग़ुस्ल के लिये गईं" एक जगह तलाश की पर्दा किया, चाहती थीं कि ग़ुस्ल करें, "فَاَرْسَلْنَا اِلَيْهَا رُوْحَنَا" "अल्लाह तआ़ला ने जिबरईल अ़लै० को भेजा" "فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا" "भर–पूर मर्द नौजवान

की शक्ल में" अब मरयम आज के ज़माने की बिगड़ी हुई बेगम तो थी नहीं कि जो तख़्लिये में मेहरम मर्द को देखकर मुस्कुरातीं स्माइल (Smile) देतीं, वह तो पाकीज़ा हस्ती थीं, जब तख़्लिये में मर्द को देखा तो डर गई, और कहने लगीं "اِنِّی اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا" "मैं रब की पनाह चाहती हूं तुझसे" जब जिबरईल अ़लै० ने देखा कि मरयम डर गई तो सोचा कि इज़हारे मुद्दआ तो करना चाहिये, कहने लगे "اِنَّمَا اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا" "मैं आपके रब का नुमाइन्दा हूं ताकि आपको एक सुथरा हुआ बेटा दिया जाये" अब मरयम पहले से भी ज़्यादा घबरा गई, कि यह तो पहले से भी बड़ी मुसीबत है, मैं कुंवारी मेरी इबादत के तज़किरे लोगों में, मेरी नेकी के चर्चे दुनिया में, अब इस कुंवारी हालत में मुझे बेटा मिलेगा, कहने लगीं "اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ" "मुझको तो किसी इन्सान ने छूआ नहीं" "وَلَمْ اَكُ بَغِيًّا" "मैं बदकार भी नहीं" मरयम जानती थीं कि मा तहतुल असबाब औलाद होने की दो सूरतें हैं, एक सबब "निकाह" और दूसरा सबब "ज़िना" और मरयम जानती थीं कि यह दोनों असबाब यहां पाये नहीं जाते, अब ग़ौर कीजिए कि सोच मा तहतुल असबाब हो गई, जो बेमौसम के फल खाया करती थीं अब जब घर का माहौल मिला तो सोच भी मा तहतुल असबाब बन गई, कहने लगीं कैसे मेरा बेटा हो सकता है "اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا" न यह सबब मौजूद और न वह सबब मौजूद है, तो बेटा कैसे हो सकता है? यह सवाल जब हैरान होकर उन्होंने पूछा तो जिबरईल अ़लै० ने भी आगे से बताया कि बेटा तो पवरर्दिगार ने देना है, किसी जुल्फ़ों वाली सरकार ने तो नहीं देना, फ़रमाते हैं "قَالَ كَذٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ" (यह जो कज़ालिकि की मोहर है यह उनकी पाकदामनी पर क़यामत तक के लिये क़ुरआन की गवाही है) अल्लाह तआला ऐसी बेटी हर एक को अ़ता करे, जिनकी पाकदामनी पर अल्लाह का फ़रिश्ता कह रहा है "قَالَ كَذٰلِكِ" मरयम! तुम जो कह रही हो वह सौ फ़ीसद सच्ची बात है, न किसी ग़ैर मेहरम ने तुम्हें छुआ है निकाह के ज़रिये और न किसी ग़लत तरीक़े से, तुम्हारी ज़िन्दगी पाकीज़ा और अफ़ीफ़ है,

लेकिन बात यह है कि बेटा तो अल्लाह ने देना है।

قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَىَّ هَيِّنٌ

(यह तमाम आयतें सूरे मरयम की हैं, पारा:16, आयत:21) "कहा आपके परवर्दिगार ने मेरे लिये यह आसान है" चुनांचे अल्लाह तआ़ला ने उनको बेटा अ़ता कर दिया, तो कहने का मतलब यह है कि जब तख़्लिये में ज़िन्दगी गुज़ारती थीं तो इतनी तवज्जुह बनी हुई थी कि बेमौसम के फल खा रही थीं और जब घर की ज़िन्दगी गुज़ारनी पड़ी तो सोच भी मा तहतुल असबाब आ गई, अब उनको भी तरद्दुद हुआ, मेरे यहां बेटा कैसे हो सकता है?

इसलिये उ़लमा सुलहा को बिल–खुसूस तख़्लिये में कुछ वक़्त रोज़ाना गुज़ारना ज़रूरी है ताकि उनकी इनाबत इलल्लाह, रुजूअ़ इलल्लाह की कैफ़ियत ताज़ा रहे, और अगर उनकी भी कैफ़ियत न रहेगी तो फिर सुनने वालों का क्या तज़किरा, इसलिये यह चीज़ इन्तहाई ज़रूरी है हर दिन में हम एक वक़्त मुतअ़य्यन कर लें, और हमारे अकाबिरीन ऐसे ही करते थे, चाहे वह फ़जर से इशराक़ का वक़्त हो, अ़सर या मग़रिब के दरमियान का वक़्त हो, या भले ही इशा के बाद तहज्जुद के बाद का वक़्त हो, अपने सहूलत से आप एक वक़्त मुतअ़य्यन करके उसको अल्लाह की याद में गुज़ारो, अल्लाह की याद में, अल्लाह के ज़िक्र में गुज़ारें, फिर उसके असरात आप अपने दिल पर देखिये कैसे होते हैं, इसलिये यह बहुत अहम बात है अल्लाह तआ़ला हमें अपनी याद कसरत से करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये।

ज़िक्र की क़िस्में

ज़िक्र दो तरह का है हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ीअ़ साहब रह० ने मआरिफुल क़ुरआन में इसको वाज़ेह फ़रमाया है, क़ुरआने मजीद की एक आयत है:

وَاذْكُرْ رَبَّكَ فِىْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّ خِيفَةً وَّ دُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ

(पारा 9, आयत 205)

यहां तक लिखकर हज़रत मुफ़्ती साहब रह० लिखते हैं कि इस आयत

से साबित हुआ कि अल्लाह तआला हुक्म दे रहे हैं, "وَاذْكُرْ" "ज़िक्र कर" "فِىْ نَفْسِكَ" "अपने नफ़्स में" "اَىْ فِىْ قَلْبِكَ" "अपने दिल में" याद कर अपनी सोच में, अपने ध्यान में, अपने मन में अल्लाह को याद कर, कैसे "تَضَرُّعًاوَّخِيْفَةً" गिड़गिड़ाते हुए बहुत ख़फ़ी अन्दाज़ से, मन में तार जुड़ी हो, दिल में सोच हो अल्लाह की, फ़रमाते हैं कि यह जो तरीक़े हैं इसको ज़िक्र क़ल्बी कहते हैं, और आगे फ़रमा रहे हैं कि "وَدُوْنَ" "الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ" "और क़ौल से भी" यअ़नी मुनासिब बुलन्द आवाज़ से यअ़नी चींख़कर नहीं, जैसे कई जगहों पर नमाज़ के बाद चींख़ना शुरू कर देते हैं, इसकी ज़रूरत नहीं है, बल्कि मुनासिब आवाज़ से जैसे हमारे मशाइख़ "لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" की ज़र्बें लगाते हैं, फ़रमाते हैं कि इससे ज़िक्रे लिसानी मुराद है तो इस आयत के तहत फ़रमाते हैं कि एक है ज़िक्रे क़ल्बी और एक है ज़िक्रे लिसानी और दोनों ही मशरूअ़ हैं, क़ुरआने मजीद से इसका सुबूत मिलता है और हदीसे पाक में तो इसका सुबूत बहुत सी जगह पर है।

ज़िक्रे क़ल्बी किसे कहते हैं?

कुछ लोग कहते हैं कि ज़िक्रे क़ल्बी क्या होता है? तो देखिये क़ुरआने मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं

وَلَاتُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا

(पारा 15, सूरे कहफ़, आयत 28)

"तू उसकी इताअ़त न कर जिसके दिल को हमने अपने ज़िक्र से ग़ाफ़िल कर दिया" अब देखिये कि इस आयत में ज़िक्र का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया, मालूम हुआ कि दिल ज़ाकिर भी होता है और दिल ग़ाफ़िल भी होता है, क़ुरआने पाक की यह आयत बतला रही है कि अगर दिल से ज़िक्र न होता तो फिर दिल के ग़ाफ़िल होने की बात क्यों करते, एक आम सी बात है कि अगर किसी मां का बेटा प्रदेश में हो और मां उसको ख़त लिखवाना चाहती हो तो मां उसको ख़त में क्या लिखवाती है कि मेरी ज़बान आपको बहुत याद कर रही है, बेटा मेरी आंख तुझे बहुत याद कर रही है, मेरा दिमाग़ बहुत याद कर रहा

है, नहीं बल्कि हमेशा वह लिखवाती है कि बेटा "मेरा दिल तुझे बहुत याद कर रहा है" तो मालूम हुआ कि याद इन्सान के दिल का अ़मल है, तो अ़मल दिल का है ज़बान से फिर उसका इज़हार हुआ करता है, इसलिये ज़िक्र के दो तरीक़े हैं या तो बिल्कुल दिल ही में ज़िक्र करो और अगर ज़बान से इज़हार भी करना है तो फिर ज़िक्रे लिसानी करो, दोनों तरीक़े हैं, तो असल में याद है ही दिल का अ़मल, इसलिये कि अगर दिल में याद नहीं तो फिर कहीं भी याद नहीं तो यह ज़िक्रे क़ल्बी नाम है अल्लाह को अपने दिल में याद करने का, यह हमारे मशाइख़ का तरीक़ा रहा कि दोनों तरीक़ों से ज़िक्र किया।

हाजी इमदादुल्लाह साहब मुहाजिर मक्की रह०

हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मोहाजिर मक्की रह० उन्होंने अपने लड़कपन में बैयअ़त की सिलसिला आ़लिया नक़्शबन्दिया के एक बुज़ुर्ग के हाथ पर जो दिल्ली में रहते थे यहां तक कि 17/ साल की उ़म्र में उनसे इजाज़त व ख़िलाफ़त भी मिल गई, और निस्बते नक़्शबन्दिया के हुसूल की बशारत भी मिल गई, मगर वह जल्द ही वफ़ात पा गये, तो हज़रत फ़रमाते हैं कि मैंने सोचा कि उ़म्र छोटी है मैं किसी बड़े के साये के बग़ैर नहीं रह सकता हूं इसलिये किसी बड़े का सहारा लेना चाहिये और फिर मियां जी नूर मुहम्मद झन्झानवी रह० की तरफ़ रुजूअ़ किया फिर उनसे जाकर सिलसिला आ़लिया चिश्तिया में बैअ़त की यह उनकी बैअ़ते सानिया थी तो निस्बते नक़्शबन्दिया का फ़ैज़ उधर से मिला था और निस्बते चिश्तिया का फ़ैज़ मियां जी नूर मुहम्मद रह० से मिला अल्लाह ने फिर उनको मर्जुल बहरैन बना दिया, दोनों निस्बतें अल्लाह ने उनको अ़ता फ़रमाई, बल्कि हमारे अकाबिरीन उ़लमाए देवबन्द में यह फ़ैज़ दो तरीक़े से आया है एक हज़रत हाजी साहब रह० के ज़रिये से (औलिया नक़्शबन्दिया की इत्तिबाअ़े सुन्नत देखिये और मशाइख़े चिश्त का इश्क़ देखिये यह दोनों निस्बतें उनके अन्दर थीं और यह बड़ी मुश्किल बात होती है कि इश्क़ भी हो और सुन्नत की पैरवी भी हो)

वस्ल का लुत्फ़ यही है कि रहे होश बजा

दिल भी क़ाबू में रहे पहलू में दिलदार भी हो
तों उन हज़रात में एक तरफ़ इश्क़ और दूसरी तरफ़ सुन्नत की पैरवी
दर कफ़ जामे शरीअ़त दर कफ़े सन्दाने इश्क़
हर हवसनाक नदानद जाम व सन्दां बाख़्तन

तो एक तो हज़रत हाजी साहब रह० के ज़रिये से यह दोनों नेमतें मिलें और एक हदीस के रास्ते से, देखिये अकाबिरीन उ़लमाए देवबन्द को जो हदीस का फ़ैज़ मिला वह हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० के ज़रिये से मिला इसी तरह शाह अ़ब्दुल ग़नी मुजद्दिदी रह० के वास्ते से, तो इधर इल्मी रास्ते से भी दो तरह से फ़ैज मिला कि जो पढ़ाने वाले उस्ताज़ हैं वह नक़्शबन्दी भी हैं, और हदीस के उस्ताज़ भी हैं, इसलिये सुन्नत की पैरवी में हमारे अकाबिरीन उ़लमाए देवबन्द इम्तियाज़ी शान रखते हैं, लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि हम ज़िक्र की कसरत करें।

ज़िक्रे क़ल्बी का तरीक़ा

यह ज़िक्र जिसको ज़िक्रे क़ल्बी कहते हैं इसके करने का तरीक़ा बहुत आसान है, इसके लिये जवान और बूढ़े का भी फ़र्क़ नहीं, इस तरीक़े पर ज़िक्र करते करते इतना मलिका हो जाता है कि फिर इन्सान अल्लाह का ज़िक्र कसरत से करता रहता है।

एक बात याद रखिये कि इन्सान को अल्लाह तआ़ला ने ऐसा मलिका दिया है कि यह एक वक़्त में दो बातें सोच रहा होता है, पी भी रहा है, दोस्तों की बातें भी कर रहा है मगर उसके दिमाग़ में तसलसुल किसी और चीज़ का चल रहा है, या दूसरी मिसाल कि दफ़्तर जाने के लिये घर से निकला और चलते वक़्त किसी बात पर उसने अपनी बीवी को डांट पिला दी, किसी भी ग़लती या कोताही पर ऐसा कर दिया, अब यह बीवी सारे दिन घर के काम तो करेगी मगर उसके दिमाग़ में वही अलफ़ाज़ घूमते रहेंगे कि "यह कह गया है" तो मालूम हुआ दुनिया के काम काज करते वक़्त भी इन्सान का दिमाग़ किसी और तरफ़ लगा रहता है इसी चीज़ का नाम ज़िक्र है कि अगर यह तसव्वुर दुनिया की चीज़ों के बजाये अल्लाह की तरफ़

लग जाये तो यह अल्लाह तआ़ला की याद कहलायेगी, और यह सब बहुत आसान है, अल्लाह वाले एक लम्हे भी अल्लाह को नहीं भूलते यहां तक कि यूं फ़रमाया है:

दस्त ब कार दिल बयार

हाथ काम काज में मशग़ूल और दिल अल्लाह की याद में मस्रूफ़ होना चाहिये, हमारे हज़राते नक़्शबन्दिया यही फ़रमाते हैं कि तुम यह कैफ़ियत हासिल कर लो कि हाथ काम काज में लगे हों और दिल अल्लाह तआ़ला की याद में लगा हो, और जब यह चीज़ हासिल हो जाये तो फिर पूरी ज़िन्दगी ज़िक्र में गुज़र जाती हैं, इसलिये इस ज़िक्र का करना बहुत आसान है, अभी हम थोड़ी देर के लिये वही ज़िक्र (मुराक़बा) करेंगे।

इसका तरीक़ा यह है कि हमने सारी दुनिया से तवज्जुह हटाकर अल्लाह की तरफ़ ध्यान करना है अब तवज्जुह हटाने के लिये इन्सान को आंखें बन्द करके मुतवज्जेह होकर बैठना पड़ता है, हालांकि आंखें बन्द करना शर्त नहीं है क्योंकि मशाइख़ की आंखें ज़िक्र के वक़्त खुली होती हैं, और फिर भी ज़िक्र हो रहा होता है, लेकिन मुब्तदी के लिये उसको सिखाने के लिये उसको बताना पड़ता है कि भई यक्सूई हासिल करने के लिये तुम ज़रा आंखें बन्द करके बैठो, वरना आंखें बन्द करना ज़रूरी नहीं है, बल्कि कहते हैं सर को झुका लो, यह भी ज़रूरी नहीं, यहां तक कि बैठना भी ज़रूरी नहीं यह खड़े हुए भी हो सकता है, लेटे हुए भी हो सकता है, मगर इब्तिदा में मशक़ कराने की ख़ातिर जैसे पहाड़े याद कराने होते हैं, उसका एक ख़ास तरीक़ा होता है, उस तरीक़े पर याद कराते हैं तो यूं समझ लीजिए यह भी एक दवा की तरह है, मशक़ की तरह है, कि भई बैठ जाइये, यक्सूई के लिये आंखों को बन्द कर लो, सर को झुका लो, दिल की तरफ़ ध्यान हो बल्कि हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया कपड़ा हो तो अपने सर पर कपड़ा भी डाल ले, क्यों? हदीसे पाक से ईसका सुबूत मिलता है, नबी पर बअज़ औक़ात वही उतरती थी आप सल्ल० सर पर कपड़ा डाल लेते और उस कपड़े को अपना कफ़न समझे कि जिस तरह

आज मैं अपना कपड़ा ले रहा हूं, एक वक़्त आयेगा कि मुझे कफ़न पहना दिया जायेगा, और आंखें बन्द करते हुए सोचे कि आज इख़्तियार से बन्द कर रहा हूं, एक वक़्त आयेगा कि बग़ैर इख़्तियार के बन्द हो जायेंगी, ताकि तवज्जुह इलल्लाह, रुजूअ़ इलल्लाह हो तो इस हाल में इन्सान बैठे, यह अपना मुहासिबा है "حاسبوا قبل ان تحاسبوا" अपना मुहासिबा करो इससे पहले कि तुम्हारा मुहासिबा किया जाये, सारी दुनिया के ख़्यालात को अपने ज़हन से निकालदे, बस एक चीज़ को सिर्फ़ ज़हन में रखे कि अल्लाह तआ़ला की रहमत आ रही है, मेरे दिल में समा रही है, और मेरे दिल की स्याही दूर हो रही है, और मेरा दिल कह रहा है, अल्लाह! अल्लाह! अल्लाह! और जब मेरा दिल अल्लाह पुकार रहा है तो मैं उसको सुन रहा हूं, यअ़नी आपको अल्लाह अल्लाह पढ़ना नहीं है कि मुराक़बा में बैठकर आप अल्लाह पढ़ें, और मुसलसल तेज़ सांस भी नहीं लेना है, जिस्म को हरकत भी नहीं देनी, ख़ामोश चुप-चाप रहना है, जैसे कोई किसी की याद में मगन होता है, गुम होता है, यूं समझये कि आप अल्लाह की याद में गुम हो गये हैं, और तरीक़ा यही कि सारी दुनिया के ख़्यालात निकाल कर इस तरह बैठ कर ध्यान अल्लाह की तरफ़ जमायें कि अल्लाह की रहमत आ रही है, मेरे दिल में समा रही है, मेरे दिल की स्याही दूर हो रही है, और मेरा दिल अल्लाह अल्लाह पुकार रहा है, मैं उसे सुन रहा हूं।

शुरू शुरू में इस दिल से कोई आवाज़ सुनाई नहीं देगी, महसूस होगा कि यह दिल पत्थर के मानिन्द है, लेकिन "انا عند ظن عبدی بی" (حدیث) "मैं बन्दे के साथ वही मआ़मला करता हूं जैसे वह मेरे साथ गुमान करता है" जब आप रोज़ाना इस गुमान में बैठेंगे कि दिल अल्लाह कह रहा है तो वाक़िई दिल अल्लाह अल्लाह करने लगेगा।

ज़िक्रे क़ल्बी की एक मिसाल

अब इसकी एक मिसाल बताते हैं यह जो स्पीकर लगे हुए हैं जिनसे आप आवाज़ सुनते हैं क्या उनके अन्दर कोई ज़िन्दा चीज़

होती है? नहीं उनके अन्दर एक पर्दा होता है, मक़्नातीसी लहरों के साथ फड़फड़ाने से वह पर्दा हरकत करता है, उसमें से आवाज़ निकलती है, लिहाज़ा अगर एक बेजान चीज़ फड़फड़ा सकती है और उसमें से हम आवाज़ सुन सकते हैं, अगर जानदार चीज़ फड़फड़ायेगी तो क्या उसमें से आवाज़ नहीं निकल सकती, बस फ़र्क़ इतना है कि अल्लाह ने बन्दे के साथ उसको मुक़य्यद कर दिया है कि जिसका ज़िक्र होता है वही सुन सकता है, दूसरा नहीं सुन सकता, अगर सब सुन सकते होते तो हम सब ज़ाकिर होते हम अल्लाह वालों के दिल से ज़िक्र सुन लेते, लेकिन अल्लाह तआला ने इसको ज़िक्रे ख़फ़ी बना दिया।

आशिक़ व माशूक़ में कुछ ऐसे इशारे होते हैं, किरामन कातिबीन को भी उनकी ख़बर नहीं लगती, तो उसको परवर्दिगार ने छुपा लिया है, अपनी रहमत से, हदीसे पाक में उसके लिये ज़िक्रे ख़फ़ी का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ, ज़िक्रे सिर्री का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ, ज़िक्रे ख़ामिल और ज़िक्रे क़ल्बी का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ, यह चार अलफ़ाज़ इस ज़िक्र के लिये इस्तेमाल हुए, इसलिये हज़रत शैख़ुल हदीस रह० ने भी इसको ज़िक्रे ख़फ़ी यअ़नी ज़िक्रे क़ल्बी कहा है, फ़ज़ाइले ज़िक्र पढ़ये इसमें एक जगह फ़रमाया कि वह ज़िक्र जिसको फ़रिश्ते नहीं सुनते उसको ज़िक्रे सिर्री, ज़िक्रे क़ल्बी कहते हैं, और वह यही है कि या तो उसका पता उसको होता है जो कर रहा है या उसको पता होता है जिसके लिये किया जा रहा है, दरमियान में फ़रिश्ते भी हाइल नहीं होते, "لِی مع الله وقت" जैसे नबी के लिये एक वक़्त था, फ़रमाते हैं उस वक़्त कोई फ़रिश्ता मुक़र्रब भी दरमियान में दख़ल नहीं दे सकता था, थोड़ी देर का यह ज़िक्र इन्सान को असबाब से हटाकर मुसब्बबुल असबाब की तरफ़ लगा देता है, इसलिये यह तख़्लिया इन्तिहाई ज़रूरी है अल्लाह तआला हमें भी अपनी याद की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, और हमारे दिलों को भी अपनी याद से वाबस्ता फ़रमायें, दिल की दुनिया भी अ़जीब है इसका ज़िक्र भी अ़जीब है।

و آخر دعونا ان الحمد لله رب العالمين.

लज़्ज़ते कुरआन

इक्तिबास

عَنْ عُثْمَانُ عَنِ النَّبِى صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ :

خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ وَعَلَّمَهٗ.

(बुख़ारीः भाग 2, पेज 752, किताबन्निकाह)

यह कुरआन!

- *इन्सानियत के लिये दस्तूरे हयात है।*
- *इन्सानियत के लिये मन्शूरे हयात है।*
- *इन्सानियत के लिये ज़ाब्ता–ए–हयात है।*
- *बल्कि पूरी इन्सानियत के लिये आबे हयात है।*

हर लेहज़ा है मोमिन की नई शान नई आन
किरदार में गुफ़्तार में अल्लाह की बुरहान
यह बात किसी को नहीं मालूम कि मोमिन
क़ारी नज़र आता है हक़ीक़त में है कुरआन

(हज़रत मौलाना पीर फ़क़ीर
ज़ुलफ़क्क़ार अहमद साहब नक़्शबन्दी)

الحمد وَكَفٰى وسلَامٌ علٰى عباده الذين اصطفٰى اما بعد!

اعوذ باللّٰه من الشَّيطٰن الرَّجيم ، بِسمِ اللّٰه الرَّحمٰن الرَّحيم

﴿اِنَّا عَرَضْنَا الأَمَانَةَ علٰى السَّمٰوٰتِ والأَرضِ وَالجِبالِ فَأَبينَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنهَا وحَمَلَهَا الإنسانُ إنَّهٗ كانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلاً ○﴾

तर्जुमा :– हमने यह अमानत आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश की, सो उन्होंने इसकी ज़िम्मेदारी से इन्कार कर दिया और इससे डर गये, और इन्सान ने इसको अपने ज़िम्मे ले लिया वह ज़ालिम है जाहिल है। (पारा 22, सूरे अहज़ाब, आयत 72)

और अल्लाह तआला एक दूसरी जगह फ़रमाते हैं :–

﴿الٓر كِتابٌ اَنزَلنٰـهُ اِلَيكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ إلَى النُّورِ بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إلٰى صِراطِ العَزِيزِ الحَمِيدِ﴾

तर्जुमा :– "अलिफ़, लाम, रा" यह कुरआन एक किताब है जिसको हमने आप पर नाज़िल फ़रमाया है, ताकि आप तमाम लोगों को उनके परवर्दिगार के हुक्म से तारीकियों से निकाल कर रोशनी की तरफ़ यअ़नी खुदाये ग़ालिब सतूदा सिफ़ात की राह की तरफ़ लायें।"

(पारा 13, सूरे इबराहीम, आयत 1)

एक और जगह अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं :–

﴿اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحسَنَ الحَدِيْثِ كِتٰبًا مُتَشَابِهًا مَثَانِىَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ إِلٰى ذِكرِ اللّٰهِ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِىْ بِهٖ مَنْ يَّشَاءُ وَمَنْ يُضْلِلِ اللّٰهُ فَمَالَهٗ مِنْ هَادٍ○﴾

तर्जुमा :– अल्लाह तआ़ला ने बड़ा उम्दा कलाम नाज़िल फ़रमाया है जो ऐसी किताबें कि बाहम मिलती जुलती हैं बार बार दोहराई गई हैं, जिनसे उन लोगों की जो कि अपने रब से डरते हैं, बदन कांप उठते हैं, फिर उनके बदन और दिल नर्म होकर अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाते हैं, यह कुरआन अल्लाह की हिदायत है, जिसको वह चाहता है इसके ज़रिये से हिदायत करता है और खुदा जिसको

गुमराह करता है उसका कोई हादी नहीं। (पारा 23, सूरे ज़ुमर, आयत 23)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

خیرکم من تعلم القرآن وعلمه

(बुख़ारी: भाग 2, पेज 752)

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على
المرسلين والحمد للّٰہ رب العالمين .
اللّٰهم صل علىٰ سيدنا محمد وعلىٰ آل سيدنا محمد بارك وسلم
اللّٰهم صل علىٰ سيدنا محمد وعلىٰ آل سيدنا محمد بارك وسلم
اللّٰهم صل علىٰ سيدنا محمد وعلىٰ آل سيدنا محمد بارك وسلم

कुरआने मजीद फ़ुर्क़ाने हमीद अल्लाह तआला का कलाम है, अल्लाह का पैग़ाम इन्सानियत के नाम यह किताबे हिदायत है, इसको किताबे इबादत नहीं कहा "هٰذَا هُدًى" यह किताब एक हिदायत है, यह सिर्फ़ मुसल्ले पर बैठना नहीं सिखाती, पैदा होने से लेकर जन्नत में पहुंचने तक इन्सान को हर हर क़दम की रहबरी और रहनुमाई अता करती है, यह अल्लाह तआला का कलाम है, इसका देखना भी इबादत है, इसका पढ़ना भी इबादत है, इसका पढ़ाना भी इबादत, इसका याद करना भी इबादत, इसका समझना भी इबादत, इसका समझाना भी इबादत, इसका सुनना भी इबादत, और इसपर अमल करना दुनिया की सबसे बड़ी इबादत, यह किताब इन्सानियत के लिये दस्तूरे हयात है इन्सानियत के लिये मन्शूरे हयात है, इन्सानियत के लिये ज़ाब्त-ए-हयात है, बल्कि पूरी इन्सानियत के लिये आबे हयात है, यह अल्लाह तआला का कलाम है, "كَلَامُ الْمُلُوْكِ مُلُوكُ الْكَلَامِ" अरबी का मक़ूला है कि जो बादशाहों का कलाम होता है वह कलामों का बादशाह हुआ करता है, यह अल्लाह तआला का कलाम है।

कुरआने पाक की तिलावत रहमत के नुज़ूल का सबब है

जिस तरह लोहे को खींचने का मक़्नातीस होता है जहां भी मक़्नातीस हो लोहे की चीज़ों को अपनी तरफ़ खींचेगा, कुरआने मजीद अल्लाह तआला की रहमतों और बरकतों को खींचने का मक़्नातीस है "اِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ" "और जब कुरआन पढा जाये" "فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ"

"وَأَنْصِتُوْا" "तुम ग़ौर से सुनों और ख़ामोश रहो" "لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ" (पारा 9, सूरे आराफ़, आयत 204) "ताकि तुमं पर रहमतें बरसाई जायें" क़ुरआन की दलील से कि जहां भी क़ुरआने मजीद पढ़ा जाता है अल्लाह तआ़ला की रहमतों की बारिश होती है कि यह मक़्नातीस है जो अल्लाह तआ़ला की रहमतों को खींचता है, इससे दिल में नूरानियत आती है, इन्सान के दिल की ज़ुल्मतें छट जाती हैं, अन्दर की बीमारियां, अन्दर के रोग ख़त्म हो जाते हैं,

"ويشف صدور قوم مومنين وإذا مرضت فهو يشفين، وشفاء لمافي الصدور، وهدى ورحمة للمومنين، وننزل من القران ماهو شفاء ورحمة للمومنين ولايزيد الظالمين الا خسارا، قل هو للذين امنوا هدى وشفاء"

और बहुत से मुसलमानों के क़ुलूब को शिफ़ा देगा (पाः 10, सूरे तौबा, आयतः 14) "और जब मैं बीमार होता हूं तो वही मुझको शिफ़ा देता है" (पाः 19, सूरे शुअ़रा, आयतः 80) "अव्वल दिलों में उनके लिये शिफ़ा है और रहनुमाई करने वाली है और रहमत है और यह सब बरकतें ईमान वालों के लिये हैं" (पाः 19, सूरे यूनुस, आयतः 57) "और हम क़ुरआन में ऐसी चीज़ें नाज़िल करते हैं कि वह ईमान वालों के हक़ में शिफ़ा और रहमत हैं और नाइन्साफ़ियों को इससे और उल्टा नुक़्सान पड़ता है" (पाः 15, सूरे बनी इसराईल, आयतः 82) "आप कह दीजिए कि यह क़ुरआन ईमान वालों के लिये रहनुमा और शिफ़ा है" (पाः 24, सूरे हा मीम सजदा, आयतः 44)

सुब्हानल्लाह! यह नुस्ख़ा शिफ़ा है इसे पढ़ये और अ़मल कीजिए, "بسم الله" की "बा" से पढ़ते जाइये और "وَالناس" की "सीन" तक पढ़ लीजिए सर के बालों से लेकर अ़मल शुरू कीजिए और पांच के नाखुनों तक अ़मल कर लीजिए तो जिस तरह क़ुरआन इ़ज़्ज़त वाली किताब है, इसी तरह अल्लाह तआ़ला उस बन्दे को भी बाइ़ज़्ज़त बना देते हैं जो क़ुरआन पाक से वाबस्ता रहता है।

क़ुरआन जिसने इ़ज़्ज़त बख़्शी

हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहब रह०, हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रह० इनको पूरी दुनिया में क़ुबूलियत

क्यों मिली? इस कुरआन के सदके में, उनकी ज़िन्दगी बिल्कुल इसके मुताबिक़ थी, उन्होंने इसके साये में ज़िन्दगी गुज़ारी इसके साये की वजह से अल्लाह तआला के यहां कुबूलियत पा गये, कुरआन को भी इ़ज़्ज़त मिली और अल्लाह ने अपने उन बन्दों को भी इ़ज़्ज़त दी, आज देखो कहां कहां से दुनिया उनकी इस जगह को देखने के लिये हाज़िर होती है, हम लोग अमेरिका में रहते हैं, वहां पर लोगों के दिलों में शौक़ रहता है कि उस जगह को आकर देखें यह किस लिये? इस कुरआन ने उनको इ़ज़्ज़तें दीं और यह दस्तूर है, इसी तरह हर दौर और हर ज़माने में जो इन्सान भी कुरआनी तअ़लीमात के मुताबिक़ ज़िन्दगी को बनायेगा, अल्लाह तआ़ला उसको चार चांद लगाएंगे, हमारे पास यह नुस्ख़ा मौजूद है।

कुलूब लज़्ज़त से ना आशना

इसको पढ़ने का अपना एक मज़ा है, लेकिन हर बन्दा उसके मज़े से वाक़िफ़ नहीं है, याद रखना जिस तरह किसी को नज़ला ज़ुकाम हो गया है, इसी तरह जिसको गुनाहों का नज़ला ज़ुकाम होता है उसको भी कुरआने पाक की लज़्ज़त का पता नहीं चलता, वह पढ़ता तो है, अलफ़ाज़ उसकी ज़बान पर आते हैं मगर दिल में मज़ा नहीं आता, अगर कोई चाहे कि इसका मज़ा नसीब हो तो वह ज़रा गुनाहों को छोड़ कर देखे, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं "لَا يَمَسُّهُ إِلَّا" "الْمُطَهَّرُونَ" (पारा 27, सूरे वाक़िआ, आयत 79) "इसको बजुज़ फ़रिश्तों के कोई हाथ नहीं लगाने पाता" इस कुरआन को हाथ नहीं लगा सकते, मगर वही जो पाक होते हैं, इसके एक ज़ाहिरी मअ़ना तो यह कि जो ज़ाहिर में पाक हों वह इसको हाथ लगाएं, और दूसरा मअ़ना यह कि जो गुनाहों से नापाक होते हैं वह कुरआन के लुत्फ़ और मज़े को नहीं हासिल कर पाते हैं, जो गुनहगार होता है और गफ़लत की ज़िन्दगी गुज़ारने वाला होता है वह कुरआन के लुत्फ़ से ना आशना होता है, उसको पता नहीं चलता, इसके मज़े सहाबा किराम से पूछिये, सारी सारी रात तहज्जुद की नमाज़ में कुरआन पढ़ा करते थे, सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा ने दो रकअ़त की नियत

बान्धी, कुरआन पढ़ती रहीं, पढ़ती रहीं, देखा कि अज़ान होने का वक़्त है, लिहाज़ा दुआ मांगने के लिये हाथ उठाये और रोने बैठ गईं कि ऐ अल्लाह! मैंने तो दो ही रक्अत की नीयत बान्धी थी तेरी रात कितनी छोटी है कि दो रक्अत ही में ख़त्म हो गई, उनको रातों के छोटा होने का शिक्वा होता था कि रात छोटी होती है, कुरआन पढ़ते हुए गुज़ार देते थे ऐसा लुत्फ़ और मज़ा मिलता था, "सुब्हानल्लाह" अल्लाह की अजीब उन पर रहमतें थी तहज्जुद के वक़्त अगर कोई मदीने की गलियों में चलता तो हर घर में से कुरआन पढ़ने की आवाज़ें यूं महसूस हुआ करती थी जैसे शहद की मक्खियों के भुनभुनाने की आवाज़ा हुआ करती हैं।

एक सहाबी जिनका कुरआन सुनने की ख़्वाहिश रब ने की

उबैय इब्ने कअ़ब रज़ि० एक सहाबी हैं "सुब्हानल्लाह" अल्लाह का कलाम पढ़ रहे थे कि नबी करीम सल्ल० तशरीफ़ लाये, जब आप क़रीब आये तो वह ख़ामोश हो गये महबूब ने फ़रमाया इब्ने कअ़ब कुरआन पढ़ो! अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० यह आप पर उतरा है, मैं आपके सामने पढ़ूं? फ़रमाया हां मुझे ऐसा ही हुक्म दिया गया है, वह भी बड़े समझदार थे, पहचान गये कि ऊपर से हुक्म आया है फ़रमाने लगे "اَللّٰهُ سَمَّانِی" "ऐ अल्लाह के महबूब क्या अल्लाह तआ़ला ने मेरा नाम लेकर कहा है? नबी अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया: نَعَمْ اَللّٰهُ سَمَّاكَ अल्लाह ने मेरा नाम लेकर कहा कि इब्ने कअ़ब से कहो कुरआन पढ़े, महबूब आप भी सुनेंगे और मैं (परवर्दिगार) भी सुनूंगा" कैसे मुहब्बत से कुरआन पढ़ते होंगे कि जिनके कुरआन के सुनने की ख़्वाहिश रहमान की तरफ़ से हुआ करती थी।

तेरे रोने ने फ़रिश्तो को भी रुला दिया

एक सहाबी तहज्जुद में कुरआन पढ़ते हुए रो पड़े, नबी अ़लै० की खिदमत में जब हाज़िर हुए आप सल्ल० ने फरमाया "तेरे कुरआन

के पढ़ने और रोने ने अल्लाह के फ़रिश्तों को भी रुला दिया" सुब्हानल्लाह, उनको रोता देखकर अल्लाह के फ़रिश्तों को भी रोना आ गया, उनको कुरआने पाक का ऐसा मज़ा और लुत्फ़ आया करता था तीर लग रहे हैं, और नमाज़ पढ़ रहे हैं और फिर अपने साथी को जगाकर एक सहाबी कहते हैं कि अगर मुझे अपने फ़र्ज़े मन्सबी में कोताही का डर न होता तो मैं तीरों पर तीर खाता रहता, लेकिन सूरे कहफ़ मुकम्मल पढ़े बग़ैर नमाज़ ख़त्म न करता तो उनको तीर लगते थे फिर भी उनका दिल चाहता था कि सूरे कहफ़ मुकम्मल पढ़लें, और हमारा हाल यह है कि क़रीब से मच्छर भी गुज़र जाये तो नमाज़ की सारी कैफ़ियत ख़त्म हो जाती है, तो कुरआने करीम की एक लज़्ज़त है, अपना एक लुत्फ़ है।

कुरआन सुनकर दहरिये रो पड़े

आपने नाम सुना होगा मिस्र के मशहूर क़ारी अ़ब्दुल बासित अ़ब्दुस्समद का, लोग उनकी कैसिटें भी सुनते हैं, एक मर्तबा इस आजिज़ ने अमेरिका का दौरा किया उसमें क़ारी अ़ब्दुल बासित अ़ब्दुस्समद भी थे, वह कुरआने करीम की तिलावत करते थे और यह आजिज़ कभी इंगलिश में, कभी उर्दू में जैसी भीड़ होती ऐसा बयान कर देता था, और आपको पता ही है वह कैसा कुरआन पढ़ते थे, किसीने उनसे पूछा कि क़ारी साहब आप इतना कुरआने पाक पढ़ते हैं, आपने कुरआने पाक को कोई मोजिज़ा देखा, वह कहने लगे मैंने कई मोजिज़े देखे, अ़र्ज़ किया हमें भी सुना दीजिए, तो उन्होंने नाम लिया कि एक मर्तबा हमारे मुल्क के बड़े सदर को रूस जाना पड़ा कोई अपना काम होगा, वहां के हुक्काम ने उनसे मीटिंग के बाद कहा क्या मुसलमान बने फिरते हो, छोड़ो इस मुसलमानी को हमारी तरह बन जाओ, हम तुम्हारी मदद करेंगे, तुम तरक़्क़ी याफ़्ता क़ौमों में शामिल हो जाओगे, इसके आगे उसने बात करने की कोशिश तो की, लेकिन बात न बन पड़ी, दो तीन साल के बाद फिर उनका जाना हुआ (क़ारी साहब कहते हैं कि) मुझे इत्तिलाअ़ मिली कि सदर साहब

चाहते हैं कि तुम भी "मासको" चलो फ़रमाया यह सुनकर मैं बड़ा हैरान कि अ़ब्दुल बासित की ज़रूरत पड़े अ़रब में, अमारात में, पाकिस्तान में, हिन्दुस्तान में जहां जहां मुसलमान होते हैं वहां, रूस में तो कांफ़िर दीन व मज़हब को मानते ही नहीं दहरिये हैं वहां मेरी क्या ज़रूरत पड़ी, लेकिन मैंने तैयारी की और साथ चल पड़ा कहने लगे वहां उनकी फिर मीटिंग हुई, मीटिंग के बाद क़ारी साहब के बारे में सदर साहब ने कहा कि यह मेरे दोस्त हैं यह आपके सामने कुछ पढ़ेंगे, वह न समझे क्या पढ़ेंगे, क़ारी साहब ने कहा कि मुझे इशारा मिला मैंने पढ़ना शुरू कर दिया, और पढ़ा भी क्या

طٰهٰ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰۤى اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى

(पारा 16, सूरे ताहा)

"ताहा, हमने आप पर कुरआने मजीद इसलिये नहीं उतारा कि आप तक्लीफ़ उठायें बल्कि ऐसे शख़्स की नसीहत के लिये उतारा है जो अल्लाह से डरता हो"

कहते हैं दो रुकू मैंने पढ़े और इन दो रुकूअ़ में वह आयतें भी पढ़ीं।

اِنَّنِيْۤ اَنَا اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعْبُدْنِيْ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ

(पारा 16, सूरे ताहा, आयत 14)

"मैं ही अल्लाह हूं मेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तुम मेरी ही इबादत किया करो और मेरी ही याद की नमाज़ पढ़ा करो" इन आयतों को सुनकर किसी दौर में हज़रत उ़मर रज़ि० भी ईमान ले आये थे कहते हैं जब मैंने दो रुकू पढ़े और सर उठाया तो मैंने कुरआने मजीद का मोजिज़ा अपनी आंखों से देखा कि सामने बैठे हुए दहरियों में से चार बन्दे ऐसे थे जो आंसुओं से रो रहे थे, कहने लगे सब हैरान हो गये, हमारे सदर साहब ने पूछा कि आप क्यों रो रहे हो? कहने लगे हमें तो पता नहीं उसने क्या पढ़ा है, लेकिन उसके पढ़ने में तासीर ऐसी थी कि दिल हमारे मोम हो गये, और आंखों में आंसू आ गये, फ़रमाते हैं कि मैंने कुरआने करीम का यह मोजिज़ा देखा कि जो उसे मानते नहीं, जानते नहीं, कुरआन अगर उनके सामने पढ़ा जाये तो उनके

सीनों में भी उतरता चला जाता है! उनके दिलों में भी असर पैदा करता है।

कुरआन ने इन्सान की शान बढ़ा दी

मेरे दोस्तो! दरियाओं के रास्ते कभी किसी ने बनाये! दरियाओं का रास्ता कोई नहीं बनाता, दरिया अपना रास्ता ख़ुदा बनाता है, यह कुरआने मजीद भी अल्लाह की रहमत का वह दरिया है जो सीनों में अपने रास्ते ख़ुद बना लिया करता है, यह इसलिये भेजा गया कि हमें इ़ज़्ज़तें मिलें, देखिये कुरआने मजीद की जिल्द का गत्ता उसके ऊपर कुछ नहीं लिखा होता औराक़ के ऊपर लिखा होता है, लेकिन फ़िक़ा का मसला है कि नापाक आदमी जिस तरह लिखे हुए कागज़ को हाथ नहीं लगा सकता इसी तरह उस गत्ते को भी हाथ नहीं लगा सकता है, अब अगर कोई पूछे कि जी गत्ते पर तो कुछ नहीं लिखा उसको क्यों हाथ नहीं लगा सकते? तो मुफ़्ती हज़रात ने इसका जवाब दिया कि अगरचे इस पर कुछ नहीं लिखा मगर उसको सी कर कुरआने करीम के साथ यक्जा कर दिया है, नत्थी कर दिया है, उसका हिस्सा बना दिया है, इसलिये अब उसका हिस्सा बनने की वजह से उस गत्ते की शान बढ़ गई, नापाक आदमी उसको भी हाथ नहीं लगा सकता, मेरे दोस्त अगर बेक़ीमत गत्ता कुरआन के साथ नत्थी होता है, उसकी शान बढ़ जाती है, तो इन्सान होकर कुरआन के साथ नत्थी होगा, अल्लाह तआ़ला तेरी शान क्यों नहीं बढ़ाएंगे, इसलिये यह कुरआन हमें इ़ज़्ज़तें देने के लिये आ़या है।

अमीरुल मोमिनीन कैसे बने?

बात ख़त्म करना चाहता हूं हज़रत उमर फ़ारूक़ रजि० मक्का मुकर्रमा के अन्दर पहाड़ी पर चढ़ रहे हैं, दोपहर का वक्त है चिलचिलाती धूप है, पीछे पूरी फौज है, एक जगह खड़े हो गये और वादी में देखना शुरू कर दिया, सहाबा भी खड़े हो गये, सबको पसीना आ रहा है, कोई साया भी नहीं और मक्का मुकर्रमा की धूप तो

आपको पता ही है कैसी होती है? एक सहाबी ने पूछा कि हज़रत क्यों खड़े हैं? आपकी वजह से पूरी फ़ौज परेशान है, वह कहने लगे कि मैं इस वादी को देख रहा हूं जहां अपने लड़कपन में ऊँट चराने के लिये आता था और मुझे ऊँट चराने का सलीक़ा और तरीक़ा नहीं आता था, और मेरे ऊँट ख़ाली पेट घर जाते तो मेरा वालिद मुझे सताता था, डांटता था, कहता था कि उमर तो क्या ज़िन्दगी गुज़ारेगा? तुझे तो ऊँट भी चराने नहीं आते हैं, उस वक़्त को याद कर रहा हूं, जब मुझे ऊँट चराने नहीं आते थे और आज उस वक़्त को याद कर रहा हूं जब इस्लाम और कुरआन के सदके अल्लाह ने उमर को अमीरुल मोमिनीन बना दिया है, इसलिये फ़रमाया "إنَّ اللهَ يَرْفَعُ بِهٰذَا الْكِتَابِ اَقْوَامًا" अल्लाह पाक इस कुरआन के ज़रिये क़ौमों को बुलन्दी अता फ़रमाते हैं, जो भी इसपर अमल करेगा अल्लाह तआला उसको बुलन्दी अता फ़रमायेंगे।

इसलिये मेरे दोस्त!
तेरे हाथ में हो कुरआन
और फिर दुनिया में रहे परेशा......!
और तेरे हाथ में हो कुरआन
और तू दुनिया में फिरे नाकाम......!
तेरे हाथ में हो कुरआन
और तू दुनिया में रहे गुलाम......!

गुलामी नफ़्स की हो, शैतान की हो, या किसी इन्सान की हो, ना ना हमें कहता है यह कुरआन, और मेरे मानने वाले मुसलमान, "اِقْرَأْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَم" (पारा 30, सूरे अलक़, आयत 3) "तू पढ़ कुरआन, तेरा रब करेगा इकराम"

तेरा रब तुझे इज़्ज़त व वक़ार देगा, तेरे ज़ाहिर व बातिन को निखार देगा।

اَلرَّحْمٰنُ عَلَّمَ الْقُرْاٰن خَلَقَ الْاِنْسَانَ عَلَّمَهُ الْبَيَان، وفى مقام اخر هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَان فَبِاَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰن

(पारा 27, सूरे रहमान)

"रहमान ने कुरआन की तअ़लीम दी उसने इन्सान को पैदा किया उसको गोयाई सिखाई, भला ग़ायत इताअ़त का बदला बजुज़ इनायत के और भी कुछ हो सकता है, सो ऐ जिन्न व इन्स तुम अपने रब की कौन कौनसी नेमतों के मुन्किर हो जाओगे"

तो कुरआन यह इज़्ज़तें देने के लिये आया है, हम उसको अपने सीनों से लगायें, सहाबा इसी कुरआन को सीने से लगाकर निकले और इसी कुरआन ने उनकी ज़िन्दगियों को बदल दिया था।

उतर कर हिरा से सूये क़ौम आया
और एक नुस्ख़ा–ए–कीमिया साथ लाया
वह बिजली का कड़का था या सौते हादी
अ़रब की ज़मीन जिसने सारी हिला दी

अ़रबों को हिला कर रख दिया था उनकी ज़िन्दगियां बदल कर रख दी थीं, वह इस कुरआने पाक को सीनों से लगाकर निकले, जिधर निकले कामयाबी उनके क़दम चूमती थी:

बात क्या थी कि न कैसर व किस्रा से दबे
चन्द वह लोग कि ऊँटों के चराने वाले
जिनको काफ़ूर पे होता था नमक का धोखा
बन गये दुनिया की तक़दीर बदलने वाले

दुनिया की तक़दीर को बदल कर रख दिया इसी कुरआन की वजह से, तो कुरआने मजीद के साथ नत्थी हो जाइये, आ़मिले कुरआन बन जाइये, नासिरे कुरआन बन जाइये, दाईये कुरआन बन जाइये, बल्कि आ़शिक़े कुरआन बन जाइये।

नबी सल्ल० दुआ मांगते थे:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلِ الْقُرْاٰنَ رَبِيْعَ قَلْبِي

"ऐ अल्लाह कुरआन को मेरे दिल की बहार बना दे" यह नबी की मसनून दुआ है।

हर लेहज़ा है मोमिन की नई शान आन
किर्दार में गुफ़्तार में अल्लाह की बुर्हान

यह बात किसी को नहीं मालूम कि मोमिन
क़ारी नज़र आता है हक़ीक़त में क़ुरआन

जो इसको पढ़कर अ़मल करता है जिस तरह क़ुरआन इ़ज़्ज़त वाली किताब है, वह बन्दा भी इ़ज़्ज़त वाला बन जायेगा, और यही वजह है कि इस क़ुरआने पाक की बदौलत इस जगह (थाना भवन) का नाम दुनिया के कोने कोने में फैला हुआ है।

दुनिया का आख़री मुल्क

इस आ़जिज़ को अल्लाह तआ़ला ने अलहम्दु लिल्लाह दुनिया के बयालिस मुल्कों में जाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई इसी दीन की निस्बत से, अमेरिका भी देखा, अफ़्रीक़ा भी, देखा, जिसको दुनिया का आख़री किनारा कहते हैं, उसको भी देखा, वहां पर एक दिन साल में ऐसा आता है कि सूरज एक तरफ़ से आता है, डूबने के लिये और डूबने के बजाये फिर निकलना शुरू हो जाता है, इस मन्ज़र को देखने के लिये कई लाख टूरिस्ट जमा होते हैं, साइन्स दानों ने लिख कर लगाया है कि यह दुनिया का आख़री किनारा है, अलहम्दु लिल्लाह इस आ़जिज़ को वहां भी अल्लाह ने पहुंचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई, दोस्त साथ थे समुंद्र था, इस आ़जिज़ ने समुंद्र के पानी में पांव डालकर कहा ऐ अल्लाह! अगर पता होता कि तेरी ज़मीन इससे भी आगे है तो तेरे नाम को लेकर यह आ़जिज़ वहां भी पहुंच जाता जैसे सहाबा किराम ने फ़रमाया था।

मलेशिया के जंगल देखे अ़जीब व ग़रीब सुब्हानल्लाह यहां आदम ख़ोर दरख़्त हैं, उनके इतने बड़े बड़े पत्ते हैं कि कोई बन्दा उनके क़रीब जाये तो वह लिपट जाते हैं इन्सान का सांस बन्द होकर ख़त्म हो जाता है, एक फूल देखा काफ़ी बड़ा मोटा शहद की तरह एक चीज़ उसके अन्दर होती है, जब परिन्दे उसपर आकर बैठते हैं फूल बन्द हो जाता है, और वह परिन्दे उसकी ग़िज़ा बन जाते हैं, क्या अल्लाह की शान है, आप को क्या बताऊँ, दुनिया के समुंद्र की भी सैर की, अलहम्दु लिल्लाह काले, गोरे, अ़रबी अ़जमी सबको देखा

मगर एक बात आपको बताऊँ वह यह कि "यह आजिज़ जहां भी गया वहां पर कोई न कोई उलमाए देवबन्द का रूहानी फ़र्ज़न्द बैठा हुआ दीन का काम करता हुआ नज़र आया" यह है कुरआन ने जिनको इ़ज़्ज़त दी उन जगहों को जो अल्लाह तआ़ला ने इ़ज़्ज़त बख़्शी इस कुरआन की वजह से, आपको पता है कहां कहां बयानुल कुरआन पढ़ा जाता है? लिहाज़ा अगर आप चाहते हैं कि इस मर्कज़ में रहकर तअ़लीम पायें, इ़ज़्ज़तें हासिल करें, तो जो पढ़ये उसपर अ़मल कीजिए जिस तालिब इ़ल्म ने यह सोचा कि मैं अभी तो पढ़ लूं इकळा बाद में अ़मल करूंगा इसका कुछ पता नहीं, वह शायद मरने के बाद ही अमल करेगा, यह शैतान का धोखा है अभी इसी वक़्त इधर पढ़ये उधर अ़मल कीजिए, इधर कुरआन मुकम्मल हुआ उधर उसपर अ़मल मुकम्मल होना चाहिये, फिर देखिये अल्लाह तआ़ला की कैसी रहमतें आती हैं अल्लाह तआ़ला हमें कुरआने पाक पढ़ने का शौक़ अ़ता फ़रमाये, आमीन।

यह कुरआन मजीद ऐसा है कि जब आदमी उसकी लज़्ज़त से वाक़िफ़ होता है तो खाने पीने की लज़्ज़तों से एक तरफ़ हो जाता है, दुआ़ है अल्लाह तआ़ला आपको दीन की ख़िदमत के लिये कुबूल फ़रमाले, आपके दिल के अन्दर जो भी नेक मक़ासिद हैं उनको पूरा फ़रमादें, आमीन या रब्बल आ़लमीन।

रब ग़फ़्फ़ार का गुनहगारों से प्यार

इक़्तिबास

गुनाह का एक ही हल कि उसे छोड़ दिया जाये, अगर नहीं छोड़ेंगे तो यह गुनाह की आ़दत और पक्की होगी और रासिख़ होती जायेगी, फिर यह इतनी ग़ालिब आ जायेगी कि इन्सान के लिये रूहानी मौत का सबब बन जायेगी।

गुनाह की इब्तिदा कच्चे धागे की तरह कमज़ोर होती है, कच्चे धागे को बच्चा भी तोड़ देता है, इब्तिदा में गुनाह को छोड़ना बहुत आसान है, लेकिन वक़्त गुज़रने के साथ साथ फिर इस गुनाह की मिसाल जहाज़ के लन्गर की तरह हो जाती है, जैसे वह जहाज़ को हिलने नहीं देता इसी तरह गुनाह करते करते ऐसा मज़बूत हो जाता है कि अगर छोड़ना भी चाहे तो छोड़ नहीं सकता।

(हज़रत मौलाना पीर फ़क़ीर ज़ुलफ़क़्क़ार अहमद साहब नक़्शबन्दी)

الحمد لِلّٰهِ وَكَفٰى وسلامٌ علٰى عباده الذين اصطفٰى اما بعد!
اعوذ باللّٰه من الشيطٰن الرّجيم ، بسم اللّٰه الرّحمٰن الرّحيم
﴿وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ﴾

(पारा 8, सूरे अनआम, आयत 120)

तर्जुमा :– और तुम ज़ाहिरी गुनाह को भी छोड़ो और बातिनी गुनाह को भी छोड़ दो।

अल्लाह तआला एक और जगह फ़रमाते हैं :–

وَلَايَحِيْقُ المَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ.

(पारा 22, सूरे फ़ातिर, आयत 43)

तर्जुमा :– और बुरी तदबीरों का वबाल (हक़ीक़ी) उन तदबीर वालों ही पर पड़ता है।

अल्लाह तआला ने एक और जगह फ़रमाया :–

مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءً يُّجْزَبِهٖ.

(पारा 5, सूरे निसा, आयत 123)

तर्जुमा :– जो शख़्स कोई बुरा काम करेगा वह उसके बदले सजा दिया जायेगा।

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّايَصِفُوْنَ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بَارِكْ وَسَلِّم.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بَارِكْ وَسَلِّم.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بَارِكْ وَسَلِّم.

गुनाह की तारीफ़

"وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ" "छोड़ दो वह गुनाह जो तुम ज़ाहिर में करते हो या छुपे हुए करते हो" गुनाह कहते हैं कोई भी काम किताब व सुन्नत के ख़िलाफ़ करना, अल्लाह तआला के हुक्मे मुबारक को तोड़ना और नबी अ़लै० की मुबारक सुन्नत को छोड़ना, इसको गुनाह

कहते हैं,

हमें इस बात का हुक्म दिया जा रहा है कि गुनाह जो हम ज़ाहिर में करते हैं या छुपे हुए करते हैं हम उन तमाम गुनाहों को छोड़ दें, गुनाह की मिसाल नासूर की तरह है, जिस्म के किसी हिस्से के अन्दर कैन्सर हो तो इसका इलाज यह है कि इस हिस्से को काट दिया जाये, अगर नहीं काटेंगे तो यह कैन्सर बढ़ेगा और इन्सान के लिये जिस्मानी मौत का सबब बन जायेगा।

गुनाह का एक ही हल कि उसे छोड़ दिया जाये, अगर नहीं छोड़ेंगे तो यह गुनाह की आदत और पक्की होगी और रासिख़ होती जायेगी फिर यह इतनी ग़ालिब आ जायेगी कि इन्सान के लिये रूहानी मौत का सबब बन जायेगी, गुनाह की इब्तिदा कच्चे धागे की तरह कमज़ोर होती है, कच्चे धागे को बच्चा भी तोड़ देता है, इब्तिदा में गुनाह को छोड़ना आसान है, लेकिन वक़्त के गुज़रने के साथ साथ फिर इस गुनाह की मिसाल जहाज़ के लन्गर की सी हो जाती है, जैसे वह जहाज़ को हिलने नहीं देता इसी तरह गुनाह करते करते ऐसा मज़्बूत हो जाता है कि अगर छोड़ना भी चाहे तो छोड़ नहीं सकता।

आपने देखा होगा दरख़्तों के ऊपर एक पीली बेल होती है, उसको "आकाश बेल" कहते हैं वह फैलती है तो दरख़्त की बढ़ौतरी रुक जाती है, और फिर दरख़्त मुरझा जाता है, गुनाह की मिसाल आकाश बेल की सी है यह इन्सान को अपने अन्दर ऐसा उलझा लेता है कि बन्दे की रूहानी तरबियत रुक जाती है, बिल–आख़िर वह रूहानी तौर पर बिल्कुल मुरझा जाता है।

हाफ़िज़ इब्ने क़य्यम रह० ने एक अजीब बात लिखी है फ़रमाते हैं "ऐ दोस्त! यह न देखना कि गुनाह छोटा है या बड़ा बल्कि उस ज़ात की अज़मत को देखना जिसकी तू नाफ़रमानी कर रहा है"

आज का इन्सान गुनाह करते हुए चन्द साल के बच्चे का भी लिहाज़ कर लेता है, लेकिन अफ़्सोस वह उस वक़्त अल्लाह तआला को भूल जाता है।

एक बुज़ुर्ग का इलहाम

एक बुज़ुर्ग थे वह फ़रमाते थे अल्लाह तआला ने मुझे इलहाम फ़रमाया कि लोगों को बता दीजिए ज़ब यह गुनाह करना चाहते हैं तो इन तमाम दरवाज़ों को तो बन्द कर लेते हैं जहां से दुनिया देखती है, लेकिन उस दरवाज़े को बन्द नहीं करते जिससे मैं (परवर्दिगार) देखता हूं, क्या अपनी तरफ़ देखने वालों में यह सबसे कम दर्जे का मुझे समझते हैं।

तो गुनाह को छोड़ये जो तुम ज़ाहिर में करते हो या छुपे हुए करते हो, यह अल्लाह तआला की रहमत है कि वह हमारे गुनाहों पर रहमत का पर्दा डाल देता है, उसकी सत्तारी करता है, अक्मालुश्शीम में एक अ़जीब बात लिखी, फ़रमाते हैं "ऐ दोस्त! जिसने तेरी तारीफ़ की उसने हक़ीक़त में तेरे परवर्दिगार की सत्तारी की तारीफ़ की और वाक़िई अगर गुनाहों में बू होती तो कई परहेज़गार जो पारसाई में मशहूर हैं उनके जिस्मों से ऐसी बू आती कि कोई देखना भी गवारा न करता, तो गुनाहों को छोड़ने का हुक्म दिया गया"

अ़ता बिन रबाह रह० बड़ा इलहामी कलाम फ़रमाया करते थे इमामे अअ़ज़म के मशाइख़ असातज़ा में उनका नाम आता है, अ़जीब बात कही फ़रमाते हैं, एक दफ़ा अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने इलहाम फ़रमाया, अ़ता उन लोगों से कह दो अगर उनको रिज़्क़ की छोटी मोटी तंगी और परेशानी आती है यह फ़ौरन लोगों की महफ़िल में बैठकर मेरे शिक्वे शुरू कर देते हैं, जबकि उनका नाम-ए-आमाल गुनाहों से भरा हुआ मेरे पास आता है मैं फ़रिश्तों की महफ़िल में उनकी शिकायतें नहीं करता।

गुनाह के वजूहात

आ़म तौर पर गुनाह करने की चार वजहें होती हैं, और अल्लाह तआ़ला ने इन चारों का जवाब क़ुरआने करीम में समझा दिया है।

पहली वजह :- गुनाह करते वक़्त बन्दा सोचता है कि मुझे कोई

नहीं देख रहा जब दिल में यह एहसास होता है कि मुझे कोई नहीं देख रहा तो इन्सान गुनाह पर जुर्रत करता है, अल्लाह तआला ने कुरआने करीम में इसका जवाब भी समझा दिया फ़रमायाः

إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ

(पारा 30, सूरे फ़ज्र, आयत 14)

"बेशक आपका रब (नाफ़रमानों के) घात में है" "مرصاد" कहते हैं कि जब शिकारी को शिकार के ऊपर निशाना लगाना होता है तो निशाना लगाने से कुछ लम्हे पहले इतना गौर से वह शिकार को देखता है कि पलक भी नहीं झपकता, सांस को भी रोक लेता है, हमा–तन मुतवज्जेह हो जाता है उसकी इस कैफ़ियत को मिर्साद कहते हैं, "إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ" "तेरा रब तेरी घात में लगा हुआ है" वह तुझे इतनी गौर से देख रहा है जैसे शिकार करने वाला अपने शिकार को देखता है, तुम इतनी बारीक बीनी से वाच (Watch) किये जा रहे हो, You are under of the vision तो यह समझा दिया ताकि दिमाग़ में न रहे कि कोई नहीं था देखने वाला।

दूसरी वजह :– आदमी गुनाह करते हुए यह समझता है कि किसी को पता ही नहीं मैं फ़ोन पर बात करता हूं किसी को इल्म नहीं, मैंने ख़त लिखा किसी को पता नहीं, मैंने ऊँच नीच कर दी किसी को पता नहीं, तो जब यह दिल में एहसास होता है कि किसी को पता ही नहीं मैं क्या कर रहा हूं तो यह गुनाह का सबब बनता है, अल्लाह तआला ने कुरआने पाक में इसका भी जवाब समझा दिया ताकि हम यह ज़हन में न रखें कि हमारे अ़मल का किसी को पता नहीं चलता, फ़रमाया वह ऐसा परवर्दिगार है "يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ" (पारा 24, सूरे मोमिन, आयत 19) "वह ऐसा है कि आंखों की चोरी को जानता है और उन (बातों) को भी जो सीनों में पोशीदा हैं"

अब बन्दा कैसे सोच सकता है कि किसी को पता ही नहीं मालूम हुआ कि अल्लाह तआला को सब कुछ मालूम है, जो हम करते हैं या करने का इरादा करते हैं।

तीसरी वजह :– आदमी समझता है कि मेरे पास कोई भी नहीं था

घर के अन्दर मैं अकेला था जिसका था डर वह नहीं है घर, अब जो चाहे कर।

तो यह एहसास दिल में होता है कि कोई मेरे पास नहीं है यह भी गुनाह बनता है तो अल्लाह तआ़ला ने इसका भी जवाब समझा दिया फ़रमा दिया कि तुम जहा तीन होते हो वह चौथा होता है अगर चार होते हो वह पांचवां होता है, "وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ" (पारा 27, सूरे हदीद, आयत 4) "और वह तुम्हारे साथ रहता है ख़्वाह तुम लोग कहीं भी हो।"

चौथी वजह :– बन्दा जब यह समझता है कि कोई मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता बाप फ़ौत हो गया, बच्चा जवान होकर मां से डरता नहीं, अब वह बुरे काम करता है और निडर रहता है, दूसरों को कहता है तुम मेरा क्या बिगाड़ लोगे? कोई मेरा क्या बिगाड़ सकता है? तो यह जो अलफ़ाज़ हैं कि कोई मुझे कुछ नहीं कह सकता, कोई मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता यह एहसास, गुनाह करने का सबब बनता है, बन्दा ढीटा बन जाता है।

अल्लाह तआ़ला ने इसका भी जवाब समझा दिया कि कोई यह न समझे कि कोई मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता, तुम्हारा मआ़मला एक ऐसे परवर्दिगार के साथ है, "اِنَّ اَخْذَهٗ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ" (पारा 12, सूरे हूद, आयत 102) "बिला शुब्हा उसकी दारो-गीर बड़ी अलम रिसां और सख़्त है" "فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ" (पारा 30, सूरे फ़ज्र, आयत 13) "सो आपके रब ने उन पर अ़ज़ाब का कोड़ा बरसाया" "وَلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗ اَحَدٌ" (पारा 30, सूरे फ़ज्र, आयत 26) "और न उसके जकड़ने के बराबर कोई जकड़ने वाला निकलेगा" बनी इसराईल को एक जगह फ़रमाया: "فَاِنِّيْ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّا اُعَذِّبُهٗ اَحَدًا مِّنَ الْعَالَمِيْنَ" (पारा 7, सूरे माइदा, आयत 115) "ऐसा अ़ज़ाब दूंगा जहानों में मैं ऐसा अ़ज़ाब कोई दे नहीं सकता"

लिहाज़ा इसका भी जवाब समझा दिया कि कोई यह न समझे कि मेरा कोई कुछ नहीं कर सकता।

गुनाह पर चार गवाह

क़यामत के दिन हर इन्सान के साथ चार गवाह पेश किये जायेंगे।

पहला गवाह :– "इन्सान का नाम–ए–आमाल" "وَوُضِعَ الْكِتٰبُ" जब नामा–ए–आमाल सामने होगा "فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ" "मुजरिम गुनहगार आदमी जब देखेगा तो डरेगा, कांपेगा, घबरायेगा" फिर क्या कहेंगे? "فَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَايُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً إِلَّا أَحْصٰهَا" "हाये हमारी बद–बख़्ती यह कैसी किताब है कोई छोटा बड़ा अ़मल ऐसा नहीं जो इसमे दर्ज न हो" "وَوَجَدُوْا مَاعَمِلُوْا حَاضِرًا وَلَايَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا" (पारा 15, सूरे कहफ़, आयत 49) "जो अपना किया धरा होगा वही अपने सामने पायेंगे, तेरा रब तो किसी पर ज़ुल्म नही करेगा"

दूसरा गवाह :– "फ़रिश्ते" होंगे "وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ كِرَامًا كَاتِبِيْنَ يَعْلَمُوْنَ مَاتَفْعَلُوْنَ" (पारा 30, सूरे इन्फ़ितार, आयत 10–11–12) "और तुम पर (तुम्हारे सब आमाल) याद रखने वाले मुअ़ज़्ज़ज़ लिखने वाले मुक़र्रर हैं, जो तुम्हारे सब कामों को जानते हैं"

तीसरा गवाह :– "इन्सान के जिस्म के हिस्से" "اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰى أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ" (पारा 23, सूरे यासीन, आयत 65) "आज हम उनके मुंहों पर मोहर लगा देंगे, और उनके हाथ हमसे कलाम करेंगे और उनके पांव शहादत देंगे, जो कुछ यह लोग किया करते थे" मुंह को तो सील कर देंगे कि दुनिया में यह स्टेटमेन्ट बदल देता था अब स्टेटमेन्ट वाला सिलसिला ही नहीं "يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ" (पारा 30, सूरे तारिक़, आयत 9) "यह वह दिन होगा जब हम भेद खोलेंगे" अल्लाहु अकबर इस आयत को पढ़कर इस उम्मत के औलिया बहुत रोया करते थे कि ऐ अल्लाह आप फ़रमा रहे हैं "يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ" कि जिस दिन भेद खोल दिये जायेंगे तो परवर्दिगार हमारा उस दिन क्या हाल होगा इस पर वह रोते थे, लिहाज़ा जब इन्सान के हिस्से उसके ख़िलाफ़ गवाही देंगे तो यह उनसे झगड़ेगा कहेगा "لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا" (पारा 24, सूरे हा मीम, आयत 21) "क्यों तुमने

मेरे ख़िलाफ़ गवाही दी" "قَالُوْا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ" "वह जिस्म के हिस्से कहेंगे अल्लाह ने हमको गोयाई दी" "اَلَّذِیْ اَنْطَقَ كُلَّ شَیْءٍ" "जिसने हर चीज़ को गोयाई दी" और अल्लाह तआला फ़रमाते हैं "وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ" "तुम तो कभी पर्दा ही नहीं करते थे अपनी आंखों से कानों से" ज़रा सोचिये जिस्म के दूसरे हिस्से से हम कैसे पर्दा कर सकते हैं उन्हीं हिस्से के ज़रिये गुनाह करते हैं और क़्यामत के दिन यही सुलतानी गवाह बनेंगे।

चौथा गवाह :– चौथी गवाही क़्यामत के दिन अल्लाह तआला की "ज़मीन" देगी, जैसे कैमरे होते हैं फ़ोटो ले लेते हैं रिज़र्व कर लेते हैं, मन्ज़र कैच कर लेते हैं, इसी तरह अल्लाह तआला की ज़मीन भी मन्ज़र कैच कर लेती है, नेकी करने वालों का भी और गुनाह करने वालों का भी, और क़्यामत के दिन अल्लाह तआला ज़मीन को हुक्म देंगे कि तू भी सुना तेरी पीठ पर क्या गुज़री, "يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا" (पारा 30, सूरे ज़िलज़ाल, आयत 4–5) "ज़मीन भी उस दिन ख़बरें नशर करेगी और ठीक ठीक बतलायेगी कि हमने क्या क्या किया" इसलिये गुनाहों का एक ही हल है कि इन्सान उनसे सच्ची तौबा करके आइन्दा के लिये नेकी की ज़िन्दगी गुज़ारे।

गुनाह का शौक़ और अज़ाब का डर

एक शख़्स इबराहीम बिन अदहम रह० के पास आया नौजवान था कहता है हज़रत गुनाह का मुर्तकिब होता हूं छोड़ा भी नहीं जा सकता, डर भी लगता है कि अज़ाब होगा तो कोई तरीक़ा बतादें कि मैं अज़ाब से बच जाऊँ, और गुनाह भी करता रहूं।

अल्लाह वाले बड़े दाना बीना होते हैं, धक्के नहीं दे देते वह मुहब्बत व प्यार से बात समझाते हैं, दिल में उतारते हैं, हज़रत ने फ़रमाया कि हां मैं तुझे तरीक़ा बताता हूं वह बड़ा ख़ुश हो गया बात सुनने के मूड में आ गया, कहने लगा कि हज़रत वह कौनसा तरीक़ा है कि मैं गुनाह भी करता रहूं और अज़ाब व सज़ा से भी बच जाऊँ, आपने फ़रमाया कि भई:

पहली तज्वीज़ :– तो यह है कि अगर गुनाह करना ही है तो अल्लाह तआ़ला की निगाहों से ओझल हो कर कर लिया क़रो, अब वह सोचता रह गया कहने लगा कि हज़रत यह कैसे मुमकिन है कि मैं अल्लाह तआ़ला की निगाहों से ओझल होकर गुनाह करूं यह तो मुमकिन ही नहीं।

दूसरी तज्वीज़ :– हज़रत ने फ़रमाया फिर दूसरी तज्वीज़ यह है कि तुम रिज़्क़ खाना छोड़ दो, अल्लाह से कह देना कि तुम्हारा न खाना खाता था और न तुम्हारी बात मानता था, उसने कहा हज़रत यह कैसे मुमकिन है कि मैं खाना छोड़ दूं मैं फिर ज़िन्दा कैसे रहूंगा?

तीसरी तज्वीज़ :– हज़रत ने फ़रमाया फिर तीसरी तज्वीज़ पेश करता हूं और वह यह कि ज़मीन व आसमान अल्लाह तआ़ला का मुल्क है, उसी की मिल्क है और बादशाह की नाफ़रमानी उसके मुल्क में रह कर करना यह ठीक नहीं है, लिहाज़ा इससे बाहर निकल कर नाफ़रमानी करना, अल्लाह पाक भी कुरआने मजीद में अ़जीब अन्दाज़ से फ़रमाते हैं:

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

فَانْفُذُوْا لَاتَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ

(पारा 27, सूरे रहमान, आयत 33)

"अगर तुम्हारे अन्दर इस्तिताअ़त है कि ज़मीन व आसमान के कुर्रों से बाहर निकल सकते हो तो निकल कर दिखलाओ निकलोगे किसी दलील से निकलोगे" (जैसे घड़े की मछली किधर जाओगे) कहा कि हज़रत यह भी नही हो सकता।

चौथी तज्वीज़ :– फ़रमाने लगे अच्छा फिर एक तरीक़ा और बताता हूं वह यह कि जब मलकुल मौत आयें रूह क़ब्ज़ करने के लिये तो उन्हें कह देना कि थोड़ा इन्तिज़ार कर लो उसने कहा हज़रत वहां तो इन्तिज़ार का तसव्वुर ही नहीं।

اِذَا جَاءَ اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ

(पारा 11, सूरे यूनुस, आयत 49)

तर्जुमा :– "जब मौत आती है तो न एक लम्हे आगे होती है और न पीछे।"

पांचवीं तज्वीज़ :– फ़रमाया एक तरीक़ा और बताता हूं वह यह कि जब क़ब्र में तुमको दफ़न कर दिया जाये और उस वक़्त मुन्कर नकीर आयें तुमसे सवाल पूछने के लिये तो तुम कह देना (No admission without permission) आज कल लोग लिखकर लगा देते हैं तो तुम भी कह देना कि बग़ैर इजाज़त क्यों आये? उसने कहा कि हज़रत मैं उनको कैसे मना कर सकता हूं।

छठी तज्वीज़ :– फ़रमाने लगे अच्छा भई एक और तदबीर बताता हूं वह यह कि जब क़यामत के दिन तुम्हारे बुरे अ़मलों को खोला जायेगा और परवर्दिगारे आ़लम फ़रिश्तों को हुक्म देंगे कि उसको घसीटकर तुम जहन्नम में डाल दो तो उस वक़्त तुम ज़िद करके खड़े हो जाना कि मैं तो नहीं जाता, उसने कहा कि हज़रत मेरी क्या हैसियत है कि फ़रिश्तों के सामने ज़िद करके खड़े हो जाऊँ मेरी तो कोई हैसियत ही नहीं, अब लोहा गर्म था और चोट लगाने का वक़्त था, हज़रत ने फ़रमाया कि ऐ भाई! जब तेरी हैसियत ही कोई नहीं तो तू इतने बड़े परवर्दिगार की नाफ़रमानी क्यों करता है।

कहने लगा हज़रत आज से मैं गुनाहों से तौबा करता हूं, और आजके बाद वादा करता हूं कि अपने अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं करूंगा, तो हमको चाहिये कि हम गुनाहों से बचें और परवर्दिगारे आ़लम के हुक्मों के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें।

गुनाह में बेचैनी है

हर गुनाह के साथ परेशानी बन्धी हुई है, बेचैनी बन्धी हुई है, यह मुमकिन ही नहीं कि गुनाह करें और बेचैनी न हो, जो इन्सान भी गुनाह करेगा चाहे कितनी ही कामयाबी से गुनाह क्यों न करने वाला हो दिल बेचैन रहेगा, उसका दिल परेशान रहेगा, रातों को नींद नहीं आयेगी कोई न कोई परेशानी की सूरत निकल आयेगी।

आपने देखा होगा बड़े बड़े होटलों में जब खाना देते हैं वहां

"बूफ़े सिस्टम होता है" एक टरे में बहुत सारा खाना रख देते हैं और हर टरे के नीचे एक बत्ती जला देते हैं उस बत्ती का काम होता है खाना गर्म रखना जितनी देर खाना खाता रहेगा वह गर्म रहता है, इसी तरह जो बन्दा भी गुनाह करता है, अल्लाह तआला परेशानी की बत्ती सुल्गा देते हैं, उसके दिल को परेशान रखते हैं, जब तक तौबा नहीं करेगा, कभी बीवी की तरफ़ से परेशानी, कभी औलाद की तरफ़ से परेशानी, कभी कारोबार की तरफ़ से परेशानी, कभी सेहत की तरफ़ से परेशानी, कहीं न कहीं परेशानी की बत्ती जल रही होगी, परेशान हो रहा होगा, डिप्रेशन (Depretion) में वक़्त गुज़र रहा होगा, तो गुनाह इन्सान को हमेशा परेशान रखता है, बेचैन रखता है।

गुनाह से दुनिया जहन्नम बन जाती है

"मसीहुल उम्मत" हज़रत मौलाना मसीहुल्लाह ख़ान साहब रह० का क़ौल है, फ़रमाते थे कि तुम जितना चाहो गुनाह करके देखो अगर अल्लाह ने तुम्हारी दुनिया की ज़िन्दगी को जहन्नम न बना दिया तो कहना यअ़नी दुनिया ही में तुम्हारे लिये ऐसी बेचैनी पैदा कर देंगे जैसी जहन्नम में होती है, इसलिये यह न समझे कि जो लोग आज़ादी की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं और गुनाह करते हैं उन्हें इत्मीनान की ज़िन्दगी मिली हुई है, कभी उनके दिल की हसरतों को देखो, उनकी मुज़्तरब रातों को कभी देखिये, इन्सान उसी वक़्त तौबा कर ले वह इतना परेशान होते हैं कि मौत मांगते हैं।

अद्ल व इन्साफ़ सिर्फ़ हश्र पे मौक़ूफ़ नहीं
ज़िन्दगी ख़ुद भी गुनाहों की सज़ा देती है

दुनिया में भी गुनाहों की सज़ा मिलती है आख़िरत में तो है ही।

كَذٰلِكَ الْعَذَابُ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ

(पारा 29, सूरे क़लम, आयत 33)

तर्जुमा :– "यह तो दुनिया का अ़ज़ाब है और आख़िरत का अ़ज़ाब तो बहुत बड़ा है" इसलिये परवर्दिगारे आलम ने हुक्म फ़रमाया

"وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ" "छोड़ दो वह गुनाह जो तुम छुपे हुए करते हो या ज़ाहिर में"

गुनाह का वबाल

और यह भी पक्की बात है अल्लाह तआला कुरआने पाक में फ़रमाते हैं:

إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلَىٰ أَنفُسِكُم

(पारा 11, सूरे यूनुस, आयत 23)

"तुम्हारी बग़ावत तुम्हारी अपनी जानों पर" गुनाहों का वबाल ज़रूर आता है, इसलिये एक ताबेई फ़रमाया करते थे कि जब भी अल्लाह के किसी हुक्म के मानने में मुझसे सुस्ती हुई, मैंने उसका असर अपनी बीवी में, अपनी सवारी में, अपनी औलाद में, कहीं न कहीं देख लिया, उन्होंने मेरी नाफ़रमानी की, बल्कि फ़रमाया "وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِ" जब इन्सान गुनाहों की तदबीर दिल में रखता है उसकी सोच रखता है तो यह चीज़ उसके अहल पर लौटती है, कोई नौजवान यह न समझे कि हम ही ग़ैर महरम को मैली नज़र से देखते हैं, जी हां यह नज़रें हमारे अहल की तरफ़ भी लौट सकती हैं।

सुनार की बीवी का क़िस्सा

एक सुनार था उसकी बीवी बहुत नेक सीरत और ख़ूबसूरत थी, एक दिन वह अपने कारोबार से घर वापस आया तो देखता है कि उसकी बीवी ज़ारो क़तार रो रही है, कहने लगा क्या हुआ? जवाब दिया हमारा नौकर जो दस साल से पाला हुआ है अभी थोड़ा बड़ा हुआ यह आज जब सब्ज़ी लेकर आया तो उसने मेरे हाथ को पकड़कर दबाया, और मुझे उसके अन्दर बुरा इरादा नज़र आया, तो मैं इसलिये रो रही हूं कि दस साल उसको पाला और यह नतीजा मिला, इतना नमक हराम उसने यह बात जब कही तो उसके शौहर की आंखों से भी आंसू जारी हो गये, वह हैरान होकर पूछने लगी कि आप क्यों रो रहे हैं, वह कहने लगा कि यह उसका कुसूर नहीं यह

मेरा कुसूर है, इसलिये कि आज एक औरत दुकान पर ज़ेवर ख़रीदने आई उसने चूड़ियां ख़रीदीं और पहनना चाहती थी, उसने मुझसे कहा कि पहना दो मैं जब उसको चूड़ी पहनाने लगा तो मुझे उसके हाथ ख़ूबसूरत नज़र आये लिहाज़ा मैंने उसके हाथ को आज शहवत के साथ दबाया था, इसलिये यही मामला आज मेरे अहल के साथ पेश आया, तो देखिये अल्लाह तआला की नाफ़रमानी बिल–आख़िर नाफ़रमानी है, इसका और कोई भी हल नहीं सिवाए इसके कि इससे तौबा कर ली जाए।

जिसको रब ज़लील करे

अगर किसी ने गुनाहों की वजह से अल्लाह तआला से जंग शुरू की फिर अल्लाह तआला उसको ऐसा कर देते हैं कि दुनिया में किसी आदमी को चेहरा दिखाने के भी क़ाबिल नहीं रखते।

وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَالَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ

(पारा 17, सूरे हज, आयत 18)

"जिसको अल्लाह तआला ज़लील करने पर आते हैं उसे दुनिया में फिर कोई इ़ज़्ज़त देने वाला नहीं रहता" पगड़ियां उछल जाती हैं, सरों से दुपट्टे उतर जाते हैं, इन्सान घर में बैठे बिठाये ज़लील हो जाता है, अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया "وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ" "तुम छोड़ दो वह गुनाह जो तुम ज़ाहिर में करते हो या छुपे हुए करते हो"

तौबा किस चीज़ का नाम है?

गुनाहों को छोड़ देना और पक्का इरादा कर लेना इसका नाम तौबा है, अल्लाह तआला ने भी तौबा का दरवाज़ा हर वक़्त खुला रखा, बाक़ी खुलते और बन्द होते रहते हैं, लेकिन तौबा का दरवाज़ा ऐसा है कि हमेशा खुला रहता है, इसलिये उस परवर्दिगार को ऊंघ भी नहीं आती, नींद भी नहीं आती, ऐसा न हो कि कोई तौबा करने वाला तौबा करे और कहें कि जी साहब आराम फ़रमा रहे हैं वहां

इसका तसव्वुर भी नहीं, हर गुनहगार की तौबा क़ुबूल करने के लिये वह परवर्दिगार हर वक़्त जागता है।

तौबा और इस्तग़फ़ार का फ़र्क़

"इस्तग़फ़ार" कहते हैं किये हुए गुनाहों पर दिल में निदामत होना, अफ़सोस होना, शर्मिन्दा होना कि मैंने क्यों किया? यह इस्तग़फ़ार है और उन गुनाहों को आइन्दा न करने का इरादा करना, इसको "तौबा" कहते हैं, तो हम तौबा के ज़रिये उन गुनाहों की अल्लाह तआला से माफ़ी मांगें और आइन्दा नेकोकारी और पर्हेज़गारी की ज़िन्दगी गुज़ारने का दिल में अहद करें, इसीलिये तौबा करने वाला अल्लाह तआला को बड़ा महबूब होता है जब भी कोई सच्ची तौबा करता है वह अल्लाह तआला को इतना प्यारा, इतना प्यारा होता है और अल्लाह उससे इतना खुश होते हैं कि "فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ" "अल्लाह तआला अगर चाहते हैं उस बन्दे के गुनाहों को नेकियों से तबदील कर देते हैं"

अल्लाह तआला की नज़रे रहमत किस पर?

एक बड़े मियां जा रहे थे उन्होंने कुछ नौजवानों को देखा कि वह आपस में किसी बात पर बहस व मुबाहसा कर रहे थे, दलीलें दे रहे थे, क़रीब से जब गुज़रे तो एक नौजवान ने कहा कि बड़े मियां हम एक बात में आपस में मुबाहसा कर रहे हैं, आप थोड़ा बता दीजिए कि हम में से कौन ठीक और हक़ पर है।

मसला यह है कि हम में से कुछ तो यह कहते हैं कि अल्लाह तआला की रहमत की नज़र उस बन्दे पर ज़्यादा होती है जिसने कभी कोई गुनाह किया ही नहीं, और कुछ का कहना यह है कि नहीं जो बन्दा बड़ा ही गुनहगार और ख़ताकार होता है फिर वह अल्लाह तआला से सच्चे दिल से तौबा करले तो अब उसके दिल पर अल्लाह तआला की ख़ास नज़र होती है, अब आप बताइये कि मआमला क्या है? वह कहने लगे कि बच्चो! मैं कोई आलिम तो नहीं कि आलिमाना

तेहक़ीक़ी कोई जवाब दूं, एक चीज़ मेरे तज्रिबे में आई वह मैं आपको बताता हूं, वह यह कि मैं कपड़े बुनता हूं, कपड़े में ताना बाना होता है जब भी कोई धागा टूटता है तो मैं उसको गिरह लगाकर जोड़ देता हूं और फिर बाद में उसपर नज़र रखता हूं कि यह धागा फिर न टूट जाये, मुमकिन है जो बन्दा गुनहगार था उसका रिश्ता अल्लाह से टूटा हुआ था अब उसने सच्ची तौबा के ज़रिये अल्लाह से गिरह बान्ध ली अब अल्लाह तआ़ला की ख़ास नज़र उसके दिल पर रहती हो कि मेरा बन्दा फिर न टूट जाये। (अल्लाहु अकबर कबीरन)

रहमते इलाही की वुस्अ़त

अल्लाह तआ़ला इतने करीम हैं इतने मेहरबान हैं कि बन्दे की तौबा से बेइन्तहा खुश हो जाते हैं, इसलिये हमें चाहिये कि अपने गुनाहों से पक्की सच्ची तौबा करें, वह इतने मेहरबान हैं कि जब शैतान को हुक्म दिया गया कि–

فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيْمٌ

(पारा 14, सूरे हजर, आयत 34)

"निकल जा मर्दूद यहां से" कि उसने आदम को सजदा नहीं किया था, अल्लाह तआ़ला जलाल के आ़लम में थे इस जलाल के आ़लम में शैतान ने कहा:

قَالَ رَبِّ فَانْظِرْنِيْ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ

(पारा 14 / 23, सूरे हजर / सॉद, आयत 24, 36, 37, 77, 70, 80)

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! मुझे क़यामत तक के लिये मोहलत दे दें।"

इस जलाल के आ़लम में उसने मांगा परवर्दिगारे आ़लम ने फ़रमाया "قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ" "जा तुझे मोहलत दे दी" उ़लमा ने नुक्ता लिखा है कि जब जलाल के आ़लम मे शैतान जैसे मर्दूद ने मोहलत मांगी अल्लाह ने अ़ता फ़रमा दी, ऐ उम्मते मुहम्मदिया के ग़ुलाम! अगर तू जमाल के आ़लम में अल्लाह से मोहलत मांगेगा तुझे क्यों मोहलत अ़ता नहीं फ़रमायेंगे, लिहाज़ा जब शैतान को मोहलत मिल गई बद–बख़्त था, क़सम खाकर कहने लगा कि आदम की

वजह से धुतकारा गया, ऐ अल्लाह! मैं उनकी औलाद को बहकाऊंगा और वर्ग़लाऊंगा।

وَلَاتَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شَاكِرِيْنَ

(पारा 8, सूरे आराफ़, आयत 17)

"ऐ अल्लाह! आप देखेंगे उनमें से अक्सर आपके नाशुक्रे बनेंगे"

जब उसने क़सम खाकर कहा–

فَبِعِزَّتِكَ

(पारा 23, सूरे सॉद, आयत 82)

"तेरी इज़्ज़त की क़सम मैं उनको बहकाउगा वर्ग़लाउगा" तो परवर्दिगार की रहमत भी जोश में आई फ़रमाया ओ मर्दूद तू क़समें खाता है, मेरे बन्दों को बहकायेगा वर्ग़लायेगा, मेरो नाफ़रमान बनायेगा, ज़रा मेरी बात भी सुन ले, मेरे बन्दे इन्सानी तक़ाज़े के मुताबिक़ गुनाह करते फिरेंगे और जब मुझसे तौबा करेंगे तो मैं उनको माफ़ कर दूंगा।

सर उठने से पहले माफ़ी

मेरे दोस्तो! जब अल्लाह तआला तौबा कुबूल करते हुए नहीं थकते तो हम तौबा करते हुए क्यों थक जाते हैं, जब उस परवर्दिगार का मआमला यह है कि वह चाहते हैं ऐ मेरे बन्दे तुझे शैतान ने बहका दिया आओ मेरे दर की तरफ़।

اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِىْٓ اٰدَمَ

(पारा 23, सूरे यासीन, आयत 60)

"ऐ औलादे आदम! क्या मैंने ताकीद नहीं कर दी थी कि तुम शैतान की इबादत न करना।"

اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ وَاَنِ اعْبُدُوْنِىْ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ

(पारा 23, सूरे यासीन, आयत 60/61)

"वह तुम्हारा खुला दुशमन है, और मेरी ही इबादत करना यही सीधा रास्ता है।"

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं–

يٰۤاَيُّهَا الۡاِنۡسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الۡكَرِيۡمِ

(पारा 30, सूरे इन्फ़ितार, आयत 6)

हाय! कितने अ़जीब प्यारे अन्दाज़ से फ़रमा रहे हैं "ऐ इन्सान तुझे तेरे परवर्दिगार से किस चीज़ ने धोखे में डाला" अल्लाह तआ़ला चाहते हैं कि बन्दे तौबा करें इसलिये जब शैतान ने कहा कि मैं उनको दाये बायें आगे पीछे से बहकाऊँगा तो फ़रिश्ते मुतअ़ज्जिब हुए कि यह इसने क्या बात कर दी? अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया कि मेरे फ़रिश्तो! हैरान होने की ज़रूरत नहीं, अ़र्ज़ किया अल्लाह जब यह चारों तरफ़ से बहकायेगा तो लोग तो उसके फन्दे में आ जायेंगे, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उसने चार सिम्तों का ज़िक्र किया, लेकिन दो सिम्तें भूल गया, एक ऊपर की और एक नीचे की, लिहाज़ा मेरा गुनहगार बन्दा जब अपने गुनाहों पर नादिम और शर्मिन्दा होकर दिल में पक्का अ़हद करके मेरे पास आयेगा और अपने हाथ उठायेगा और हाथ चूंकि ऊपर की सिम्त उठते हैं तो शैतान असर अन्दाज़ नहीं हो सकता, मेरे बन्दे के हाथ नीचे नहीं जायेंगे कि मैं इससे पहले उसके गुनाहों को माफ़ कर दूंगा और अगर मेरा बन्दा सजदे में सर डालेगा और चूंकि सर नीचे की सिम्त जायेगा, और नीचे की सिम्त में शैतान असर अन्दाज़ नहीं हो सकता, मेरा बन्दा सर नहीं उठायेगा कि मैं उससे पहले उसके गुनाह माफ़ कर दूंगा, यह सिम्तें खुली हुई हैं हम हाथ उठाकर दुआ़ मांगे परवर्दिगार माफ़ फ़रमायेंगे, सजदे में सर रखकर माफ़ी मांगें परवर्दिगार मेहरबानी फ़रमायेंगे।

दो क़ीमती क़तरे

दुनिया का दस्तूर है दर–आमदात (Imported) चीज़ों को ज़्यादा दाम देकर ख़रीदा जाता है, कहते हैं कि अजी कमयाब है थोड़ी मिलती है, इसलिये हमने ज़्यादा दाम देकर ख़रीद लिया तो जब दुनिया का यह दस्तूर है कि (Imoprted) चीज़ को ज़्यादा दाम देकर ख़रीद लेते हैं तो गुनहगार बन्दे के आंसुओं को जब फ़रिश्ते

अ़र्श पर ले जाते हैं उस जहान के लिये भी यह (Imported) दर आमदात की तरह है फिर परवर्दिगार भी इस गुनहगार बन्दे के आंसुओं को हीरे मोतियों का भाव लगाकर ले लेते हैं।

मोती समझकर शाने करीमी ने चुन लिये
क़तरे जो थे मेरे अ़र्क़ इन्फ़िआ़ल के

(इक़बाल)

इसलिये तो फ़रमाया कि दो क़तरे मेरे लिये बड़े महबूब हैं एक शहीद के जिस्म से निकलने वाला क़तरा और एक गुनहगार बन्दे की आंख से निकलने वाला वह आंसू का क़तरा, यहां हदीसे पाक के शारिहीन ने एक अ़जीब नुक्ता लिखा, वह फ़रमाते हैं कि अन्दाज़ा करो, गुनहगार बन्दे के आंसू की कितनी क़ीमत बढ़ाई कि शहीद के ख़ून के क़तरे के साथ उसको इकळा कर दिया (अल्लाहु अकबर) तो परवर्दिगार बड़े खुश होते हैं जब कोई बन्दा गुनहगारी से तौबा करके नेकोकारी पर्हेज़गारी की ज़िन्दगी गुज़ारने का अ़हद और इरादा करता है, वह बड़े मेहरबान आक़ा हैं इसलिये फ़रमाते हैं कि ऐ मेरे बन्दे अगर तेरे गुनाह आसमान के सितारों के बराबर भी हैं और अगर तेरे गुनाह दुनिया की रेत के ज़र्रों के बराबर हैं और अगर तेरे गुनाह सारी दुनिया के दरख़्त के पत्तों के बराबर हैं अगर तेरे गुनाह सारी दुनिया के समुंद्र के पानी के बक़द्र हैं, मेरे बन्दे गुनाह फिर भी थोड़े हैं, मेरी रहमत बहुत ज़्यादा है, तू आकर तौबा करेगा मैं तेरी तौबा को क़ुबूल करूंगा बल्कि इससे एक क़दम आगे बढ़कर फ़रमाया मेरे बन्दे! अगर तू ने तौबा की फिर तोड़ बैठा फिर तौबा की फिर तोड़ बैठा फिर तौबा की फिर तोड़ बैठा।

गर तू सद बार तौबा शिकस्ती बाज़ आ

तू ने अगर सौ दफ़ा तौबा की और सौ मर्तबा तोड़ बैठा, मेरा दर अब भी खुला है, तू अब भी अगर तौबा कर ले मैं तेरी तौबा को क़ुबूल कर लूंगा।

रब का करीमाना अन्दाज़

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ

(पारा 24, सूरे ज़ुमर, आयत 53)

तर्जुमा – "आप कह दीजिए कि ऐ मेरे बन्दो! जिन्होंने (कुफ़्र व शिर्क करके) अपने ऊपर ज़्यादतियां की हैं तुम खुदा की रहमत से नाउम्मीद मत हो।"

सुब्हानल्लाह कितनी अजीब बात है बाप बेटे से नाराज़ हो जाता है, बीवी से कहता है उससे कह दो घर से चला जाये, उसका नाम तक नहीं लेता, कहता है उससे कह दो मेरी बात सुना करे, उससे कहो, ज़रा संभल कर गुज़ारे अजनबी जैसा अन्दाज़े तख़ातुब इख़्तियार कर लेता है, क़ुर्बान जायें उस परवर्दिगार पर कि जो बन्दे गुनहगार थे सज़ावार थे, सज़ा के मुस्तहिक़ थे, उनके बारे में अल्लाह फ़रमाते हैं "قُلْ يٰعِبَادِیَ" कह दीजिए ऐ मेरे बन्दो! इन गुनाहों के बावुजूद अब्द की निस्बत से ख़ारिज तो नहीं किया, कह सकते थे उन्हें कहदो संभल जायें, उन्हें कह दो गुनाहों को छोड़ दें, शाहाना अन्दाज़ यही था, मगर करीमाना अन्दाज़ अपनाया "قُلْ يٰعِبَادِیَ" (अल्लाहु अकबर) ऐ मेरे गुनहगार बन्दो!

الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰى اَنْفُسِهِمْ لَاتَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ

"तुम अल्लाह की रहमत से मायूस न होना"

اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ

(पारा 24, सूरे ज़ुमर, आयत 53)

"बिल–यक़ीन खुदा तआला तमाम (गुज़िश्ता) गुनाहों को माफ़ फ़रमा देगा वाक़ई वह बड़ा बख़्शने वाला बड़ी रहमत वाला है।"

एक वाक़िआ

हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम रह० ने एक अजीब बात लिखी है सुब्हानल्लाह फ़रमाते हैं कि मैं एक दफ़ा एक गली से गुज़र रहा था एक दरवाज़ा खुला मैंने देखा कि कोई आठ नौ साल का बच्चा है और उसकी मां उसे ख़फ़ा होकर उसको थप्पड़ लगा रही है, उसको धक्के दे रही है, कह रही है तू नाफ़रमान बन गया है मेरी कोई बात नहीं सुनता, कोई काम नहीं करता, दफ़ा होजा (चला जा) यहां से यह कह कर मां ने जो धक्का दिया तो वह बच्चा घर से बाहर आ

गया, फ़रमाते हैं कि मां ने तो कुन्डी लगा ली, अब मैं वहीं खड़ा रह गया कि देखूं अब होता क्या है, फ़रमाते हैं बच्चा रो रहा था चूंकि मार पड़ी थी ख़ैर वह उठा और कुछ सोचता सोचता एक तरफ़ को चलने लगा, चलते चलते वह एक गली के मोड़ पर पहुंचा, वहां खड़े होकर वह कुछ सोचता रहा और सोचने के बाद उसने फिर वापस आना शुरू कर दिया और चलते चलते अपने घर के दरवाज़े पर आ गिरा और आकर बैठ गया थका हुआ था, रो भी काफ़ी देर से रहा था, देहलीज़ पर सर रखा नींद आगई वहीं सो गया चुनांचे काफ़ी देर के बाद उसकी वालिदा ने किसी काम के लिये दरवाज़ा खोला तो क्या देखती है कि बेटा इसी देहलीज़ पर सर रखे पड़ा हुआ है, वालिदा का ग़ुस्सा अभी ठन्डा नहीं हुआ था, वह फिर नाराज़ होने लगी और कहने लगी चला जा यहां से, दूर होजा मेरी निगाहों से, जब उसने फिर उसे डांटा अब वह बच्चा खड़ा हो गया, आंख में आंसू आ गये कहने लगा अम्मी जब आपने घर से धुतकार दिया था मैंने सोचा था कि मैं चला जाऊँ, मैं बाज़ार जाकर भीख मांग लूंगा, मुझे कुछ न कुछ खाने को मिल जायेगा, अम्मी मैंने सोचा था मैं किसी के जूते साफ़ कर दिया करूंगा, कुछ खाने को मिल जायेगा, अम्मी मैं किसी के घर का नौकर बन कर रह जाऊँगा मुझे जगह भी मिल जायेगी मुझे खाना भी मिल जायेगा, अम्मी यह सोचकर मैं गली के उस मोड़ तक चला गया था, मुझे दिल में यह ख़्याल आया कि मुझे दुनिया की सब नेमतें मिल जायेंगी लेकिन अम्मी जो मुहब्बत मुझे आप दे सकती हैं यह मुहब्बत मुझे कहीं नहीं मिल सकती, अम्मी यह सोचकर मैं वापस आ गया हूं, अम्मी मैं इसी दर पर पड़ा हूं तू मुझे धक्के दे या मार, मैं कहीं नहीं जा सकता, जब इस बच्चे ने यह बात कही मां की मामता जोश में आई उसने बच्चे को सीने से लगा लिया और कहा मेरे बेटे! अगर तेरे दिल में यह कैफ़ियत है कि जो मुहब्बत तुझे मैं दे सकती हूं वह कोई नहीं दे सकता तो मेरे दरवाज़े खुले हुए हैं।

फ़रमाते हैं जब गुनहगार बन्दा इस एहसास के साथ रब के

दरवाजे पर आता है और कहता है:

اِلٰهِیْ عَبْدُكَ الْعَاصِیْ اَتَاكَ.

तर्जुमा :– अल्लाह तेरा गुनहगार बन्दा तेरे दर पर हाज़िर है।

مُقِرًّا بِالذُّنُوْبِ وَقَدْ دَعَاكَ.

तर्जुमा :– ऐ अल्लाह! गुनाहों का इक़रार करता हूं और आपसे फ़र्याद करता हूं।

فَاِنْ تَغْفِرْ فَاَنْتَ لِذَاكَ اَهْلٌ.

तर्जुमा :– अल्लाह! अगर आप माफ़ कर दें यह बात आपको सजती है।

فَاِنْ تَطْرُدْ فَمَنْ يَرْحَمْ سِوَاكَ.

तर्जुमा :– अल्लाह! अगर आप ही धक्का देदें तो कौन है हमपर रहम करने वाला और कौन है सीने से लगाने वाला।

तो जब इन्सान इस तरह अपने गुनाहों से सच्ची तौबा करता है फिर परवर्दिगार अपनी रहमतों के दरवाज़े खोल देते हैं, रबे करीम हमपर एहसान फ़रमाइये, सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाइये, और आइन्दा ज़िन्दगी को गुज़री हुई ज़िन्दगी का कफ़्फ़ारा बना दीजिए और आने वाले वक़्त को गुज़रे वक़्त से बेहतर फ़रमा दीजिए, आमीन।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين.

फ़िक्र सफ़रे आख़िरत

इक़्तिबास

मौत एक अटल हक़ीक़त है।

- *मौत को अगर हुकूमत के ज़रिये टाला जा सकता तो फ़िरऔन को कभी मौत न आती।*
- *अगर मौत को वज़ारत के ज़रिये टाला जा सकता तो हामान को कभी मौत न आती।*
- *अगर मौत को कुव्वते बाज़ू के ज़रिये टाला जा सकता तो रुस्तम व सोहराब को कभी मौत न आती।*
- *अगर मौत को दवाओं के ज़रिये टाला जा सकता तो अफ़लातून और जालीनूस को कभी मौत न आती।*
- *और अगर मौत को हिकमत व दानाई से टाला जा सकता तो लुक़मान अ़लै० को कभी मौत न आती।*
- *और अगर मौत को वफ़ाओं के ज़रिये टाला जा सकता तो कभी भी नेक बीवी अपनी आंखों के सामने अपने जवान शौहर को न मरने देती।*
- *और अगर मौत को मुहब्बत के ज़रिये टाला जा सकता तो कभी भी मां अपनी गोद में पड़े अपने मअ़सूम बेटे को न मरने देती।*

मौत एक अटल हक़ीक़त है।

(हज़रत मौलान पीर फ़क़ीर
जुलफ़क़्क़ार अहमद साहब नक़्शबन्दी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْد!
اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
﴿كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ۝﴾

(पारा 21, सूरे अ़न्कबूत, आयत 57)

तर्जुमा :– हर शख़्स को मौत का मज़ा चखना है फिर तुम सबको हमारे पास आना है।

अल्लाह तआ़ला एक दूसरी जगह फ़रमाते हैं–

﴿كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ۝﴾

(पारा 4, सूरे आले इमरान, आयत 185)

तर्जुमा :– हर जान को मौत का मज़ा चखना है और तुमको पूरी सज़ा तुम्हारी क़्यामत ही के दिन मिलेगी, तो जो शख़्स दोज़ख़ से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया सो पूरा कामयाब वह हुआ, और दुनियवी ज़िन्दगी तो कुछ भी नहीं सिर्फ़ धोखे का सौदा है।

दूसरी जगह अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं–

﴿اَيْنَمَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُشَيَّدَةٍ۝﴾

(पारा 5, सूरे निसा, आयत 87)

तर्जुमा :– तुम चाहे कहीं भी हो वहां ही मौत तुम को आ दबायेगी, अगरचे तुम क़लई चूने के क़िलों में हो।

दूसरी जगह अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं –

﴿قُلْ إِنَّ الْمَوْتَ الَّذِىْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَإِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ۝﴾

(पारा 28, सूरे जुमा, आयत 8)

तर्जुमा :– आप उनसे यह कह दीजिए कि जिस मौत से तुम भागते हो वह मौत एक दिन तुमको आ पकड़ेगी फिर तुम पोशीदा

और ज़ाहिर जानने वाले खुदा के पास ले जाओगे, फिर वह तुमको तुम्हारे सब किये हुए काम बता देगा (और सज़ा देगा)

एक और जगह अल्लाह तआला फ़रमाते हैं –

﴿كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۝﴾

(पारा 27, सूरे रहमान, आयत 26)

तर्जुमा :– जितने ज़ी-रूह रूये-ज़मीन पर मौजूद हैं सब फ़ना हो जायेंगे और सिर्फ़ आपके परवर्दिगार की ज़ात जो कि अज़मत वाली और एहसान वाली है, बाक़ी रह जायेगी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया –

كُنْ فِي الدُّنيا كَأَنَّكَ غَرِيبٌ أَوْ عابِرُ سَبِيلٍ

तर्जुमा :– आप दुनिया में इस तरह रहिये गोया आप अजनबी हैं या राह चलते मुसाफ़िर।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلامٌ على المرسلين والحمد للهِ رب العالمينَ .

اللّٰهمَّ صلِّ علٰى سيِّدِنا محمَّدٍ وعلٰى آل سيدِنا محمد وبارك وسلم .

اللّٰهمَّ صلِّ علٰى سيِّدِنا محمَّدٍ وعلٰى آل سيدِنا محمد وبارك وسلم .

اللّٰهمَّ صلِّ علٰى سيِّدِنا محمَّدٍ وعلٰى آل سيدِنا محمد وبارك وسلم .

इन्सान की ज़िन्दगी चिराग़ की तरह

इन्सान की ज़िन्दगी हवा में रखे हुए चिराग़ की तरह है, बूढ़ा आदमी अगर चिराग़े सेहर है तो जवान आदमी चिराग़े शाम है, जिस तरह हवा के अन्दर रखा हुआ चिराग़ एक झोंके का मोहताज होता है, ऐसी ही इन्सानी ज़िन्दगी भी एक पल की मोहताज होती है।

ज़िन्दगी क्या है एक थिरकता हुआ नन्हा सा दिया
एक ही झोंका जिसे आ के बुझा देता है
यासिर मिज़ाग़ाने ग़म का थिरकता हुआ आंसू
पलक झपकना जिसे मिट्टी में मिला देता है

जिस तरह पलक का आंसू पलक झपकते ही मिट्टी में मिल जाता है ऐसे ही इन्सान एक लम्हे में इस जहान से अगले जहान की

तरफ़ रुख़्सत हो जाता है, मक़सदे ज़िन्दगी अल्लाह तआला की बन्दगी, सही मअ़नों में बन्दा वही होता है जिसमें बन्दगी हो वरना सरासर गन्दा होता है, झूठ और फ़रेब का पुलिन्दा होता है, जो भी इस दुनिया में आया उसको बिल-आख़िर दुनिया से जाना है (व मा जअ़लना लिबशरिन मिन क़ब्लिकल-ख़ुल्द) (पारा 17, सूरे अंबिया, आयतः 34) "ऐ महबूब! हमने आपसे पहले भी किसी के लिये यहां हमेशा रहना नहीं लिखा" हर इन्सान को बिल-आख़िर यहां से जाना है, चन्द दिनों की यह मोहलत है, जो हमें अ़ता की गई, इसमें हमें आख़िरत की तैयारी करनी है, तो दुनिया की मुख़्तसर सी ज़िन्दगी आख़िरत की तैयारी के लिये अ़ता की गई, इसलिये नबी सल्ल० ने इरशाद फ़रमायाः "कुन फ़िद्दुनिया कअन्नका ग़रीबुन औ आ़बिरुस्सबील" "तुम दुनिया में ऐसी ज़िन्दगी गुज़ारो जैसे कोई प्रदेशी होता है" प्रदेश में इन्सान को कितनी ही सहूलत क्यों न मुयस्सर हों उसका दिल अपने बच्चों के लिये अपने वालिदैन के लिये अ़ज़ीज़ व अक़ारिब के लिये हर वक़्त उदास रहता है, सोचता है कि कब मुझे मोहलत मिले कि मैं वतन वापस चला जाऊँ।

मोमिन के लिये दुनिया वतने अक़ामत

इसी तरह मोमिन का असली वतन जन्नत है, दुनिया उसके लिये वतने अक़ामत की तरह है, हम थोड़े दिन के लिये यहां भेजे गये, बिल-आख़िर ज़िन्दगी गुज़ार कर हमने अपने वतन और ठहरने की जगह की तरफ़ लौटकर वापस जाना है, दुनिया में रहते हुए हम आख़िरत की तैयारी में लगे रहें, जिस तरह मुसाफ़िर अपने सफ़र के दौरान थोड़ी देर अपने आराम के लिये ठहरता है, उसके पेशे नज़र यह बात होती है कि मुझे मंज़िल पर पहुंचना है, इसी तरह हमारा हम-सफ़र "कुन" के मक़ाम से शुरू हुआ आ़लमे अरवाह में अल्लाह तआ़ला ने हमसे वादा लिया "अलस्तु बिरब्बिकुम" क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं? सबने ज़वाब दिया "क्यों नहीं" और इसके बाद परवर्दिगार ने आज़माइश के लिये दुनिया में भेजा।

दुनिया इम्तिहान–गाह है

इसलिये यह दुनिया की ज़िन्दगी आज़माइश की जगह है, यह दुनिया आराम की जगह नहीं, यह सैर करने की जगह नहीं, यह तमाशा–गाह नहीं, यह क़याम–गाह नहीं, यह इम्तिहान–गाह है, अफ़्सोस कि हमने इसे चराहगाह बना रखा है, हम समझते हैं कि खा पी कर ज़िन्दगी गुज़र जायेगी, हरगिज़ नहीं, परवर्दिगारे आ़लम फ़रमाते हैं "अहसिबन्नासु" "क्या इन्सान यह गुमान करते हैं" "अंय्युतरकू अंय्यकूलु आमन्ना व हुम ला युफ़्तनून" "कि अगर वह कह दें कि वह ईमान ले आये तो हम उन्हें छोड़ देंगे, हम उनको आज़मायेंगे" "व लक़द फ़तन्ना अल्लज़ीना् मिन क़ब्लिहिम" "हमने उनसे पहले वालों को भी आज़माया" "फ़लयअ़लमन्नल्लाहुल्लज़ीना् सदक़ू व लयअ़लमन्नल काज़िबीना्" (पारा 20, सूरे अ़न्कबूत, आयतः 2) "और तहक़ीक़ हम सच्चे और झूठे के दरमियान इम्तियाज़ करके रहेंगे, खरे खोटे की पहचान करके रहेंगे" देखिये हमें नेक आमाल के साथ दुनिया में ज़िन्दगी गुज़ारनी है, ताकि अपने परवर्दिगार को राज़ी कर लें, रब्बे करीम इरशाद फ़रमाते हैं:

"अल्लज़ी ख़लक़ल मौता् वल–हयाता् लियब्लुवकुम अय्युकुम अहसनु अ़मलन" (पाः 29, सूरे मुलुक, आयतः 2) "वह ज़ात जिसने मौत और हयात को पैदा किया यह आज़माने के लिये कि तुम में से कौन अच्छे अ़मल करता है" लिहाज़ा हमें दुनिया में अपनी शख़्सियत को सन्वारना है, अपने किर्दार को बेहतर बनाना है, अपने अन्दर अख़लाक़े हमीदा को पैदा करना है, सही मअ़नों में इन्सान बनकर ज़िन्दगी गुज़ारनी है, और जब इन्सान बनकर अल्लाह तआ़ला के सामने पेश होंगे तो फिर परवर्दिगारे आ़लम उसकी क़द्रदानी फ़रमाएंगे, यह दुनिया तो हमारे लिये इम्तिहान–गाह की तरह है, इसलिये हदीसे पाक में फ़रमाया "अद्दुनिया सिज्नुल मोमिनि व जन्नतुल काफ़िरि" "दुनिया तो मोमिन के लिये क़ैदख़ाना है और काफ़िर के लिये जन्नत है" इसका एक ज़ाहिरी मतलब तो यह है कि

दुनिया में मोमिन के लिये कुछ शरीअत व सुन्नत की पाबन्दियां हैं हदें और क़ैदें हैं, ज़िन्दगी गुज़ारनी पड़ती है, और काफ़िर के लिये तो कोई हद या क़ैद नहीं, मन मानी ज़िन्दगी गुज़ारता है, मगर शारिहीने हदीस ने इसके मअ़ना कुछ और लिखे हैं, वह फ़रमाते हैं कि इस दुनिया में कितनी ही लुत्फ़ और मज़े की ज़िन्दगी उसको क्यों न मिल जाये जन्नत के मुक़ाबले में फिर भी उसको दुनिया की ज़िन्दगी क़ैद-ख़ाने की तरह नज़र आयेगी, और एक काफ़िर पर दुनिया में कितनी ही मुशक़्क़तें और मुसीबतें क्यों न आयें कितनी ही तक्लीफ़ें क्यों न आ जायें लेकिन जहन्नम के मुक़ाबले में फिर भी दुनिया उसके लिये जन्नत की तरह है। (सुब्हानल्लाह)

मोमिन का घर जन्नत

अल्लाह तआ़ला ने मोमिनों के लिये जन्नत में क्या कुछ तैयार किया होगा इसका अन्दाज़ा लगाना मुश्किल है, यह बात ज़हन में बैठा लीजिए कि दुनिया मिट्टी की बनी हुई है, और फ़ानी है, जबकि जन्नत सोने चांदी की बनी हुई है, और बाक़ी रहने वाली है, यह तैय शुदा बात है जो इन्सान मख़्लूक़ से दिल लगायेगा वह इन्सान एक न एक दिन मख़्लूक़ से जुदा कर दिया जायेगा, और जो इन्सान परवर्दिगार से दिल लगायेगा एक न एक दिन अल्लाह से मिला दिया जायेगा, हमें चाहिये कि हम आख़िरत की तैयारी में लगे रहें, हर दिन को क़ीमती बनाने की कोशिश करें, दिन नेक आमाल में गुज़ारने की कोशिश करें, और अपनी रातों को अपने दिन की तरह बनाने की कोशिश करें, कोई वक़्त भी ऐसा न हो कि हमसे कोई गुनाह हो जाये, गुनाह से ख़ाली ज़िन्दगी गुज़ारना हमारी ज़िन्दगी का मक़सद हो।

एक अल्लाह वाले की प्यारी बात

हमारे सिलसिला आ़लिया नक़्शबन्दिया के एक बुज़ुर्ग थे "ख़्वाजा अबुल हसन ख़रक़ानी रह०" अ़जीब बात फ़रमाया करते थे जिस इन्सान ने कोई दिन गुनाह से ख़ाली गुज़ारा ऐसा ही है जैसे उसने

वह दिन नबी के साथ गुज़ारा (सुब्हानल्लाह) तो हमारे दिल में यह तमन्ना हो कि कोई गुनाह हमसे न हो ताकि हमें सुन्नत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ नसीब हो, करने वालों को यह नेमतें नसीब हो जाती हैं।

इमामे रब्बानी हज़रत मुजद्दिद अल्फ़े सानी रह० ने अपने मकातीब में लिखा है इस उम्मत में कितने ही ऐसे सालिहीन और कामिलीन गुज़रे हैं कि बीस बीस साल तक उनके गुनाह लिखने वाले फ़रिश्ते को उनके गुनाह लिखने का मौक़ा न मिला, ऐसी पाक ज़िन्दगियां गुज़ार कर अगर यह हज़रात अल्लाह के सामने पेश होंगे वहां हम जैसे ग़ाफ़िल भी खड़े होंगे, जिन्होंने न ज़बान से एहतियात की, गुफ़्तुगू की होगी, और न आंख से एहतियात बरती होगी, आज किसी को बेईमान कह देना, कमीना कह देना, ज़लील कह देना, यह बहुत आसान है, कल क़्यामत के दिन जब पूछा जायेगा बताओ तुमने यह अलफ़ाज़ क्यों कहे थे तो वहां पर जवाब देना मुश्किल हो जायेगा, यह तो वह दिन होगा, जबकि अल्लाह तआला के अंबिया भी थर्राते होंगे, अल्लाह तआला जलाल के आलम में होंगे, फ़रमायेंगे: "लिमनिल मुल्कुल यौम[" "आज के दिन किसकी हुकूमत होगी" फिर खुद फ़रमायेंगे बहुत अर्से के बाद "लिल्लाहिल वाहिदिल क़ह्हारि" (पा: 24, सूरे ग़ाफ़िर/मोमिन, आयत: 16) "पस अल्लाह ही की होगी जो अकेला और ग़ालिब है" फिर उस दिन हम कैसे जवाब देंगे, उस दिन की तैयारी करने का वक़्त आज है, इसलिये हमें चाहिये कि आख़िरत की तैयारी कर लें।

मौत बरहक़ है कफ़न में शक है

मौत के बारे में यह नहीं कहा कि तुम्हें एक दिन मौत आयेगी, बल्कि फ़रमाया "कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल मौति" (सूरे आले इमरान, आयत: 185) "तुम में से हर एक ने मौत का मज़ा चखना है" यह ज़ाइक़ा या तो मीठा होता है या फिर कड़वा होता है, नेक लोगों के लिये मौत मीठी होगी और बुरे लोगों के लिये सख़्त कड़वी होगी

(सुब्हानल्लाह) इसलिये आज इस मौत की तैयारी करने का वक़्त है, किसी बुज़ुर्ग ने क्या अच्छी बात कही फ़रमाया करते थे, ऐ दोस्त! मौत बरहक़ है, लेकिन कफ़न के मिलने में शक है, क्या मालूम किस हाल में मौत आये कोई कफ़न देने वाला भी पास हो कि न हो, चुनांचे हमने एक आदमी की बात सुनी कि उसे दुशमनों ने क़त्ल करके नहर में फेंक दिया बहुत दिनों तक उसकी लाश पानी में रही फूल गई यहां तक कि उसकी लाश को जब निकाला गया तो शनाख़्त करना मुश्किल था, पुलिस वालों ने क़रीबी बस्ती वालों के हवाले कर दिया कि मुसलमान नज़र आता है तुम इसका जनाज़ा पढ़ा दो, चुनांचे बस्ती वालों ने उसे नहला तो दिया लेकिन साथ ही यह ऐलान भी कर दिया कि एक ला–वारिस लाश है इसका कफ़न ख़रीदना है इसके कफ़न में जो आदमी हिस्सा डालना चाहे वह लाये, चुनांचे कोई आदमी दस रुपया लाया कोई बीस लाया, चुनांचे उसके लिये कफ़न ख़रीदा गया और उसको दफ़न करने का इन्तिज़ाम किया गया, जब दफ़न करने लगे तो कोई एक बन्दा भी नहीं रो रहा था, इसलिये कि कोई उसे पहचानता जो नहीं था, जब कुछ दिनों के बाद उसकी हक़ीक़त खुली तो पता चला कि वह एक इलाक़े का बड़ा ज़मीनदार था बारह मुरब्बा ज़मीन का वह मालिक था, करोड़ों रुपये उसके बैंक अकाउंट में थे दो मुख़्तलिफ़ बड़े–बड़े शहरों में उसकी कोठियां थीं, चार उसके जवान उम्र बेटे थे, कई कई उनके घर हैं और ज़मीनें हैं, उसको क्या पता था कि जब उसकी मौत आयेगी तो उसको चन्दे का कफ़न दिया जायेगा इसलिये किसी ने कहा:

मौत बरहक़ है लेकिन कफ़न के मिलने में शक है

हमें चाहिये कि आज ही से मौत की तैयारी करें यह उसूली बात याद रखिये जिसकी ज़िन्दगी महमूद उसकी मौत भी महमूद और जिसकी ज़िन्दगी मज़्मूम उसकी मौत भी मज़्मूम, अगर हम नेकी वाली ज़िन्दगी गुज़ारेंगे तो अल्लाह तआला नेकों वाली ज़िन्दगी अता फ़रमायेंगे, यह कैसे मुमकिन है कि एक आदमी फ़ासिक़ व फ़ाजिर वाली ज़िन्दगी गुज़ारे और बायज़ीद बुस्तामी और जुनैद बग़दादी जैसी

मौत आ जाये हरगिज़ नहीं हो सकता:

ई ख़्याल अस्त व मुहाल अस्त व जुनूं

हमें आज भी अपनी ज़िन्दगी का जायज़ा लेने की ज़रूरत है हम जो गुनाह करते हैं उनको छोड़ने की ज़रूरत है, मौत की तैयारी करने की ज़रूरत है।

एक मिसाल

इमाम ग़ज़ाली रह० ने एक अजीब अन्दाज़ से यह बात समझाई है, फ़रमाते हैं कि एक बादशाह का बड़ा बाग़ था, जिसके कई हिस्से थे उसने एक आदमी को बुलाया और उसके हाथ में एक टोकरी थमा दी और कहा कि मेरे बाग़ में दाख़िल हो जाओ और बेहतरीन फलों से टोकरी भर कर लाओ, बड़ा इनआम मिलेगा मगर शर्त यह है कि जब अन्दर से गुज़र कर आ जाओ तो तुम्हें दोबारा वापस जाने की इजाज़त नहीं होगी, उसने कहा चलो यह तो कोई बड़ी बात नहीं, वह लेकर इस टोकरी को चल पड़ा एक तरफ़ से दरवाज़े में दाख़िल हुआ देखा कि उसके अन्दर फल हैं मगर पसन्द न आये, अगले दर्जे में दाख़िल हुआ यहां फल पहले से बेहतर थे, सोचने लगा कुछ तो तोड़ लूं, कहने लगा अगले दर्जे से तोड़ लूंगा फल यहां भी कुछ बेहतर थे, फिर अगले दर्जे में बहुत बेहतर थे और उससे अगले वाले दर्जे में बहुत ही बेहतरीन थे, यहां दिल में ख़्याल आया कि अब तो मैं कुछ फल तोड़ लूं फिर सोचने लगा आगे सबसे बेहतर फल तोडूंगा, जब अगले और आख़री दर्जे में दाख़िल हुआ तो क्या देखता है वहां पर तो किसी भी दरख़्त पर फल नहीं हैं, अफ़्सोस करने लगा कि ऐ काश मैंने पहले दर्जे से फल तोड़े होते तो आज मेरी टोकरी ख़ाली न होती अब मैं बादशाह को क्या मुंह दिखाऊँगा, इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं ऐ दोस्त!

बादशाह अल्लाह तआला की मिसाल की तरह है।

और इन्सान जो बाग़ में जा रहा है वह तेरी मिसाल है।

और टोकरी से मुराद तेरा नाम–ए–आमाल है।

ज़िन्दगी की मिसाल बाग़ की तरह है।

और उसके मुख़्तलिफ़ हिस्से तेरी ज़िन्दगी के हर दिन की तरह हैं।

अब तुझे हर दिन में नेकियों के फल तोड़ने का हुक्म दिया गया लेकिन तू रोज़ सोचता है कि मैं कल से नेक बन जाऊँगा, यअ़नी अगले दर्जे से फल तोड़ूंगा, अगले दर्जे से फल तोड़ूंगा, तेरा अगला दिन न आ सकेगा, और तुझे उसी दिन अल्लाह के हुज़ूर जाना पड़ेगा।

सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बन्जारा
खड़े पैर चल देना पड़ेगा।

فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ

(पारा 8, सूरे आराफ़, आयत 34)

तर्जुमा :– सो जिस वक़्त उनकी मीआद मुअय्यन आ जायेगी उस वक़्त एक साअ़त न पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे।

सुलेमान अ़लै० की शान

हज़रत सुलेमान अ़लै० अल्लाह तआ़ला के जलीलुल क़द्र नबी हैं इतनी शान वाले नबी उनको अल्लाह तआ़ला ने नुबूव्वत भी अ़ता फ़रमाई और इन्सानों पर भी जिनों पर भी हैवानों पर भी, परिन्दों पर भी इतनी बड़ी शाही अ़ता की कि सुब्हानल्लाह, नबी अ़लै० ने फ़रमाया: न उनसे पहले दुनिया की वह शाही किसी को मिली थी और न बाद में मिलेगी (सुब्हानल्लाह) अल्लाह तआ़ला ने उनको ऐसी शान अ़ता फ़रमाई बैतुल मुक़द्दस बनवारहे हैं, उसकी तअ़मीर के लिये उन्होंने जिनों को लगा दिया ख़ुद अपने लिये शीशे का कमरा बनवाया कि मैं उसकी निगरानी करूं, अब अल्लाह के एक नबी हैं इतने शर्फ़ वाले, इतने मक़ाम वाले, इतनी शान वाले हैं, और मस्जिद बनाने के काम में लगे हुए हैं, अल्लाह का घर बना रहे हैं, बल्कि परवर्दिगार ने उनको भी इसी हालत में बुला लिया, और अपने घर को मुकम्मल कराने की शक्ल निकाली कि वह जहां खड़े थे इसी तरह उनकी लाश खड़ी रह गई, जिन्नात काम करते रहे, जब काम

मुकम्मल हो गया, उनके असा को उस वक़्त दीमक ने खा लिया तब उनकी लाश ज़मीन पर आई, तब जिनों को पता चला कि उनकी मौत वाक़िअ हो गई है, तो वक़्त के एक नबी अल्लाह का घर बनाने जैसे अमल में मशगूल हैं, उनकी मौत का वक़्त आ जाता है तो उनको भी मोहलत नहीं दी जाती बल्कि अपने पास बुला लिया जाता है।

हमें किस चीज़ ने मौत से ग़ाफ़िल किया

मेरी बहनो! बेटियो! अगर हम आज गौर करें हम किन कामों में लगे हुए हैं हमारी क्या औक़ात है हम किस खेत की गाजर मूली हैं जब हमारी मौत का वक़्त आयेगा, फिर उसे कहां पीछे हटाया जायेगा, हमें तो इसी वक़्त पहुंचना होगा किसी भी तैयारी का वक़्त नहीं मिलेगा, यह ज़िन्दगी है यही तो तैयारी का वक़्त है कोई अलग से वक़्त नहीं दिया जायेगा, इस वक़्त को ग़नीमत समझ लीजिए कितने जनाज़े बच्चों के हाथ में लेकर क़ब्रिस्तान जाते हुए हमने लोगों को देखा, कितने जवानों के जनाज़े कन्धे पर लेकर जनाज़ागाह में छोड आये, कितने जनाज़े बड़ी उम्र वालों के थे, इस बात से पता चलता है कि उम्र के किसी भी मरहले में हमारी मौत आ सकती है, इसलिये हर एक को तैयारी करने की ज़रूरत है, कोई नहीं जानता कि मौत कब आयेगी हां एक दिन बुलावा आ जायेगा।

यह तो ऐसी बात हुई जिसने मौत की तैयारी नहीं की कि बारात वाले घर आ चुके और घर वाले लड़की के कान छिदवाने कहीं लड़की को ले गये, उनको कितनी शर्मिन्दगी होगी कि उन्होंने कोई तैयारी की ही नहीं थी, बिल्कुल इसी तरह हम अगर मौत की तैयारी न कर सके तो जब मलकुलमौत आयेंगे उस वक़्त पशेमान होकर कहेंगे "क़ाला रब्बिर्जिऊना लअल्ली अअमलु सालिहन फ़ीमा तरक्तु" (पारा 18, सूरे मोमिनून, आयत: 100) "अल्लाह हमें एक मर्तबा और मोहलत देदे हम नेक काम करेंगे मगर कहा जायेगा" "कल्ला" "हरगिज़ नहीं" चुनांचे मौत की तैयारी आज करने की ज़रूरत है, यह ऐसा अमल है जो हम में से हर एक के पेशे नज़र है।

उनके यहां मौत की याद के लिये आदमी मुक़र्रर था

सय्यिदना उ़मर फ़ारूक़ रज़ि० कितनी बड़ी शान वाले सहाबी हैं उन्होंने एक आदमी को अपने साथ लगा रखा था और उसको यह कह रखा था कि तुम मुझे वक़्तन फ़वक़्तन मौत की याद दिलाते रहना, चुनांचे मुख़्तलिफ़ महफ़िलों में वह मौत का तज़किरा करते रहते थे, एक दिन आपने उन्हें फ़रमाया अब आप कोई दूसरा काम कर लीजिए कहने लगे कि हज़रत क्या अब मौत याद दिलाने की ज़रूरत नहीं है? आपने अपनी डाढ़ी मुबारक की तरफ़ इशारा किया जिसमें कुछ सफ़ेद बाल आ गये थे फ़रमाया यह सफ़ेद बाल मुझे मौत की याद दिलाने के लिये काफ़ी हैं मुझे इनको देखकर मौत की याद आती रहेगी।

मौत का पैग़ाम

नबी सल्ल० ने फ़रमाया मलकुल मौत तू अपने आने से पहले कोई पैग़ाम्बर या कोई क़ासिद भेज दिया कर, अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब कई पैग़ाम आते हैं मगर लोग समझते नहीं हैं किसी आदमी को बुढ़ापे की हालत में पहुंच जाना यह भी मौत का पैग़ाम है, किसी की बीनाई का कमज़ोर हो जाना यह भी मौत का पैग़ाम है, किसी के दांत में सूराख़ हो जाना और दांत का टूट जाना यह भी मौत का पैग़ाम है जिस्म में जवानी की क़ुव्वत का न रहना यह भी पैग़ाम है, बीमारियों का आना यह भी पैग़ाम है, लेकिन वाक़िई हम अन्धे बने हुए हैं, हमें आख़िरत की बजाये दुनिया की रंगीनी अपनी तरफ़ खींच लेती है, और हम आख़िरत से ग़ाफ़िल होकर ज़िन्दगी गुज़ार बैठते हैं, इसलिये हमें चाहिये कि मौत के लिये हर वक़्त तैयार रहें मालूम नहीं किस हाल में हमारी मौत आ जाये, हमने कई बार देखा आदमी जवानी के आ़लम में भी फ़ौत हो जाता है, मुख़्तलिफ़ सूरतें उसकी बन जाती हैं।

मौत अटल हक़ीक़त है

मौत को अगर हुकूमत के ज़रिये टाला जा सकता तो फ़िरऔन को कभी मौत न आती।

अगर मौत को वज़ारत के ज़रिये टाला जा सकता तो हामान को कभी मौत न आती।

अगर मौत को माल व दौलत के ज़रिये टाला जा सकता तो क़ारून को कभी मौत न आती।

अगर मौत को कुव्वते बाज़ू के ज़रिये टाला जा सकता तो रुस्तम व सोहराब को कभी मौत न आती।

अगर मौत को दवाओं के ज़रिये टाला जा सकता तो अफ़लातून व ज़ालीनूस को कभी मौत न आती।

अगर मौत को हिकमत व दानाई से टाला जा सकता तो लुक़मान अ़लै० को कभी मौत न आती।

अगर मौत को वफ़ाओं के ज़रिये टाला जा सकता तो कभी भी नेक बीवी अपनी आंखों के सामने अपने जवान शौहर को न मरने देती।

अगर मौत को मुहब्बत के ज़रिये टाला जा सकता तो कभी भी मां अपनी गोद में पड़े अपने मअ़सूम बेटे को न मरने देती।

मगर हमने कितनी मर्तबा देखा एक जवान आदमी, एक जवान लड़का चारपाई पर लेटा हुआ होता है, सारे घर वाले पूछते हैं आपको क्या हुआ, वह ख़ामोश होता है, कोई जवाब नहीं देता, उसकी बेटी बढ़ती है कहती है मेरे अब्बू! मुझे बतायें तो सही आपको क्या हुआ मैं आपकी नौकरी चाकरी के लिये हाज़िर हूं, जिस चीज़ की ज़रूरत होगी फ़ौरन तैयार करके पेश कर दूंगी, मुझे तो बता दीजिए बाप ख़ामोश होता है, बेटी रो रही होती है कि अब्बू मेरे सर पर शफ़्क़त का हाथ अब कौन रखेगा, मुझे क्यों नहीं बता देते मगर बाप ख़ामोश होता है।

बहन आगे बढ़ती है कहती है भाई मुझे बताओ तो सही आपको क्या हुआ मगर भाई ख़ामोश होता है कहती है मैं तुम्हारी बहन बोल

रही हूं, मुझे बताओ तो सही किस चीज़ की ज़रूरत है कोई ज़रूरत हो अभी पूरी कर दूंगी, मैं रातों को आपकी ख़िदमत के लिये जागूंगी, मैं आपकी बहन हूं, मैं आपकी ख़ातिर आराम कुर्बान कर दूंगी, लेकिन वह जवाब नहीं देता, बिल–आख़िर उसकी बीवी आगे बढ़ती है कहती है मेरे हमदम हमराज़, मेरे सर्ताज मुझे बताइये तो सही आपको क्या हुआ? शौहर कोई जवाब नहीं देता, बीवी की आंखों से सावन भादूं की बरसात बरस रही होती है, बार बार कहती है आप क्यों ख़ामोश हैं आपने तो मेरे साथ खुशी और ग़म में साथ रहने का अहद किया था हमारी ज़िन्दगी एक थी हम तो एक दूसरे के जीवन साथी थे आप तो मेरे सामने अपने सीने के ग़म खोल दिया करते थे आप तो दिल की बातें बता दिया करते थे कि आज क्या हुआ मुझे कुछ नहीं बता रहे, बोलिये तो सही बात तो करें, मगर शौहर कोई जवाब नहीं देता बीवी कहती है आप तो मेरी आवाज़ पहचानते थे मेरी आंखों का इशारा पहचानते थे, आज मुझसे क्यों ख़फ़ा हैं? अगर कोई ग़लती हुई हो तो मैं पांव पकड़ कर मना लेती हूं मगर शौहर कोई बात नहीं करता, बीवी रोती रह जाती है।

बिल–आख़िर मां आगे बढ़ती है, कहती है मेरे बेटे, मेरे नूरे नज़र, मेरे लख़्ते जिगर, मुझे बताओ तो सही तुम्हें क्या हुआ बेटे मैं तुम्हारी अम्मी बोल रही हूं, मगर बेटा कोई जवाब नहीं देता, मां पूछती रहती है बेटा मैं अपना माल ख़र्च कर दूंगी मैंने तुम्हारे भाई को डॉक्टर बुलाने के लिये भेजा है मैं तुम्हारा अच्छा इलाज कराऊँगी, बेटा कहीं दर्द है तो बता दो, और कोई तक्लीफ़ हो तो बता दो, मां पूछती रह जाती है, बेटा ख़ामोश होता है मां पूछती है, बेटा तुमने मेरी आवाज़ पर हमेशा लब्बैक कहा मेरा हर काम सुनते थे मेरा हर हुक्म मानते थे आज क्या बात है कि अपनी मां की बात भी नहीं सुनते, कोई जवाब भी नहीं देते, मां अपनी दुनिया में गुम हो जाती है, मेरे बेटे जब मेरी शादी हुई थी मुझे उम्मीद भी नहीं थी कि मुझे अल्लाह तआला औलाद की नेमत से नवाज़ेंगे, मेरे बेटे मैं कभी नमाज़ पढ़ती और औलाद की दुआएं मांगती, तहज्जुद पढ़ती औलाद की

दुआएं मांगती, बेटे मैं हज पर गई तवाफ़ करके औलाद की दुआएं मांगी, मक़ामे इबराहीम पर औलाद की दुआएं मांगी, बेटा कोई मौक़ा आता मुबारक रातों में औलाद की दुआएं मांगती, बेटा तिलावत करती औलाद की दुआएं मांगती, बेटा कोई नेक महफ़िल होती अल्लाह वालों की वहां जाकर भी औलाद की दुआएं मांगती, मेरी साथी दूसरी लड़कियां भी मुझे कहतीं अल्लाह तआला ने तुझे मुहब्बत करने वाला शौहर दिया अल्लाह तआला ने तुम्हें खुला रिज़्क दिया, अच्छा घर दिया, ज़िन्दगी की हर आराइश तुम्हें मुहय्या है क्यों परेशान रहती हो? तुम्हें अल्लाह ने अच्छी शक्ल दी अक़्ल दी, हर नेमत से नवाज़ा तुम तो हज़ारों में एक हो, मगर मेरा दिल उदास रहा, मैं कहती मेरा बेटा होता मेरे घर में खेलता, मुझे उससे ख़ुशी होती, बेटे मैं तुम्हारे लिये उदास रहती थी, बेटे न इलाज में कमी की, न दुआओं में कमी की और बेटे जिस दिन तुम पैदा हुए मेरी ख़ुशियों की इन्तहा न रही तुम्हारे चेहरे को देखती मुहब्बत मेरे दिल में ठाठें मारती मेरी ज़िन्दगी के ग़म दूर हो जाते, बेटे मैंने तुम्हें कितनो मुहब्बतों से पाला मेरे बेटे मैं पहले तुम्हें पिलाती बाद में ख़ुद पीती थी, पहले तुम्हें खिलाती थी, बाद में ख़ुद खाया करती थी, पहले तुम्हें सुलाती थी बाद में ख़ुद सोया करती थी, मैंने इनती मुहब्बतों से पाला तुम्हारी पैदाइश से पहले अगर मेरा शौहर मुझे बाज़ार लेकर जाता मैं अपने कपड़े चोटी ख़रीद कर लाती थी, लेकिन जब से तुम्हारी पैदाइश हुई मैं जब कभी बाज़ार जाती हूं, छोटी छोटी चीज़ें तलाश करती हूं, मेरे बेटे का फ़ीडर ऐसा हो मेरे बेटे के कपड़े ऐसे हों, इसके लिये झूला ऐसा हो, बेटे मैं तुम्हारी चीज़ें लेकर आती बेटे मैं तो अपने आपको भूल ही गई हर वक़्त तुम्हारी ख़िदमत में मसरूफ़ होती, बेटे अगर तुम रोते तुम्हें सीने से लगाकर लोरियां देती थी मै दिन रात तुम्हारे लिये जागती थी और कोई काम ही नहीं था, बेटे अगर मेरी बहनें भी तुमसे प्यार न करतीं तो मैं उन्हें अपना ग़ैर समझती और जो तुमसे प्यार करता मैं उसे अपना समझती मेरे रिश्तों के पैमाने बदल गये, जो तुम्हें अपना समझता मैं उसे अपना समझती जो तुमसे मुहब्बत न रखता मैं उसे

अपना ग़ैर समझती बेटे मैं कभी थकी हुई होती और तुम मेरे सामने आते तो तुम्हारे चेहरे को देखकर मेरी थकन दूर हो जाती कई मर्तबा ऐसा हुआ तुम कमरे में सोते होते मै किचन (Kitchen) में काम कर रही होती, मेरे हाथ काम में होते, मेरे कान तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जेह होते ज़रा खटका होता मैं भागी भागी चली आती, तुम्हें आकर देखती अगर जागे होते तो फ़ीडर (दूध दानी) वग़ैरा दे देती और अगर सोये हुए होते तो फिर वापस चली जाती थी, बेटे मैंने तुम्हें इतनी मुहब्बतों से पाला तुमने तअ़लीम हासिल की, तुमने अच्छा कारोबार शुरू कर दिया, हमारे नाम को चार चांद लगा दिये, बेटे मुझे तुमसे इतनी मुहब्बत थी मैं रोज़ाना मुसल्ले पर बैठे घन्टों तुम्हारे लिये दुआएं मांगती थी, जब कभी रात के वक़्त तुम देर से आते किसी सफ़र की वजह से सारे घर वाले सो जाते बुम्हारी मां जागती होती, मैं करवटें बदलती नींद न आती, मैं दिल दिल में दुआएं मांगती, अल्लाह मेरे बेटे की ख़ैर हो, ऐ अल्लाह तू हिफ़ाज़त फ़रमा, मेरे बेटे को हिफ़ाज़त के साथ घर पहुंचा देना, और मेरे बेटे तुम अगर आधी रात भी वापस आते और दरवाज़े को खटखटाते, मैं दरवाज़े को खोलकर तुम्हें गर्म खाना देती, मैंने इतनी मुहब्बतों से तुम्हें पाला बेटे तुम वही बेटे हो और मैं वही मां हूं आज क्या हुआ मेरी बात का जवाब नहीं देते मुझे बताओ तो सही तुम्हें क्या हुआ? मां रो रही है बेटा कोई जवाब नहीं देता, बल्कि बेटे का आख़री वक़्त आता है, उसकी आंखें ऊपर को लग जाती हैं, रूह निकल रही होती है, मां बाप सब खड़े रो रहे होते हैं, कोई कुछ नहीं कर सकता कुरआन ने पहले मन्ज़र बता दिया:

فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُومَ وَأَنْتُمْ حِينَئِذٍ تَنْظُرُونَ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ لَا تُبْصِرُونَ.

(पारा 27, सूरे वाकिआ, आयत 83)

तर्जुमा :– सो जिस वक़्त रूह हलक़ तक आ पहुंचती है और तुम उस वक़्त तका करते हो और हम उस वक़्त उस मरने वाले शख़्स के तुमसे भी ज़्यादा नज़दीक होते हैं, लेकिन तुम समझते नहीं हो।

मकीन चला जाता है मकान बाक़ी रह जाता है

चुनांचे बात ऐसी ही है रूह निकल जाती है मां देखती है बेटे की रूह निकल गई आंखें खुली रह गई, अपने कांपते हाथों के साथ अपने अंगूठे बेटे की आंखों पर रख कर बन्द कर देती है, वह जानती है यह आंखें आज के बाद कभी नहीं खुलेंगी, फिर उसका मुंह भी बन्द कर देती है, समझती है यह तूती हमेशा के लिये ख़ामोश हो चुका, अब कभी नहीं बोलेगा, थोड़ी देर के बाद चादर ऊपर डाल देते हैं सब कहते हैं मय्यत को जल्दी नहलाओ थोड़ी देर पहले वह किसी का बाप था किसी का भाई और बेटा था, किसी का शौहर था अब क्या बना? सबने मय्यते मय्यत की रट लगाना शुरू कर दी सब कहेंगे असल इन्सान तो चला गया यह तो इन्सान का सिर्फ़ जिस्म बाक़ी है, मकीन चला गया यह मकान बाक़ी है, उसको भी असली घर की तरफ़ पहुंचाएंगे, नहला कर कफ़न में लपेट दिया जाता है, और इस घर से लेजाने की तैयारी की जाती है, कोई पूछे तो सही कहां लेकर जाते हो, कहते हैं इसको असली घर की तरफ़ लेकर जाते हैं, अरे जिस घर में यह पड़ा हुआ है, उसने इसका नक़्शा खुद बनवाया अपनी पसन्द की चीज़ खुद लगवाई, अभी तो दीवारें भी मैली नहीं हुई, तुम इस घर से क्यों लेकर जाते हो, सब कहेंगे यह तो इसका आर्ज़ी मकान था, एक ख़ामोश नगर में इसका मकान बना हुआ है वहां इसको लेकर जायेंगे।

दो गज़ ज़मीन का टुक्ड़ा छोटा सा तेरा घर है

वहां इसको लेकर जायेंगे, दरवाज़े पर रिश्तेदार जमा होते हैं उनसे काई पूछे कि आप कौन हैं? क्या इसके दुशमन हो जो उसे घर से निकालने आ गये वह जवाब देंगे हम तो रिश्तेदार हैं बही-ख़्वाह और यही ख़ैर-ख़्वाह हैं, हम इसको असली घर पहुंचाने आये हैं, चुनांचे इसको कन्धों पर उठा लिया जाता है, जनाज़ा पढ़कर इसको क़ब्रिस्तान पहुंचा दिया जाता है, उसके क़द के ऐतिबार से एक क़ब्र खोदी जाती है, शरीअत का यह हुक्म है कि जो मय्यत का क़रीबी रिश्तेदार हो उसको क़ब्र के अन्दर उतारे, हमने कई बार देखा

कि जवान बेटे को बाप क़ब्र में उतारता है, और बाप को बेटा उतार रहा होता है, जब बाप नीचे उतरता है और नौजवान बेटे को अपने हाथों से ज़मीन पर लिटा देता है यह बाप वह था जो बेटे के जिस्म पर मैला कपड़ा बरदाश्त नहीं करता था, आज अपने बेटे को ज़मीन पर लिटा रहा है, नीचे कोई गद्दा भी न बिछाया, कोई क़ालीन भी न बिछाया, वैसे ही कफ़न के साथ ज़मीन पर रख दिया, फिर वहां एयर कन्डीशन की फिटिन्ग भी नहीं, कोई लाइट का इन्तिज़ाम भी नहीं, बल्कि ऊपर से मिट्टी डाल देंते हैं, जो बाप अपने बेटे के जिस्म पर धूल बरदाश्त नहीं करता था आज वही मिट्टी डाल रहा है, और यह हौसले भी अल्लाह ने मर्दों को दिये कि उनके ज़िम्मे दफ़नाने का हुक्म है अगर फ़र्ज़ कर लो कि औरतों को हुक्म दिया जाता कि वह दफ़न करें और मां को बेटा दफ़न करना पड़ता तो शायद मां ख़ुद भी साथ ही दफ़न हो जाती, अल्लाह ने मर्दों को यह हौसले दिये हैं, क्या गुज़रती होगी उस बाप पर जो अपने जवान बेटे को ज़मीन पर लिटा कर उसपर मिट्टी डाल रहा होता है, मनो मिट्टी में उसको दफ़न कर देते हैं और फिर खड़े हो कर कहते हैं:

लेव यार हवाले रब दे!!

ऐ बहन! तू जीते जागते अपने आपको रब के हवाले कर दे तो अल्लाह तुझे अपने पसन्दीदा बन्दों में शामिल फ़रमायेंगे, और अगर तू अपने आपको जीते जागते अल्लाह के हवाले नहीं करेगी तो फिर मर कर तो हवाले होना ही है, फिर मुजरिम बनाकर पेश करेंगे, कि बताओ तुम दुनिया में मेरी तरफ़ मुतवज्जह न हुए बिल–आख़िर मेरे पास तो आना पड़ा, इसलिये हमें चाहिये गुनाह से बचकर ज़िन्दगी गुज़ारें, औरतें फ़रायज़ व वाजिबात व सुन्नतों की रिआयत करते हुए ज़िन्दगी गुज़ारें, अल्लाह तआला हमें दुनिया में मौत की तैयारी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमायें।

लरज़ा देने वाली बात

इमामे ग़ज़ाली रह० ने एक अजीब बात लिखी फ़रमाते हैं "ऐ

दोस्त! तुझे क्या मालूम कि बाज़ार में वह कपड़ा पहुंच चुका हो जिसे तेरा कफ़न बनना है" हम तो मौत को भूल ही जाते हैं, लेकिन मौत हमें नहीं भूलती, मालूम नहीं किस वक़्त मौत आ जायेगी, इन्सान आज शादी में मशग़ूल हो चुका है, और मौत उसके क़रीब पहुंच चुकी होती है, इसलिये हम हर दिन को ज़िन्दगी का आख़री दिन समझते हुए गुज़ारें।

मौत का इस्तिहज़ार

नबी सल्ल० एक मर्तबा एक जगह क़ज़ाए हाजत से फ़ारिग़ हुए और तयम्मुम फ़रमाया हालांकि आप दरया के किनारे पर थे एक सहाबी ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० सामने तो दरया है, आपने फिर तयम्मुम क्यों फ़रमाया? अल्लाह के रसूल सल्ल० ने जवाब दियाः मैंने इसलिये तयम्मुम किया कि अब मैं दरया पर वुज़ू के लिये जा रहा हूं पता नहीं दरया पर पहुंच सकूंगा या नहीं और मौत आ जाये? अल्लाह के महबूब का यह हाल था।

एक मर्तबा नबी सल्ल० ने अपने साथियों से पूछा कि तुम मौत के बारे में क्या जानते हो? एक ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! सुबह उठता हूं तो यक़ीन नहीं आता कि शाम भी आएगी या नहीं आएगी, दूसरे ने कहा कि ऐ अल्लाह के महबूब मैं चार रक्अत की नीयत बान्धता हूं मुझे यक़ीन नहीं होता कि चारों पढ़ भी सकूंगा या नहीं, नबी अलै० ने फ़रमाया कि मेरा तो यह हाल है कि नमाज़ी नमाज़ पढ़ते हुए जब एक तरफ़ सलाम फेरता है तो उसको यह भी पता नहीं कि मैं दूसरी तरफ़ भी सलाम फेर सकूंगा या नहीं तो जब मौत का यह मआमला है तो फिर क्यों न हम उसके लिये हर वक़्त तैयार रहें, बिल-आख़िर मौत आनी है।

मोमिन की मौत पर ज़मीन व आसमान भी रोते हैं

हदीसे पाक का मफ़हूम है, जब नेक इन्सान फ़ौत होता है तो अल्लाह तआला के फ़रिश्ते जन्नत की ख़ुशबूएं लेकर आते हैं, और वह

उसके सीने पर रूमाल रखते हैं, रूह को इतना आसानी से क़ब्ज़ करते हैं जिस तरह मक्खन में से बाल निकाल लेते हैं, इसके बाद मुर्दे की कफ़न दफ़न की तैयारी की जाती है, रिवायत में आता है कि आसमान के वह दरवाज़े उसकी मौत पर रोते हैं जहां से रिज़्क़ उतारा जाता था, ज़मीन के वह टुकड़े रोते हैं जहां बैठकर वह अल्लाह की इबादत किया करता था (सुब्हानल्लाह) नेक लोगों की जुदाई पर आसमान व ज़मीन भी रोते हैं।

और कुफ़्फ़ार जब मरते हैं तो आसमान और ज़मीन को उनपर रोना नहीं आता इसलिये क़ुरआने पाक में फ़रमाया-

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ

(पारा 25, सूरे दुख़ान, आयत: 29)

"सो न तो उनपर आसमान और ज़मीन को रोना आया" इसके तहत मुफ़स्सिरीन ने लिखा कि मोमिनों की मौत पर उनकी जुदाई पर अल्लाह का अर्श भी रोता है।

सहाबी के जनाज़े में फ़रिश्तों की भीड़

एक हदीसे पाक में आया है, हज़रत सअ़द रज़ि० एक सहाबी थे वफ़ात पा गये, नबी अ़लै० उनके जनाज़े के लिये चल रहे थे, और पंजों के बल चल रहे थे, एक सहाबी ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी सल्ल०! पहले तो कभी ऐसे चलते नहीं देखा फ़रमायाः सअ़द रज़ि० के जनाज़े में शिर्कत के लिये आसमान से इतने फ़रिश्ते उतर आये कि मुझे ज़मीन पर पांव रखने की पूरी जगह नहीं मिल रही थी, जब आपने दफ़न फ़रमा दिया कुछ अ़र्से के बाद आपने फ़रमाया कि सअ़द रज़ि० की जुदाई में अल्लाह का अ़र्श भी तीन दिन तक रोता रहा, (सुब्हानल्लाह) अल्लाह के नबी सल्ल० बताते हैं कि अ़र्श भी सअ़द रज़ि० की जुदाई में तीन दिन तक रोता रहा, तो नेक लोगों की जुदाई में आसमान और ज़मीन भी रोते हैं।

फ़रिश्तों का इस्तिक़बाल

किताबों में लिखा है जब नेक आदमी का जनाज़ा क़ब्रिस्तान की

तरफ़ चलता है तो अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों को हुक्म फ़रमाते हैं तुम रास्ते के दोनों तरफ़ इस्तिक़बाल के लिये खड़े हो जाओः

आशिक़ का जनाज़ा है ज़रा धूम से निकले

मोमिन का जनाज़ा निकल रहा है अल्लाह के फ़रिश्ते रास्ते के दोनों तरफ़ खड़े होते हैं यहां तककि जब उसको क़ब्र में लिटा देते हैं, रिवायत में आता है, अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों से फ़रमाते हैं मेरा यह बन्दा दुनिया से थका मांदा आया है, उसे कह दीजिए "नम कनौमिल उ़रूसि" (सुब्हानल्लाह) अल्लाह की तरफ़ से हुक्म दिया जाता है, मेरे बन्दे तू नेकी कर करके थक गया "तू अब दुलहन की नींद सो जा।"

यहां मुहद्दिसीन ने एक नुक्ता लिखा फ़रमाते हैं यह क्यों न कहा तू मीठी नींद सो जा, राहत की नींद सो जा, बल्कि यह कहा तू दुलहन की नींद सो जा इसमें नुक्ता यह है कि जब दुलहन सोती है उसको वही जगाता है जो उसका शौहर उसका महबूब होता है, यह मोमिन आज क़ब्र में सो रहा है क़्यामत के दिन उसको वही जगायेगा जो उसका महबूबे हक़ीक़ी होगा, दुलहन की आंख खुलती है तो उसके शौहर के चेहरे पर उसकी नज़र पड़ती है, क़्यामत के दिन जब मोमिन की आंख खुलेगी तो उसकी नज़र के सामने परवर्दिगार जलवा–गर होंगे।

चुनांचे हदीसे पाक में आता है कई मोमिन ऐसे भी होंगे वह इस हाल में उठेंगे कि वह अल्लाह तआ़ला को देखकर मुस्कुरायेंगे, अल्लाह तआ़ला उनको देखकर मुस्कुरायेंगे, आवाज़ आती होगीः

يَاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ارْجِعِيْ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ

(पारा 30, सूरे फ़ज्र, आयतः 27)

तर्जुमा :– ऐ इत्मीनान वाली रूह तू अपने परवर्दिगार की जवारे रहमत की तरफ़ चल इस तरह से कि तू इससे खुश और वह तुझ से खुश, फिर इधर आकर तू मेरे ख़ास बन्दों में शामिल होजा कि यह भी नेमते रूहानी है और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा।

अल्लाह तआला हमें भी मौत की तैयारी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और आइन्दा ज़िन्दगी को गुज़री हुई ज़िन्दगी से बेहतर गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये, आइन्दा आने वाले वक़्त को गुज़रे हुए वक़्त से बेहतर बनादे और हमें तक़वा व तहारत पर ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमादे, हमने जितने भी गुनाह किये सच्चे दिल से अल्लाह तआला से माफ़ी मांगें, और आइन्दा नेकोकारी की ज़िन्दगी गुज़ारने का दिल में पुख़्ता इरादा करें, अल्लाह तआला हमें आइन्दा नेकोकारी की ज़िन्दगी नसीब फ़रमाकर आजकी महफ़िल से उठने से पहले पिछले गुनाहों से हमें सुबुकदोश फ़रमादें और आइन्दा नेकी करने में हमारी मदद फ़रमायें, और हमें नेक बनकर रहना आसान फ़रमादें।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين.

इन्सान की तरबियत और तरक़्क़ी में औरत का किर्दार

इक़्तिबास

طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ وَّمُسْلِمَةٍ

तलबुल इल्मि फ़रीज़तुन अला कुल्लि मुस्लिमिन व मुस्लिमतिन

"इल्म का हासिल करना हर मुसलमान औरत और मर्द पर फ़र्ज़ है, तो इल्म की तलब जिस तरह मर्द के लिये लाज़िमी है इसी तरह औरत के लिये भी लाज़िमी है, बल्कि यह आजिज़ तो यूं कहता है कि अगर किसी आदमी के दो बच्चे हों, एक बेटा और एक बेटी और उसके वासइल इतने हों कि दोनों में से एक को तअलीम दिलवा सकता है, तो उसको चाहिये कि वह बेटी को तअलीम पहले दिलवाये इसलिये कि "मर्द पढ़ा फ़र्द पढ़ा, औरत पढ़ी ख़ानदान पढ़ा"

जब औरतों में दीनी तअलीम आम होगी तो फिर आइन्दा नस्लों की तरबियत अच्छी होगी, बल्कि आप ग़ौर करें तो इस उम्मत के हर कामयाब मर्द के पीछे आपको औरत का किर्दार नज़र आयेगा, कभी बीवी की शक्ल में, कभी बहन की शक्ल में, कभी मां की शक्ल में और कभी बेटी की शक्ल में।

(हज़रत मौलाना पीर फ़क़ीर ज़ुलफ़क़्क़ार अहमद साहब नक़्शबन्दी)

بِاسْمِهٖ تَعَالٰی

الحَمْدُ لِلّٰهِ وكفٰى وسلامٌ علىٰ عِبادِهِ الَّذِينَ اصطفٰى امَّا بعد!

اَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيطٰنِ الرجيم ، بِسمِ اللّٰهِ الرَّحمٰنِ الرَّحِيم

﴿مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ○﴾

(पारा 14, सूरे नहल, आयत: 97)

तर्जुमा :– जो शख़्स कोई नेक काम करेगा ख़्वाह वह मर्द हो या औरत हो, बशर्तेकि साहबे ईमान हो तो हम उस शख़्स को बा–लुत्फ़ ज़िन्दगी देंगे, और उनके अच्छे कामों के बदले में उनका अज्र देंगे।

سبحان ربِّكَ ربِّ العزَّةِ عما يصِفُونَ وَسلامٌ علَى المُرسَلينَ والحَمدُ لِلّٰهِ ربِّ العَالمِينَ

اللّٰهم صلِّ علىٰ محمدٍ وعلىٰ آلِ سيدِنا محمد وبارك وسلِّم

اللّٰهم صلِّ علىٰ محمدٍ وعلىٰ آلِ سيدِنا محمد وبارك وسلِّم

اللّٰهم صلِّ علىٰ محمدٍ وعلىٰ آلِ سيدِنا محمد وبارك وسلِّم

हक़ीक़ी बन्दा कौन?

इन्सान इस दुनिया में चन्द दिन का मेहमान है न यह अपनी मर्ज़ी से दुनिया में आया है और न अपनी मर्ज़ी से दुनिया से वापस जाता है, इसे कोई हक़ नहीं पहुंचता कि यह दरमियानी वक़्फ़ा में अपनी मन मानी ज़िन्दगी गुज़ारे, जिस मालिक व ख़ालिक़ ने उसे पैदा किया जिसके हुक्म से यह दुनिया में आया, और जिसके हुक्म से यह दुनिया से वापस जायेगा अगर उसीके हुक्मों के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारेगा तो फ़लाह पायेगा, मक़सदे ज़िन्दगी अल्लाह तआला की बन्दगी और मक़सदे हयात अल्लाह तआला की याद है, हक़ीक़ी मअ़नों में बन्दा वही होता है जिसमें बन्दगी हो वरना तो सरासर गन्दा होता है, झूठ और फ़रेब का पुलिन्दा होता है।

अल्लाह का क़ुर्ब मर्द व औरत के लिये

अल्लाह तआला ने मर्द और औरत दोनों के लिये अपने क़ुर्ब के

दरवाज़े को खोल दिया है, इरशाद फ़रमाया "अ़मिला़ सालिहन मिन ज़करिन औ उन्सा व हुवा़ मोमिनुन फलनुहयियन्नहू हयातन तय्यिबतन" "जो कोई भी ईमान लाये और नेक आमाल करे हम उसको ज़रूर बिज़्ज़रूर पाकीज़ा ज़िन्दगी अ़ता करेंगे"

आम तौर पर औ़रतों में यह तअस्सुर देखा गया वह समझती हैं कि विलायत के दर्जे को पाना यह तो मर्दों का काम है, औ़रतें तो सिर्फ़ नमाज़ रोज़ा करें, घर–दारी के काम में मस्रूफ़ रहें, यही उनकी ज़िन्दगी है, अगर हम तारीख़े इस्लाम का मतालआ करें तो यह बात रोज़े रोशन की तरह साफ़ होती है कि इस उम्मत की औ़रतों ने दीनी मैदान में भी बहुत तरक़्क़ी की और इ़ल्म के मैदान में भी उन्होंने नुमायां कामयाबी हासिल की, औ़रतों के अन्दर दीन का काम करने में उन्होंने रात व दिन मेहनत की और विलायत के दर्जे पाने में भी वह मर्दों से पीछे न रहीं, अल्लाह तआ़ला का कुर्ब हासिल करना, उसकी मारिफ़त हासिल करना, उसकी रज़ा हासिल करना, यह जिस तरह मर्दों के लिये ज़रूरी इसी तरह औ़रतों के लिये भी ज़रूरी है, और यह तभी मुमकिन है, जब इन्सान दीन का इ़ल्म हासिल करे और इख़लास के साथ उसपर अ़मल करे।

तहसीले इ़ल्म का हुक्म दोनों के लिये

चुनांचे नबी अ़लै० ने फ़रमाया "तलबुल इ़ल्मि फ़रीज़तुन अ़ला कुल्लि मुस्लिमिन व मुस्लिमतिन" "इ़ल्म का हासिल करना हर मुसलमान औ़रत, मर्द के ऊपर फ़र्ज़ है" तो इ़ल्म की तलब जिस तरह मर्द के लिये लाज़िमी है, इसी तरह औ़रत के लिये भी ज़रूरी है, बल्कि यह आ़जिज़ तो यूं कहता है कि अगर किसी आदमी के दो बच्चे हों, एक बेटा और एक बेटी और उसके वसाइल इतने हों कि दोनों में से एक को तअ़लीम दिलवा सकता है, तो उसको चाहिये कि वह बेटी को तअ़लीम पहले दिलवाये, इसलिये कि "मर्द पढ़ा फ़र्द पढ़ा, औ़रत पढ़ी ख़ानदान पढ़ा" तो जब औ़रतों में दीनी तअ़लीम आ़म होगी तो फिर आइन्दा नस्लों की तरबियत भी अच्छी होगी,

बल्कि आप ग़ौर करें तो इस उम्मत के हर कामयाब मर्द के पीछे आपको औ़रत का किर्दार नज़र आयेगा, कभी बीवी की शक्ल में, कभी बहन की शक्ल में, कभी मां की शक्ल में, और कभी बेटी की शक्ल में इस उम्मत के कामिलीन में से आप किसीकी भी ज़िन्दगी को देख लीजिए, आपको हमेशा उसकी शख़्सियत के पीछे किसी न किसी औ़रत का तआ़वुन नज़र आयेगा, उसकी तरबियत नज़र आयेगी।

कामयाब मर्द के पीछे औ़रत का किर्दार

एक कामयाब मर्द के पीछे आपको औ़रत का किर्दार नज़र आयेगा, कभी बीवी की शक्ल में, कभी मां की शक्ल में, कभी बहन की शक्ल में और कभी बेटी की शक्ल में इसकी चन्द मिसालें आपके सामने पेश की जाती हैं।

मिसाल 1 :– नबी अ़लै० अल्लाह तआ़ला के महबूब सय्यिदुल अव्वलीन हैं, सय्यिदुल आख़रीन हैं, इमामुल मलाइका हैं आपको अल्लाह तआ़ला ने वह शान बख़्शीः

बाद अज़ ख़ुदा बुज़ुर्ग तूई क़िस्सा मुख़्तसर

लेकिन जब आप पर वही नाज़िल हुई और आप सल्ल० घबराये हुए अपने घर तशरीफ़ लाये तो आपने अपनी बीवी से फ़रमायाः "ज़म्मिलूनी ज़म्मिलूनी" मुझे कम्बल उढ़ादो, मुझ कम्बल उढ़ादो, चुनांचे जिबरईल अ़लै० को आपने पहली मर्तबा इस शक्ल में देखा था वही उतरने का पहली मर्तबा तजुर्बा हुआ था, नबी सल्ल० के दिल पर एक ख़ौफ़ सा तारी था, एक हैबत सी तारी थी, तो आपने फ़रमायाः "ख़शीतु अ़ला नफ़्सी" कि मुझे अपनी जान का ख़तरा है, ऐसे वक़्त में आपकी बीवी मोहतरमा ने आपको तसल्ली की बातें कहीं और फ़रमाया "कल्ला" हरगिज़ नहीं "इन्नका् लतसिलुर्रहीम" ऐ महबूब! आप तो सिला रहमी करने वाले हैं, "व तक्सिबुल मअ़दूमु व तक़्रिज़्ज़ैफ़ व तहमिलुल कुल्लु व तअ़ईनु अ़ला नवाइबिल हक्क़ि" आपके चन्द अच्छे अख़लाक़ गिनवाकर कहा कि जब आपके अन्दर इतने अच्छे अख़लाक़ मौजूद हैं तो अल्लाह तआ़ला आपको कभी

ज़ायेअ़ नहीं फ़रमायेंगे, चुनांचे उनकी बातों को सुनकर आपके दिल को तसल्ली मिल ज़ाती है, चुनांचे महबूब की ज़िन्दगी में आपको औ़रत का किर्दार बीवी की शक्ल में नज़र आयेगा, जो आपको मुश्किल वक़्त के अन्दर तसल्लियां दिया करती थी, बल्कि जब आपका निकाह हुआ तो उन्होंने अपना सारा माल नबी अ़लै० के क़दमों पर डाल दिया और आप सल्ल० को उनके उसी माल ने इब्तिदा में बहुत फ़ायदा दिया।

मिसाल 2 :– हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के महबूब सल्ल० के यारे–ग़ार कहलाते हैं, रफ़ीक़े सफ़र कहलाते हैं, आप उनके सफ़रे हिजस्त को देखें तो उनके पीछे भी आपको एक औ़रत का एक लड़की का किर्दार नज़र आयेगा।

हदीसे पाक में आता है जब नबी सल्ल० हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० के यहां तशरीफ़ ले गये तो आपने फ़रमाया अबू बक्र रज़ि० मैं तन्हाई चाहता हूं, हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब मैं हूं, मेरी बीवी है, और मेरी दो बेटियां हैं और तो कोई ग़ैर नहीं, नबी अ़लै० ने इत्मीनान का इज़हार फ़रमाया, चुनांचे आपने फ़रमाया कि हिजरत के सफ़र का हुक्म हुआ है, आपकी बड़ी बेटी हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने उसी वक़्त दुपट्टे को फाड़कर दो टुकड़े किये एक को अपने सर पर पर्दे के लिये रख लिया और दूसरे के अन्दर उन्होंने नबी अ़लै० के सामान को बान्ध दिया, और सामान बान्धकर उन्होंने नबी अ़लै० को रुख़्सत फ़रमाया, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने अपनी बीवी से फ़रमाया कि आप खाना बना दें और अपनी बेटी (हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा) से कहा कि तू चूंकि छोटी है लोग तुझपर शक भी नहीं करेंगे, तू यह खाना हमें ग़ारे सौर में पहुंचा देना, चुनांचे उन्होंने हामी भर ली, अभी नबी अ़लै० और हज़रत अबू बक्र रज़ि० रुख़्सत ही हुए थे कि हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के दादा अबू क़ुहाफ़ा तशरीफ़ लाये, उन्होंने आकर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० के बारे में पूछा, बच्चों ने कहा वह तो चले गये तो उनके दिल पर थोड़ी सी घबराहट हुई कहने लगे अपना

माल तो सारा नहीं ले गये, हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अन्हा कहने लगीं मैं बच्ची थी मगर मैंने यह किया कि एक जगह पत्थर पड़े हुए थे उनके ऊपर कपड़ा डाल दिया और अपने दादा का हाथ उनपर रखवा दिया और कहा कि दादा अब्बू के पीछे भी बहुत कुछ है, तो दादा समझे कि शायद माल पीछे पड़ा होगा वह मुत्मइन हो गये फ़रमाने लगीं मेरे वालिद तो अल्लाह के महबूब के साथ चले गये और पांच हज़ार दिरहम साथ लेकर गये थे, पीछे तो अल्लाह और उसके रसूल का नाम ही छोड़कर गये थे, तो फ़रमाती हैं कि मैं उनको खाना पहुंचाती थी, चुनांचे जब दूसरे दिन खाना लेकर गई तो नबी अ़लै० ने देखा कि आज छोटी असमा के चेहरे पर ज़ख़्म का निशान है, मग़मूम तबीअ़त है आपने पूछा असमा आज क्या बात है तू उदास नज़र आती है, तो असमा रज़ियल्लाहु अन्हा की आंखों में आंसू आ गये, नबी अ़लै० मुतवज्जेह हुए पूछा असमा तू क्यों रो रही है? अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब! कल जब मैं खाना देकर वापस जा रही थी तो रास्ते में अबू जहल मिल गया था, उसने मुझे बालों से मज़बूती के साथ पकड़ लिया और बालों को खींच खींचकर कहने लगा, असमा बताओ तुम्हें पता है कि तुम्हारे वालिद कहां हैं? तुम्हारे पैग़म्बर कहां हैं? ऐ अल्लाह के महबूब! मैंने उसे सच सच कह दिया हां मुझे पता है वह कहने लगा फिर बताओ वह कहां हैं? मैंने जवाब दिया हरगिज़ नहीं बताऊँगी, उसने कहा मैं तुम्हें मारूंगा मैं सख़्त सज़ा दूंगा, अल्लाह के महबूब! मैंने उससे कहा "इक़्ज़ि मा अन्ता क़ाज़िन" जो तुम कर सकते हो वह करलो मगर मैं नहीं बताऊँगी, ऐ अल्लाह के महबूब! उसने अचानक मुझे ज़ोरदार थप्पड़ लगाया, मैं नीचे गिरी, चट्टान पर मेरा माथा लगा मेरे माथे से खून निकल आया, मेरी आंखों से आंसू आ गये, मुझे सख़्त तक्लीफ़ हो रही थी, अबू जहल ने मुझे फिर बालों से पकड़ कर खड़ा कर दिया कहने लगा असमा! तुझे बहुत मारूंगा जल्दी बता दे, अल्लाह के महबूब! मैंने उसे जवाब दिया "ऐ अबू जहल! मेरी जान तो तेरे हवाले मगर मैं मुहम्मद अ़रबी सल्ल० को तेरे हवाले नहीं करूंगी" आप अन्दाज़ा कीजिए एक

छोटी सी बच्ची है, लेकिन उसको भी नबी के साथ इतनी मुहब्बत है कहती है मेरी जान तो तेरे हवाले मगर मुहम्मद अरबी सल्ल० को तेरे हवाले नहीं करूंगी, तो सय्यिदना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० के इस कामयाब सफ़र के पीछे आपको एक औ़रत का किर्दार नज़र आयेगा बेटी की शक्ल में।

मिसाल 3 :– सय्यिदना उ़मर फ़ारूक़ रज़ि० मुरादे मुस्तफ़ा कहलाते हैं, वह एक मर्तबा तलवार लेकर निकले कि नबी अ़लै० को शहीद कर दें, रास्ते में एक सहाबी मिले पूछा कहां का इरादा है? कहने लगे कि मैं उनको (मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) शहीद करना चाहता हूं, कि न रहे बांस न बजे बांसुरी, कहने लगे सुब्हानल्लाह तुम अपनी बहन के घर जाकर तो देखो तुम्हारी बहन और बहनोई दोनों मुसलमान हो चुके हैं, उ़मर रज़ि० को बड़ा गुस्सा आया कि मेरे घर के लोग मेरी इजाज़त और इ़ल्म के बग़ैर इस्लाम क़ुबूल करलें यह कैसे हो सकता है, वहीं से बहन के घर पहुंचे और बहन के घर पर दस्तक दी, हज़रत उ़मर रज़ि० ने सुना कि वह बैठे हुए कुछ पढ़ रहे हैं, जब उन्होंने दस्तक दी, तो उनकी बहन फ़ातिमा पहचान गई कि उ़मर दरवाज़े पर आये खड़े हैं, चुनांचे जो सहाबी पढ़ा रहे थे वह तो छुप गये, उन्होंने वह चीज़ भी छुपा दीं, जिनपर क़ुरआन की आयतें लिखी हुई थीं, दरवाज़ा खोला उ़मर रज़ि० अन्दर तशरीफ़ लाये आकर बहनोई से पूछा मैंने सुना है कि आप लोग मुसलमान हो गये, बहनोई ने जवाब दिया कि इस्लाम सच्चा दीन है, तो फिर उसको क़ुबूल करने में क्या रुकावट है, जब उन्होंने यह अलफ़ाज़ कहे तो उ़मर रज़ि० ने गुस्से में आकर उनको मारना शुरू कर दिया, बहन फ़ातिमा बचाने के लिये दरमियान में आईं, उ़मर रज़ि० जलाल में थे आपने बहन के चेहरे पर भी एक ज़ोरदार थप्पड़ मारा, फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा नीचे गिर गईं, मगर फिर संभल कर उठीं उनकी आंखों में आंसू थे, उ़मर रज़ि० के सामने आकर खड़ी हो गईं और उस वक़्त यह अलफ़ाज़ कहे "उ़मर जिस मां का दूध तुमने पिया है उसी मां का दूध मैंने पिया है तुम मेरे जिस्म से जान तो निकाल

सकते हो हमारे दिल से ईमान नहीं निकाल सकते" यह अलफ़ाज़ थे जो उ़मर रज़ि० के दिल पर बिजली बनकर गिरे दिल मोम हो गया, कहने लगे फ़ातिमा बताओ तुम क्या पढ़ रही थीं, कहने लगीं भाई आपका जिस्म नापाक है, शिर्क की निजासत ने आपको नापाक कर दिया गुस्ल कर लीजिए ताकि आप इस पाक कलाम को सुन सकें चुनांचे गुस्ल करके अल्लाह का कलाम सुना आयतें सुनीं।

إِنَّنِىٓ أَنَا ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعْبُدْنِى وَأَقِمِ ٱلصَّلَوٰةَ لِذِكْرِىٓ.

(पारा 16, सूरे ताहा, आयत: 14)

तर्जुमा :– मैं ही अल्लाह हूं मेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तुम मेरी ही इबादत किया करो और मेरी ही याद की नमाज़ पढ़ा करो।

कहने लगे कि अच्छा तुम मुझे भी मुसलमान बना दो, उस वक़्त वह छुपे हुए सहाबी बाहर निकले कहने लगे मुबारक हो उ़मर रज़ि० नबी अ़लै० कई दिन से दुआ़ मांग रहे थे "ऐ अल्लाह उ़मर बिन ख़त्ताब के ज़रिये या अ़मर बिन हिशाम के ज़रिये दीन को इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमा" अल्लाह के महबूब की दुआ़ तेरे हक़ में क़ुबूल हो गई, आओ मैं आपको लेकर चलता हूं, चुनांचे दोनों हज़रात दारे अर्क़म में आते हैं, नबी अ़लै० कुन्डी लगाये बैठे हैं और मुसलमानों को दीनी तअ़लीम दे रहें हैं, जब दस्तक दी तो एक सहाबी ने दरवाज़े के सूराख़ में से देखा कहा ऐ अल्लाह के महबूब उ़मर खड़े हुए हैं, हाथ में नंगी तलवार है अब पता नहीं क्या इरादा है, हज़रत हमज़ा रज़ि० आगे बढ़े और फ़रमाने लगे खोल दो दरवाज़ा अगर नेक इरादे से आये हैं उनका आना मुबारक और अगर कोई दूसरा इरादा वह लाये हैं तो उनकी तलवार होगी और उ़मर की गर्दन होगी, इस जगह लोग देखेंगे कि मैं उनके साथ क्या सुलूक करता हूं, चुनांचे दरवाज़ा खोला, मगर उ़मर के तो अन्दाज़ बदले हुए थे, वह जो क़त्ल करने की नीयत से चले थे ख़ुद क़त्ल हो चुके थे, उनका दिल तो उस वक़्त अल्लाह के महबूब की गुलामी में आ चुका था, अदब के साथ आकर बैठते हैं कहते हैं मैं तो आपका ख़ादिम बनने के लिये हाज़िर हुआ हूं, तो नबी अ़लै० ने अल्लाहु अकबर के अलफ़ाज़ कहे इसको

सुनकर मुसलमानों ने भी तकबीर का नारा बुलन्द किया यह दीने इस्लाम में सबसे पहला तकबीर का नअ़रा था, जो लगाया गया, इनसे पहले हज़रत हमज़ा रज़ि० मुसलमान हुए उनका नम्बर उन्तालिसवां (39) था, हज़रत उ़मर रज़ि० मुसलमान हुए इनका नम्बर चालिसवां था, थोड़ी देर के बाद नमाज़ का वक़्त हुआ वहीं नमाज़ पढ़ने लगे, अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब यहां क्यों नमाज़ पढ़ते हो अब तो उ़मर मुसलमान हो चुका, आइये मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ेंगे, चुनांचे मस्जिद में तश्रीफ़ ले गये, ऐलान किया "ऐ कुरैशे मक्का! अगर तुम में से कोई चाहे कि अपनी बीवी को बेवा बनवाए और बच्चों को यतीम करवाये तो उसे चाहिये कि उ़मर के मुक़ाबले में आ जाये, हम अब यहां अल्लाह की इ़बादत किया करेंगे" (सुब्हानल्लाह) अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम को इस सपूत के ज़रिये से इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमाई मगर इस सपूत को जो ईमान क़ी नेमत मिली उसके पीछे उनकी बहन फ़ातिमा का किर्दार नज़र आता है, लिहाज़ा एक और कामयाब हस्ती के पीछे एक औ़रत का किर्दार एक बहन की शक्ल में नज़र आता है, और इस तरह की कितनी ही मिसालें हैं।

मिसाल 4 :– हज़रत इ़क्रिमा रज़ि० बड़े नामवर जरनैल गुज़रे हैं जिनके बारे में आता है कि जब मक्का फ़तह हुआ तो उनको पक्का यक़ीन हो गया था कि इस्लाम के ख़िलाफ़ इतनी साज़िशें की हैं, अल्लाह के महबूब को इतनी तक्लीफ़ें पहुंचाई हैं आज तो मुझे ज़रूर क़त्ल करने का हुक्म दे दिया जायेगा, चुनांचे यह वहां से भाग कर कहीं दूर चल पड़े उनकी बीवी अगले दिन मुसलमान हुई उन्होंने नबी अ़लै० से अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब! मेरे शौहर को अमन अ़ता कर दीजिए, ताकि वह इस्लाम क़ुबूल कर सकें, महबूब ने अमन दे दिया, उनकी बीवी उनके पीछे चली यहां तककि रास्ते में एक जगह दरिया था किताबों में लिखा है इ़क्रिमा रज़ि० कश्ती के अन्दर बैठे दरिया पार करके आगे जाना चाहते थे, उनकी बीवी ने भी एक कश्ती ली और तेज़ी के साथ चलकर दरया के दरमियान में कश्ती उनके सामने लाई और अपने शौहर से कहा, कहां जाते हो? वापस चलिये

मक्का में ज़िन्दगी गुज़ारेंगे, शौहर ने कहा मुझे क़त्ल कर दिया जायेगा, फ़रमाने लगीं नहीं, मैं तुम्हारे लिये अमन ले चुकी हूं, चुनांचे अपने शौहर को लेकर वापस आती हैं, और फिर शौहर भी इस्लाम क़ुबूल करते हैं, और अल्लाह तआला फिर उनको इस्लाम का एक बड़ा जरनैल बनाते हैं, यहां भी एक और कामयाब मर्द के पीछे आपको एक औरत का किर्दार नज़र आयेगा, एक बीवी की हैसियत से इस क़िस्म की और कितनी ही मिसालें हैं सहाबा किराम की ज़िन्दगियों में भी और उनके बाद भी।

मिसाल 5 :– इमाम मालिक रह० के बारे मे किताबों में लिखा है कि अल्लाह तआला ने उनको इमामे दारुल हिजरत बनाया था, मदीना तय्यबा के अन्दर मुक़ीम थे, उनके बारे में आता है कि जब मस्जिदे नबवी सल्ल० में बैठकर वह तालिब इल्मों से हदीसे पाक सुनते थे उनकी बेटियां जो हदीस की आलिमा थीं, हाफ़िज़ा थीं, पर्दे के पीछे बैठकर वह भी इस सबक़ में शिर्कत करती थीं, कभी इबारत को पढ़ते हुए अगर कोई मर्द ग़लती कर जाता तो यह बच्चियां एक लकड़ी के ऊपर लकड़ी मार कर आवाज़ पैदा करतीं इस आवाज़ से इमाम मालिक रह० को पता चल जाता कि इबारत पढ़ने वाले ने ग़लती की है तो कई मर्तबा आप मुतवज्जह हो जाते तो इससे मालूम हुआ कि एक और कामयाब मर्द के पीछे आपको औरत का किर्दार नज़र आयेगा, उनकी बेटियों की हैसियत से, जो उनकी तअलीम में उनकी मुआविना बन रही हैं, सुब्हानल्लाह इस क़िस्म की सैंकड़ों मिसालें आपको तारीख़े इस्लाम में मिल जायेंगी तो इसलिये इस आजिज़ ने यह बात कही कि हर कामयाब शख़्सियत के पीछे आपको औरत का किर्दार नज़र आयेगा, कभी मां की हैसियत से कभी बीवी की हैसियत से, कभी बहन की हैसियत से और कभी बेटी की हैसियत से इससे आगे अगर चलें तो इस उम्मत के औलिया की मिसालें तो बहुत ज़्यादा हैं।

मिसाल 6 :– इमाम ग़ज़ाली रह० को अल्लाह तआला ने दीन की इतनी बड़ी शख़्सियत बनाया उनकी ज़िन्दगी को आप देखिये उनके

पीछे उनकी मां का किर्दार नज़र आयेगा।

मुहम्मद ग़ज़ाली और अहमद ग़ज़ाली दो भाई थे यह अपने लड़कपन के ज़माने में यतीम हो गये थे, इन दोनों की तरबियत उनकी वालिदा ने की उनके बारे में एक अजीब बात लिखी है कि मां उनकी इतनी अच्छी तरबियत करने वाली थीं कि वह उनको नेकी पर लाईं यहां तककि आलिम बन गये, मगर दोनों भाईयों की तबीअतों में फ़र्क़ था, इमाम ग़ज़ाली अपने वक़्त के बड़े वाइज़ और ख़तीब थे और मस्जिद में नमाज़ पढ़ाते थे, उनके भाई भी आलिम थे और नेक भी थे, लेकिन वह मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के बजाये अपनी अलग नमाज़ पढ़ लिया करते थे, तो एक मर्तबा इमाम ग़ज़ाली रह० ने अपनी वालिदा से कहा अम्मी! लोग मुझपर ऐतिराज़ करते हैं कि तू इतना बड़ा ख़तीब और वाइज़ भी और मस्जिद का इमाम है, मगर तेरा भाई तेरे पीछे नमाज़ नहीं पढ़ता, अम्मी! आप भाई से कहिये कि वह मेरे पीछे नमाज़ पढ़ा करे मां ने बुला कर नसीहत की, चुनांचे अगली नमाज़ का वक़्त आया इमाम ग़ज़ाली रह० नमाज़ पढ़ाने लगे, और उनके भाई ने पीछे नीयत बान्ध ली, लेकिल अजीब बात है कि जब एक रक्अत पढ़ने के बाद दूसरी रक्अत शुरू हुई तो उनके भाई ने नमाज़ तोड़ दी और जमाअत से बाहर निकल आये, अब जब इमाम ग़ज़ाली रह०. ने नमाज़ मुकम्मल की उनको बड़ी सुबकी महसूस हुई वह बहुत ज़्यादा परेशान नज़र आये लिहाज़ा मग़मूम दिल के साथ घर वापस लौटे, मां ने पूछा बेटा बड़े परेशान नज़र आते हो, कहने लगे अम्मी भाई न जाता तो ज़्यादा बेहतर रहता, यह गया और एक रक्अत पढ़ने के बाद दूसरी रक्अत में वापस आ गया, और उसने आकर अलग नमाज़ पढ़ी तो मां ने उसको बुलाया और कहा बेटा तुमने ऐसा क्यों किया? छोटा भाई कहने लगा अम्मी मैं उनके पीछे नमाज़ पढ़ने लगा, पहली रक्अत तो उन्होंने ठीक पढ़ाई, मगर दूसरी रक्अत में अल्लाह की तरफ़ ध्यान के बजाये उनका ध्यान किसी और जगह था, इसलिये मैंने उनके पीछे नमाज़ छोड़ दी और आकर अलग पढ़ली।

मां ने पूछा इमाम ग़ज़ाली से कि क्या बात है? कहने लगे कि अम्मी बिल्कुल ठीक बात है, मैं नमाज़ से पहले फ़िक़ा की एक किताब पढ़ रहा था, और निफ़ास के कुछ मसाइल थे जिनपर ग़ौर व ख़ौज़ कर रहा था जब नमाज़ शुरू हुई पहली रक्अत मेरी तवज्जुह इलल्लाह में गुज़री, लेकिन दूसरी रक्अत में वही निफ़ास के मसाइल मेरे ज़हन में आने लग गये, इनमें थोड़ी देर के लिये ज़हन चला गया, इसलिये मुझसे यह ग़लती हुई तो मां ने उस वक़्त ठन्डी सांस ली, और कहा अफ़्सोस कि तुम दोनों में से कोई भी मेरे काम का न बना, इस जवाब को जब सुना दोनों भाई परेशान हुए, इमाम ग़ज़ाली रह० ने तो माफ़ी मांग ली, अम्मी मुझसे ग़लती हुई मुझे ऐसा नहीं करना चाहिये था, मगर दूसरा भाई पूछने लगा अम्मी मुझे तो कश्फ़ हुआ था इस कश्फ़ की वजह से मैंने नमाज़ तोड़ी तो मैं आपके काम का क्यों न बना? तो मां ने जवाब दिया कि "तुम में से एक तो निफ़ास के मसाइल खड़ा सोच रहा था और दूसरा पीछे खड़ा उसके दिल को देख रहा था, तुम दोनों में से अल्लाह की तरफ़ तो एक भी मुतवज्जह न था, लिहाज़ा तुम दोनों मेरे काम के न बने।"

सोचने की बात है जब मां ऐसी हो और तसव्वुफ़ के इतने बारीक मसाइल बच्चों को बताने वाली हो तो फिर बच्चे बड़े होकर इमाम ग़ज़ाली क्यों न बनेंगे, तो फिर एक और कामयाब मर्द के पीछे आपको एक औरत का किर्दार मां की हैसियत से नज़र आयेगा।

मिसाल 7 :– इसी तरह शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह० लड़कपन में तअलीम हासिल करने चले हैं, वालिदा उनके कपड़ों में कुछ पैसे सी देती हैं, और नसीहत कर देती हैं, बेटे हमेशा सच बोलना, चुनांचे रास्ते में डाकुओं ने लूट लिया किसी ने पूछा तुम्हारे पास माल है? उन्होंने सच सच बता दिया, उसने सरदार को बताया तो सरदार ने पास बुलाकर कहा तूने झूठ क्यों नहीं बोला? न तुझे जान की फ़िक्र न माल की फ़िक्र, कहने लगे मेरी अम्मी ने कहा था बेटा सच बोलना और मैंने उनसे वादा कर लिया था, मुझे जान की परवाह न थी मुझे अपने कौल का पास रखना था, डाकुओं के दिल में यह बात घर कर

गई कि जब एक बच्चा मां से किये हुए अ़हद का इतना पास रखता है तो हमने भी तो कलिमा पढ़के अपने रब से अ़हद किया है कि हम उसका पास क्यों न करें, चुनांचे वह अल्लाह से तौबा करते हैं और इसके बाद उनकी ज़िन्दगी में नेकोकारी आ जाती है, यह बच्चा आगे चलकर शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी बना तो सोचिये एक और कामयाब मर्द के पीछे आपको औ़रत का किर्दार मां की शक्ल में नज़र आयेगा।

मिसाल 8 :– इमाम बायज़ीद बुस्तामी रह० के बारे में आता है कि जुनैद बग़दादी रह० का क़ौल है कि जिस तरह जिबरईल अ़लै० को अल्लाह तआ़ला ने फ़रिश्तों के अन्दर इम्तियाज़ी शान अ़ता फ़रमाई है इसी तरह बायज़ीद बुस्तामी रह० को अल्लाह तआ़ला ने औलिया में इम्तियाज़ी शान अ़ता फ़रमाई है और यह बात करने वाले भी जुनैद बग़दादी हैं, यही बायज़ीद बुस्तामी रह० जब बचपन में यतीम हो गये मां ने उनको मदरसे में दाख़िल कर दिया, क़ारी साहब से कहा कि बच्चे को अपने पास रखना, ज़्यादा घर आने की आ़दत न पड़े ऐसा न हो कि यह इ़ल्म से महरूम हो जाये, चुनांचे ये कई दिन क़ारी साहब के पास रहे एक दिन उदास हुए दिल चाहा कि अम्मी से मिल आऊँ क़ारी साहब से इजाज़त मांगी, उन्होंने शर्त लगादी, तुम अपना सक़क़ याद करके सुनाओ तब इजाज़त मिलेगी, सबक़ भी बहुत ज़्यादा बता दिया मगर बच्चा ज़हीन था उसने जल्दी से वह सबक़ याद करके सुना दिया इजाज़त मिल गई, यह अपने घर वापस आये, दरवाज़े पर आकर दस्तक दी, मां वुज़ू कर रही थी वह पहचान गई मेरे बेटे की तरह दस्तक मालूम होती है, चुनांचे दरवाज़े के क़रीब आकर पूछा "मन दक़्क़ल बाब" किसने दरवाज़े को खटखटाया? जवाब दिया बायज़ीद हूं, तो मां कहती है एक मेरा भी बायज़ीद था, मैंने तो उसे अल्लाह के लिये वक़्फ़ कर दिया, मदरसे में डाल दिया, तू कौन बायज़ीद है? जो अब मेरा दरवाज़ा खटखटा रहा है, तो जब उन्होंने यह अलफ़ाज़ सुने समझ गये, अम्मी चाहती हैं मेरा दरवाज़ा न खटखटाये, अब बायज़ीद मदरसे में अल्लाह का दरवाज़ा खटखटाये

और उसीसे तअ़ल्लुक़ इस्तवार करे, चुनांचे वापस आये मदरसे में रहे और उस वक़्त निकले जब आ़लिम बा–अ़मल बन चुके थे, और अल्लाह ने उनको बायज़ीद बना दिया था, तो एक और कामयाब शख़्सियत के पीछे आपको एक औ़रत का किर्दार एक मां की शक्ल में नज़र आयेगा।

मिसाल 9 :– हज़रत ख़ुन्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के बारे में आता है कि उनके चार बेटे थे, वह जब खाने पर बैठतीं तो बच्चों से कहतीं मेरे बेटो! तुम उस मां के बेटे हो जिसने न मामूं को रुसवा किया न तुम्हारे बाप के साथ ख़्यानत की, जब बार बार यह कहतीं तो एक बार बच्चों ने कहा अम्मी आख़िर इसका क्या मतलब है? तो फ़रमातीं मेरे बेटो! जब में कुंवारी थी मुझसे कोई ऐसी ग़लती न हुई जिससे तुम्हारे मामूं की रुसवाई होती और जब शादी हुई तो मैंने तुम्हारे बाप के साथ ख़्यानत नहीं की, मैं इतनी ग़ैरत और बाहया ज़िन्दगी गुज़ारने वाली औ़रत हूं, बच्चे पूछते! अम्मी आप क्या चाहती हैं? तो मां कहती! बेटो जब तुम जवान हो जाओगे तुम सब अल्लाह के रास्ते मे जिहाद करना और मेरे बेटो तुम शहीद हो जाना और मैं आकर तुम्हें देखूंगी, अगर तुम्हारे सीनों पर तलवार के ज़ख़्म होंगे मैं तुमसे राज़ी हो जाऊँगी अगर तुम्हारी पीठ पर ज़ख़्म होंगे तो मैं तुम्हें कभी माफ़ नहीं करूंगी, बेटे पूछते अम्मी आप क्यों कहती हैं शहीद हो जाना तब मां समझातीं कि मेरे बेटो! इसलिये कि जब क़यामत के दिन अ़द्ल क़ायम होगा और अ़ल्लाह तआ़ला पूछेंगे शहीदों की मांयें कहां हैं? मेरे बेटो! उस वक़्त मेरे परवर्दिगार के सामने मुझे सरख़रूई नसीब होगी कि मैं भी चार शहीदों की मां हूं, सोचने की बात है ऐसे शुहदा के पीछे आपको एक औ़रत की किर्दार मां की शक्ल में नज़र आयेगा।

मिसाल 10 :– इब्ने सीरीन रह० जिन्होंने तअ़बीरुर्रुया किताब लिखी उनका मर्तबा अल्लाह ने बहुत बड़ा बनाया, आज भी हर आ़लिम के पास वही किताब होती है और ख़्वाबों की ताबीर उसी में से बताई जाती है उनकी बहन थीं "हफसा" यह सारी क़िराअतों में इतनी

माहिर थीं इतनी अच्छी क़ारिया थीं (सुब्हानल्लाह) उनके हालात में लिखा हुआ है कि 32/ साल अपनी घर की मस्जिद में गुज़ार दिये सिर्फ़ पाकी वग़ैरा के लिये मस्जिद से बाहर निकलतीं बाक़ी सारा वक़्त इसी मस्जिद में बैठकर औरतों को और छोटे बच्चों को दीन की तअलीम देतीं, इतनी बड़ी क़ारिया थीं कि मुहम्मद इब्ने सीरीन को ख़ुद अगर कुरआन के अलफ़ाज़ में किसी लफ़्ज के तलफ़्फ़ुज़ के अन्दर मुश्किल पेश आती तो किसी बच्चे को भेजकर कहते कि जाओ देखो हफ़सा इस लफ़्ज़ को किस तरह अदा करती है, फिर उस लफ़्ज़ को तुम भी वैसे ही अदा कर लेना, चुनांचे उनके बारे में बअ़ज़ ताबेईन ने लिखा है कि हमने इतनी इबादत गुज़ार और इतनी इल्म वाली औरत कहीं नहीं देखी यहां तक कि बाज़ ने किताबों में लिखा कि हमने ऐसी औरत इल्म वाली देखी कि जिनको अगर हम हसन बसरी पर भी चाहें तो फ़ज़ीलत दे सकते हैं, किसी ने कहा सईद बिन मुसय्यब से भी ज़्यादा तो जवाब दिया हां, किसी ने उनकी बांदी से पूछा अपनी मालिका के बारे में क्या कहती हो?

उसने बड़ी तारीफ़ें कीं और कहने लगी बड़ा अच्छा कुरआन शरीफ पढ़ती हैं हर वक़्त इबादत करती रहती हैं, हर काम शरीअ़त के मुताबिक करती हैं, लेकिन पता नहीं उनसे कौनसा गुनाह हो गया है जो इतना बड़ा है कि इशा से नमाज की नीयत बान्धकर रोना शुरू करती हैं और फ़जर तक खड़ी रोती रहती हैं (वह बेचारी बांदी यह समझी कि शायद यह किसी बड़े गुनाह की वजह से सारी रात रो रो कर मआफ़ियां मांगती हैं) तो इससे अन्दाज़ा लगाइये उनकी रातें कैसे गुजरा करती थीं और इससे आप अन्दाज़ा लगाइये कि हफ़सा बिन्ते सीरीन ने दीन की ख़िदमत कितनी ज़्यादा की, चुनांचे इस क़िस्म की और भी कितनी मिसालें हैं तो बात यह चल रही थी कि हर कामयाब शख़्सियत (मर्द) के पीछे आपको औरत का किर्दार नज़र आयेगा, किसी न किसी शक्ल में मां की शक्ल में, बीवी की शक्ल में या बेटी की शक्ल में।

मिसाल 11 :– चुनांचे ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी रह० ने बंगाल का

सफ़र किया, आपके सफ़र में कई लोग आपके हाथ पर मुसलमान हुए, कई लोगों ने तौबा पर बैयअत की जब आप घर तशरीफ़ लाये तो चेहरे पर ख़ुशी के आसार थे, मां ने पूछा मुईनुद्दीन बड़े ख़ुश नज़र आते हो? कहने लगे कि मां! इसलिये कि सात लाख हिन्दुवों ने मेरे हाथ पर इस्लाम कुबूल किया, और सत्तर लाख मुसलमानों ने मेरे हाथ पर बैते तौबा की, इसलिये आज मेरा दिल बहुत ख़ुश है, मां ने कहा बेटा यंह तेरा कमाल नहीं है यह तो मेरा कमाल है, फ़रमाया मगर मा बतायें तो सही कैसे? मां ने जवाब दिया कि बेटा जब तुम पैदा हुए तो मैंने कभी भी ज़िन्दगी में बिला वुज़ू दूध नहीं पिलाया, आज उसकी यह बरकत है कि तुम्हारे हाथों पर अल्लाह तआला ने लाखों लोगों को कलिमा पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दी, तो एक और कामयाब शख़्सियत के पीछे आपको एक औरत का किर्दार नज़र आयेगा, मां की हैसियत से।

मिसाल 12 :— हज़रत ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रह० आज भी कुतुबमीनार के पास लेटे हुए हैं, उनके बारे में भी मशहूर वाक़िआ है, उनके नाम के साथ कुतुबुद्दीन बख़्तियार "काकी" का लफ़्ज़ लगाया जाता है, यह हिन्दी का लफ़्ज़ है इसका मअ़ना है रोटी, वाक़िआ यह हुआ कि जब यह पैदा हुए तो उनके वालिदैन बैठे हुए आपस में मशवरा कर रहे थे हमारा बेटा नेक कैसे बने? अच्छा कैसे बने? चुनांचे उनकी मां ने कहा मेरे ज़ेहन में एक तज्वीज़ है कल से मैं इस तज्वीज़ पर अ़मल करूंगी, अगले दिन जब बच्चा मदरसे में चला गया, मां ने खाना बनाया और अलमारी में कहीं छुपाकर रख दिया, बच्चा आया कहने लगा अम्मी भूख लगी है, मुझे खाना दे दीजिए, मां ने कहा बेटा हमें भी तो खाना अल्लाह तआ़ला देते हैं, वही रज़्ज़ाक़ हैं वही रिज़्क़ पहुंचाते हैं, वही मालिक व ख़ालिक़ हैं, मां ने अल्लाह तआला का तआ़रुफ़ करवाया और कहा कि बेटा तुम्हारा रिज़्क़ भी वही भेजते हैं, तुम अल्लाह से मांगो! बेटे ने कहा अम्मी मैं कैसे मांगूं? मां ने कहा बेटा मुसल्ला बिछाओ चुनांचे मुसल्ला बिछा दिया, बेटा अत्तहियात की शक्ल में बैठ गया, छोटे छोटे मअ़सूम हाथ

उठाये मां ने कहा बेटा दुआ करो, बेटा दुआ कर रहा है कि अल्लाह मैं मदरसे से आया हूं भूख लगी है, अल्लाह मुझे खाना दीजिए बेटे ने थोड़ी देर इस तरह आजिज़ी की पूछने लगा अम्मी अब क्या करूं? मां ने कहा बेटा तुम ढूंडो अल्लाह ने खाना भेज दिया होगा, थोड़ी देर कमरे में ढूंडा बिल-आख़िर अलमारी में खाना मिल गया, बेटे ने खाना खा लिया, अब बेटे के दिल में एक तजस्सुस पैदा हुआ वह रोज़ अल्लाह तआला की बातें पूछता, अम्मी वह सबको खाना देते हैं परिन्दों को भी, हैवानों को भी, पता नहीं उनके पास कितने ख़ज़ाने हैं? वह खत्म नहीं होते, वह अल्लाह तआला के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा मालूमात हासिल करने की कोशिश करता, मां का दिल खुश होता कि बेटे के दिल में अल्लाह तआला का तअल्लुक़ बढ़ रहा है, चुनांचे जब बच्चा महसूस करता सबको अल्लाह तआला रिज़्क़ दे रहे हैं तो मोहसिन के साथ मुहब्बत फ़ितरी चीज़ है, बच्चे के दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत पैदा हो गई, वह मुहब्बत से अल्लाह तआला का नाम लेता वह सोने से पहले वालिदा से अल्लाह की बातें पूछता मां खुश होती कि मेरे बेटे के दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत बस रही है, कुछ दिन तक सिलसिला इसी तरह चलता रहा, मगर एक दिन यह हुआ कि मां अपने रिश्तेदारों में किसी तक़रीब में चली गई और वहां जाकर वह वक़्त का ख़्याल न रख सकीं, भूल गई, जब ख़्याल आया तो पता चला कि बच्चे के आने का वक़्त काफ़ी देर हुई गुज़र चुका, मां ने बुरकअ़ लिया और अपने घर की तरफ़ तेज़ क़दमों से चल दीं रास्ते में रो भी रही है, दुआएं भी कर रही है मेरे मालिक मैंने तो अपने बच्चे का यक़ीन बनाने के लिये यह सारा मआमाल किया था, ऐ अल्लाह! अगर आज मेरे बच्चे का यक़ीन टूट गया तो मेरी मेहनत बेकार हो जायेगी, ऐ अल्लाह! पर्दा रख लेना, अल्लाह मेरी मेहनत को बेकार होने से बचा लेना, मां दुआएं करती आ रही है, जब घर पहुंची तो देखती है कि बेटा आराम की नींद सो रहा है, मां ने जल्दी से खाना पकाया और छुपाकर रख दिया फिर आकर बच्चे के गाल का बोसा लिया उसे जगाकर सीने से

लगाया, कहने लगी बेटे आज तो तुझे बहुत भूख लगी होगी, बच्चा हश्शाश बश्शाश बैठ गया, कहने लगा कि अम्मी मुझे तो भूख नहीं लगी, मां ने पूछा वह कैसे? तो बच्चे ने कहा अम्मी जब मैं मदरसे से आया तो मैंने मुसल्ला बिछाया और मैंने दुआ मांगी ऐ अल्लाह भूख लगी हुई है, थका हुआ भी हूं आज तो अम्मी भी घर पर नहीं हैं, अल्लाह मुझे खाना दे दो, अम्मी इसके बाद मैंने कमरे में तलाश किया मुझे एक जगह रोटी पड़ी मिली, अम्मी मैंने उसे खा लिया मगर जो मज़ा मुझे आज आया अम्मी ऐसा मज़ा मुझे ज़िन्दगी में कभी नहीं आया था, सुब्हानल्लाह मायें बच्चों की तरबियत ऐसे किया करती थीं, और अल्लाह तआला उनको फिर कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी बना देते थे, चुनांचे यह मुग़ल बादशाहों के शैख़ बने और अपने वक़्त में लाखों इन्सान उनके मुरीद बने तो एक और कामयाब शख़्सियत के पीछे आपको औरत का किर्दार मां की शक्ल में नज़र आयेगा, यह मिसालें इतनी ज़्यादा हैं कि इन्सान हैरान ही हो जाता है।

औरतें मर्दों से आगे

नबी अलै० की एक बीवी महबूबए महबूबे खुदा सय्यिदा आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा इस उम्मत की आलिमा औरतों में से एक नुमायां हैसियत रखने वाली ख़ातून हैं, इस उम्मत में कुरआन पाक की सबसे पहली हाफ़िज़ा और यह भी अजीब बात है कि चन्द बातें ऐसी हैं कि जिन में औरतें मर्दों से भी बाज़ी ले गईं।

मिसाल के तौर पर इस उम्मत में नबी अलै० को नुबुव्वत की नज़र से देखने का एअज़ाज़ सबसे पहले औरत को मिला चुनांचे ख़दीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा वह ख़ातून हैं जिन्होंने इस उम्मत के मर्द और औरतों में बाज़ी ले ली, और पहली निगाह जो नबी सल्ल० के चेहरे पर पड़ी और जिस इन्सान ने उनको नबी की नज़र से देखा वह ख़दीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा थीं।

औरतों में कुरआन मजीद हिफ़्ज़ करने में सय्यिदा आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वह बाज़ी ले गईं बड़ी फ़क़ीहा थीं, आलिमा थीं,

इब्ने क़य्यिम रह० ने लिखा कि हज़राते सहाबा किराम तो बड़े इल्म वाले थे, मगर उनमें से एक सौ उनचास (149) हज़रात ऐसे थे जो बड़े आलिम समझे जाते थे, उनके क़ौल के सामने फ़क़ीह लोग अपनी राय को छोड़ देते थे, और उनके क़ौल पर अमल कर लिया करते थे, यह साहबे फुनून समझे जाते थे, यह सहाबा किराम थे और इन एक सौ उनचास (149) में से भी चौदह हज़रात ऐसे थे कि जो उनमें इम्तियाज़ी शान रखते थे, यहां तक कि उन चौदह में से किसी एक का क़ौल सामने आता तो बाक़ी फुक़हा भी अपने क़ौल से रुजूअ़ कर लेते थे, और उन चौदह हज़रात के नामों में से एक नाम सय्यिदा आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का है, चुनांचे बड़े बड़े सहाबा कई मसाइल में पर्दे के पीछे बैठकर नबी अ़लै० की इन बीवी मोहतरमा से मसाइल पूछते, और आप उनको तसल्ली बख़्श जवाब देती थीं, अल्लाह तआ़ला ने आपको इतनी इल्मी शान अ़ता फ़रमाई थी, इतनी समझदार थीं, सुब्हानल्लाह कि एक मर्तबा नबी अ़लै० ने इरशाद फ़रमाया कि आयशा! तू मुझे खजूर और मक्खन को मिलाकर खाने से भी ज़्यादा महबूब है, जैसे ही आप सल्ल० ने फ़रमाया तो आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने जवाब दिया ऐ अल्लाह के महबूब आप तो मुझे शहद और मक्खन को मिलाकर खाने से भी ज़्यादा महबूब हैं, नबी अ़लै० मुस्कुराये और फ़रमाया तेरा जवाब मेरे जवाब से ज़्यादा बेहतर है, अल्लाह तआ़ला ने उनको इम्तियाज़ी शान अ़ता की थी इतनी समझदार थीं।

प्यारी मां बेटी का मुकालमा

एक मर्तबा हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़ुहरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के साथ बैठी थीं, अगरचे मां बेटी का रुतबा था, लेकिन उ़मरों में ज़्यादा फ़र्क़ न होने की वजह से आपस में मुहब्बत प्यार और दिल लगी भी करती थीं, हंसी खेल भी कर लेती थीं, तो सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को देखकर मुस्कुराईं आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने पूछा क्या बात

है, कहने लगीं कि मेरे दिल में यह बात आ रही है कि आपके वालिद तो अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० हैं जबकि मेरे वालिद मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० हैं बेटी की इस बात को सुनकर सय्यिदा आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा तड़प उठीं और नबी अलै० की तारीफ़ें शुरू कर दीं, कहने लगीं फ़ातिमा आपने सच कहा हमें ईमान मिला आप सल्ल० के सदक़े में कुरआन मिला, उनके सदक़े में परवर्दिगार की मारिफ़त मिली, उनके सदक़े में इस्लाम मिला, उनके सदक़े में चुनांचे नबी अलै० की इतनी तारीफ़ें कीं कि बहुत ज़्यादा जब बहुत ज़्यादा तारीफ़ें कर चुकीं तो कहने लगीं ऐ फ़ातिमा! मेरे ज़हन में एक बात आ रही है, पूछा कि वह कौनसी? फ़रमाने लगीं कि मेरे दिल में यह बात आ रही है कि फ़ातिमा अगर आपके शौहर अली मुर्तुज़ा हैं तो फिर मेरे शौहर भी तो मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० हैं, अब यह सुनकर फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा चुप हो गईं, हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फिर दूसरी बात कही कि फ़ातिमा! मेरे दिल में एक और बात आ रही है, पूछा कौनसी? फ़रमाने लगीं क़यामत के दिन जब आप उठेंगी तो आपका हाथ अली मुर्तुज़ा के हाथ में होगा, और फ़ातिमा जब मैं उठूंगी तो मेरा हाथ मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० के हाथों में होगा, फिर थोड़ी देर चुप रह कर फ़रमाने लगीं कि फ़ातिमा! मेरे दिल में एक और बात आ रही हैं, पूछा कौनसी? तो फ़रमाने लगीं कि तू ख़ातूने जन्नत है, जन्नती औरतों की सरदार है, तू जन्नत में तख़्त पर बैठेगी तो तेरे तख़्त पर अली मुर्तुज़ा होंगे, मगर फ़ातिमा जब जन्नत में मैं तख़्त पर बैठूंगी तो मेरे तख़्त पर मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० साथ बैठेंगे, अल्लाह तआला ने उनको इतनी समझ अता फ़रमाई थी, इसलिये फ़रमाया करती थीं कि अल्लाह तआला ने मुझको चन्द ऐसी बातें अता कीं हैं जो किसी और बीवी को नहीं मिलीं, सबसे पहली बात यह कि मैं सबसे पहली बीवी हूं जो कुंवारी नबी अलै० के निकाह में आई और जितनी भी आप अलै० की अज़वाज थीं वह या तो बेवा थीं या मुतल्लिक़ा थीं, मैं ही एक थी जो कुंवारी आप सल्ल० के निकाह में आई, चुनांचे सय्यिदा आयशा

सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा नबी सल्ल० की ख़िदमत में आई तो उस वक़्त अभी पूरे तौर पर बालिग़ा नहीं थीं, उमर छोटी थी, तो मुहद्देसीन ने लिखा कि अल्लाह ने उनको यह एअज़ाज बख़्शा कि उनके बुलूग़ के बाद की सबसे पहली नज़र नबी अलै० के चेहरे अक़दस पर पड़ी वह ऐसी हालत में नबी अलै० की ख़िदमत में पहुंचीं, फ़रमाया करती थीं कि ब़दर की रात में नबी अलै० कुछ ढूंड रहे थे, मैंने पूछा ऐ अल्लाह के महबूब! क्या ढूंड रहे हैं, फ़रमाने लगे कि मैं कोई कपड़ा तलाश कर रहा हूं ताकि इस्लाम का झन्डा बनाकर लहरा सकूं, फ़रमाती हैं मेरा एक दुपट्टा था जिसकी ज़मीन सफ़ेद थी और उसके ऊपर काली धारियां थीं, फ़रमाती हैं मैंने वह दुपट्टा आप सल्ल० को पेश कर दिया, नबी अलै० ने मेरे दुपट्टे को अपने हाथों से इस्लाम का झन्डा बनाकर लहराया यह भी एअज़ाज़ अल्लाह ने मुझे नसीब फ़रमाया, फ़रमाती हैं एक दूसरा एअज़ाज़ मुझे यह मिला कि जिबरईल अलै० ने अल्लाह तआला के सलाम मुझे दुनिया में पहुंचाये, और फ़रमाती थीं कि एक एज़ाज़ मुझको यह मिला कि जब मुनाफ़िक़ीन ने मुझ पर बुहतान बांधा तो अल्लाह तआला ने अपने कलामे पाक में मेरी पाकदामनी की गवाही दी, हालांकि इससे पहले यूसुफ़ अलै० पर भी इस तरह तोहमत लगी, बीबी मरयम पर भी तोहमत लगी, मगर अल्लाह तआला ने उन मासूम लोगों की इन तोहमतों को मअसूम ज़बानों से रद्द करवाया, छोटे बच्चों ने इस बात की गवाही दी कि यह पाक लोग हैं, इस तोहमत से बरी हैं, फ़रमाती हैं, लेकिन मुझपर जब तोहमत लगाई गई तो अल्लाह तआला ने छोटे बच्चों से गवाही दिलवाने के बजाये "अलीमुन बिज़ातिस्सुदूरि" ज़ात ने ख़ुद अपने कलामे पाक में मेरी पाकदामनी की गवाही दी "हाज़ा बुहतानुन अज़ीमुन" (पारा 18, सूरे नूर, आयतः 16) यह तो बड़ा बुहतान है, फ़रमाती थीं कि यह एअज़ाज़ भी मुझे मिला, फिर फ़रमाती थीं कि एक एअज़ाज़ मुझे और मिला और वह यह कि नबी अलै० आख़री मर्तबा जब बीमारी के बिस्तर पर थे आपका चेहरा अनवर और सरे मुबारक मेरी गोद में था और मेरी निगाहें आपके चेहरे पर लगी हुई

थीं और आप उस वक़्त अल्लाह के हुज़ूर पेश हो रहे थे तो फ़रमाती हैं कि यह एअज़ाज़ भी मुझ मिला कि आप सल्ल० ने मेरी गोद के अन्दर सर रखकर दुनिया से हमेशा के लिये रुख़्सत हासिल फ़रमाई, सुब्हानल्लाह यह किसी इन्सान की कैसी खुश नसीबी है।

दो ही तो गोदें थीं जिन्हें अल्लाह के नबी सल्ल० ने इ़ज़्ज़त बख़्शी एक सिद्दीक़े अकबर रज़ि० की गोद जिनकी गोद में अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सर रखा और उनको सिद्दीक़ का मक़ाम दे दिया, और एक हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की गोद कि महबूब ने अपनी वफ़ात से पहले इस गोद में सर रखा, अल्लाह ने उनको सिद्दीक़ा का मक़ाम अ़ता फ़रमाया।

हैरान होता हूं और कभी कभी पूछता हूं हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के बारे में कि ऐ उम्मुल मोमिनीन आपको अल्लाह ने यह एअ़ज़ाज़ दिया कि नबी का चेहरा अनवर आपकी आंखों के सामने था, मेरे महबूब का चेहरा तो क़ुरआन की तरह था और आप मुझे एक क़ारिया नज़र आती हैं, जो बैठी हुई इस क़ुरआन को पढ़ रही है इस हाल में नबी अ़लै० ने वफ़ात पाई, फ़रमाया करती थीं कि एक एअ़ज़ाज़ मुझे यह भी मिला कि मेरा ही कमरा था जहां नबी अ़लै० ने आराम फ़रमाया (जो गुन्बदे ख़ज़रा बना) और क़्यामत के दिन इसी कमरे से नबी अ़लै० उठेंगे, और उम्मतियों की शिफ़ाअ़त फ़रमायेंगे, तो अल्लाह तआ़ला ने सय्यिदा आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को बहुत एज़ाज़ दिये चुनांचे बहुत सारी हदीसों की रिवायत सय्यिदा आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाईं, तो उनका इ़ल्मी मर्तबा और इ़ल्मी मक़ाम भी बहुत बड़ा था।

नबी अ़लै० ने फ़रमाया बहुत अच्छा सवाल पूछा

औ़रतों ने दीन का इ़ल्म हासिल करने में भी कमी नहीं की बल्कि नबी अ़लै० की ख़िदमत में एक सहाबिया हाज़िर होती हैं अ़र्ज़ करती हैं कि ऐ अल्लाह के महबूब मर्द लोग तो आमाल में हमसे आगे निकल गये, यह आपके साथ जिहाद में हाज़िर होते हैं, जनाज़ा की

नमाज़ पढ़ते हैं मस्जिद में पांच वक़्त नमाज़ें पढ़ते हैं, और हम घरों में महबूस रहती हैं बच्चों की तरबियत करती हैं घर के काम काज का ख़्याल रखती हैं तो हम वह नेकियां नहीं कर सकतीं जो मर्द कर सकते हैं?

आप सल्ल० ने फ़रमाया सवाल पूछने वाली ने बहुत अच्छा सवाल पूछा फिर इसके बाद आपने फ़रमाया कि बात यह है कि जो औरत अपने बच्चे की वजह से रात को अपने बिस्तर पर जागती है, अल्लाह तआ़ला उस मर्द के बराबर सवाब अ़ता फ़रमाते हैं जो सारी रात जागकर दुशमन की सरहद पर पहरा दिया करता है, और जो औरत अपने घर में नमाज़ पढ़ लेती हैं, अल्लाह तआ़ला उस मर्द के बराबर सवाब अ़ता फ़रमाते हैं जो मस्जिद में जाकर तकबीरे ऊला के साथ नमाज़ अदा करता है (सुब्हानल्लाह) औरतें भी ऐसे प्यारे मसाइल नबी अ़लै० से पूछा करती थीं कि नबी अ़लै० फ़रमाया करते थे सवाल पूछने वाली ने अच्छा सवाल पूछा।

तलबे इल्म में औरतों का शौक़

चुनांचे एक सहाबिया आईं और कहने लगीं ऐ अल्लाह के नबी सल्ल०! मर्द लोग आपकी मजलिसों में बैठकर इल्म हासिल करते हैं और हम औरतें यह मौक़ा नहीं पा सकतीं आप हमारे लिये भी कोई वक़्त मुतअ़य्यन कर दीजिए हम आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो जाया करेंगी, चुनांचे किताबों में लिखा है नबी अ़लै० ने बुध का दिन मुतअ़य्यन कर दिया था, औरतें जमा हो जती थीं, नबी अ़लै० पर्दे में उनको दीन की तअ़लीम दे दिया करते थे, चुनांचे औरतों का इल्मी मर्तबा इतना बढ़ गया था कि वह मर्दों से पीछे नहीं थीं बल्कि मर्दों के बराबर का अल्लाह ने उनको इल्म अ़ता कर दिया था।

अ़हदे सहाबा में औरतों का इल्मी मेअ़यार

इसके सबूत के लिये आपको सिर्फ़ दो बातें बता देता हूं हज़रत उ़मर रज़ि० का ज़माना है, चुनांचे आपने एक मर्तबा यह महसूस

किया आज कल लोग हक़्क़े मेहर बहुत ज़्यादा बान्ध देते हैं; ग़रीब लोगों की हिम्मत नहीं होती इसलिये उनको परेशानी होती है, आपने चाहा मैं एक रक़म मुतअ़य्यन कर दूं ताकि किसी को परेशानी न उठानी पड़े, लिहाज़ा ग़रीबों को मद्दे नज़र रखते हुए आप मिम्बर पर खड़े हुए ऐलान फ़रमाया कि मैं चाहता हूं इन्तिज़ामी कामों को सामने रखते हुए हक़्क़े मेहर की एक मुनासिब मिक़दार मुतअ़य्यन कर दी जाये, ताकि ग़रीबों के दिल न टूटें, उनको परेशानी न उठानी पड़े आप बयान करके नीचे उतरे इतने में औ़रतों की तरफ़ से एक सहाबिया पर्दे में आईं और आकर कहने लगीं अमीरुल मोमिनीन यह आपने क़ुरआन व हदीस से फ़ैसला दिया है या अपनी इन्तिज़ामी चीज़ को सामने रखकर फ़ैसला दिया है? आपने फ़रमाया मैंने इन्तिज़ामी कामों को सामने रखकर फ़ैसला किया, वह कहने लगीं आप कैसे यह बात कर सकते हैं जबकि अल्लाह ने क़ुरआने मजीद में यह वाज़ेह कर दिया, उ़मर रज़ि० हैरान होकर पूछते हैं कैसे वाज़ेह कर दिया? उन्होंने आगे कहा अल्लाह तआ़ला फरमाते हैं अगर तुम में से कोई बीवी को "इहदाहुन्ना क़िन्तारन" (पारा 4, सूरे निसा, आयतः 20) और तुम इस एक को अन्बार का अन्बार माल दे चुके हो, तो जब अल्लाह तआ़ला ने हक़्क़े मेहर की मिक़दार के बारे में सोने चांदी के ढेर का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया तो अब उ़मर को यह कैसे इख़्तियार है कि वह थोड़ी मिक़दार मुतअ़य्यन करे, अमीरुल मोमिनीन उल्टे क़दमों वापस आते हैं, मिम्बर पर खड़े होकर फिर लोगों से कहते हैं कि उ़मर से ग़लती हो गई और एक बहन ने एहसान किया कि भाई की ग़लती की निशान–दही कर दी, लिहाज़ा उस वक़्त औ़रतों का इतना बड़ा इ़ल्मी मेअ़यार था उस वक़्त बात चीत भी इ़ल्मी हुआ करती थी।

एक बुढ़िया की इ़ल्मी धमकी

चुनांचे हज्जाज बिन यूसुफ़ के बारे में आता है उसने एक बुढ़िया के बच्चे पर बहुत ज़ुल्म किया बुढ़िया आई उसने हज्जाज बिन

यूसुफ़ को डांटा और उससे कहा हज्जाज तू जुल्म से बाज़ आ जा वरना अल्लाह पाक तुझे इसी तरह मिटा देंगे जिस तरह उसने कुरआने पाक के पहले पन्द्रह पारों में से कल्ला का लफ़्ज़ उड़ा कर रख दिया है, हज्जाज तो खुद भी हाफ़िज़ था, क़ारी था, बल्कि मुक़री था, और अ़जीब बात कि तबीअ़त में सख़्ती बहुत ज़्यादा थी, उसने फ़ौरन कुरआन पर नज़र डाली, पहले पन्द्रह पारों में कहीं कल्ला नज़र न आया कहने लगा अगर कहीं कल्ला का लफ़्ज़ मैं पा लेता तो तुझे भी सज़ा दिलवाता तो सोचने की बात है कि आ़म बोल चाल में भी औ़रतें ऐसी इ़ल्मी बात करती थीं, जो इ़ल्मी लतीफ़ों और इ़ल्मी मआ़रिफ़ हुआ करते थे, तो उन औ़रतों का इ़ल्मी पाया इतना ज़्यादा बुलन्द हुआ करता था। (सुब्हानल्लाह)

औ़रत जो कुरआनी आयतों से बात करती थी

अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० ने एक औ़रत का वाकि़आ बयान किया, जो कुरआने करीम की आयतों से बात का जवाब दिया करती थीं, इस वाकि़आ की तफ़्सील बयान करने से बात ज़्यादा लम्बी हो जायेगी ताहम फ़रमाते हैं कि मैं एक जगह सोया हुआ था मैंने देखा कोई सवारी पर सवार मेरे पास आया मैंने पूछा तू कौन है?

उधर से जवाब मिलाः "सलामुन क़ौलन मिन रब्बिर्रहीमि"

औ़रत की आवाज़ थी जब इन अलफ़ाज़ में सलाम किया मैंने पूछा अम्मां किधर से आ रही हो, उधर से जवाब मिलाः "व अतिम्मुल हज्जा् वल– उ़मरता् लिल्लाहि"

मैं पहचान गया उ़मरा करके आ रही हैं, मैंने पूछा यहां कैसे हो? कहने लगीः "मन युज़लिलिल्लाहु फ़ला हादिया् लहु"

मैं समझ गया यह रास्ते गुम कर गई हैं, मैंने पूछा अम्मां जान कहां जाना चाहती हो?

कहने लगीः "उद्ख़ुलुल मिस्रा् इन्शा–अल्लाहु आमिनीन"

मैं समझ गया यह शहर जाना चाहती हैं, चुनांचे मैंने उनकी सवारी की महार पकड़ली चलना शुरू कर दिया।

दरमियान में मैंने पूछना चाहा, तुम्हारी ज़िन्दगी कैसी है, शौहर है या नहीं?

मैंने यह बात पूछी तो उन्होंने आगे आयत पढ़ी: "ला तक़्फ़ु मा लैसा् लका् बिही इल्मुन इन्नस्समीआ् वल–बसरा् वल–फ़ुवादा् कुल्लु ऊलाइका् काना् अ़न्हु मस्ऊलन"

जब उन्होंने यह आयत पढ़ी मैं समझ गया कि यह इस बारे में मुझसे कोई बात करना नहीं चाहती, मैंने कुछ अ़रबी के अशआ़र शुरू कर दिये फ़रमाते हैं उसने आगे से कुरआन पढ़ा:

"फ़क़्रऊ मा तयस्सरा् मिनल–कुरआनि" (अगर तुमने कुछ पढ़ना ही है तो कुरआन पढ़ो) कहने लगे मैं कुरआन पढ़ता रहा, जब शहर आ गया मैंने पूछा यहां कौन है?

कहने लगी: "अलमालु वल–बनूनु ज़ीनतुल हयातिद्दुनिया"

मैं समझ गया उनके बच्चे हैं पूछा उनका नाम क्या है?

फ़रमाने लगी: "इबराहीमा् व इस्माईला् व इस्हाक़ा्"

मैं समझ गया उनके तीन बच्चे हैं, और यह उनके नाम हैं जब दरवाज़े पर जाकर आवाज़ लगाई तो तीन ख़ूबसूरत नौजवान जिनके चेहरे पर इतना नूर था इतनी जाज़िबियत थी कि बन्दे की निगाह हटती नहीं थी, हीरे और मोती की तरह चमकते चेहरो वाले वह नौजवान आये उनके चेहरों पर तक़वा के आसार थे, नेकी के आसार थे, फ़रमाते हैं मैं तो उनके हुस्न व जमाल को देखता रह गया, वह आये अपनी वालिदा से मिले, वह ख़ुश हुए, अम्मी हम तो परेशान थे, आप कहां रह गईं, अब उनकी मां ने कहा "व युत्इमुनत्तआमा्"

जब उन्होंने यह अल्फ़ाज़ कहे तो बच्चों ने फ़ौरन दस्तरख़्वान बिछा दिया, खाने के लिए जो कुछ उनके पास था निकाल कर रख दिया और कहा आप खा लीजिए, मैंने इन्कार किया तो कहने लगीं : "इन्नमा नुतइमुकुम लिवजहिल्लाह।"

मैं समझ गया अल्लाह की रज़ा के लिये कुछ खिलाना चाहती हैं, मैंने खा लिया खाने के बाद मैं एक तरफ़ को जाने लगा तो उन्होंने मुझे अलविदाई बात कही: "इन्ना् हाज़ा काना् लकुम जज़ाअन

व काना सअयुकुम मश्कूरन"

मैं बड़ा हैरान मैंने उनके बच्चे से पूछा यह आपकी मां का अजीब मुआमला है जब से यह मुझे मिलीं तब से हर बात के जवाब में कुरआने पाक की आयत पढ़ती हैं, उन्होंने कहा कि हमारी वालिदा कुरआने पाक की हाफ़िज़ा हैं, हदीस की आलिमा हैं, उनके दिल में अल्लाह का ख़ौफ़ इतना आ चुका है यह सोचती हैं क्यामत के दिन जब मेरे नाम–ए–आमाल को खोला जायेगा कहीं ऐसा न हो उसमें उल्टी सीधी गुफ़्तुगू दर्ज हो, पिछले बीस साल से उनकी ज़बान से कुरआने पाक की आयत के सिवा कुछ नहीं निकला। (सुब्हानल्लाह)

ऐसी ऐसी औरतें क्यामत के दिन अल्लाह के हुज़ूर पेश होंगी, और आज हमारी औरतें हैं जिनका वक्त गीबत व बुहतान और इलज़ाम तराशी में गुज़र जाता है।

फिर यह अल्लाह के हुज़ूर क्या जवाब देंगी, हम अगर हालात को देखे तारीख़ को देखें, इस उम्मत में ऐसी आलिमा औरतें गुज़री हैं जिन्होंने अपने बच्चों को बनाया, दीन की तअलीम दी, दीन की ख़िदमत करते हुए ज़िन्दगी गुज़ारी और अल्लाह के हुज़ूर दर्जे पा गई तो औरतें दीन की तअलीम के हुसूल में मर्दो से पीछे नहीं रहीं।

हिफ़ाज़ते कुरआन में औरत का किर्दार

चुनांचे हकीम तिर्मिज़ी रह० ने लिखा है कि मैंने अपने बचपन में सत्तर ऐसी औरतों से इल्म हासिल किया कि जो हदीस की रिवायत करने वाली थीं, और उनसे बाक़ायदा हदीस आगे रिवायत की जाती थी (सुब्हानल्लाह) हर घर गुल्शन बना था, बच्चियां उस दौर में दीन की ख़िदमत किया करती थीं बल्कि एक अजीब बात! हिफ़ाज़ते कुरआन में भी इस उम्मत की बेटियों ने नुमाया काम कर दिखा, उस ज़माने मे प्रेस (Press) तो होते नहीं थे कि कुरआने मजीद प्रेस के ऊपर छाप लिये जाते, हाथ से लिखने पड़ते थे किताबों में लिखा है, जब जवान उम्र की बच्चियां अपनी तअलीम से फ़ारिग़ हो जातीं और उनके आगे निकाह में अभी कुछ वक्त होता और मुस्तकबिल की

ज़िन्दगी शुरू होने में कुछ इन्तिज़ार होता तो वह अपने वालिदैन के घर में रोज़ाना के काम काज सिमेट कर फिर बा–वुज़ू होकर मुसल्ले पर बैठ जातीं और अल्लाह का कलाम (कुरआने मजीद) बड़ी खुशनवैसी के साथ लिखना शुरू करतीं, रोज़ थोड़ा थोड़ा लिखते लिखते हर लड़की अपने लिये कुरआने मजीद लिख लेती, फिर उसके वालिदैन उस कुरआन की सुन्हरी जिल्द बनवा देते और जब बच्ची की शादी होती तो ज़हेज़ में कुरआने मजीद का वही नुस्ख़ा दिया जाता जिसको बच्ची ने अपने हाथ से लिखा होता, इस उम्मत की बेटियां उस वक़्त अपने जहेज़ में अल्लाह का कलाम लेकर जातीं थीं एक तरफ़ तो अल्लाह का कलाम मिल जाता था, और दूसरी तरफ़ कुरआने पाक के नुस्खे ज़्यादा से ज़्यादा लिखे जाते और कुरआने पाक की हिफ़ाज़त का सामान होकर उम्मत में फैलते चले जाते, लिहाज़ा कुरआने पाक की हिफ़ाज़त में जहां मर्दों ने काम किया वहां इस उम्मत की बेटियों ने भी काम कर दिखाया तो दीन के मुआमले में औरतें मर्दों से पीछे नहीं रहीं।

हुसूले विलायत और औरत

उन्होंने विलायत के भी बड़े बड़े मर्तबे हासिल किये, बड़ी बड़ी मअरिफ़त की बातें किया करती थीं, चुनांचे राबिआ बसरिया रह० के बारे में आता है रात को जब देर हो जाती तहज्जुद पढतीं तहज्जुद के बाद दामन फैला कर दुआ मांगतीं, उनकी दुआ भी अजीब थी दुआ में यह अलफ़ाज़ कहतीं "ऐ अल्लाह! इस वक़्त दिन जा चुका है और रात आ गई है हर शख़्स अपने मालिक के पास पहुंच चुका है, मालिक मुझे तुझसे मुहब्बत है मैं तेरे सामने दामन फैला कर बैठी हूं" और फिर अजीब बात करतीं कहतीं "या अल्लाह दुनिया के बादशाहों ने दरवाज़े बन्द कर लिये हैं तेरा दरवाज़ा अब भी खुला है, ऐ अल्लाह! मैं तुझसे फ़रयाद करती हूं (और फिर दुआ मांगते हुए कहतीं) ऐ अल्लाह! आप वह ज़ात हैं जिसने आसमान को ज़मीन पर गिरने से रोक रखा है, ऐ अल्लाह! शैतान को मुझपर मुसल्लत होने से

रोक दिये"

जब इस तरह दुआ मांगती थीं फिर अल्लाह तआला उनको उ़लूम व मआ़रिफ़ अ़ता कर दिया करते थे, (सुब्हानल्लाह) तो हमारे लिये यह कितना बड़ा सबक़ है इससे पता चला कि इस उम्मत की औ़रतें दीन के मामले में और हुसूले विलायत में मर्दों से पीछे नहीं रहीं बल्कि मर्दों के साथ क़दम आगे बढ़ाया।

दीन के हर शोअ़बे में औ़रतों की मुसाबक़त

चुनांचे इस उम्मत में अगर आपको हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द रज़ि० जैसे फ़क़ीह नज़र आयेंगे, तो सय्यिदा आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा जैसी फ़क़ीहा भी नज़र आयेंगी, अगर आपको हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० जैसे हाफ़िज़ नज़र आयेंगे, तो फिर हफ़सा बिन्ते उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा जैसी हाफ़िज़ा भी नज़र आयेंगी, अगर इस उम्मत में हज़रत हमज़ा रज़ि० जैसे सय्यिदुश्शुहदा नज़र आयेंगे, तो इस उम्मत में हज़रत सुमय्या रज़ियल्लाहु अ़न्हा जैसी शहीदा भी नज़र आयेंगी, बल्कि इस्लाम की सबसे पहली शहादत भी एक औ़रत ने पाई और इस मैदान में औ़रतें मर्दों से भी आगे निकल गईं, (सुब्हानल्लाह) इस उम्मत में अगर आपको ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० जैसे जरनैल नज़र आयेंगे, तो फिर आपको इस उम्मत में ख़ौला भी नज़र आयेंगी, जो ज़र्रार रज़ि० की बहन थीं, चुनांचे किताबों में लिखा है ज़र्रार रज़ि० को कुफ़्फ़ार ने गिरफ़्तार कर लिया, ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० हैरान हैं मुसलमानों की तादाद बहुत थोड़ी है, दुशमन बहुत ज़्यादा हैं, उन्होंने हज़रत ज़र्रार रज़ि० को घेरे में ले लिया था, और आगे चल पड़े थे, फ़रमाते हैं मैंने एक सवार को देखा नक़ाबपोश था, उसके हाथ में तलवार थी तेज़ी के साथ आया और काफ़िरों को गाजर मूली की तरह काटना शुरू कर दिया, फ़रमाते हैं कि जिधर ज़्यादा रश था उधर जाकर उसने लाशों के पुशते लगा दिये, काफ़िरों पर इतना दबदबा बैठा कि वह हज़रत ज़र्रार रज़ि० को छोड़कर भाग गये, उन्होंने ज़र्रार रज़ि० की हथ्कड़ियां

तोड़ीं और वह मुश्कें काट दीं जो बान्धी हुई थीं और उनको आज़ाद कर दिया, जब वापस आये मैं हैरान हुआ मैं उस मुजाहिद के क़रीब हुआ मैंने पूछा तू कौन है? तेरे अन्दर इतनी बहादुरी है, जवाब में एक औरत्त की आवाज़ सुनाई दी कहने लगीं मैं ज़र्रार की बहन ख़ौला हूं मेरे भाई को काफ़िरों ने गिरफ़्तार कर लिया था मैं समझी आज भाई को अपनी बहन की ज़रूरत है, मैंने नक़ाब बान्धा और मैं तलवार लेकर मैदान में आ गई।

तो अगर मुसलमानों में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० जैसे जवांमर्द और बहादुर मुजाहिद नज़र आते हैं तो फिर ख़ौला रज़ियल्लाहु अन्हा जैसी बड़ा दिल रखने वाली मुजाहिदा भी तो नज़र आती हैं, अगर इस उम्मत में हसन बसरी रह० जैसे बड़े बड़े मशाइख़ नज़र आते हैं तो फिर राबिआ बसरिया जैसी औरतें भी तो नज़र आती हैं, तो इन बातों से मालूम हुआ कि औरतें दीन के मुआमले में इस उम्मत में कभी पीछे नहीं रहीं, वह मुहद्दिसा भी बनीं, वह कुरआने पाक की क़ारिया भी बनीं और उन्होंने औरतों में दीन फैलाने में अपनी ज़िन्दगियां वक़्फ़ कर दीं।

तालिब इल्म अल्लाह के लाडले होते हैं

आज इस आजिज़ की यह खुश नसीबी है ऐसे इदारे में आने की सआदत हासिल हुई जहां बच्चियों को तअलीम दी जाती है, बच्चियां कुरआन पढ़ती हैं, अपने सीनों को नबी अलै० की हदीसों से रोशन करती हैं, यह ख़ुश नसीब बच्चियां हैं जिनको अल्लाह ने दीन की तअलीम के लिये चुन लिया है, यह ख़ुश नसीब बच्चियां हैं जिनको परवर्दिगार ने अपने दीन के लिये कुबूल कर लिया "सुम्मा औरस्नल किताबल्लज़ीनस्तफ़ैना मिन इबादिना" (पारा 22, सूरे फ़ातिर, आयत: 32)

कुरआन गवाही दे रहा है "फिर हम किताब का वारिस बनायेंगे अपने बन्दों में से उनको जो हमारे चुने हुए होंगे, हमारे लाडले बन्दे होंगे, हमारे प्यारे बन्दे होंगे" (सुब्हानल्लाह) तो दीन का इल्म हासिल

करने वाले जो तलबा व तालिबात हैं अल्लाह के बन्दे और बन्दियां हैं, यह अल्लाह के प्यारे हैं, हदीसे पाक में आता है अल्लाह तआ़ला क़्यामत के दिन उ़लमा को खड़ा करेंगे और फ़रमायेंगे "यामअ़शरल उ़लमाई" "ऐ उ़लमा की जमाअ़त!" मैंने तुम्हारे सीनों को इल्म के लिये मुन्तख़ब किया था इसलिये आज मैं तुम्हें लोगों के सामने रुसवा नहीं करना चाहता जाओ बग़ैर हिसाब किताब जन्नत के दरवाज़ों को तुम्हारे लिये खोल दिया, अल्लाह तआ़ला की कितनी रहमत होगी कितना करम होगा।

हदीसे पाक में आता है इस उम्मत के अ़वाम जब क़्यामत के दिन हौज़े कौसर पर हाज़िर होंगे अल्लाह के फ़रिश्ते उनको जाम भर भर कर पिलायेंगे, लेकिन जब इस उम्मत की आ़लिमा औरतें और आ़लिम मर्द हौज़े कौसर पर जायेंगे, नबी अ़लै० अपने हाथों से हौज़े कौसर का जाम अ़ता फ़रमायेंगे, यह कितनी बड़ी ख़ुश नसीबी है कि अल्लाह तआ़ला के महबूब इ़ज़्ज़त अफ़ज़ाई फ़रमायेंगे, ऐसा न हो हमारी ज़बान तो आ़लिम हो और हमारे दिल जाहिल हों, हमारे दिमाग़ तो आ़लिम हों, और हमारे जिस्म पर नबी की सुन्नतें मौजूद न हों इस दो रंगी ज़िन्दगी से अल्लाह महफ़ूज़ फ़रमायें (आमीन) शैतान पीछे पड़ा हुआ है, मदरसे में दाख़िला लेने के बावुजूद भी, जामिआ़त में आने के बावुजूद भी शैतान पीछे लगा रहता है, चाहता है औरतें वक़्त ज़ायेअ़ करें, तालिब इ़ल्म अपने इ़ल्म से वह फ़ायदा न उठायें इसलिये शैतान से बचे रहिये अपने नफ़्स की शरारतों पर नज़र रखिये जो कुछ पढ़िये उसको अपने जिस्म के ऊपर लागू कर लीजिए ताकि ज़ेवरे इ़ल्म से अल्लाह तआ़ला आपको आरास्ता फ़रमा दें, आप उन बातों को ग़ौर से सुनियेगा अल्लाह तआ़ला के दीन में ही हमारे लिये इ़ज़्ज़त है, याद रखना।

"इन्सान का क़द बग़ैर ऊँचे जूते के भी ऊँचा नज़र आ सकता है अगर उसकी शख़्सियत के अन्दर बुलन्दी हो, इन्सान की आंखें बग़ैर सुर्मे के भी ख़ूबसूरत नज़र आ सकती हैं, अगर उनमें हया हो, इन्सान का चेहरा बग़ैर किसी मेक–अप के भी अच्छा लगता है अगर

उसकी पेशानी पर सजदों के निशान हों"

लिहाज़ा अगर आप तक़्वा और पर्हेज़गारी की ज़िन्दगी गुज़ारेंगी तो अल्लाह तआ़ला दुनिया में भी इ़ज़्ज़त देंगे और आख़िरत में भी इ़ज़्ज़त देंगे।

परवर्दिगारे आ़लम हमें इ़ज़्ज़तें अ़ता फ़रमायें, हमें बुरे दिन से बचाये, बुरी रात से बचाये, बुरे कामों से बचाये, अल्लाह बुरे अन्जाम से बचा, इ़ज़्ज़तें मिलने के बाद ज़िल्लत से बचाइये, डगमगाने से बचा लीजिए, अल्लाह हमें फिसलने से बचा ले, अल्लाह हमें अपने सीधे रास्ते से हटने से बचा ले, हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा, हम तो कमज़ोर हैं अल्लाह हम तो इतने कमज़ोर हैं हमसे तो घर की चीज़ों की भी हिफ़ाज़त नहीं हो पाती, अल्लाह ईमान की हिफ़ाज़त हम कैसे कर पायेंगे, अल्लाह तू ही मदद फ़रमा, मौत तक हमारे ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमा।

जब हम इस तरह मांगेंगे तो परवर्दिगारे आ़लम हम पर रहमत फ़रमायेंगे, और हमारे ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमायेंगे, परवर्दिगारे आ़लम हमारी ज़िन्दगियों को दीन की ख़िदमत के लिये कुबूल फ़रमा ले और हमें अपने मक़बूल बन्दों में शामिलल फ़रमा ले।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين.

नोट :– बयान के बाद हज़रत ने थोड़ी देर मुराक़बा कराया और इसी दौरान मुनाजात के अशआ़र पढ़े, फिर ख़ूब रो रो कर दुआ़ कराई।

नेक बन्दे कैसे बनें?

इक्तिबास

सारी ज़िन्दगी मस्जिद में पड़कर ज़िन्दगी गुज़ारने वाले भी वह दर्जा नहीं पा सके जो चन्द मिनट में नबी अ़लै० की सोहबत की बरकत से सहाबा ने पा लिये, इसके ज़रिये से इन्सान को अ़जीब मक़ामात मिले हैं, तो सहाबी सोहबत से बना, जिस तरह नमाज़ से नमाज़ी बनता है, ज़िक्र से ज़ाकिर बनता है, इसी तरह सहाबी सोहबत से बना करता है, इसकी मिसाल यूं समझये कि जैसे मक़्नातीस हो, उसके पास थोड़ी देर के लिये किसी लोहे को रखें तो वह मक़्नातीसियत उस लोहे के टुक्ड़े में भी आ जाती है, फिर वह भी लोहे को खींचना शुरू कर देता है, इसी तरह सहाबा किराम भी जब नबी की सोहबत में बैठते थे तो उनके सीने साफ़ हो जाया करते थे।

(हज़रत मौलाना पीर फ़क़ीर ज़ुलफ़क़्क़ार अहमद साहब नक़्शबन्दी)

باسمه تعالٰى
الحَمْدُ لِلّٰهِ وكفٰى وسلامٌ علٰى عِبادِهِ الَّذِينَ اصطفٰى اَمَّا بعد!
اَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيطٰنِ الرجِيمِ ، بِسمِ اللّٰهِ الرَّحمٰنِ الرَّحِيمِ
﴿كُونُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا كُنتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الكِتٰبَ وَبِمَا كُنتُمْ تَدْرُسُوْنَ﴾
(पारा 3, सूरे आले इमरान, आयत 79)

तर्जुमा :– तुम लोग अल्लाह वाले बन जाओ इस वजह से कि तुम किताब सिखाते हो और इस वजह से कि पढ़ते हो।

﴿سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ العِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ وَسَلامٌ علٰى المُرْسَلِينَ وَالحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ العَالَمِينَ﴾
(सूरे साफ़्फ़ात, आयत 180, 181, 182)

اللّٰهم صلِّ علٰى سيدنا محمدٍ وعلٰى آلِ سيدِنا محمد وبارك وسلِّم
اللّٰهم صلِّ علٰى سيدنامحمدٍ وعلٰى آلِ سيدِنا محمد وبارك وسلِّم
اللّٰهم صلِّ علٰى سيدنامحمدٍ وعلٰى آلِ سيدِنا محمد وبارك وسلِّم

इन्सान का दुनिया में आना आसान है, लेकिन सही मअ़नों में इन्सान बनना बड़ा मुश्किल काम है, जो बनता है या बनाता है वह ख़ता खाता है, हज़रत अक़्दस थानवी रह० फ़रमाया करते थे कि जिसको बुज़ुर्ग बनना हो वह औरों के पास जाये और और जिसे इन्सान बनना हो वह हमारे बास आये, फ़रमाया करते थे कि हम इन्सान बना देंगे।

इस्लाह किसे कहते हैं?

तबअ़न इन्सान में हैवानियत ग़ालिब होती है, ख़्वाहिशाते नफ़्सानी ग़ालिब होती हैं, मेहनत से मुजाहिदा से इल्म से ज़िक्र से यह ख़ैर को अपने ऊपर ग़ालिब करता है, जैसे कमरे में अन्धेरा होता है, रोशनी के लिये चिराग़ जलाना पड़ता है, बलब लगाना पड़ता है, रोशनी का इन्तिज़ाम किये बग़ैर खुद बखुद रोशनी नहीं आती, इसी तरह इन्सान की तबीअ़त तबअ़न बुराई की तरफ़ खींचती है, नेकी के लिये उसे अपने नफ़्स को बांधना पड़ता है, उसपर क़ाबू रखना पड़ता है, उसे

लगाम देनी पड़ती है, इसीका नाम नफ़्स की इस्लाह है।

दो लफ्ज़ हमेशा इकळे बोले जाते हैं "एक तअ़लीम व तरबियत" और दूसरा "इ़ल्म व ज़िक्र"

तरबियत कहां होती है?

तअ़लीम तो पाई हमने मदरसों से स्कूलों से कालिजों से तो तरबियत कहां से पायेंगे? इन्सान तरबियत पाता है अल्लाह वालों की महफ़िलों से, यह अल्लाह वाले बन्दे को बन्दा बनाते हैं, बन्दे पर रंग चढ़ाते हैं।

एक होता है रंग
कुछ लोग होते हैं रंग फ़रोश
और कुछ लोग होते हैं रंग–रेज़

रंग–फ़रोश वह लोग हैं जो रंग बेचते हैं, रंग–रेज़ उन लोगों कहते हैं जो कपड़े रंगने का काम करते हैं।

किताब व सुन्नत रंग है
उ़लमाए किराम रंग–फ़रोश हैं।

और मशाइख़े इ़ज़ाम रंग–रेज़ हैं, जो बन्दे पर अल्लाह का रंग चढ़ाते हैं।

صِبْغَةَ اللّٰهِ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً

(पारा 1, सूरे बक़्रह, आयत 138)

तर्जुमा :– कि हम दीन की इस हालत पर हैं जिसमें हमको अल्लाह तआ़ला ने रंग दिया है, और दूसरा कौन है जिसके रंग देने की हालत अल्लाह तआ़ला से ख़ूब–तर हो।

और कुछ ऐसे ख़ुश नसीब होते हैं जो रंग–फ़रोश भी होते हैं और रंग–रेज़ भी, वह जामे शरीअ़त व तरीक़त हुआ करते हैं, अल्लाह वाले बन्दे के ऊपर पोलिश कर देते हैं।

बुज़ुर्गाने दीन इन्सान को हीरा बना देते हैं

यह इन्सान रफ़–डाईमन्ड की तरह है, जब हीरा कान से

निकलता है तो बिल्कुल पत्थर की तरह नज़र आता है, आदमी पहचान भी नहीं सकता, लेकिन जिसको तज्रिबा होता है वह जानता है कि मिट्टी की तहों के अन्दर हीरा मौजूद है, उसके ऊपर की मिट्टी साफ़ करते हैं और फिर उसको काटते हैं, जिसे कहते हैं डाइमन्ड कट लगाना, वह डाइमंड कट लगाते हैं, और उसके बाद फिर उसको पालिश किया जाता है, बड़ी आला मशीनों के ऊपर जब पालिश करते हैं तो फिर उसके अन्दर चमक आ जाती है, फिर हीरे की क़ीमत लग जाती है तो शुरू में तो यह पत्थर की तरह ही था, इसी तरह इन्सान का हाल है कि शुरू में यह पत्थर की तरह होता है, लेकिन जब किसी साहबे दिल की ख़िदमत में आ जाता है तो वह फिर उसको डाइमन्ड कट लगा देते हैं।

का़ल रा बगुज़ार मर्दे हाल शो
पेश मर्द कामिल पामाल शो
सद किताब व सद वरक़ दर नार कुन
ज़ान व दिल रा जानिब दिलदार कुन

यह असल चीज़ है:

गर तू संग ख़ारए मर–मर शुइ
चूं बसाहबे दिल रसी गौहर शुइ

फ़रमाते हैं कि अगर तू संग मर–मर भी है तब भी किसी साहबे दिल के हाथ में हाथ दे दे वह तुझे हीरा बना देगा, तो फिर अल्लाह वालों की सोहबत में रंग चढ़ता है, और यह सिलसिला शुरू से चला आ रहा है।

रोक टोक का नाम तरबियत है

नबी अ़लै० की तरबियत अल्लाह तअ़ला ने फ़रमाई, और सहाबा किराम की तरबियत नबी अ़लै० ने फ़रमाई, क़ुरआने मजीद में आप ग़ौर कीजिए कई जगहों पर अल्लाह तआला ने अपने महबूब को लिमा् के लफ़्ज़ से मुख़ातब फ़रमाया, यह लिमा् का लफ़्ज़ रोक टोक के लिये बोला जाता है, और इसीका नाम तरबियत है, कई लोग होते

हैं ना पीर साहबान, जो चुप शाह बने होते हैं, हमारे यहां चुप शाह वाला मसला नहीं है "रोक टोक" है तो नबी अ़लै० की तरबियत अल्लाह तअ़ला ने फ़रमाई, "क्यों" तो तभी पूछते हैं जब बताना और समझाना मक़सूद होता है।

लिमा् का लफ़्ज़ आम मोमिनीन के लिये भी कुरआने करीम में इस्तेमाल हुआ और नबी अ़लै० के लिये भी इस्तेमाल हुआ मगर दोनों में एक फ़र्क़ है और वह यह कि जहां नबी के लिये इस्तेमाल हुआ वहां शुरू में या बाद में अल्लाह तआला ने अपनी मग़्फ़िरत के वादे फ़रमा दिये हैं "लिमा्" का लफ़्ज़ इस्तेमाल तो किया मगर साथ ही खुशख़ब्री भी दे दी, लेकिन जहां कहीं ईमान वालों के लिये यह लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ वहां फ़रमाया सीधे हो जाओगे, तो मग़्फ़िरत कर देंगे, और अगर बिगड़ोगे तो हम तुम्हारी मरम्मत करेंगे, चुनांचे नबी अ़लै० के लिये अल्लाह तअ़ला कैसे महबूबाना अलफ़ाज़ इस्तेमाल फ़रमाते हैं "अ़फ़ल्लाहु अ़न्का्" है ना माफ़ी का तज़किरा "अल्लाह तअ़ला आपको माफ़ करदे" "लिमा् अज़िन्ता् लहुम" "आपने क्यों उनको इजाज़त दी" अब कहना तो यह था "लिमा् अज़िन्ता् लहुम" मगर अल्लाह तअ़ला जानते थे कि नबी अ़लै० के दिल में ख़शियते इलाही का वह हाल होता है कि अगर बग़ैर मग़्फ़िरत के वादे के लिमा् से ख़िताब करेंगे तो कहीं ऐसा न हो कि दिल में उसके तहम्मुल की गुन्जाइश ही न रहे, इसलिये पहले मग़्फ़िरत की बात हुई "अ़फ़ल्लाहु अ़न्का्" "अल्लाह आपको माफ़ करदे" "लिमा् अज़िन्ता् लहुम" (पा: 10, सूरे तौबा, आयत: 43) "आपने उनको क्यों इजाज़त दी" और कहीं बाद में मग़्फ़िरत का वादा फ़रमा दिया, जैसे इरशाद फ़रमाया:

يَاَيُّهَا النَّبِىُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآاَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ تَبْتَغِى مَرْضَاةَ اَزْوَاجِكَ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَحِيْمٌ

(पारा 28, सूरे तहरीम, आयत 1)

तर्जुमा :– ऐ नबी सल्ल० जिस चीज़ को अल्लाह ने आपके लिये हलाल किया है आप (क़सम खाकर) उसको अपने ऊपर क्यों हराम फ़रमाते हैं, अपनी बीवियों की खुशनूदी हासिल करने के लिये

और अल्लाह तअ़ला बख़्शने वाला और मेहरबान है।

तो पहले लिमा् का लफ़्ज़ फ़रमाया बाद में मग़्फ़िरत का वादा कर दिया, लेकिन ईमान वालों के लिए जब लिमा् का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ तो (अल्लाहु अकबर) ऐसा शाहाना ख़िताब फ़रमाया: "या अय्युहल्लाज़ीना् आमनू" "ऐ ईमान वालो" "लिमा् तक़ूलूना् मा ला तफ़अ़लूना्" "तुम क्यों वह बात कहते हो जो करते नहीं" "कबुरा् मक़्तन इन्दल्लाहि अन तक़ूलू मा ला तफ़अ़लूना्" "ख़ुदा के नज़दीक यह बात बहुत नाराज़ी की है कि ऐसी बता कहो जो करो नहीं" (पा: 28, सूरे सफ़, आयत: 2) देखिये यहां मग़्फ़िरत का वादा नहीं है।

तरबियत का हुक्म

अपने महबूब को फ़रमाते हैं तुम सीधे हो जाओ "फ़स्तक़िम कमा उमिर्ता्" (अल्लाहु अकबर) सीधे हो जाइये, जमे रहिये हक़ पर, पंजाबी ज़बान में कहते हैं, तकले की तरह सीधे रहिये "फ़स्तक़िम कमा उमिर्ता् व मन ताबा् मअ़का्" (पारा 12, सूरे हूद, आयत: 12) "तो आप जिस तरह कि आपको हुक्म हुआ है मुस्तक़ीम रहिये और वह लोग भी जो कुफ़्र से तौबा करके आपके साथ में हैं" तो यह तरबियत है, जो अल्लाह फ़रमा रहे हैं।

नबी का महबूबाना अन्दाज़े तरबियत

नबी अ़लै० ने सहाबा किराम की तरबियत की आप सल्ल० उनको समझाया करते थे, बतलाया करते थे, फ़रमाते थे फ़लां तो बड़ा ही अच्छा बन्दा है, अगर तहज्जुद की पाबन्दी शुरू करदे तो यह "महबूब" का अपना अन्दाज़ था, पहले तारीफ़ फ़रमाया करते थे और फिर हुक्म देते थे और हम तो इस नुक्ते को भूल ही जाते हैं हम आज किसी की इस्लाह करते हैं तो बस हमारे सामने उसकी बुराइयां ही होती हैं, अच्छे पहलू तो ज़हन से निकल ही जाते हैं, शौहर बीवी को नमाज़ के लिये जगायेगा ना तो कहेगा उठ, फिर कहेगा नमाज़ नहीं पढ़ी, सुस्त हो गई है, मुर्दार बनकर पड़ी रहती है, शर्म नहीं

आती, हम इन अलफ़ाज़ में उसको दीन की दावत दे रहे हैं जो शरीक-ए-हयात है, भाई आपको तो असातज़ा की महफ़िल मिली, मशाइख़ की महफ़िल मिली, मस्जिद का माहौल मिला, आप तो चलो बदल गये, लेकिन वह तो अभी उन महफ़िलों से महरूम है, वह तो आनन फ़ानन नहीं बदलेगी, कुछ मेहनत करो, कुछ तहम्मुल मिज़ाजी से काम लो, इन्सान ऐसे नहीं बनते, यह बड़ी मुश्किल से बनते हैं, तो तरबियत और तअ़लीम यह दोनों लफ़्ज़ साथ साथ बोले जाते हैं।

ख़ालिस इल्म तकब्बुर पैदा करता है

अगर इन्सान के पास सिर्फ़ इल्म हो तो इन्सान के अन्दर तकब्बुर हो जाता है, "मैं" आ जाती है, जिसे "निम्ट इल्म" कहा जाता है, उसके अन्दर तकब्बुर पैदा कर देता है, यहूद का हाल देखिए यह पिछली उम्मतों में इल्म वाली उम्मत गुज़री है, इल्म की निस्बत उनपर ग़ालिब थी, लेकिन उनमें "मैं" आ गई थी, क़ुरआने करीम में अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:

سَاَصْرِفُ عَنْ اٰیٰتِیَ الَّذِیْنَ یَتَکَبَّرُوْنَ بِغَیْرِ الْحَقِّ.

(पारा 9, सूरे आराफ़, आयत 146)

तर्जुमा :— मैं ऐसे लोगों को अपने एहकाम से बर्गश्ता ही रखूंगा जो दुनिया में तकब्बुर करते है। जिसका उनको कोई हक़ हासिल नहीं है।

देखा! क़ुरआन इसपर गवाही दे रहा है कि उनके अन्दर तकब्बुर आ गया था, वह नाज़ में पड़ गये थे, कहने लगे "नहनु अब्नाऊल्लाहि व अहिब्बाऊहू" (पारा 6, सूरे मायदा, आयत 18) "हम तो साहबज़ादे हैं" "लन तमस्सनन्नारु इल्ला अय्यामम्मअ़दूदतन" (पारा 1, सूरे बक़्रह, आयतः 80) "हमें नहीं हो सकता आग का अ़ज़ाब मगर थोड़े दिन के लिये" अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं: "अत्तख़ज़्तुम इन्दल्लाहि अ़हदन" (पारा 1, सूरे बक़्रह, आयत 80) "क्या उन्होंने अल्लाह तआ़ला के पास कोई तहरीर लिखवाली है" उनके अन्दर तकब्बुर आ गया था, चुनांचे "व यक़्तलूनल अंबियाआ बिग़ैरि हक़्क़" (पारा 4, सूरे आले इमरान, आयतः 112) "और क़त्ल कर दिया करते

थे पैग़म्बरों को नाहक़" अंबिया किराम की शान में गुस्ताख़ी क़रना तो और बात है यह उनको नाजायज़ तौर पर क़त्ल और शहीद कर दिया करते थे, हालांकि कि इल्म ग़ालिब था, मगर हालत यह थी।

ख़ालिस ज़िक्र का अन्जाम

ईसाईयों के अन्दर ज़िक्र की निस्बत ग़ालिब थी, इसलिये इबादत ख़ाने बनाकर तन्हाई के माहौल और ख़ानक़ाह में रहते थे, मगर वह भी रास्ते से भटक गये, उनमें बिद्अतें आ गईं, मालूम यह हुआ कि निमट इश्क़ हो तो वह बिद्अत सिखाता है, और निमट इल्म तकब्बुर सिखाता है, "इल्म ज़िक्र वालों को मुतवाज़िन रखता है बिद्आत से बचाता है" और ज़िक्र इल्म वालों के अन्दर हिल्म पैदा कर देता है, तो "इल्म व ज़िक्र" का एक कुदरती जोड़ है।

"इल्म व ज़िक्र" एक साथ

इसलिये हज़रत मौलाना इलयास साहब रह० ने जब छः नम्बर मुरत्तब किये तो हर नम्बर एक एक रखा, लेकिन "इल्म व ज़िक्र" दोनों लफ़्ज़ों को जुदा नहीं किया, इसलिये कि यह लाज़िम व मलज़ूम थे एक दूसरे का चोली–दामन का साथ था।

यह "इल्म व ज़िक्र" बहुत ही अहम हैं, अगर दोनों इकळे रहेंगे तो फिर बन्दे के अन्दर इल्म का नूर भी होगा और ज़िक्र की वजह से अ़मल का शौक़ और जज़्बा भी होगा, एक गाड़ी ने अगर चलना हो तो उसके लिये दो चीज़ें जरूरी हैं, एक तो यह कि रास्ता बना हुआ हो रास्ता ही बना हुआ न हो तो नई गाड़ी क्यों न हो खड़ी रहेगी, आगे खाईयां हैं, पत्थर हैं, चल ही नहीं सकती, तो रास्ते का बना हुआ होना यह पहली ज़रूरत है, और गाड़ी के अन्दर पैट्रोल का होना यह दूसरी ज़रूरत हैं, नई गाड़ी सड़क पर खड़ी है क्यों? कि पैट्रोल नहीं है।

बे–अ़मल आ़लिम की मिसाल

हम लोग एक दफ़ा कहीं जा रहे थे, रास्ता ट्रांक से ब्लॉक था

जब गुज़रने लगे तो एक बड़ा सा टैंन्कर खड़ा था, ड्राइवर से पूछा कि खुदा के बन्दे सड़क क्यों ब्लॉक कर रखी है, कहने लगे इसका पैट्रोल ख़त्म हो गया है, जबकि टनों के हिसाब से पैट्रोल उसके ऊपर लदा था, मगर अपना पैट्रोल ख़त्म हो जाने से सड़क पर खड़ा था, मैंने दोस्तों से कहा आ़लिम बे–अ़मल की मिसाल ऐसी ही है, पीठ पर टनों के हिसाब से पैट्रोल लादे हुए है, लेकिन अपनी टंकी ख़ाली होने की वजह से सड़क पर खड़ा हुआ है तो इल्म एक रास्ते की तरह है।

"इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम्" (सूरे फ़ातिहा, आयत 4) "व अन्न् हाज़ा सिराती मुस्तक़ीमन फ़त्तबिऊहु" (पारा 8, सूरे अनआम, आयत 53) "अलम अअ़हद इलैकुम याबनी आदम् अन ला तअ़बुदूश्शैतान् इन्नहू लकुम अ़दुव्वुम्मुबीनुन व अनिअ़बुदूनी हाज़ा सिरातुन मुस्तक़ीमुन" (पारा 23, सूरे यासीन, आयत 60) सुब्हानल्लाह यह है सीधा रास्ता तो इल्म एक रास्ते की तरह है और इन्सान की हैसियत एक गाड़ी की तरह है, और ज़िक्र उस गाड़ी के पैट्रोल की तरह है, ज़िक्र करता रहेगा, टंकी भरी रहेगी, तो फिर तेज़ चलता रहेगा, तो दोनों चीज़ें लाज़िमी और ज़रूरी हैं, इल्म व ज़िक्र के माहौल में आदमी फिर अ़मल पर आ जाता है।

सोहबत से सहाबी बने

सारी ज़िन्दगी सजदे में पड़कर ज़िन्दगी गुज़ारने वाले भी वह देर्जे नहीं पा सके जो चन्द मिनट की नबी अ़लै० की सोहबत से पा गये, जिस तरह नमाज़ से नमाज़ी बनता है, ज़िक्र से ज़ाकिर बनता है, इसी तरह सहाबी सोहबत से बना करता है, इसकी मिसाल यूं समझ लीजिए कि जैसे मक़्नातीस हो उसके पास थोडी देर के लिये लोहे को रखें तो वह मक़्नातीसियत उस लोहे के टुकड़े में भी आ जाती है, फिर वह भी लोहे को खींचना शुरू कर देता है, तो सहाबा किराम नबी अ़लै० की सोहबत में जब बैठते थे तो उनके सीने भी साफ़ हो जाते थे।

एक मिसाल

आसान सी मिसाल शाह वली उल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० ने फ़रमाई, वह फ़रमाते हैं कि ज़मीन के ऊपर निजासत पड़ी हो तो उसके पाक होने के दो तरीक़े हैं, एक तरीक़ा तो यह कि बारिश बरसे इतनी बरसे कि निजासत का नाम व निशान मिट जाये, अब ज़मीन ख़ुशक हो गई तो वह पाक कहलायेगी, और दूसरा तरीक़ा यह कि सूरज की रोशनी की हरात उसके ऊपर इतनी पड़े इतनी पड़े कि उस निजासत को जलाकर मिटा दे, इसका नाम व निशान ख़त्म हो जाये, जब नाम व निशान ख़त्म हो गया अब वह ज़मीन पाक कहलायेगी, तो फ़रमाते हैं कि इन्सान के दिल की मिसाल ज़मीन की तरह है, गुनाहों की मिसाल निजासत की तरह है, अब इसके पाक करने के भी दो तरीक़े हैं या तो इन्सान ज़िक्रे इलाही इतना ज़्यादा करे इतना ज़्यादा करे कि अनवारात की बारिश बरसे और दिलों की निजासत को धोकर रख दे, और दूसरा तरीक़ा यह है कि यह किसी साहबे दिल की सोहबत में रहे साहबे दिल हज़रात का दिल सूरज की तरह है, जैसे सूरज की शोआयें निकलती हैं और उनसे हरारत मिलती है, इसी तरह अल्लाह वालों के दिल से नूर की शोआयें निकलती हैं और बन्दों के दिलों पर उनका असर पड़ता है तो फ़रमाते हैं कि सोहबत में रहने से भी दिल की निजासत ख़त्म हो जाती है।

सोहबत की तासीर

यही तो वजह है कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को सोहबत में जो कैफ़ियते मिलती थीं वह घर जाकर नहीं मिलती थीं, एक सहाबी तभी तो घर से निकले "नाफ़क़ा हन्ज़लतु नाफ़क़ा हन्ज़लतु" कहते हुए "हन्ज़ला मुनाफ़िक़ हो गया" अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० मिले कि भाई (सुब्हानल्लाह) क्या कह रहे हो? कि जी जो हालत वहां होती है वह घर पर नहीं होती, कहने लगे यह तो हमारा

भी हाल है, आओ नबी सल्ल० से पूछते हैं, अब यह कितनी पक्की दलील है कि सोहबत में जो कैफ़ियत थी वह कुछ और हुआ करती है, इसलिये हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं: "लम्मा कानल यौमुल्लज़ी दख़ला फ़ीहि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लमा अलमदीनता अज़ाआ मिन्हा कुल्लु शैइन" जिस दिन नबी सल्ल० मदीने में दाख़िल हुए मदीने की हर चीज़ पुर–नूर हो गई, हर चीज़ में नूर आ गया, हर चीज़ नूर बन गई, हर चीज़ में रोशनी आ गई, जगमगा उठी "व लम्मा कानल यौमुल्लज़ी माता फ़ीहि अज़्लमा मिन्हा कुल्लु शैइन" "और जिस दिन महबूब ने पर्दा फ़रमाया हर चीज़ पर तारीकी छा गई" और कहते हैं हमने अभी नबी अ़लै० के दफ़न की मिट्टी से हाथ नहीं झाड़े थे "हत्ता अन्करा कुलूबुना" हमें अपने दिल की कैफ़ियत में वाज़ेह फ़र्क़ नज़र आने लगा, कि सोहबत का जो असर था वह कुछ और था अब हालत कुछ और है तो सहाबा भी फ़र्क़ महसूस करते थे, अल्लाह वालों की सोहबत में बैठने से बन्दे को अ़मल का शौक़ मिलता है।

सोहबत इख़्तियार करने का हुक्म

इसलिये तो हुक्म दिया "या अय्युहल्लज़ीना आमनुत्तकुल्लाहा" "ऐ ईमान वालों अल्लाह से डरो" "व कूनू मअ़स्सादिक़ीना" (पारा 11, सूरे तौबा, आयत 119) "और सच्चों के साथ रहो" यह अम्र का सीग़ा है जो इस्तेमाल किया इससे उसकी अहमियत का पता चलता है, और फ़रमाया "वस्बिर नफ़्सका" और तू अपने नफ़्स को सब्र दे, तू अपने आपको उनके साथ मिलाके रख, "वस्बिर नफ़्सका" तू अपने आपको नत्थी रख, "मअ़ल्लज़ीना" उन लोगों के साथ "यदऊना रब्बहुम बिल–ग़दावति वल–अ़शिय्यि युरीदूना वज्हहू" (अल्लाहु अकबर) "जो सुबह व शाम अल्लाह को याद करते हैं सिर्फ़ उसकी रज़ा के लिये" "व ला तअ़दु ऐनाका अ़न्हुम" (सुब्हानल्लाह) कुरआने करीम है क्या अजीब अलफ़ाज़ हैं, फ़रमाया कि "तुम अपनी निगाहें उनके चेहरों से हटाओ ही नहीं" तुम्हारी निगाहें जमी रहें उनके चेहरों

पर, अगर हटा लोगे "तुरीदु ज़ीनतल हयातिद्दुनिया" (पा :15, सूरे कहफ़, आयत :28) "तो तुम दुनिया के तलबगार बन जाओगे" इसलिये इन्सान अल्लाह वालों की सोहबत इख़्तियार करे, यह एक अ़मल और ज़िक्रे कसरत यह दूसरा अ़मल है, इन दोनों अ़मलों से अल्लाह तआ़ला बन्दे के दिल की ज़ुल्मत को दूर फ़रमा देते हैं, और इन्सान सही माना में इन्सान बन जाता है, आप देखिए इस उम्मत के शुरू से ही जो अकाबिरीन गुज़रे वह इल्म और ज़िक्र दोनों ही को लेकर चलने वाले रहे।

हमारे सिलसिला आ़लिया नक़्शबन्दिया के एक बुज़ुर्ग हैं क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० के पोते यह फुक़हा-ए-सबआ मदीने में से थे, और अल्लाह ने उनको इतना मक़ाम दिया था कि उ़मर बिन अ़ब्दुलअज़ीज़ रह० से किसीने एक मर्तबा पूछा कि आपकी नज़र में इस पूरी दुनिया में अमीरुल मोमिनीन बनने का अहल कौन है? तो उ़मर बिन अ़ब्दुल अज़ीज़ रह० जैसी मोहतात शख़्सियत ने कहा अगर मेरे इख़्तियार में होता तो मैं क़ासिम बिन मुहम्मद को इस वक़्त का अमीरुल मोमिनीन बना देता, तो यह एक तरफ़ फुक़हा-ए-सबआ मदीना में हैं, और दूसरी तरफ़ अल्लाह ने उनको ऐसी शख़्सियत बना दिया, यह हमारे सिलसिला नक़्शबन्दिया के बुज़ुर्गों में से हैं, उनसे आगे चलिये।

इमाम जअ़फ़र सादिक़ यह सय्यिदना इमाम अअ़ज़म अबू हनीफ़ा रह० के उस्ताद कहलाते हैं, उनसे दो साल मुलाक़ातें रहीं, इसकी लम्बी तफ़्सीलें हैं, यहां तककि इमाम साहब रह० ने ख़ुद फ़रमाया "लौलस्सनतानि लहलकन्नुअ़मानु" अगर यह दो साल ज़िन्दगी में न होते तो नुअ़मान तो हलाक ही हो जाता, अब इमाम साहब का यह कह देना कि अगर यह दो साल न होते तो नौमान तो लहाक ही हो जाता। इसका मतलब यही है कि आपकी सोहबत से आपको बहुत कुछ मिला, आपने बहुत कुछ पाया।

इमाम शाफ़ई रह० फ़रमाया करते थे कि मुझे सूफ़िया की दो बातों से बड़ा फ़ायदा हुआ, देखिये इमाम शाफ़ई रह० जैसी शख़्सियत

कह रही है कि मुझे सूफ़िया की दो बातों से बड़ा नफ़ा हुआ, एक बात यह कि वक़्त एक तलवार है अगर तुम उसे नहीं काटोगे वह तुमको काट देगी, और दूसरी यह कि नफ़्स को अगर तुम हक़ में मशग़ूल नहीं करोगे तो वह तुमको बातिल में ज़रूर मशग़ूल कर देगा, और वाक़िई बात सच्ची है हम नफ़्स को पालने में मशग़ूल हैं और नफ़्स हमें जहन्नम में धक्का देने में मशग़ूल है।

इमाम अहमद बिन हन्बल रह० (सुब्हानल्लाह) उनके पास एक बुज़ुर्ग आते थे, उनका नाम था अबू हाशिम इमाम अहमद बिन हन्बल रह० उनको अबू हाशिम सूफ़ी कहा करते थे, यह सूफ़ी का लफ़्ज़ इमाम अहमद बिन हन्बल रह० की ज़बान से निकला है, जब वह आते थे तो इमाम अहमद बिन हन्बल रह० कई दफ़ा अपना सबक़ भी मौक़ूफ़ करके खड़े हो जाते और उनको पास बैठाते, अब तालिब इल्में के दिल में इश्काल होता कि इमाम साहब इतने बड़े आलिम, जिबालुल इल्म और यह तो एक ज़ाकिर शाग़िल बुज़ुर्ग हैं, उनके लिये खड़े होते हैं, और सबक़ भी कई दफ़ा छोड़ देते हैं, उनकी बातें सुनते हैं, तो एक शागिर्द ने पूछ लिया, कि हज़रत हमें समझ में नहीं आता कि आप उनका इतना इकराम क्यों करते हैं? इमाम अहमद बिन हन्बल रह० ने बड़ा अजीब आलिमाना जवाब दिया, फ़रमाया देखो! मैं आलिम बिल–किताब हूं और अबू हाशिम आलिम बिल्लाह हैं, और आलिम बिल्लाह को आलिम बिल किताब पर फ़ज़ीलत हासिल है, इमाम साहब उनकी सोहबत इख़्तियार फ़रमाया करते थे, और फ़रमाते थे कि अगर अबू हाशिम कूफ़ी न होते तो रिया की बारीक बातों से मैं भी वाक़िफ़ न हो सकता।

मुहब्बत की हक़ीक़त उनसे पूछो

इमाम मालिक रह० फ़रमाया करते थे मुहब्बत का लफ़्ज़ आया तो फ़रमाया कि अगर इसका लफ़्ज़ी मअ़ना पूछना हो तो हम भी बता देंगे, छः क़िस्मों में से कौनसा लफ़्ज़ है, सात क़िस्मों में से कौनसा है, बाब इसका कौनसा है यह तो हम भी बता देंगे, लेकिन इसकी

हक़ीक़त पूछनी है तो तुम्हें फ़लां शैख़ के पास जाना होगा, वह तुम्हें इसकी हक़ीक़त समझायेंगे, इसी तरह उम्मत के उ़लमा वक़्त के मशाइख़ के साथ एक राब्ता रखते।

याद रखने की बात

एक उसूली बात याद रखिये इसको ज़हन में बैठा लीजिए जो सच्चा आ़लिम होगा वह हमेशा मशाइख़ का क़द्र–दान होगा और जो सच्चा सूफ़ी होगा हमेशा उ़लमा का क़द्र–दान होगा, जब इ़ल्म कामिल होगा तो वह मशाइख़ का क़द्र–दान होगा, और जब इ़श्क़ कामिल होगा तो वह उ़लमा का क़द्र–दान होगा, और जब इ़ल्म भी नातमाम हो और इ़श्क़ भी नातमाम हो तो फिर दोनों एक दूसरे के साथ उलझेंगे, जहां आप किसी को उलझता देखें तो समझ लें कि कुछ न कुछ नातमाम है।

उ़लमाए देवबन्द का मक़ाम

हमारे अकाबिरीन उ़लमाए देवबन्द के अन्दर यह ख़ुसूसियत थी अल्लाह तआ़ला ने उन्हें मरजुल बहरैन बनाया था, एक ही वक़्त के अन्दर उनमें इ़ल्म की निस्बत भी थी ज़िक्र की निस्बत भी थी, चुनांचे यह अकाबिरीन जब मसनदे इरशाद पर बैठते तो जुनैद अग़दादी और बायज़ीद बुस्तामी नज़र आया करते थे, और जब कभी मसनदे हदीस पर बैठते तो अ़स्क़लानी और क़स्तलानी की यादें ताज़ा कर दिया करते थे, दोनों निस्बतें अल्लाह ने दी थीं, इस वजह से फिर अल्लाह के मक़बूल बन्दे बने अल्लाह ने फिर उनका फ़ैज़ पूरी दुनिया के अन्दर फैला दिया।

अ़ल्लामा शामी रह० आजकल तो कोई ऐसे मुफ़्ती नहीं हो सकते जिनके पास "रद्दे मुख़्तार" उनका मजमूअ़–ए–फ़तावा न हो, मसले देखने के लिये सबसे पहली किताब हाथ में आती है तो वह अ़ल्लामा शामी रह० ही की किताब होती है, देखो अल्लाह ने कैसी क़ुबूलियत अता फ़रमाई, यह अ़ल्लामा शामी रह० सिलसिला आ़लिया

नक़्शबन्दिया के बुज़ुर्ग थे और उनके शैख़ मौलाना ख़ालिद रोमी रह० कुर्द थे, जो इराक़ के रहने वाले थे, देहली आये और अब्दुल्लाह देहलवी रह० जो हज़रत मूसा जी रह० के शैख़ थे, उनके पास रहे और उनसे इजाज़त व निस्बत लेकर वापस गये, उनके ज़रिये अल्लाह ने तुर्की, शाम और इराक़ में निस्बत का बहुत नूर फैलाया यहां तककि अ़ल्लामा शामी रह० ने उनके फ़ज़ाइल में मुस्तक़िल एक रिसाला लिखा, अब ऐसी फ़क़ीह शख़्सियत अपने शैख़ के बारे में मुस्तक़िल रिसाला लिख रही है।

हज़रत गंगोही रह० का वाक़िआ़

हमारे अकाबिरीन उ़लमाए देवबन्द में हज़रत गन्गोही रह० उनको फ़िक़ा में मुम्ताज़ हैसियत हासिल है, फ़क़ीहे उम्मत थे, जब तालीम से फ़ारिग़ हुए तो दिल में ख़्याल आया कि थाना भवन जायें और हज़रत हाजी साहब (हाजी इमदादुल्लाह) के पास एक दिन रह कर आयें, जैसे तलबा जाते हैं दुआ़एं करवाने के लिये, मिलने के लिये, ज़ियारत करने के लिये, अब जब यह गये हज़रत हाजी साहब रह० से मुलाक़ात हुई तो मुलाक़ात के बाद इजाज़त मांगी वापसी की, हज़रत हाजी साहब रह० ने फ़रमाया कि मियां रशीद अहमद आप कुछ दिन हमारे पास भी रह जाइये, अ़र्ज़ किया हज़रत पढ़ाना है, सबक़ के लिये वापस जाना है, और पैदल भी चलना है अगर रात को नींद पूरी न हुई तो दिन को सफ़र नहीं कर सकूंगा, सफ़र न किया तो सबक़ नहीं पढ़ा सकूंगा, इसलिये अभी इजाज़त मांगता हूं, हज़रत ने कहा कि भाई रात को यहीं सो जाइये, अ़र्ज़ किया कि हज़रत ख़ानक़ाह में तो रात को लोग जागते हैं, मैं ऐसे में कहां सो सकूंगा, हाजी साहब रह० ने फ़रमाया मियां रशीद अहमद आपको कोई नहीं जगायेगा, आप सोते रहियेगा, आपने सफ़र करना है, अब इन्कार न कर सके कहने लगे अच्छा हजरत रात को यहीं सो जाता हूं, सुबह को उठकर चला जाऊँगा, हाजी साहब रह० ने ख़ादिम से फ़रमाया कि भाई मियां रशीद अ़हमद की चारपाई हमारी चारपाई के क़रीब

डाल देना, बस इसी में काम हो जाना था, सो गये फ़रमाते हैं कि जब तहज्जुद का वक़्त हुआ तो मेरी आंख खुली, मैंने देखा कि कोई नफ़्लें पढ़ रहा है कोई ज़िक्र व अज़कार कर रहा है, कोई दुआएं मांगते हुए रो रहा है, कोई सजदे में रो रहा है, अ़जीब कैफ़ियत थी ख़ानक़ाह की फ़रमाते हैं कि मेरा नफ़्स तो चाहता था कि लेटा रहूं, सोया रहूं, मगर दिल ने कहा कि रशीद अहमद वरसतुल अंबिया में शामिल होने की तमन्ना तो तुम्हें भी है, और अंबिया किराम की आ़दत तो यह थी कि "कानू क़लीलन मिनल्लैलि मा यहजऊ़ना, व बिल–अस्हारि हुम यस्तग़फ़िरूना" (पारा 26, सूरे ज़ारियात, आयत 17/18) "वह लोग रात को बहुत कम सोते थे और आख़री रात में इस्तिग़फ़ार किया करते थे" कहने लगे मुझे आयतें याद आनी शुरू हो गईं, हदीसें याद आनी शुरू हो गईं, यहां तककि बिस्तर ने मुझे उछाल दिया, मैं उठ बैठा, मैंने भी वुज़ू किया और कुछ नफ़्लें पढ़ीं, और इसके बाद जैसे और लोग ज़िक्र कर रहे थे मैंने भी ज़िक्र शुरू कर दिया फ़रमाते हैं कि फ़जर की नमाज़ पढ़कर हाजी साहब के पास आया ताकि रुख़्सत होने की इजाज़त मांग लूं, हज़रत हाजी साहब ने पूछा मियां रशीद अहमद वह जो हमारे क़रीब बैठा ज़िक्र कर रहा था, वह कौन था? मैंने कहा हज़रत वह मैं ही तो था, जो आपके पास बैठा ज़िक्र कर रहा था, हाजी साहब ने फ़रमाया मियां रशीद अहमद अगर ज़िक्र करना ही है तो फिर सीखकर क्यों नहीं करते, मैंने कहा हज़रत सिखा दीजिए उसी वक़्त बैअ़त भी हो गए, फ़रमाते हैं बैअ़त होने के बाद मेरी हालत बदल गई, मैंने फ़ैसला किया हज़रत मैं अब एक महीने चालिस दिन यहीं गुज़ारूंगा, हज़रत ने भी रख लिया, अब ज़िक्र शुरू हो गया, अज़कार बताने लग गये, एक महीने मेहनत रही, अपनी चिराग़ बत्ती तो पहले ही ठीक करके आये थे, हाजी साहब ने तो सिर्फ़ उसको सुलगाना था आग लगानी थी, भड़काना था, एक महीने के अन्दर अलहम्दु लिल्लाह उनका काम बन गया, हाजी साहब ने जब देखा कि अब उन पर ज़िक्र के असरात काफ़ी गहरे सब्त नज़र आते हैं, तो हाजी साहब ने इम्तिहान

लिया, यह अल्लाह वाले भी इम्तिहान लेते हैं, यहह भी जांच पड़ताल करते हैं, आज़माते हैं कि बन्दे पर ज़िक्र का असर हुआ भी कि नहीं, तो एक मर्तबा हज़रत मौलाना फ़ज़लुर्रहमान गंज मुरादाबादी तशरीफ़ लाये और हाजी साहब के साथ उन्होंने किसी दावत में शरीक होना था, हाजी साहब ने हज़रत मौलाना रशीद अहमद गन्गोही रह० को भी साथ ले लिया, अब उस घर में पहुंचे तो दस्तरख़्वान पुर–तकल्लुफ़ खानों से सजा हुआ था, हाजी साहब ने बैठते ही एक प्लेट में थोड़ी सी दाल और दो रोटी हज़रत गन्गोही रह० के हाथ में देदी, और कहा मियां रशीद अहमद वहां बैठकर खालो, अब खुद तो खा रहे हैं मुर्ग़े–चुर्ग़े और उनको दी दाल रोटी, आज का मुरीद होता तो बैअ़त ही तोड़ देता, कहता पीर साहब में अ़दालत नहीं है, लेकिन वह तो समझते थे अल्लाह वाले बड़े दाना होते हैं, हकीम होते हैं, उनके हर काम में कोई न कोई हिकमत होती है, हज़रत गन्गोही रह० दस्तरख़्वान के कोने पर बैठकर खाने लगे, अब हाजी साहब कुछ देर तो बैठे खाते रहे, फिर कुछ देर के बाद ऐसे फ़रमाने लगे जैसे कोई ग़ुस्से में बात करता है, फ़रमाया मियां रशीद अहमद अ़र्ज़ किया जी हज़रत! फ़रमाया दिल तो चाहता था तुझे और भी दूर बैठाऊँ यह तुम पर एहसान किया कि दस्तरख़्वान के कोने पर बैठा लिया "एक तो दी दाल और ऊपर से एहसान कि दस्तरख़्वान के कोने पर बैठा लिया" लिहाज़ा यह अलफ़ाज़ जब कई लोगों के सामने कहे जायें और वह भी किसी बड़े आ़लिम से तो नफ़्स ज़्यादा भड़कता है, उसके बाद हाजी साहब ने आपके चेहरे को देखा कि नफ़्स भड़कता है या नहीं मगर वहां तो नफ़्स मिट चुका था, पामाल हो चुका था, उन्होंने जब यह सुना तो चेहरे पर बशाशत आ गई और कहने लगे कि हज़रत आपने सच फ़रमाया मैं तो आपके जूतों में बैठने के भी क़ाबिल भी नहीं था, यह तो आपका एहसान है कि आपने दस्तरख़्वान के कोने पर बैठा लिया, हाजी साहब ने जब देखा कि नफ़्स भड़कने के बजाये चेहरे पर बशाशत है, तो फ़रमाया अलहम्दु लिल्लाह अब ज़िक्र के असरात नुमायां नज़र आते हैं, चुनांचे दावत के बाद वापस आकर

हाजी साहब ने इजाज़त व ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमादी, अब जो इजाज़त दी तो हज़रत गन्गोही रह० बड़े हैरान कहने लगे कि हज़रत मुझे तो अपने अन्दर कुछ नज़र नहीं आता, हाजी साहब ने फ़रमाया रशीद अहमद तुम्हें यह इजाज़त (निस्बत) इसीलिये दी गई कि तुम्हें अपने अन्दर कुछ नज़र नहीं आता अगर नज़र आता तो यह कभी न दी जाती, ख़ैर इसके बाद फ़ारिग़ हुए और अपने घर आ गये।

एक दो साल फिर गन्गोह में रह कर काम किया तो एक मर्तबा हज़रत हाजी साहब रह० क़ुदरतन गन्गोह तशरीफ़ ले आये, जब मुलाक़ात हुई तो हज़रत हाजी साहब ने एक अ़जीब बात पूछी जो याद रखने के क़ाबिल है और सोने की स्याही से लिखे जाने के क़ाबिल है, हज़रत हाजी साहब ने फ़रमाया कि मियां रशीद अहमद यह बताओ कि बैअ़त होने से पहले और बैअ़त होने के बाद तुम्हें अपने अन्दर क्या तबदीली महसूस हुई? उसूली सवाल था जब यह सवाल पूछा तो हज़रत गन्गोही रह० थोड़ी देर सोचते रहे फिर फ़रमाने लगे कि हज़रत मुझे अपने अन्दर तीन तबदीलियां नज़र आईं।

पहली :– पहली तबदीली तो यह कि बैअ़त होने से पहले मुझे कई दफ़ा मुतालअ़ा के दौरान इश्काल पेश आते थे उनके लिये हाशिया देखना पड़ता था, शुरूहात देखनी पड़ती थीं और काफ़ी सारी मेहनत करनी पड़ती तब वह इश्काल दूर होते थे, अब जब से बैअ़त हुआ हूं, इश्काल पेश ही नहीं आते, खुद बखुद ख़त्म हो जाते हैं, ज़हन में अल्लाह तआ़ला उनके जवाबात डाल देते हैं, तो एक तबदीली तो यह पेश आई।

दूसरी :– दूसरी तबदीली यह आई कि अब जो भी शरीअ़त के एहकाम हैं उनपर अ़मल करने के लिये मुझे नफ़्स को तैयार करना नहीं पड़ता, बेसाख़्तगी के साथ मैं एहकामे शरीअ़त पर अ़मल करता रहता हूं।

तीसरी :– और फ़रमाया तीसरी तबदीली यह पेश आई कि दीन के मुआमले में हक़ बात कह देता हूं अब मैं किसी की मुलामत करने वाले की मुलामत की परवाह नहीं करता, जब हज़रत हाजी साहब ने

सुना तो फ़रमाया अलहम्दु लिल्लाह मियां रशीद अहमद दीन के तीन दर्जे हैं।

पहला दर्जा :– दीन का पहला दर्जा इ़ल्म है, और इस इ़ल्म का कमाल यह है कि आदमी नुसूसे शरईआ में कहीं तआ़रुज़ नज़र न आये, अगर यह कैफ़ियत है तो फिर इ़ल्म का कामिल है।

दूसरा दर्जा :– और दूसरा दर्जा अ़मल है और इसका कमाल यह है कि मकरूहाते शरईया मकरूहाते तबइ़या बन जायें जिन चीज़ों से शरीअ़त ने कराहत की, तबीअ़त भी उनसे कराहत करे यह अ़मल का कमाल है।

तीसरा दर्जा :– और तीसरा दर्जा है इख़लास और इख़लास का कमाल यह है कि इन्सान ख़ालिसतन लिवजहिल्लाह अ़मल करे यहां तककि मुलामत करने वाले की मुलामत की परवाह न रहे लोगों की तारीफ़ और मुज़म्मत इन्सान की नज़र में बराबर हो जाये यह इख़लास का कमाल है, मुबारक हो अल्लाह तआ़ला ने आपको इ़ल्म में भी कमाल अ़ता फ़रमा दिया, अ़मल में भी अ़ता कर दिया, और इख़लास में भी अ़ता फ़रमा दिया।

اُولٰئِكَ آبَائِیْ فَجِئْنِیْ بِمِثْلِهِمْ

اِذَا جَمَعَتْنَا يَا جَرِيْرُ الْمَجَامِعُ

अल्लाह तआ़ला हमें भी उन्हीं अकाबिरीन के नक़्शे क़दम पर चलने की और ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये।

وآخر دعوان الحمد للّٰہ رب العالمین.

मक़ामे ख़ौफ़ की सैर

इक़्तिबास

दो बातें ज़हन मे रखिये एक होता है हुज़्न और एक होता है ख़ौफ़, ख़ौफ़ बाहर के डर को कहते हैं, और हुज़्न अन्दर का ग़म होता है, जब कभी आदमी के दिल में हुज़्न बढ़ता है तो उस आदमी का खाना पीना कम हो जाता है, मसलन एक मां का बेटा फ़ौत हो गया तो मां कई दिन तक खाना नहीं खायेगी, इसी तरह एक आदमी के कारोबार में नुक़्सान हो गया उसका अब खाने को दिल नहीं करेगा, तालिब इल्म अगर इम्तिहान में फ़ेल हो गया तो अच्छे खाने घर में मौजूद होने के बावुजूद उसका दिल नहीं चाहेगा।

तो जब हुज़्न बढ़ता है तो खाना पीना कम हो जाता है और जब ख़ौफ़ बढ़ता है तो इन्सान गुनाह करना कम कर देता है।

(हज़रत मौलाना पीर फ़क़ीर
ज़ुलफ़क़्क़ार अहमद साहब नक़्शबन्दी)

الحَمْدُ لِلّٰهِ وكفٰى وسلامٌ علٰى عِبادِهِ الّذِينَ اصطفٰى اَمّا بعد!
اَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيطٰنِ الرجِيم ، بِسمِ اللّٰهِ الرَّحمٰنِ الرَّحِيم

﴿إِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا﴾

(पारा 22, सूरे फ़ातिर, आयत 28)

तर्जुमा :– ख़ुदा से उसके वही बन्दे डरते हैं जो (उसकी अज़मत का) इल्म रखते हैं।

दूसरी जगह अल्लाह तआला फ़रमाते हैं –

﴿وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰىۙ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰىؕ﴾

(पारा 30, सूरे नाज़िआत, आयत 40, 41)

तर्जुमा :– और जो शख़्स (दुनिया में) अपने रब के सामने खड़ा होने से डरा होगा और नफ़्स को (हराम) ख़्वाहिश से।

दूसरी जगह अल्लाह तआला फ़रमाते हैं –

﴿وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِۚ﴾

(पारा 27, सूरे रहमान, आयत 46)

तर्जुमा :– और जो शख़्स अपने रब के सामने खड़े होने से (हर वक़्त) डरता है।

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ العِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ وَسَلامٌ علٰى المُرْسَلِينَ وَالحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ العَالَمِين
اللّٰهم صلِّ علٰى سيدنا محمدٍ وعلٰى آلِ سيدِنا محمد وبارك وسلِّمَ
اللّٰهم صلِّ علٰى سيدنا محمدٍ وعلٰى آلِ سيدِنا محمد وبارك وسلِّمَ
اللّٰهم صلِّ علٰى سيدنا محمدٍ وعلٰى آلِ سيدِنا محمد وبارك وسلِّمَ

उम्मीद और ख़ौफ़

दो अलफ़ाज़ कसरत से इस्तेमाल होते हैं एक उम्मीद और दूसरा ख़ौफ़ इस आजिज़ ने पहले चन्द एक बयानात में अल्लाह तअला की रहमत का तफ़्सीली तज़किरा किया उम्मीद की बातें बताई, आज नौजवानों को सामने बैठा देखकर दिल में यह बात आई

कि ख़ौफ़ वाली नेमत का भी तज़किरा करना चाहिये।

हम उम्मीद को तो नेमत समझते हैं ख़ौफ़ को नेमत नहीं समझते, हालांकि अल्लाह तआला की यह भी एक नेमत है, बल्कि तमाम गुनाहों से बचने की यह कुन्जी है, इसीलिये नबी अलै० दुआ में अल्लाह तआला से यह नेमत मांगते थे "अल्लाहुम्म् इन्नी अस्अलुका मिन ख़शयतिका मा तहूलु बिही बैनी व बैना मअसियतिका" "ऐ अल्लाह मैं आपसे आपकी ख़शियत मांगता हूं, जो मेरे और गुनाहों के दरमियान हायल हो जाये" तो ख़ौफ़े ख़ुदा यह अल्लाह तआला की बड़ी नेअमत है जिससे इन्सान गुनाहों से बचता है, आज इस महफ़िल में हम मक़ामे ख़ौफ़ की सैर करेंगे फिर अपने दिल में झांक कर देखेंगे कि क्या ऐसा ख़ौफ़ हमारे दिलों में मौजूद है?

ख़ौफ़ व हुज़्न में फ़र्क़

दो बातें ज़हन में रखिये एक होता है "ख़ौफ़" दूसरा होता है "हुज़्न" ख़ौफ़ बाहर के डर को कहते हैं और हुज़्न अन्दर का ग़म होता है, जब कभी आदमी के दिल में हुज़्न बढ़ता है तो उस आदमी का खाना पीना कम हो जाता है, जैसे एक मां का बेटा फ़ौत हो गया, कई दिन तक वह खाना नहीं खायेगी, इसी तरह एक आदमी के कारोबार में नुक़्सान हो गया उसका खाने को दिल नहीं करेगा, तालिब इल्म अगर इम्तिहान में फ़ेल हो गया तो अच्छे खाने घर में होने के बावुजूद उसका दिल नहीं चाहेगा, तो जब हुज़्न बढ़ता है तो खाना पीना कम हो जाता है, और ख़ौफ़ बढ़ता है तो इन्सान गुनाह करना कम कर देता है, इसीलिये जिसके दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा होगा वह गुनाहों से बचेगा गुनाह ऑटोमैटिक (Automatic) ख़त्म हो जाते हैं, इसकी मिसाल यह कि जिस आदमी को फांसी पर चढ़ाने का हुक्म दे दिया जाये वह अपनी तन्हाई में काल कोठरी में बैठकर गुनाहों की प्लानिंग नहीं किया करता, उसके दिल पर ऐसा ग़म सवार होता है कि गुनाहों की तरफ़ उसका ध्यान नहीं जाता है, उसको हर दम यह ख़ौफ़ लगा होता है कि कल मुझे फांसी पर लटका दिया

जायेगा, तो ख़ौफ़ इन्सान को गुनाहों से बचाने की कुन्जी है, ताहम कब दिल में ख़ौफ़ ग़ालिब होना चाहिये और कब दिल में उम्मीद ग़ालिब होनी चाहिये यह तक़सीम बड़ी अजीब है।

उम्मीद और ख़ौफ़ एक नेमत

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि जवानी के आलम में बन्दे पर ख़ौफ ग़ालिब होना चाहिये ताकि नफ़्स का ज़ोर टूट सके, इन्सान गुनाहों से बच सके, लेकिन जब बुढ़ापा आ जाये तब उम्मीद ग़ालिब होनी चाहिये, इसलिये कि क़वा कमज़ोर हो चुके, अब इसपर उम्मीद ग़ालिब हो जाये और अल्लाह से पुर–उम्मीद रहे, आगे फ़रमाते हैं ख़ुशी के मौक़े पर बन्दे पर ख़ौफ़ ग़ालिब होना चाहिये ताकि ख़ुशी में आकर हुदूद व क़ुयूद से बाहर न निकले, और अगर कोई ग़म की कैफियत होतो फिर उम्मीद ग़ालिब होनी चाहिये, ताकि यह इन्सान अल्लाह की रहमत से कहीं मायूस न हो जाये, सेहत का आलम होतो बन्दे पर ख़ौफ़ ग़ालिब होना चाहिये और अगर बीमारी की कैफ़ियत होतो फिर उसके ऊपर उम्मीद ग़ालिब होनी चाहिये, चूंकि नौजवान चेहरे सामने नज़र आ रहे हैं, इसलिये आजकी तक़रीर का उनवान आपके चेहरों ने बतला दिया, और वाक़िई हमें इस उनवान पर बहुत कुछ दिल में बैठाने की ज़रूरत है, वह ख़ौफ़ जो होना चाहिये आज हमारे दिल इससे महरूम हैं यह ख़ौफ़ अल्लाह तआला की अजीब नेमत है इसे मांगना चाहिये, ऐ अल्लाह! हमें ऐसा ख़ौफ़ अता फ़रमा कि जिसकी वजह से हम गुनाहों से बच कर ज़िन्दगी गुज़ार सकें, मअसियत से ख़ाली ज़िन्दगी गुज़ार सकें।

हर चीज़ पर अल्लाह तआला का हुक्म

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि इस दुनिया में हर जगह हुक्म अल्लाह का चलता है "इन्नल हुक्मु इल्ला लिल्लाहि" वह ऐसा क़ुदरत वाला बादशाह है, शहन्शाह है, मालिक और ख़ालिक़ है कि हर चीज़ को उसने पेशानी से पकड़ा हुआ है, हर चीज़ उसके

क़ब्ज़–ए–कुदरत में है, इन्सान के बाहर जितना भी जहान है उस पर अल्लाह का हुक्म सौ फ़ीसद चलता है और कोई चीज़ उसके हुक्म से आगे नहीं चल सकती।

لَاالشَّمْسُ يَنْبَغِيْ لَهَا اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ.

(पारा 23, सूरे यासीन, आयत 40)

तर्जुमा :– न सूरज की मजाल है कि चांद को जा पकड़े, और न रात दिन से पहले आ सकती है, और दोनों एक एक दायरे में तैर रहे हैं।

हर चीज़ अपने अपने दायरे में तस्बीह बयान कर रही है जो काम ज़िम्मे लगा वह डियुटी सर–अन्जाम दें रही है अब रह गया इन्सान, उसका आधा इसपर भी अल्लाह का हुक्म चलता है मसलन आप लुक़्मा मुंह में डालने का तो इख़्तियार रखते हैं, लेकिन मुंह में डालने के बाद आपका इख़्तियार ख़त्म अब पेट में जायेगा और वहां ऑटोमैटिक प्रोसेस (Automatic Process) है वहां अल्लाह का एक हुक्म है, एक ज़ाब्ता है, वह चल रहा है आप उसके ख़िलाफ़ नहीं कर सकते तो आधा जिस्म यह भी गोया अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ चल रहा है, बाक़ी आधा उसपर परवर्दिगार ने हमें कुछ वक़्त के लिये इख़्तियार दे दिया कि तुम अपने इस जिस्म को मेरे हुक्मों के मुताबिक़ इस्तेमाल करो, यहां फिर एक फ़र्क़ है जो अल्लाह वाले होते हैं वह जिस्म के इस हिस्से को भी अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक़ इस्तेमाल करते हैं, और जो ग़ाफ़िल होते हैं वह अपनी ख़्वाहिशात के पीछे चलते हैं, नफ़्स और शैतान के पीछे भागते हैं मगर कितनी देर तक, बकरे की मां आख़िर कब तक ख़ैर मनायेगी, हम अगर गुनाह करेंगे तो आख़िर कहां भागेंगे, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا لَاتَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ.

(पारा 27, सूरे रहमान, आयत 33)

तर्जुमा :– ऐ जिन्न और इन्सान के गिरोह अगर तुम ज़मीन व आसमान के कमरों से निकल कर दिखा सकते हो तो दिखाओ निकलोगे, किसी दलील से निकलोगे।

हम तो घड़े की मछली की तरह हैं, कहां भाग सकते हैं, इसलिये अक्लमन्दी का तक़ाज़ा यही है कि हम अपने जिस्म के इस आधे हिस्से को भी अल्लाह के सुपुर्द कर दें "इलैहि यर्जेउल अमरा कुल्लुहु" हर चीज़ उसीकी तरफ़ लौटती है, और सर के बालों से लेकर पांव के नाखुनों तक अल्लाह के मुतीअ और फरमांबरदार बन्द बन जायें, जिसने इस राज़ को समझ लिया उसको दुनिया और आख़िरत की सआदतें मिलीं और जिसने मन मानी की बस चन्द दिन की बात है फिर आख़िर अल्लाह तआला के हुज़ूर जाना है, और अल्लाह तआला ने बतला दिया "इन्ना! अख़्ज़हु अलीमुन शदीदुन" (पारा 12, सूरे हूद, आयत 102) "बिला शुब्हा उसकी दारोगीर बड़ी अलम रिसां (और) सख़्त है।"

तक़वा की तारीफ़

"कुछ काम न करना" इसका नाम तक़वा है अल्लाह तआला ने इसकी वसीयत फ़रमाई क़ुरआने करीम में फ़रमाया "वलक़द वस्सैनल्लज़ीना ऊतूल किताबा मिन क़ब्लिकुम व इय्याकुम अनित्तक़ुल्लाहा" (पारा 5, सूरे निसा, आयत 131) "तेहक़ीक़ हमने वसीयत की तुम्हें भी और तुमसे पहले अहले किताब को भी कि तुम अल्लाह से डरो" तक़वा इख़्तियार करो, पर्हेज़गार बन जाओ, तो गुनाहों से बचना इसका नाम पर्हेज़गारी है, हर उस चीज़ से बचना जिसके करने से अल्लाह तआला के तअल्लुक़ में फ़र्क़ आ जाये उसका नाम तक़वा है और हमें इसके करने का हुक्म दिया गया है।

अल्लाह तआला की शाने बेनियाज़ी

अल्लाह तआला की मर्ज़ी हर हाल में चलती है वह बे–नियाज़ ज़ात है, अगर सारी ज़मीन कअबा की तरह बन जाये और सारे इन्सान सय्यिदना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० के मर्तबे पर फायज़ होकर

अल्लाह तआला की इबादत करें तब भी अल्लाह की शान में कोई इज़ाफ़ा नहीं हो सकता, इसी तरह सारी ज़मीन कुफ़्रिस्तान बन जाये और सारे इन्सान फ़िरऔन, क़ारून, हामान से भी बुरे बन जायें, फिर भी अल्लाह की शान में कोई कमी नहीं आती, वह मालिक बे-नियाज़ है, हमारी इबादतें सबकी सब अल्लाह तआला की अज़मतों के पर्दे से नीचे रह जाती हैं "व हुवा सुब्हानहु व तआला वराउल वरा सुम्मा वराउल वरा सुम्मा वराउल वरा" वह ज़ात इससे भी बुलन्द है इससे भी बुलन्द है इससे भी बुलन्द है, वह इतनी अज़मतों वाली ज़ात है।

मर्ज़ी हर हाल में अल्लाह ही की पूरी होती है

देखिऐ हज़रत आदम अलै० चाहते थे कि जन्नत ही में रहें इसी इश्तियाक़ में दरख़्त का फल खाया तो सय्यिदना आदम अलै० चाहते थे कि जन्नत ही में रहें और अल्लाह तआला चाहते थे कि उन्हें दुनिया में भेजें, तो नतीजा क्या निकला? मर्ज़ी किसकी पूरी हुई अल्लाह की।

सय्यिदना इबराहीम अलै० अपने बेटे को ज़बह करने के लिये छुरी चलाते हैं दिल में नीयत यह है कि मैं बेटे को ज़बह कर दूं, मगर अल्लाह तआला की मर्ज़ी यह है कि यह बच्चा ज़बह न हो तो मर्ज़ी किसकी पूरी हुई? अल्लाह तआला की।

सय्यिदना नूह अलै० के सामने बेटा है, उसको समझाते हैं "याबुनय्यर्कब मअना" ऐ बेटे हमारे साथ कश्ती में सवार हो जा, काफ़िरों का साथ न दे, वह कहता है कि नहीं मैं ऊपर चढ़ जाऊँगा, अब देखिए नूह अलै० चाहते हैं कि बेटा बच जाये और अल्लाह तआला नहीं चाहते तो मर्ज़ी किसकी पूरी हुई? अल्लाह तआला की।

नबी अलै० एक मौक़ेअ पर दिल में फ़ैसला फ़रमा लेते हैं कि आज के बाद मैंने शहद इस्तेमाल नहीं करना, परवर्दिगारे आलम की तरफ़ से पैग़ाम आ जाता है।

يٰاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

(पारा 28, सूरे तेहरीम, आयत 1)

तर्जुमा :– ऐ नबी सल्ल०! जिस चीज़ को अल्लाह ने आपके लिये हलाल किया है आप (क़सम खाकर) उसको (अपने ऊपर) क्यों हराम फ़रमाते हैं (फिर वह भी) अपनी बीवियों की ख़ुशनूदी हासिल करने के लिये और अल्लाह तआला बख़्शने वाला मेहरबान है।

नबी अलै० फिर शहद इस्तेमाल फ़रमाते हैं, तो मर्ज़ी किसकी पूरी हुई? अल्लाह की, तो इन तमाम वाक़िआत से बात यह सामने आई कि हर हाल में मर्ज़ी अल्लाह तआला की पूरी होती है, तो फिर हम क्यों उसकी नाफ़रमानी करके उसको नाराज़ करते हैं, हमें चाहिये कि हम इस परवर्दिगार को राज़ी करें, उसको ख़ुश करें, इसलिये कि जिसने अल्लाह तआला को नाराज़ कर लिया, वह इन्सान कामयाबी की ज़िन्दगी नहीं गुज़ार सकता, अल्लाह तआला जब नाराज़ होते हैं तो फिर बन्दे को तिगनी का नाच नचा देते हैं, फ़रमाते हैं "व मन युहिनिल्लाहु फ़मा लहू मिन मुक्रिमिन" (पारा 17, सूरे हज, आयत 18) "जिसे अल्लाह तआला ज़लील करने पर आते हैं उसे इज़्ज़त देने वाला और कोई नहीं" इसलिये जो इन्सान अल्लाह तआला को नाराज़ कर बैठा अब उसके पल्ले कुछ न रहा, अपनी हर चीज़ को बरबाद कर बैठा, इसलिये उसकी नाराज़गी से हम डरें ख़ौफ़ खायें कि अल्लाह नाराज़ न हो जायें।

ख़ौफ़ के तीन दर्जे

इमाम ग़ज़ाली रह० ने लिखा है कि ख़ौफ़ के तीन दर्जे हैं:

1. सबसे नीचे का दर्जा उसको आम लोगों का ख़ौफ़ कहते हैं, आम लोगों का ख़ौफ़ बच्चों के ख़ौफ़ की तरह होता है, जैसे बच्चे से कोई शीशे की चीज टूट जाती है तो उसको ज़हनी तौर पर इसका एहसास होता है कि अम्मी को जब पता चलेगा तो मुझे मार पड़ेगी, क्योंकि उससे ग़लती हुई, लिहाज़ा वह पहले से इन्तिज़ार में है कि अम्मी को जब पता चलेगा तब मेरी मरम्मत होगी, तो आम लोगों का ख़ौफ़ इस दर्जे का होता है, क्योंकि उन्होंने अल्लाह तआला के हुक्म को तोड़ा होता है गुनाह किये होते हैं, नफ़्स की ख़्वाहिशों को पूरा

किया होता है, तो उनके दिल में ख़ौफ़ होता है कि अब हमें क़ब्र और आख़िरत का अज़ाब होगा, यह आम लोगों का ख़ौफ़ है, वह अपने गुनाहों को देखते हैं अपने मुआमलात को देखते हैं तो फिर उनके दिल में एक डर होता है कि हमें आख़िरत के अन्दर सज़ा मिलेगी।

2. दूसरा ख़ौफ़ इससे थोड़ा बुलन्द दर्जे का है इसे कहते हैं अबरार का ख़ौफ़ नेकोकारों का ख़ौफ़, और वह क्या है? वह यह होता है कि उन लोगों ने अपनी तरफ़ से तो नेक अ़मल किये होते हैं, मगर यह समझते हैं कि जैसा अ़मल करना चाहिये था हम ऐसा अ़मल नहीं कर सके, पता नहीं यह हमारे आमाल अल्लाह तआ़ला के यहां कुबूल भी होंगे या नहीं? लिहाज़ा उनको डर लगा रहता है, यह लोग गुनाह तो नहीं करते लेकिन आमाल की कुबूलियत के बारे में डर रहे होते हैं, चुनांचे इमाम अअ़ज़म अबू हनीफ़ा रह० ने चालिस साल इशा के वुज़ू से फ़जर की नमाज़ पढ़ी, हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत के लिये गये मक़ामे इबराहीम पर दो रक्अ़त में पूरा कुरआने करीम पढ़ा और फिर हाथ उठाकर दुआ मांगी: "मा अ़बद्नाका् हक़्क़ा् इबादतिका् व मा अ़रफ़्नाका् हक़्क़ा् मअ़रिफ़तिका्" "ऐ अल्लाह जैसे आपकी इबादत का हक़ था वह हक़ अदा नहीं कर सके और जैसी आपकी मअ़रिफ़त हासिल करने का हक़ था वह मअ़रिफ़त हासिल न कर सके" तो यह लोग करते भी हैं डरते भी हैं, अ़मल भी किया अपनी तरफ़ से मगर कुबूलियत के बारे में डरते हैं, दिन रात इसी कोशिश में लगे रहते हैं कि हम नेकियां कमायें और फिर रात को रोते हैं कि:

मेरी क़िस्मत से इलाही पायें यह रंग कुबूल
फूल कुछ मैंने चुने हैं उनके दामन के लिये

इसलिये लिखा है किताबों में कि हमारे अकाबिरीन सारी सारी रात इबादतों में गुजारते थे, लेकिन सुबह के वक़्त इतनी निदामत से इस्तग़फ़ार करते थे कि जैसे सारी रात किसी बड़े गुनाह के मुर्तकिब होते रहे हों "कानू क़लीलन मिनल्लैलि मा यहजऊ़ना् व बिल-अस्हारि हुम यस्तग्फ़िरूना्" (पारा 26, सूरे ज़ारियात, आयत 17) "वह लोग रात को बहुत कम सोते हैं और अख़ीर रात में इस्तिग़फ़ार किया

करते थे।"

हज़रत मदनी रह० के हालाते ज़िन्दगी में लिखा है कि तहज्जुद में इस तरह रोते थे जैसे कोई बच्चा अपने बाप से पिट रहा होता है और वह माफ़ियां मांगता है, फ़रयाद करता है, रोता है, इस तरह वह अल्लाह तआ़ला के सामने गिरिया व ज़ारी फ़रमाया करते थे, यह ख़ौफ़ का दूसरा रुतबा कि अपनी तरफ़ से नेक आमाल किये, लेकिन फिर यह दिल में रखा कि यह अ़मल जैसा करना चाहिये था वैसा हो नहीं सका, जैसे आजकल दौर है (Quality Control) कुवालिटि कन्ट्रोल हर जगह कुवालिटि कन्ट्रोल की बातें होती हैं, तो अल्लाह तआ़ला के यहां भी कुवालिटि कन्ट्रोल है "अल्लज़ी ख़लक़ल मौता् वल–हयाता् लियब्लुवकुम अय्युकुम अहसनु अ़मलन" (पारा 29, सूरे मुलुक, आयत 2) "जिसने मौत और हयात को पैदा किया ताकि तुम्हारी आज़माइश करे कि तुम में कौन शख़्स अ़मल में ज़्यादा अच्छा है" "अक्सरु अ़मलन" नहीं कहा कि तुम अ़मल करो मगर जैसे करने का हक़ है उस तरह से करो।

3. तीसरा दर्जा आ़रिफ़ीन का ख़ौफ़, वह यह कि अपनी तरफ़ से तो वह आमाल पूरी तरह अच्छे कर रहे होते हैं, लेकिन डरते हैं कि मालूम नहीं मौत तक हम इसको हिफ़ाज़त के साथ पहुंचा सकेंगे या नहीं? ऐसा न हो कि कहीं फ़ित्ने में न पड़ जायें महरूम न कर दिये जायें, निगाहे नाज़ हमसे हट न जाये, हमें उलझा न दिया जाये, इसलिये अन्जाम के बारे में डर रहे होते हैं कि अन्जाम का तो किसी को नहीं पता यह आ़रिफ़ीन का ख़ौफ़ होता है जो बुलन्द मर्तबे के लोग होते हैं, यहां तककि अंबिया किराम के दिलों में भी यही ख़ौफ़ होता है, यही डर होता है, हर वक़्त "वमा अद्री मा युफ़अ़लु बी वला बिकुम इन अत्तबिउ़ इल्ला मा यूहा इलय्या्" (पारा 26, सूरे अहक़ाफ़, आयत 9) और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जायेगा, और न (यह मालूम कि) तुम्हारे साथ (क्या किया जायेगा) मैं तो सिर्फ़ उसी का इत्तिबाअ़ करता हूं जो मेरी तरफ़ वही के ज़रिये आता है।

तो वह डर रहे होते हैं कि मालूम नहीं हमारा क्या बनेगा,

इसलिये कि रब्बे करीम की अ़ज़मतों को वह जानते हैं उसकी जलालते शान को वह समझते हैं, उसकी बेनियाज़ी की जब निगाह उठती है तो फिर बलअ़म आऊ़र की चार सौ साल की इबादत को ठोकर लगाकर रख देते हैं, और जब उसकी रहमत की निगाह उठ जाती है तो फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ को डाकुओं की सरदारी से निकाल कर वलियों का सरदार बना देते हैं, तो वह अल्लाह तआ़ला की शाने बे–नियाज़ी से डरते हैं कि वह चाहे तो बग़ैर किसी वजह के पकड़ले यह भी उसका ऐने इन्साफ़ है एक बात हमारी नज़र में छोटी है, मुमकिन है अल्लाह तआ़ला की नज़र में बड़ी हो, कई मर्तबा मशाइख़ पर छोटी छोटी बातों की वजह से आज़माइश आ गई हैं।

अ़ब्दुल्लाह उन्दुलुसी रह० का वाक़िआ़

हज़रत शैख़ुल हदीस रह० ने लिखा है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह उन्दुलुसी रह० यह हज़रत शिब्ली रह० के शैख़ थे, एक बार कुफ़्फ़ार की बस्ती के क़रीब से गुज़रते हुए उनके दिल में यह ख़्याल आया कि यह कैसे बे–अ़क्ल लोग हैं कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराते हैं, बस इस बात पर पकड़ आ गई कि अगर तुम हिदायत पर हो तो यह तुम्हारी अ़क्ल का कमाल है, या हमारा कमाल है, जिसने तुम्हें हिदायत पर रखा हुआ है, चुनांचे कुफ़्फ़ार की किसी लड़की पर नज़र पड़ी और बातिन की सारी नेमत छिन गई, लोगों को कहा कि जाओ अपने घरों को चले जाओ, हाफ़िज़े कुरआन और हाफ़िज़े हदीस थे हज़ारों इन्सानों की हिदायत के लिये उनके मुरब्बी बने हुए थे, आज़माइश में आ गये, दिल से सब कुछ निकल गया, घर गये लड़की के वालिद से कहा कि इसका मेरे साथ निकाह कर दो, उसने कहा कि हमारे पास रहो दो साल ख़िदमत करो कुछ आपस में मुवानसत हो, जान पहचान हो फिर कर देंगे, लेकिन काम जो आपके ज़िम्मे लगेगा वह यह कि हमारे सुअर चराने पड़ेंगे, कहने लगे चराऊँगा, दो साल तक सुअर चराते रहे, शिब्ली रह० के दिल में ख़्याल आया कि मालूम नहीं वह किस हाल में हैं, मैं देख तो आऊँ, लिहाज़ा वह

मिलने के लिये आये, क्या देखते हैं वही जुब्बा, अ़मामा, वही लाठी जिसके साथ वह जुमा का ख़ुत्बा पढ़ा करते थे, उसी हालत में खड़े वह उन सुअरों की निगरानी कर रहे थे, अल्लाह ने उन्हें इस काम पर लगा दिया क़रीब आये और कहा हज़रत आप हाफ़िज़े क़ुरआन थे अब भी आपको क़ुरआने पाक याद है? कहने लगे नहीं, पूछा हज़रत कोई एक आयत याद है? फ़रमाया बस एक आयत याद है "मन युहिनिल्लाहु फ़मालहू मिंमुक्रिमीन" (पाः 17, सूरे हज, आयतः 18) "जिसे अल्लाह ज़लील करने पर आता है उसे इ़ज़्ज़त देने वाला कोई नहीं होता" फिर कहा हज़रत आप हदीसे पाक के भी हाफ़िज़ थे फ़रमाया भूल चुका, फिर पूछा हज़रत कोई हदीस याद है? फ़रमाया एक हदीस याद है "मन बद्दला दीनहु" जो अपने दीन को बदल दे उसको क़त्ल कर दो यह आयत याद रही और यह रिवायत बाक़ी सब कुछ भूल गया, इस मौक़े पर शिब्ली रह० ने रोना शुरू कर दिया, कोई क़ुबूलियत का वक़्त था, शैख़ के ऊपर भी गिरिया तारी हुआ और रोते रोते उन्होंने यह कहा कि अल्लाह मैं आपसे यह तवक़्क़ुअ़ तो नहीं करता था कि मैं इस हाल में पहुंच जाऊँगा, अब जब आ़जिज़ी की चन्द बातें कहीं तो अल्लाह तआ़ला को पसन्द आ गई, अल्लाह तआ़ला ने फिर वह नेमतें लौटा दीं, तौबा की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दी, और फिर उनके ज़रिये अल्लाह ने लाखों इन्सानों को हिदायत अ़ता फ़रमाई तो हाफ़िज़े क़ुरआन व हदीस की ज़बान से भी कोई ऐसा लफ़्ज़ निकल जाता है तो अल्लाह तआ़ला की पकड़ आ जाती है और अल्लाह उसको भी सुअरों के चराने में लगा देते हैं, तो मैं और आप तो किस खेत की गाजर मूली हैं।

दो आयतें उ़जुब का इलाज

हज़रत अक़दस थानवी रह० ने एक बात लिखी, फ़रमाते हैं कि क़ुरआने पाक की दो आयतें हैं इन दो आयतों को जिसने पढ़ लिया उसके बाद उसको उ़जुब नहीं आ सकता, एक इ़ल्म के बारे में और दूसरी अ़मल के बारे में, अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाते हैं किसको?

अपने महबूब को जिनको इतना मर्तबा दिया, इतना मक़ाम दिया, उनको फ़रमाते हैं: "व लइन शिअ्ना लनज़्हबन्ना् बिल्लज़ी औहैना इलैका्" (पारा 15, सूरे इसरा, आयत 86) "अगर हम चाहें हम सब कुछ ले लें जो कुछ हमने वही के ज़रिये आपको अ़ता किया" तो अपने महबूब को जब यह फ़रमा रहे हैं "लइन शिअ्ना" अन्दाज़ देखिए क्या शाहाना ख़िताब है, कैसी अ़ज़मत है इस ख़िताब में कैसी जलालते शान अल्लाह की ज़ाहिर होती है "लनज़्हबन्ना् बिल्लज़ी" सक़ीला का सीग़ा इस्तेमाल फ़रमाया, ताकीद का आख़री दर्जा "अगर हम चाहें हम ज़रूर बिज़्ज़रूर वह सब कुछ लेलें जो हमने आपके ऊपर वही के ज़रिये नाज़िल किया" तो हमारा इ़ल्म किस काम का, हम अपने इ़ल्म पर क्या उ़जुब कर सकते हैं, और दूसरी आयत फ़रमाई अ़मल के बारे में, अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं अपने महबूब से सय्यिदुल कौनैन से, इमामुल अंबिया, इमामुल मलाइका से "वलौला अन सब्बतनका्" 'ऐ महबूब अगर हम अपको साबित कदमी न देते' लक़द किद्त्ता् तर्कनु इलैहिम शैअन क़लीलन इज़ल्लअज़क़्नाका् ज़िअफ़ल हयाति व ज़िअ़फ़ल ममाति सुम्मा् ला तजिदु लका् अ़लैना नसीरन" (पारा 15, सूरे इसरा, आयत 74) इन आयतों का तर्जुमा करने की हिम्मत इस आ़जिज़ में नहीं है।

इस आयत को पढ़कर ज़रा ग़ौर कीजिए कि अल्लाह तआ़ला की ज़ात कितनी अ़ज़मतों वाली है अपने महबूब को यह अलफ़ाज़ फ़रमाये (अल्लाहु अकबर) तो फिर हम अपने अ़मल पर नाज़ कर सकते हैं? तो जिस तालिब इ़ल्म ने इन दो आयतों पर ग़ौर कर लिया वह अपने इ़ल्म और अ़मल पर नाज़ नहीं कर सकता, उसकी गर्दन झुकी रहेगी, वह डरता कांपता रहेगा, उसमें "मैं" नहीं आयेगी, वह अल्लाह तआ़ला का आ़जिज़ बन्दा बनेगा, इसलिये हम अल्लाह तआ़ला की अ़ज़मत को समझते हुए तवाज़ोअ़ वाली ज़िन्दगी इख़्तियार करें, अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने की इस तरह कोशिश करें जिस तरह कि भागा हुआ ग़ुलाम पकड़ा जाये फिर वह शर्मिन्दा होता है, और दोबारा उसको काम पर लगा दिया जाये तो मालिक को ख़ुश

करने के लिये दौड़ दौड़ कर काम कर रहा होता है, जिस तरह वह गुलाम मालिक को खुश करने के लिये भाग भाग कर काम करता है हम इस तरह भाग भाग कर नेकी करने की कोशिश करें, ताकि परवर्दिगारे आलम हमसे राज़ी हो जायें यह ख़ौफ़ की सबसे अअ़ला क़िस्म है अन्जाम के बारे में ख़ौफ़ का रहना इसकी और भी बहुत सारी मिसालें मिलती हैं।

महबूबे रब्बुल आलमीन का ख़ौफ़

सय्यिदना रसूलुल्लाह सल्ल० पर ख़ौफ़ का यह आलम था कि अगर कभी आन्धी आ जाती तो आप सल्ल० घर से मस्जिद में तशरीफ़ ले आते, आपके चेहरे का रंग बदल जाता, ख़ौफ़के आसार ज़ाहिर होते, सहाबा पूछते कि अल्लाह के महबूब ख़ौफ़–ज़दह आप क्यों नज़र आते हैं, फ़रमाते कि पहली उम्मतों पर भी इसी तरह बादल भेजे गये, वह समझते रहे कि पानी की बारिश बरसेगी, मगर उनपर पत्थरों की बारिश बरसा कर उनको तहस नहस कर दिया गया, आप डरते थे, सलातुल हाजत पढ़ते थे, और सहाबा किराम अपने घरों को नहीं जाते थे, जब तक आंधियां बन्द नहीं हो जाती थीं, इतना उनके दिल में अल्लाह का ख़ौफ़ होता था कि मालूम नहीं हमारे साथ क्या होगा?

सय्यिदना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० का ख़ौफ़

"सय्यिदना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि०" इस उम्मत में अल्लाह तआ़ला ने जिनको सबसे बुलन्द मक़ाम अ़ता फ़रमाया उनका नाम ही बतला रहा है "अबू बक्र" कुन्नियत ही ऐसी निराली, देखिए अ़रबी ज़बान में जिस लफ़्ज़ का माद्दा बा, काफ़, रा हो फ़ा कलिमा ऐन कलिमा और लाम कलिमा यह बने तो इसका मतलब ही होता है सबसे–अव्वल चीज़, मसलन "बकूर" मौसम का सबसे पहला फल इसके लिये भी इस्तेमाल होता है, बक्रह कल के दिन का पहला हिस्सा "बाकिरा" वह कुंवारी बच्ची जिसने मर्द को शौहर की नज़र से

न देखा हो तो इस क़ायदे को सामने रखकर देखिए अबू बक्र यह लफ़्ज़ ही बता रहा है कि अल्लाह तआला ने इस उम्मत में सबसे बुलन्द मर्तबा दिया, वैसे भी दस्तूर की बात है कि जब सूरज निकलता है तो उसकी रोशनी सबसे पहले उन इमारतों पर पड़ती है जो सबसे बुलन्द व बाला होती हैं, इसी तरह जब नुबूव्वत का सूरज बुलन्द हुआ उसकी सबसे पहली रोशनी भी उस शख़्सियत पर पड़ी जो इस उम्मत में सबसे बुलन्द व बाला थी, उनके बारे में नबी अलै० की इतनी बशारतें थीं कि फ़रमाया मैंने सबके एहसानात का बदला दे दिया, लेकिन अबू बक्र के एहसान का बदला अल्लाह तआला देगा, नबी अलै० का यह फ़रमा देना कितनी बड़ी बात है, अल्लाहु अकबर जिनको मइयते कुबरा नसीब थी नबी अलै० के साथ निस्बते इत्तिहादी नसीब थी, उनके ख़ौफ़े ख़ुदा का यह आलम था कि डरते कांपते थे, कभी कभी बैठकर यूं कहते कि एक काश! मुझे मेरी मां ने जना ही न होता, ऐ काश! मैं घास का तिनका होता, मैं कोई परिन्दा होता, ऐ काश! मैं किसी मोमिन के बदन का बाल होता, यूं कहते थे, वह अल्लाह तआला की अज़मतों को जानते थे, इसलिये डरते कांपते थे कि पता नहीं हमारे साथ क्या मुआमला हो जाये।

हज़रत उमर रज़ि० का ख़ौफ़

सय्यिदना उमर फ़ारूके अअज़म रज़ि० जिनके बारे में हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया "लौ काना् बअदी नबिय्यन लकाना् उमरा्" 'अगर मेरे बाद कोई नबी आना होता तो उमर को अल्लाह तआला ने वह सिफ़ात दीं कि वह नबी होते' अशरे मुबश्शरा में से हैं जो मुरादे मुस्तफ़ा हैं जिनके बारे में नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया कि उमर जिस रास्ते से गुज़रता है शैतान उस रास्ते को छोड़ देता है, इस हस्ती के बारे में आता है कि हर वक़्त डरते रहते थे, अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० को बुलाया और फ़रमाया हुज़ैफ़ा रज़ि०! आपको नबी अलै० ने मुनाफ़िक़ीन के नाम बताये और यह भी फ़रमा दिया कि तुम किसी को न बताना अब मैं तुमसे मुनाफ़िक़ीन के

नाम तो नहीं पूछता इतना पूछता हूं कि कहीं उ़मर का नाम तो उनमें शामिल नहीं है? कितनी अ़जीब बात है, और जब उनकी वफ़ात का वक़्त आया तो फ़रमाया कि जैसे ही मेरी रूह निकल जाये तो जल्दी से मुझे नहला देना कफ़ना देना बार बार इसकी ताकीद की तो एक सहाबी ने कहा कि हज़रत हम जल्दी तो करेंगे मगर इतनी ताकीद की क्या ज़रूरत है? इस पर ठन्डी सांस ली और एक बात कही फ़रमाने लगे कि जल्दी की ताकीद इसलिये कर रहा हूं कि अगर अल्लाह तआ़ला मुझसे राज़ी हुए तो तुम मुझे अल्लाह से जल्दी मिला देना और अगर अल्लाह मुझसे नाराज़ हुए तो तुम मेरा बोझ जल्दी से कन्धों से हटा लेना और उ़मर के अन्जाम को तो अल्लाह बेहतर जानता है, अल्लाहु अकबर।

ख़ौफ़े ख़ुदा की अअ़ला मिसाल

एक साहाबी बैठे रो रहे थे उनके दोस्त आये कहने लगे कि क्या हुआ कोई ग़लती हो गई, कोई गुनाह हो गया? उनके सामने एक गन्दुम (गेहूं) का दाना पड़ा हुआ था, उन्होंने वह गन्दुम का दाना उठाकर दिखाया और क़सम खाकर कहा कि अल्लाह की क़सम मेरी जिन्दगी के गुनाहों का वज़न गन्दुम के दाने के बराबर भी नहीं, मैं गुनाहों से नहीं रो रहा, इस बात पर रो रहा हूं कि कहीं ऐसा न हो कि मौत से पहले ईमान से महरूम कर दिया जाऊँ, यह ख़ौफ़ की सबसे अअ़ला मिसाल है जो सहाबा किराम के दिल में था।

हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा सारी रात इस आयत को पढ़कर दोहराती हैं "व बदालहुम मिनल्लाहि मालम यकूनू यहतसिबूना" (पारा 24, सूरे ज़ुमर, आयत 47) "और ख़ुदा की तरफ़ से उनको वह मुआ़मला पेश आयेगा जिसका उनको गुमान भी न था" पढ़ती हैं और पढ़ते पढ़ते पूरी रात गुज़ार देती हैं, उनके दिल में यह ख़ौफ़ होता था।

हसन बसरी रह० का ख़ौफ़

हसन बसरी रह० उनके बारे में आता है कि उनके दिल पर

ख़ौफ़े इलाही का इतना गलबा था कि जब चलते तो यूं महसूस होता कि वह नौजवान है जो अभी अभी अपने बाप को दफ़न करके वापस आ रहा है, और जब बात करते थे तो उनके चेहरे पर ख़ौफ़ का यह हाल होता था कि यूं लगता था कि यह वह मुजरिम है जिसको फांसी का हुक्म दे दिया गया हो, वह इतना रोते थे कि उनके आंसुओं का पानी ज़मीन पर पड़ता, यहां तककि वह पानी बह पड़ता, एक मर्तबा रोते रोते उनके छत के पर्नाले से आंसू बह निकले थे, ऐसे नेक बन्दे थे और उन पर ख़ौफ़ का यह आलम था।

राबिआ़ बसरिया का गिरया

राबिआ़ बसरिया के बारे में आता है कि रोती थीं और आंसू ज़मीन पर छिड़कती रहतीं, यहां तक कि ज़मीन पर इतने आंसू गिरते कि उस जगह पर बसा-औक़ात घास ज़मीन पर उग जाया करती थी, एक मर्तबा किसीने भुना मुर्ग़ खाने के लिये पेश किया, तो रोने बैठ गईं वह हैरान हुआ कहने लगा कि आख़िर क्या बात है? फ़रमाने लगीं कि मुझे यह ख़्याल आया कि यह मुर्ग़ तो मुझसे अच्छा है। उसने कहा वह कैसे? कहने लगीं वह इसलिये कि इस मुर्ग़ को पहले मारा गया (ज़बह किया गया) फिर उसको आग पर भूना गया और अगर राबिआ़ के गुनाहों को न बख़्शा गया तो उसको तो ज़िन्दा आग में झोंक दिया जायेगा, वह लोग भुना हुआ गोश्त खाते थे तो जहन्नम की आग को याद करके रो पड़ा करते थे।

शर्बत पीते हुए अल्लाह का डर

हज़रत उमर रज़ि० के बारे में आता है कि एक मर्तबा पानी मांगा तो किसीने उनको पीने के लिये शर्बत दे दिया, शर्बत का गिलास मुंह से लगाया आंसू आ गये और वह शर्बत के गिलास में आकर गिरे, किसीने कहा अमीरुल मोमिनीन क्यों रो रहे हैं? कहने लगे ऐसा न हो क़यामत के दिन अल्लाह फ़रमादें।

اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِىْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا.

(पारा 26, सूरे अहक़ाफ़, आयत: 20)

तर्जुमा :– तुम अपनी लज़्ज़त की चीज़ें अपनी दुनियवी ज़िन्दगी में हासिल कर चुके और उनको ख़ूब बरत चुके।

हालांकि यह आयत कुफ़्फ़ार के बारे में आई है, लेकिन वह अपने पर उसको चस्पां कर लेते थे, इतना उन लोगों के दिल मे खौफ़ होता था कि पता नहीं हमारे साथ बनेगा क्या? यह ग़म उनपर सवार रहता था और रातों को सोने नहीं देता था "ततजाफ़ा जुनूबुहुम अनिल मज़ाज़िई" (पारा 21, सूरे अलिफ़ लाम सजदा, आयत 16) "पहलू उनके बिस्तरों से अलग रहते थे" अपने रब को मनाते थे कहते आज की रात सजदे की रात, कभी कहते आज की रात रुकू की रात, कभी कहते आज की रात क़याम की रात, अल्लाह तआला के सामने सजदा–रेज़ होकर मांगते थे।

हदीसे पाक का सबक़ देते हुए ख़ौफ़े ख़ुदा

एक मुहद्दिस के बारे में आता है कि हदीस पढ़ा रहे थे तलबा ने देखा कि चेहरे का रंग बदलता है, ख़ौफ़ के आसार महसूस होते हैं, सबक के बाद किसी ने पूछा कि हज़रत आज क्या बात थी फ़रमाया तुमने देखा कि जब मैं हदीस का सबक़ दे रहा था मेरे सर पर बादल आ गये और मुझे महसूस हो रहा थ कि ऐसा न हो इससे पत्थरों की बारिश बरसा कर मेरी शक्ल बिगाड़ दी जाये, हदीसे पाक का सबक़ देते हुए इतना डरते थे।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक रह० का ख़ौफ़

अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक रह० "अमीरुल मोमिनीन फ़िल–हदीस" असमा–ए–रिजाल की किताबों में लिखा है कि यह ऐसे मुहद्दिस हैं इनके बारे में इतने तारीफ़ी कलिमात कहे गये कि इतने तारीफ़ी कलिमात किसी और मुहद्दिस के बारे में नहीं कहे गये, ऐसी हरदिल अज़ीज़ शख़्सियत थी कि सुफ़ियान सौरी रह० जो उनसे उम्र में बड़े थे जब उनको देखते थे तो अदब से खड़े हो जाते थे और फ़रमाते थे कि यह खुरासान के मुहद्दिस हैं इनका नाम अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक है यह इमाम अअज़म अबू हनीफ़ा रह० के शागिर्द थे, अल्लाह ने

उनको बड़ा मक़ाम दिया था, एक वक़्त में चालीस–चालीस हज़ार तालिब इल्म उनसे बैठकर हदीसे पाक सुना करते थे, उस ज़माने में यह साउन्ड सिस्टम तो था नहीं, जब वह हदीस शरीफ़ सुनाते तो लोग मुकब्बिर की तरह उसको आगे पढ़कर सुनाते वह जो आगे आवाज़ पहुंचाने वाले होते थे उनकी तअदाद ग्यारह सौ हुआ करती थी, अन्दाज़ा कीजिए जिस भीड़ में मुकब्बिर ग्यारह सौ हों वह भीड़ कितनी बड़ी होगी, इतने सारे लोगों को हदीस का सबक़ देने वाले, उनके बारे में आता है कि जब उनका आख़री वक़्त आया तो अपने शार्गिदों को कहा तुम मुझे चारपाई से उठाकर ज़मीन पर लिटा दो, तालिब इल्म थोड़ा परेशान हुए वहां कोई क़ालीन तो था नहीं बल्कि मिट्टी थी, जब देखा कि थोड़ी देर हो रही है तो दोबारा कहा कि मुझे ज़मीन पर लिटा दो, "अल–अमरु फ़ौक़ल अदब" तालिब इल्मों ने ज़मीन पर लिटा दिया, जैसे ही ज़मीन पर लिटाया उनकी चीख़ निकल गई उन्होंने क्या मन्ज़र देखा कि जैसे ही आपको ज़मीन पर लिटा दिया आपने अपने गाल को ज़मीन पर रगड़ना शुरू कर दिया और अपनी डाढ़ी के बालों को पकड़ कर रोने लगे और कहने लगे अल्लाह अब्दुल्लाह के बुढ़ापे पर रहम फ़रमा।

मक़ामे ख़ौफ़ हर मख़्लूक़ को हासिल

हदीसे पाक में आता है कि नबी अलै० जब मिअराज पर तश्रीफ़ ले गये तो आपने सातवें आसमान पर देखा कि कुछ फ़रिश्ते हैं जिनके क़द बहुत बड़े हैं और वह सजदे के आलम में हैं और उनके जिस्म कांप रहे हैं और उनके जिस्म के कांपने की वजह से एक अजीब सी आवाज़ महसूस हो रही है, तो पूछा जिबरईल अलै० यह कैसी आवाज़ है फ़रमाया ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० यह फ़रिश्ते सजदे की हालत में पैदा हुए हमेशा इसी हालत में अल्लाह पाक की हम्द करते रहेंगे, तस्बीह पढ़ते रहेंगे, लेकिन अल्लाह तआला की जलालते शान का उनपर इतना असर है कि यह ख़ौफ़ की वजह से कांप रहे हैं और इस कांपने की वजह से यह आवाज़ आपको सुनाई दे रही है, अन्दाज़ा कीजिए अल्लाह पाक की जलालते शान का क्या

आलम होगा, नबी अलै० अर्श के पास जाने लगे तो आपने अर्श की आवाज़ सुनी पूछा जिबरईल यह कैसी आवाज़ है? अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब यह अर्श की आवाज़ है जो अल्लाह तआला की अज़मत की वजह से उसमें से आ रही है, जैसे कोई कुर्सी होती है, जिस पर कोई मज़बूत बन्दा बैठ जाये उसमें से जैसी आवाज़ निकलती है ऐसी आवाज़ अर्श में से आ रही थी तो जब फ़रिश्तों का यह आलम अर्श का यह आलम, तो अज़ीज़ दोस्तो! हम भी तो ज़रा सोचें कि हमनें तो इरादे के साथ गुनाहें की हैं, ऐसा न हो कहीं पकड़ आ जाये, इसलिये डरने की बात है और माफ़ी मांगने की ज़रूरत है।

अल्लाह तआला बड़े ग़य्यूर हैं

नबी अलै० ने फ़रमाया "अना अग़यरु वुलिदा आदमा" औलादे आदम में सबसे ज़्यादा ग़य्यूर हूं "वल्लाहु अग़यरु मिन्नी" 'अल्लाह मुझसे भी ज़्यादा ग़य्यूर हैं' हम गुनाह जब करते हैं यह तो अल्लाह तआला का एहसान ही है अगर पकड़ फ़रमायें तो हमारा हाल क्या बने, दोस्तो! अगर गुनाहों में से बू आ रही होती तो शायद आज हमारे पास लोगों का बैठना मुश्किल हो जाता हमारे जिस्म से इतनी बदबू निकल रही होती।

अल्लाह तआला बड़े ग़य्यूर हैं किताब में एक वाक़िआ लिखा है जो मिस्र का है कि एक आदमी अज़ान देने के लिये मिनारे पर चढ़ा इधर उधर जो देखा तो पड़ौसी की छत पर उसकी जवान उम्र लड़की पर नज़र पड़ी बस दिल पर असर हो गया नीचे उतरा जाकर पड़ौसी से बात की कि इसका मेरे साथ निकाह कर दो वह ग़ैर मुस्लिम थे, उन्होंने कहा कि अच्छा आओ हमारे घर बैठकर बात करते हैं, सीढ़ियां चढ़ने लगा पांव जो फ़िसला गर्दन के बल गिरा और वहीं मौत आ गई, परवर्दिगार ऐसे भी कर देता है कि अज़ान देने मिनारे पर चढ़े, चढ़े तो मुसलमान थे जब नीचे उतरे तो सब नेमत छिन चुकी थी, हमने तो इरादों से गुनाह किये यह तो अल्लाह तआला की रहमत है कि अल्लाह पाक ने ढील दी हमारे ऊपर रहमत के पर्दे

डाल दिये, हमें छुपा लिया, लोगों की ज़बानों से फिर तारीफ़ें करवा दीं इसलिये किसी ने कहा ऐ दोस्त! जिसने तेरी तारीफ़ की उसने हक़ीक़त में तेरे परवर्दिगार की तारीफ़ की, कि जिस परवर्दिगार ने छुपा रखा है, अगर वह न छुपाता तो लोग तो थूकना भी पसन्द न करते, अल्लाह तआला की यह कितनी बड़ी रहमत है वह कितना हलीम और कितना करीम है, तो इन्सान और जिन्न के सिवा हर मख़्लूक़ को मक़ामे ख़ौफ़ हासिल है, इसलिये कोई मख़्लूक़ अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं कर सकती, हर चीज़ इस काम में लगी हुई है जिस काम में अल्लाह ने लगा दिया है, दरख़्त व पत्थर यह भी अल्लाह की इबादत में लगे हुए हैं, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं "व इन मिन शैइन इल्ला युसब्बिहु बिहम्दिहि व लाकिन ला तफ़क़हूना तस्बीहहुम" (पारा 15, सूरे इसरा, आयत 44) "जो भी कोई चीज़ है उसकी हम्द बयान करती है, मगर तुम उसकी तस्बीह को समझते नहीं हो" हर चीज़ को पता है उसकी डियुटी क्या है, कुरआने पाक में फ़रमाया "कुल्लुन क़द अलिमा सलातहु व तस्बीहहू" (पारा 18, सूरे नूर, आयत 41) "हर चीज़ को अपनी नमाज़ और अपनी तस्बीह का पता है" और सारी मख़्लूक़ अपने फ़र्ज़ को अन्जाम दे रही है, एक इन्सान और एक जिन्न सिर्फ़ ये दो हैं जो मन मानियां कर लेते हैं, नाफ़रमानियां करते हैं, इसलिये फ़रमाया "सनफ़रुग़ु लकुम अय्युहस्सक़लानि" (पाः 27, सूरे रहमान, आयतः 31) नाफ़रमान जिन्न और नाफ़रमान इन्सान उनको अल्लाह ने फ़रमाया तुम मेरी ज़मीन पर बोझ बने हुए हो फ़रमाया "ओ मेरी ज़मीन के बोझो हम अपने आपको जल्दी ही फ़ारिग़ कर रहे हैं" हम तुम्हें मज़ा चखायेंगे, जैसे मां धमकाती है बच्चे को, कि अभी आती हूं इसका यह मतलब नहीं कि वह आ नहीं सकती, धमकाना मक़सूद होता है कि यह बाज़ आ जाये, "अल्लाह तआला भी फ़रमाता हैं कि हम अपने आपको तुम्हारे लिये फ़ारिग़ करते हैं ओ मेरी ज़मीन के बोझो" हम तो ज़मीन पर भी बोझ बने हुए हैं, कितने गुनाह किये हैं हमने जिनसे चन्द किलो का वज़न सर पर नहीं उठाया जाता उन्होंने भी टनों के हिसाब से गुनाहों

का बोझ सर के ऊपर लादा हुआ है। (अल्लाहु अकबर कबीरन)

नमाज़ जामिउ़ल इ़बादात है

नबी अलै० ने इरशाद फ़रमाया कि दरख़्त व पत्थर यह भी अल्लाह तआ़ला की इ़बादत करते हैं, किताबों में लिखा है कि अल्लाह तआ़ला ने दरख़्तों को क़याम की हालत में पैदा किया सारी ज़िन्दगी क़याम की हालत में रहते हैं, कीड़ों को अल्लाह तआ़ला ने सजदे की हालत में पैदा किया सारी ज़िन्दगी सजदे की हालत में रहते हैं, पहाड़ों को अल्लाह तआ़ला ने क़ायदे (अत्तहियात) की शक्ल में पैदा किया सारी ज़िन्दगी इस हालत में रहकर अल्लाह तआ़ला की हम्द बयान करते हैं, ऐ इन्सान! उनको तो एक अ़मल दिया गया वह एक एक अ़मल कर रहे हैं और हमें तो तमाम आमाल का मजमूआ़ नमाज़ की शक्ल में अ़ता किया काश कि हम नमाज़ को बेहतर बनाने की पूरी कोशिश करते।

जब हम क़याम करते हैं हमें उन फ़रिश्तों से मुनासिबत मिल रही होती है जो क़याम की हालत में पैदा हुए, रुकू में होते हैं, तो उन फ़रिश्तों से जो रुकू में पैदा हुए, सजदे की हालत में होते हैं तो उन फ़रिश्तों से जो सजदे की हालत में पैदा हुए, और तस्बीह कर रहे हैं तो हमें तो नमाज़ में कितने मक़ामात मिल रहे होते हैं इसलिये नबी अलै० ने फ़रमाया कि तुम किसी सायेदार दरख़्त के नीचे पेशाब पाख़ाना न करो, सहाबा किराम में से एक ने पूछ लिया कि इसमें क्या हिकमत? फ़रमाया कि जब उसका सोया घटता और बढ़ता है वह दरख़्त अल्लाह की बारगाह में सजदा कर रहा होता है, तो दरख़्त भी सजदे करते हैं और हम इसमें सुस्ती कर जायें कितनी अ़जीब बात है तो सारी मख़्लूक़ को मक़ामे ख़ौफ़ हासिल है, दुआ़ करनी चाहिये कि अल्लाह तआ़ला हमें भी यह ख़ौफ़ अ़ता फ़रमादें कि हम गुनाहों से बच सकें।

ऊँट के ख़ौफ़ का एक अ़जीब वाक़िआ़

मदीना सकीना का वाक़िआ़ है, किताबों में लिखा है कि एक बार

नबी अलै० तश्रीफ़ फ़रमा थे एक सहाबी आये और आकर कहते हैं ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० मेरा एक ऊँट है और मैं उस ऊँट पर सामान लादकर दूसरी जगह पहुंचता हूं, उसका पूरा ख़्याल रखता हूं, खाने दाने पीने का, लेकिन जब रात होती है और मैं सो जाता हूं तो ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० वह ऐसी ग़मनाक सी आवाज़ निकालता है कि मेरी आंख खुल जाती है, मेरी नींद पूरी नहीं होती, अगले दिन मुझे फिर काम करना होता है तो मुझे मुश्किल पेश आती है, तो मैं अपकी ख़िदमत में यह अर्ज़ करने के लिये आया हूं, नबी अलै० ने फ़रमाया कि हमने मुद्दई की बात सुन ली, ज़रा मुद्दआ अलै की बात भी सुनेंगे कि वह क्या कहते हैं, चुनांचे फ़रमाया कि ऊँट को बुलाओ ऊँट को बुलाया गया, किताबों में लिखा है कि ऊँट बड़े एहतराम के साथ चलता हुआ आया और नबी अलै० के सामने अत्तहियात की हालत में अदब के साथ बैठ गया, नबी अलै० ने फ़रमाया कि तेरा मालिक तेरा शिक्वा बयान कर रहा है कि वह तो तेरे खाने दाने का पूरा ख़्याल रखता है और तू उसको रात भर सोने नहीं देता ऊँट ने जवाब दिया ऐ अल्लाह के महबूब! मेरे मालिक ने सच कहा यह मेरे खाने दाने का पूरा ख़्याल रखते हैं ऐ अल्लाह के महबूब मैं भी उनका ख़्याल रखता हूं यह जितना भी बोझ लाद देते हैं मैंने कभी बोझ लेजाने से इन्कार नहीं किया, हमेशा मैं भी बोझ पहुंचा देता हूं यह भी मेहनत करते हैं मैं भी मेहनत करता हूं हम दोनों थके हुए शाम को घर वापस लौटते हैं, ऐ अल्लाह के महबूब! यह मग़रिब के बाद खाना खाकर थकावट की वजह से थोड़ी देर आराम करने के लिये लेट जाते हैं मगर उन पर नींद ग़ालिब आ जाती है, इतनी गहरी नींद होती है यहां तक कि रात गहरी हो जाती है मुझे डर लगता है कि कहीं ऐसा न हो कि यह सोये रहें और उनकी इशा की नमाज़ क़ज़ा हो जाये इस डर की वजह से मैं रात को सोता नहीं थकावट के बावुजूद मैं थोड़ी थोड़ी देर के बाद ग़मनाक आवाज़ें निकालता हूं और मैं उनको जगाता हूं कि मेरे मालिक जाग ले और अपने मालिक के हुक्म को पुरा कर ले, क़्यामत के दिन कहीं मुझे भी न पूछा जाये तू

उसका साथी था साथ बैठा होता था तू ही जगा देता ताकि मेरा हुक्म पूरा कर लिया जाता मैं सारा दिन थकने के बावुजूद रात को नहीं सोता मालिक को जगाता हूं कि तू अपने मालिक की नाफ़रमानी न कर।

हैरत की बात है कि इन जानवरों को भी अल्लाह ने ऐसा ख़ौफ़ अ़ता फ़रमाया हम तो अशरफ़ुल मख़्लूक़ात हैं हमें भी अल्लाह तआ़ला से इस ख़ौफ़ को मांगने की ज़रूरत है, अल्लाह हमें ऐसा ख़ौफ़ अ़ता फ़रमादे कि हम गुनाहों से बचकर ज़िन्दगी गुज़ार सकें, आज अपने दिलों में यह अ़हद कर लीजिए रब्बे करीम आज तक जो भी गुनाह हुए हम नादिम हैं, हम शर्मिन्दा हैं, मेरे मौला हम आज सच्ची तौबा करते हैं और आज के बाद दिल में पक्का अ़हद और इरादा करते हैं, रब्बे करीम हम गुनाहों से नहीं बच सकते, लेकिन अगर आप चाहें तो आप हमें बचा सकते हैं, अल्लाह आप आइन्दा हमें गुनाहों से बचा लेना।

राबिआ़ बसरिया की अ़जीब दुआ़

चुनांचे राबिआ़ बसरिया अल्लाह की नेक बन्दी तहज्जुद के वक़्त दुआ़ मांगती थीं और यूं कहती थीं, ऐ अल्लाह! सारा दिन जा चुका रात आ गई सारी दुनिया के बादशाहों ने दरवाज़े बन्द कर लिये तेरा दरवाज़ा अब भी खुला है, ऐ अल्लाह! मैं तेरे सामने फ़रयाद करती हूं और इसके बाद यह दुआ़ मांगती ऐ अल्लाह! आपने आसमान को ज़मीन पर गिरने से रोक रखा है ऐ अल्लाह! शैतान को मुझ पर मुसल्लत होने से रोक दीजिए।

इस तरह अपने रब को मनाते थे और आ़जिज़ी और फ़रयाद करते थे, जिसकी वजह से अल्लाह तआ़ला उनको गुनाह से ख़ाली ज़िन्दगी अ़ता फ़रमा देते थे, अल्लाह तआ़ला हमें भी मक़ामे ख़ौफ़ अ़ता फ़रमादें, वह ख़ौफ़ अ़ता फ़रमा दें ताकि हम गुनाहों से बचकर ज़िन्दगी गुज़ार सकें, यह ख़ौफ़ दिल में जब हो तो अल्लाह की तरफ़ से गुनाहों से हिफ़ाज़त हो जाती है, परवर्दिगारे आ़लम आने वाली ज़िन्दगी में हमें गुनाहों की ज़िल्लत से महफ़ूज़ फ़रमालें और हमें नेकी की ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमादें।